बारह कहानियां

सत्यजित राय

क्रम

सेन्टोपस की भूख	7
बंकू बाबू का मित्र	26
विपिन चौधरी का स्मृतिभ्रम	38
दो जादूगर	48
अनाथ बाबू का भय	62
शिबू और राक्षस की कहानी	74
टेरोडैक्टिल का अंडा	89
चमगादड़ की विभीषिका	103
पटल बाबू फिल्मस्टार बने	114
नीलकोठी का आतंक	128
फेलूदादा की जासूसी	142
कैलास चौधरी का पत्थर	169
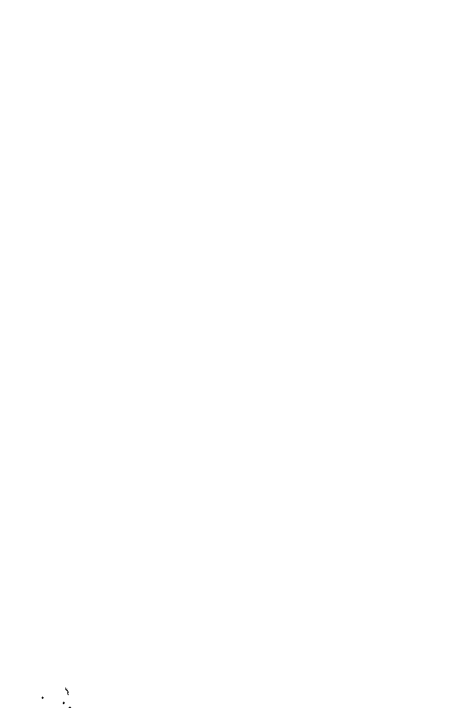
सेंटोपस की भूख

कुंडी हिलाते ही मुंह से अपने आप एक ऊब भरा शब्द निकल आया।
तीसरे पहर से अब तक चार बार हो चुका; आदमी काम करे तो कैसे करे? कातिक भी जो बाजार गया है, अब तक लौटने का नाम नही ले रहा है।

लिखना बन्द करके मुझे खुद ही उठना पडा।

दरवाज़ा खोलते ही मैं अवाक् रह गया। अरे, यह तो कांति बाबू हैं!

मैंने कहा, "कितने आश्चर्य की बात है! आइए, आइए..."

"पहचान लिया?"

"पहचान मे जैसे नहीं आ रहे हैं, ऐसा ही लगता है।"

उन्हें मैंने अन्दर के कमरे मे लाकर बिठाया। सचमुच, दस बरसों में ही कांति बाबू के चेहरे मे ऐसा परिवर्तन हुआ है जिस पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। मैंने 1950 ईस्वी मे इन्ही को एक आतिशी शीशों के साथ आसाम के जगलों में चक्कर काटते देखा है। उन दिनों ही उनकी उम्र थी लगभग पचास वर्ष। लेकिन एक भी बाल नही पका था। उस उम्र में भी उनमें मैंने जिस उत्साह और ऊर्जा की बानगी देखी थी, वह उत्साह या ऊर्जा युवकों में भी नहीं दीखती है।

"देख रहा हूं कि तुममें अब भी ऑर्किड् का शौक है।"

मेरे कमरे की खिड़की पर गमले में एक आर्किड् था जिसे कांतिबाबू ने ही दिया था। अब भी मुझे शौक है, यह कहना गलत ही होगा। कांतिबाबू ने ही मेरे अन्दर पेड़-पौधों के प्रति एक तरह का कुतूहल जगा दिया था। उसके बाद जब वे देश से बाहर चले गए, वह शौक अपने आप खत्म हो गया—ठीक वैसे ही जैसे दूसरी-दूसरी दिलचस्पियां भी समाप्त हो गईं। अब लिखने-पढ़ने का काम ही लेकर व्यस्त रहता हूं। आजकल समय बदल गया है। किताबें लिखने से आजकल पैसा मिलता है। तीन ही पुस्तकों की बिक्री से मेरी गृहस्थी का खर्च एक तरह से चल जाता है। इतना ज़रूर है कि मेरे परिवार से सिर्फ़ तीन ही व्यक्ति हैं—मैं, मेरी विधवा मां और नौकर। यों नौकरी भी करता हूं मगर तय किया है कि

पुस्तकों से जब अच्छी आय होने लगेगी, नौकरी छोड़ दूंगा और केवल लिखने-पढ़ने का ही काम करूंगा। इसके अलावा लिखने-पढ़ने के सिलसिले में देश-भ्रमण।

कांतिबाबू बैठे-बैठे ही अचानक सिहर उठे।

मैंने पूछा, "ठंड लग रही है? खिड़की बन्द कर दूं? अब कलकत्ते में सरदी···"

"नहीं-नहीं; आजकल बीच-बीच में ऐसा ही होता है। अब उम्र हो हो चुकी है न? इन्द्रियां अब ठीक से···"

मेरे दिमाग में बहुत सारे प्रश्न जग रहे थे। कातिक लौटकर आ चुका था। उसे चाय लाने को कहा।

कांतिबाबू बोले, "ज्यादा देर तक नहीं बैठूंगा। तुम्हारा एक उपन्यास कहीं से मिल गया था। तुम्हारे प्रकाशक से ही पता पूछकर यहां आया हूं और वह भी एक खास जरूरत से।"

"कहिए। तब हां,···उसके पहले, यानी कहने का मतलब है कि आप कब देश लौट कर आए, कहां थे, अभी कहां रह रहे हैं, यह सब जानने की इच्छा हो रही है।"

"लौटे दो बरस हो चुके। अमेरिका में था। अभी बारासात में हूं।"

"बारासात में?"

"एक मकान खरीद लिया है।"

"बगीचा है?"

"है।"

"और ग्रीन हाउस?"

कांतिबाबू के पहले वाले मकान के बगीचे में एक बड़ा ही खूबसूरत ग्रीन हाउस या कांच का घर था, जिसमें वे अपने दुष्प्राप्य पेड़-पौधों को बड़े यत्न के साथ रखते थे। वहां मैंने इतने अद्भुत पेड़-पौधे देखे थे, जिसकी कोई सीमा नहीं। एक ही आर्किड में साठ-पैंसठ किस्म के पौधे थे। उसके फूलों की ही विचित्रताओं का उपभोग करते-करते पूरा दिन गुजार दिया जा सकता था।

कांतिबाबू कुछ देर सोचने के बाद फिर बोले, "हां है। ग्रीन हाउस भी है।"

"फिर दस बरसों के दरमियान आपके पेड़-पौधों के शौक में कोई कमी नहीं आई है?"

"नहीं।"

कांति बाबू मेरे कमरे की उत्तरी दीवार की ओर ताक रहे थे। यह

देखकर मेरी भी आंखें उस ओर गईं। वहां रॉयल बेंगाल टाइगर की एक खाल सिर के साथ झूल रही थी।

मैंने पूछा, "पहचान रहे हैं ?"

"यह तो वही शेर है न ?"

"हां। वह देखिए, कान के पास बुलेट का दाग तक है।"

"तुम्हारा निशाना कमाल का था। अब भी उसी तरह अचूक निशाना साध लेते हो ?

मालूम नहीं। बहुत दिनों से परीक्षा नहीं की है। पांच-सात बरसों से शिकार करना बन्द कर दिया है।"

"क्यों ?"

"बहुत ही शिकार कर चुका हूं। अब उम्र काफी हो चुकी है, इसीलिए जीव-हत्या···"

"मांस-मछली खाना छोड़ दिया है ? अब निरामिष खाना खाते हो ?"

"नहीं।"

"फिर ? यह तो केवल हत्या ही है। चाहे शेर का शिकार करो या मगरमच्छ का या भैंसे का। खाल निकलवा कर उनका सिर स्टाफ कराके या सींगों को माउंट कराकर दीवारों में टांग कर रख दो। इससे कमरे की शोभा बढ़ेगी। लोग आएंगे तो चिहुक उठेंगे, कुछ लोग शाबाशी देंगे। तुम्हें भी अपनी जवानी के साहसिक कार्यों की याद आएगी। और तुम हो कि मुर्गी, बकरे, रोहू, सिंघी मछलियां चबा-चबाकर हज़म कर रहे हो। तुम न केवल जीव की हत्या करते हो, बल्कि उन्हें हज़म कर बैठे हो।

"कहो ठीक कह रहा हूं या नहीं ?"

अब क्या कहूं ! इनकार नहीं कर सका।

कार्तिक चाय ले आया।

कांति बाबू कुछ देर तक गंभीर होकर बैठे रहे, फिर अचानक सिहर-कर चाय के प्याले को हाथ में उठाया।

एक घूंट लेकर बोले, "एक प्राणी से दूसरे प्राणी का भोज्य और भक्षक का सम्बन्ध सृष्टि के प्रारम्भ से ही चला आ रहा है। उस छिपकली को देखो जो दुबककर बैठी है।"

देखो, किंग कम्पनी के कैलेंडर के ठीक ऊपर ही एक छिपकली अपने से एक इंच की दूरी पर बैठे फतिंगे की ओर टकटकी लगाकर देख रही है। उसके बाद आहिस्ता-आहिस्ता कीड़े की ओर बढ़ी और अचानक तीर की तरह एक ही झपटे में उसे अपने मुंह के अन्दर डाल लिया।

कांति बाबू बोले, "बस ! अब डिनर शुरू हो गया। सिर्फ खाना और खाना। खाना ही सब कुछ है। शेर आदमी खाता है, आदमी बकरा खाता है और बकरा क्या नहीं खाकर हजम कर जाता है। सोचने पर इसे तुम जंगलीपन कहोगे या आदिम रुचि या हिंसा का भाव ? लेकिन नियम यही है। इसके अलावा कोई गति नहीं। अगर ऐसा न हो तो सृष्टि रुक जाए।"

"निरामिष खाना इसकी तुलना में बहुत ही···क्यों है ?"

"तुमसे किसने कहा ? साग-सब्जी में प्राण नहीं हैं ?"

"सो तो है ही ! जगदीश बोस और आपकी बदौलत यह बात हमेशा याद रहती है। तब हां, मेरे कहने का मतलब है कि ठीक उस प्रकार के प्राण नहीं हैं। पेड़-पौधे और जीव-जन्तु क्या एक ही हैं ?"

"तुम्हारी राय में दोनों में बहुत बड़ा फर्क है ?"

"फर्क नहीं है ? उदाहरण के तौर पर यही बात ले सकते हैं—कि पेड़ पैदल नहीं चल सकता है, बोल नहीं सकता है, मन का भाव प्रकट नहीं कर सकता है—यहां तक कि उनमें 'मन' नामक कोई वस्तु है, इसे भी समझने का कोई उपाय नहीं है। है न यही बात ?"

कान्ति बाबू कुछ कहना चाहते थे पर उन्होंने बताया नहीं।

चाय वगैरह समाप्त कर वे कुछ देर तक सिर झुकाए बैठे रहे। अन्त में उन्होंने मेरी ओर देखा। उनकी दृष्टि में करुणा और संशय की छाप देखकर मेरा मन एक प्रकार की आशंका से पूर्ण हो उठा। सचमुच, भले आदमी के चेहरे पर कितना परिवर्तन आ गया है।

कांति बाबू दृढ़ता के साथ बोले, "परिमल, मेरा मकान यहां से इक्कीस मील दूर है। अठावन वर्ष की उम्र में मैंने जब खुद चक्कर काट-काटकर तुम्हारा पता लगाया है, तो निश्चय ही इसका कोई न कोई कारण है। यह बात समझ रहे हो ? या चटपटी कहानियां लिखते-लिखते अपनी बुद्धि खो बैठे हो ? सोचते होगे, यह आदमी एक खास तरह का है। कोई न कोई गप छेड़ देता है।"

शर्म से मेरा माथा झुक गया। कांति बाबू ने गलत नहीं कहा था। उनको अपनी एक कहानी का पात्र बनाने की कल्पना मेरे मन में उमड़-घुमड़ रही थी।

उन्होंने कहा, "तुम्हारे लेखन में अगर जीवन का संस्पर्श न रहेगा तो सब कुछ खोखला ही रह जाएगा। और, यह भी याद रखो कि तुम कल्पना का चाहे जितना ही ताना-बाना क्यों न बुनो, यथार्थ से वह कभी अधिक विस्मयकारी नहीं हो सकता।···खैर, मैं तुम्हें उपदेश देना नहीं चाहता। सच बताऊं, मैं तुमसे मदद मांगने आया हूं।"

कांति बाबू ने फिर से घोर की ओर ताका। भले आदमी मुझ से किस तरह की मदद चाह रहे हैं ?

तुम्हारे पास बन्दूक है या उसे तुमने *विदा कर दिया है ?*

मैंने चौंककर उनकी ओर देखा। वे बन्दूक के बारे मे पूछताछ क्यों कर रहे हैं ?

मैंने कहा, "है। तब हो सकता है कि मोर्चा लग गया हो। लेकिन आप यह बात क्यों पूछ रहे हैं ?"

"कल बन्दूक लेकर मेरे घर पर आ सकते हो ?"

मैंने दुबारा उनकी ओर ताका। नही; उनकी आंखो में विनोद का कोई चिह्न नही है।

"सिर्फ बन्दूक ही नही, गोली की भी जरूरत पड़ेगी।"

कांति बाबू के अनुरोध के प्रत्युत्तर में क्या कहूं, तत्काल मेरी समझ मे नहीं आया। एक बार मुझे लगा कि हो सकता है, उनकी बातें मैं नही समझ पा रहा हूं या हो सकता है कि इनका दिमाग खराब हो गया हो। मनमौजी आदमी हैं। बात ऐसी न होती तो कोई आदमी अपना जीवन बरबाद कर इस तरह विचित्र पेड़-पौधों के लिए वीरान जगलों की खाक छान सकता है ? मैंने कहा, "बन्दूक लेकर जाने मे मुझे आपत्ति नही है। तब हां, कारण जानने के लिए मन में बड़ा ही कौतूहल पैदा हो रहा है। आपके इलाके मे जीव-जन्तुओं या चोर-डाकुओ ने उपद्रव करना शुरू कर दिया है ?"

कांति बाबू ने कहा, "जब तुम आओगे, यह सब बात बताऊंगा। हो सकता है बन्दूक की जरूरत न भी पड़े। और, अगर कही कोई जरूरत आ भी गई तो तुम किसी ऐसे अपराध मे नही फसोगे जिसके कारण तुम्हे दड भुगतना पड़े।"

कांति बाबू उठकर खड़े हो गए। उसके बाद मेरे पास आकर उन्होने मेरे कन्धे पर हाथ रखा और कहा, "तुम्हारे पास इसीलिए आया हूं कि आखिरी बार मैंने तुम मे जो कुछ देखा था, उससे मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि तुम मे भी एक नए प्रकार के अनुभव के प्रति आकर्षण है। इसके अलावा, पहले भी मैं बहुत कम आदमियो से सम्पर्क रखता था और अब एक तरह से कहा जा सकता है कि सम्पर्क है ही नही। मेरे जाने-पहचाने इने-गिने लोगो मे से तुम एक ऐसे व्यक्ति हो, जिसमें कुछ ऐसे गुण हैं, जो औरो मे नही हैं।"

अतीत के साहसिक कार्यों की गन्ध से मेरी शिराओ मे जो एक खास किस्म की उत्तेजना प्रवाहित होने लगती थी, आज इस क्षण-विशेष मे मैंने उस उत्तेजना का थोड़ा-सा अंश अपने अन्दर महसूस किया।

मैंने कहा, "कहां जाना है, कैसे जाना है अगर इसे बताने का कष्ट करें..."

"बता रहा हूं। जसौर रोड से तुम्हें सीधे बारासात स्टेशन पहुंचना है। वहां किसी भी आदमी से मधु मुरली के तालाब के बारे में पूछ लेना। वह स्थान स्टेशन से चार मील की दूरी पर है। उसी तालाब के पास एक पुरानी टूटी-फूटी नील कोठी है। उसके पास ही मेरा मकान है। तुम्हारे पास गाड़ी है न ?"

"नहीं। लेकिन मेरे एक मित्र के पास है।"

"वह कौन है ?"

"अभिजित! कॉलेज में हम दोनों सहपाठी रह चुके हैं।"

"किस तरह का आदमी है ? मैं उसे पहचानता हूं ?"

"शायद आप उसे नहीं पहचानते हैं। लेकिन वह भला आदमी है। यानी अगर आपके कहने का मतलब विश्वसनीयता है तो हि इज ऑल राइट।"

"ठीक है। उसे भी अपने साथ ले लेना। मगर आना ही है। यही कहना काफी है कि बहुत ही जरूरी काम है। तीसरे पहर तक आ जाने की कोशिश करो।"

मेरे घर में टेलीफोन नहीं है। सड़क के मोड़ पर 'रिपब्लिक केमिस्ट' है, वहीं से अभिजित को फोन किया। "अभी तुरन्त चले आओ।" मैंने कहा, "बहुत ही जरूरी बात है।"

"तुम्हें अपनी नयी कहानी सुनानी है न ? मगर सुनते ही मैं फिर नींद में खो जाऊंगा।"

"अरे, नहीं-नहीं। दूसरा ही काम है।"

"बात क्या है ? इतने धीरे-धीरे क्यों बोल रहे हो ?"

"एक बहुत ही अच्छे मास्टिफ[1] के बच्चे का पता चला है। आदमी मेरे घर पर बैठा हुआ है।"

बिना कुत्ते का लोभ दिखाए अभिजित को आजकल घर से बाहर निकालना मुश्किल है। पांचों महादेशों के ग्यारह जाति के कुत्ते अभिजित के केनल में हैं। उनमें से तीन उन्हें बतौर पुरस्कार मिले हैं। पांच वर्ष पहले यह बात नहीं थी। आजकल कुत्ता ही उसके लिए, ध्यान, योग, तप

1. एक प्रकार का बलिष्ठ कुत्ता

सब कुछ हो गया है।

कुत्तो के प्रति प्रेम रहने के अलावा अभिजित में एक और दूसरा गुण यह है कि मेरी बुद्धि और विवेचन के प्रति उसमें पूर्ण आस्था है। मेरे प्रथम उपन्यास की पाडुलिपि जब प्रकाशको को पसन्द नही आई तो अन्त मे अभिजित ने उसे प्रकाशित करने के लिए आर्थिक सहायता दी थी। उसने कहा था: 'मेरी समझ मे यह सब आता नही है। लेकिन तुमने जब लिखा है, बिल्कुल कूडा-कचरा हो ही नही सकता। प्रकाशक ही बेवकूफ हैं।' बहरहाल उस पुस्तक की खपत अच्छी तादाद मे हुई थी और मेरा नाम भी फैला था। इसका नतीजा यह हुआ कि अभिजित की आस्था मेरे प्रति और भी अधिक दृढ हो गई।

मास्टिफ के बच्चे के बारे मे बिलकुल झूठी बात होने के कारण मुझे डांट-फटकार सुननी थी। उसने मुझे डाटा-फटकारा भी लेकिन असली प्रस्ताव मान लिए जाने के कारण डांट-फटकार का असर खत्म हो गया।

अभिजित ने उत्साह के साथ कहा, "बहुत दिनो से आउटिंग में जाना न हो पाया है। सोनारपुर झील मे स्नाइप-शूटिंग[1] के लिए जाना हमारी अंतिम यात्रा थी। मगर वह आदमी है कौन ? बात क्या है ? जरा विस्तार से बताओ न प्यारे।"

"उन्होने ही जब विस्तार के साथ नही बताया था तो मैं कैसे बता सकता हूं ? क्या हर्ज है अगर थोडा रहस्य रहे ही। मजा आ जाएगा। कल्पना की लंबी-लंबी उडानें भरने का यही तो मौका है।"

"अरे, वे सज्जन कौन हैं, यही बताओ न !"

"कांति चरण चटर्जी। समझ में कुछ आया ? किसी जमाने में स्कॉटिश चर्च कॉलेज मे कुछ दिनो तक वनस्पति शास्त्र के प्रोफेसर के पद पर थे। प्रोफेसरी छोडकर दुष्प्राप्य पेड़-पौधो की खोज में दौड़-धूप करते थे, उनके सम्बन्ध मे रिपोर्ट भेजते थे, लेख लिखते थे। उन्होने पेड़-पौधो का खासा अच्छा संग्रह किया था—खासतौर से आर्किडो का।"

"तुमसे कैसे जान-पहचान हुई ?"

"आसाम के केजो रगा जगल के डाक बंगले में। मैं शेर के शिकार की टोह मे था और वे नेपेनथिस की खोज कर रहे थे ?"

"किसी चीज की खोज कर रहे थे ?"

"नेपेनथिस की। बॉटोनिकल नाम है। सीधी भाषा में इसे पिचर प्लांट या कलशवृक्ष कह सकते हैं। यह आसाम के जगलो मे मिलता है।

---

1. छिपकर गोली चलाना

कीड़ों को पकड़कर खा जाता है। मैंने खुद इस वृक्ष को नहीं देखा है। इसके बारे में कांति बाबू से ही सुना था।"

"कीड़े-मकोड़े खाने वाला ? पेड़ कीड़े-मकोड़े खाता है ?"

"लगता है, तुमने वनस्पतिशास्त्र नहीं पढ़ा है।"

"नहीं।"

"किताबों में मैंने उसकी तसवीर देखी है। अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है।"

"फिर ?"

"फिर क्या ?" उन्हें वह पेड़ मिला था या नहीं, मुझे इस बात की जानकारी नहीं है, क्योंकि मैं शिकार करके लौट आया था और वे वहीं रह गए थे। मैं तो इसीलिए डर रहा था कि कहीं भले मानस को जीव-जन्तु या कीड़े-मकोड़ों से जान न गवाना पड़े। पेड़-पौधों के नशे में जगह-जगह की खाक छानते रहते थे। मैं जब लौटकर कलकत्ता आया, उनसे दो-चार बार से अधिक भेंट मुलाकात नहीं हुई। लेकिन वे मुझे अकसर याद आते रहते थे क्योंकि उन दिनों मुझ पर भी आर्किड् का नशा सवार था। मुझसे उन्होंने कहा था कि वे अमेरिका से कुछ उम्दा किस्म के आर्किड् लाकर मुझे देंगे।

"अमेरिका ? वे अमेरिका से हो आए हैं ?"

"विलायत के किसी वनस्पतिशास्त्रीय जनरल में उद्भिद के सम्बन्ध में उनका एक लेख छपा था और उस लेख के कारण उस देश में उनका नाम चारों तरफ फैल गया। उद्भिद वैज्ञानिकों के एक सम्मेलन में योग-दान करने के लिए उन्हें अमेरिका से आमंत्रित किया गया। यह बात उन्नीस सौ इक्यावन या बावन की है। उसके बाद यह पहली बार उनसे मुलाकात हुई है।"

"इतने दिनों तक वे वहां क्या करते रहे ?"

"मालूम नहीं। तब हां, उम्मीद है कि कल मालूम हो जाएगा।"

"उनके दिमाग का कहीं कोई कल-पुर्जा गड़बड़ा तो नहीं गया है ?"

"तुम्हारे दिमाग के कल-पुर्जे से ज्यादा नहीं। तुम्हें कुत्ते पालने का शौक है और उन्हें पेड़-पौधे लगाने का"···

अभिजित की स्टैंडर्ड गाड़ी से हम जसौर रोड पकड़कर बारासात की ओर जा रहे हैं।

हम कहने का मतलब है—अभिजित और मेरे अतिरिक्त और प्राणी

हमारे साथ है और वह है अभिजित का कुत्ता 'बादशाह'। यह मेरी ही गलती थी। मुझे समझ लेना चाहिए था कि मेरे न कहने पर अभिजित अपने ग्यारह कुत्तो मे से किसी-न-किसी को अपने साथ लाएगा ही।

'बादशाह' रामपुरी हाउंड की नस्ल का है। बादामी रंग का, बड़ा ही रोबीला। गाड़ी के पिछले हिस्से को अकेले ही दखलकर पसर कर बैठा है और खिड़की से मुंह बाहर निकालकर दिगंतव्यापी धान के खेतो के दृश्यों का उपभोग कर रहा है। बीच-बीच में गांव के लावारिस कुत्ते जब दीख जाते हैं, बादशाह अपने मुंह से अवज्ञासूचक शब्द निकालने लगता है।

बादशाह को अभिजित के साथ देखकर जब मैंने आपत्ति की तो उसने मुझ से कहा, "तुम्हारी बहादुरी पर भरोसा न रहने के कारण ही उसे अपने साथ ले आया हूं। इतने दिनों से तुमने बन्दूक छुई तक नही। अगर किसी मुसीबत मे फंस गए तो अन्ततः बादशाह ही बहादुरी दिखाएगा। उसमे असाधारण घ्राण-शक्ति है और उसके साहस के बारे मे कुछ कहना ही नही।"

कान्ति बाबू के घर को तलाशने में किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई। हम लोग जब पहुचे, तब दिन के ढाई बज रहे थे। फाटक के अन्दर घुसने के बाद, थोड़ा-सा फासला तय करते ही बंगलानुमा एकमंजिला मकान है। मकान के पिछवाड़े में, थोड़ी-सी खाली जगह है और उसके बाद एक विशाल प्राचीन शिरीषवृक्ष है। उस शिरीषवृक्ष के पास ही एक काफी बड़ा कारखानानुमा टीन के छाजन का घर है। मकान के सामने, सड़क की विपरीत दिशा मे बगीचा है और बगीचे के बाद एक लम्बी टीन की छाजनदार जगह में कांच के बक्सों की एक कतार है।

कांति बाबू ने हमारा स्वागत-सत्कार किया लेकिन ज्यो ही उनकी नज़र बादशाह पर पड़ी उनकी पेशानी पर बल पड़ गए।

"यह प्रशिक्षित कुत्ता है ?" उन्होने पूछा।

अभिजित ने कहा, "मेरी हर बात का पालन करता है। मगर पास में ऐसे कुत्ते मिल जाएं जो प्रशिक्षित न हों तो यह क्या कर बैठेगा, कहना मुश्किल है। आपके यहां कोई कुत्ता...?"

"नही। कुत्ता नही है। मगर अभी उसे बैठक की उस खिड़की की सलाख से बांध दें।"

अभिजित ने मेरी ओर एक कटाक्ष डाला और आंख मटकाते हुए एक आज्ञाकारी बालक की तरह कुत्ते को खिड़की से बांध दिया। बादशाह ने दो-चार बार आनाकानी की और फिर चुप हो गया।

हम जब सामने की बेंत की कुरसियों पर बैठ चुके तो कांति बाबू ने

प्रकृति के इस प्रकार का आश्चर्य, इस प्रकार का बीभत्स फंदा मैंने इसके पहले कभी नहीं देखा था।

अभिजित ने रुंधे स्वर में पूछा, "कीड़ा पत्ते पर ही बैठेगा, इसकी कोई गारंटी है ?"

कांति बाबू ने कहा, "जरूर है। पौधे से इस तरह की गन्ध निकलती है जो कीड़े को अपनी ओर आकृष्ट करती है। इसे वेनस फ्लाइ ट्रैप (Venus Fly Trap) कहते हैं। मध्य अमेरिका से मंगाया है। वनस्पति-शास्त्र की पुस्तक में इसका उल्लेख है।…"

मैं अचम्भे में आकर फतिंगे की हालत गौर से देख रहा था। शुरू में कुछ देर तक वह छटपटाता रहा। उसके बाद वह बिलकुल निर्जीव हो गया। पत्ते का दबाव क्रमशः बढ़ता हुआ मालूम पड़ रहा था। छिपकली की तुलना में यह पौधा कम हिंसक नहीं था।

अभिजित ने फीकी हंसी हंसकर कहा, "सुनो जी, ऐसा एक पौधा मेरे घर में रहता तो कीड़े-मकोड़ों से बहुत-कुछ राहत मिलती। तिलचट्टे की वजह से डी० डी० टी० पाउडर छिड़कने की जरूरत नहीं पड़ती।"

कांति बाबू ने कहा, "यह पौधा तिलचट्टा हजम नहीं कर पाएगा। इसके अलावा इसके पत्तों का आयतन भी छोटा है। तिलचट्टे के लिए दूसरा ही पौधा है। वह उस तरफ रहा।"

निकट के बक्से के सामने जाकर देखा, लिलि की तरह लम्बे-लम्बे पत्तों वाला एक पौधा है। हरेक पत्ते के अग्रभाग में एक-एक ढक्कनदार थैलीनुमा वस्तु लटकी हुई है। इसकी तसवीर याद थी, इसलिए पहचानने में देर नहीं हुई।

कांति बाबू ने कहा, "इसे नेपेनथिस या पिचर प्लांट कहते हैं। इसके खाद्य की मात्रा बहुत अधिक होती है। शुरू-शुरू में जब यह पौधा मिला, तब उस थैली में एक चिड़िया चिपटी हालत में पड़ी थी।"

"बाप रे बाप!" अभिजित की यथास्थिति में धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा, "अभी यह क्या खाना खाता है ?"

"तिलचट्टा, तितली, फतिंगे वगैरह। बीच में मेरी चूहादानी में एक चूहा फंस गया था। उसे भी खिलाकर देखा था, आपत्ति नहीं की। तब हाँ, गुरुपाक के फलस्वरूप ये पौधे कभी-कभी मर जाते हैं। बहुत लालची होते हैं न। किस समय भोजन बरदाश्त होगा, इसका अन्दाज नहीं रहता है।"

मेरा आश्चर्य धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था, इसलिए एक बक्से से दूसरे बक्से के पास जाकर पौधों का निरीक्षण करने लगा। बटरवार्ट, सनड्यू, ब्लडरवार्ट, ऐरजिया—इन तमाम पौधों की तसवीरें पहले ही देख चुका

हूं। यही वजह है कि उन्हें कमोबेश पहचान सका। लेकिन बाकी सब बिलकूल नये थे, आश्चर्य में डालने वाले, अविश्वसनीय। काति बाबू ने लगभग बीस प्रकार के मासाहारी पौधों का संग्रह किया है। उनमें से कुछ ऐसे हैं जो दुनिया के किसी संग्रहालय में नही मिलते हैं।

इनमे जो सबसे सुन्दर पौधा—सनड्यू—है, उसके छोटे-छोटे पत्तों के चारों ओर पतले और लम्बे रोओं के अग्रभाग मे पानी की बूंदें झलमला रही हैं।

एक धागे के छोर मे इलायची के आकार के जैसा मांस का एक टुकड़ा लटकाकर कांतिबाबू उस धागे को धीरे-धीरे पत्ते के निकट ले गए। कि देखा, तमाम रोए एक साथ लुब्ध मुद्रा में मांस के टुकड़े की तरफ खड़े हो गए।

अपना हाथ हटाकर काति बाबू ने कहा, "मांस का टुकड़ा मिल जाता तो फ्लाइट्रैप की तरह उसको भी जोरों से दबोच लेता। उसके बाद जो कुछ पुष्टिकारक पदार्थ मिलता उसे चूसकर, बेमतलब के हिस्से को छोड़ देता। इसके खाने के तौर-तरीके और हमारे खाने के तौर-तरीके में कोई अन्तर नही है।"

हम लोग छाजन से निकलकर बगीचे में आए।

शिरीष वृक्ष की छाया लम्बी होकर बगीचे में लेटी थी। घड़ी की तरफ देखा, चार बज रहे थे।

कान्तिबाबू ने कहा, "इसमे से ज्यादातर पौधों के सम्बन्ध में तुम्हें वनस्पतिशास्त्र की पुस्तकों में उल्लेख मिलेगा। तब हां, मेरा जो सबसे आश्चर्यजनक संग्रह है, उसके विषय में अगर मैं न लिखूं तो किसी भी पुस्तक में इसका उल्लेख नही मिल सकता है। उसी के लिए आज तुम लोगों को यहां बुलाया है। चलो, परिमल ! चलिए अभिजित बाबू !"

अब हम लोग काति बाबू के पीछे-पीछे कारखाने के उस बड़े कमरे की ओर जाने लगे।

टीन के दरवाजे पर ताला लटका हुआ था। दोनो ओर की दोनों खिड़किया बन्द थी। हाथ से ठेलकर कांति बाबू ने एक खिड़की खोली और स्वयं झाककर हम लोगो से कहा, "लो, देखो।"

अभिजित और मैं खिड़की से सटकर खड़े हो गए।

कमरे के पश्चिम की दीवार के ऊपरी हिस्से मे कांच की दो खिड़किया यानी 'स्काइलाइट' हैं जिनसे धूप नीचे उतर आयी है और अन्दर हलका प्रकाश फैला है।

कमरे के अन्दर जो चीज है, अगर एकाएक देखा जाए तो उसे वृक्ष

नही कहा जा सकता। बल्कि अनेक सूंड़धारी कोई आश्चर्यजनक जानवर ही उसे माना जा सकता है। गौर से देखने पर एक तना दीख पड़ता है। यह तना पाँच-छह हाथ ऊंचा उठकर एक मस्तक में जाकर समाप्त हो गया है। मस्तक से करीब एक हाथ नीचे, मस्तक को गोलाकार रूप में घेरकर कई सूंड़ हैं। गिनकर देखने पर सात सूंड़ मालूम होते हैं।

पेड़ का तना धूसर वर्ण और चिकना है तथा पूरे तने मे भूरे चित्ते उगे हैं।

सूंड अभी मिट्टी की ओर झुककर पड़े हैं। देखने मे निर्जीव जैसे लगते हैं। लेकिन फिर भी मेरा शरीर सिहर उठा।

आँखें जब अंधेरे की अभ्यस्त हो गयी तब एक और वस्तु पर नजर पड़ी। कमरे के फर्श पर पेड़ के चारों तरफ चिड़िया की पाँखें बिखरी हुई हैं।

न जाने, मैं कब तक चुपचाप खड़ा रहा। कांति बाबू की आवाज सुनकर मेरी चेतना वापस लौटी।

"अभी पेड़ सो रहा है। लगता है, जगने का समय हो गया है।"

अभिजित ने अविश्वास के स्वर मे कहा, "क्या यह वास्तव में कोई पेड़ है?"

कांति ने कहा, "जड़ मिट्टी से लगी हुई है तो पेड़ के अलावा इसे क्या कहिएगा? इतना जरूर है कि उसका हाव-भाव पेड़-पौधों की तरह नहीं है। शब्दकोश मे उसका कोई उपयुक्त नाम नही है।"

"आप इसे क्या कहते हैं?"

"सेंटोपस। या हिन्दी मे इसे सप्तपाश कह सकते हैं। 'पाश' यानी बंधन। जिस तरह नागपाश।"

हम लोग मकान की ओर चल दिये। मैंने पूछा, "यह पेड़ आपको कहा मिला?"

"मध्य अमेरिका की निकारागुआ झील के पास ही घना जगल है। उसी मे यह पेड़ मिला है।"

"आपको काफी खोज-पड़ताल करनी पड़ी होगी।"

"उसी अचल मे मिलता है, यह बात मुझे मालूम थी। तुम लोगों ने प्रोफेसर डॉमस्टन का नाम सुना है? वे उद्‌भिद वैज्ञानिक थे, साथ-ही-साथ यायावर भी। मध्य अमेरिका मे पेड़-पौधों की तलाश मे जाकर जान गवा बैठे थे। उनकी मृत्यु किस तरह हुई यह बात किसी को मालूम नही। उनका शव लापता हो गया था। उनकी तत्कालीन डायरी के अन्तिम भाग मे इस पेड़ का उल्लेख है।"

"यही वजह है कि मौका मिलते ही मैं पहले निकारागुआ की ओर

चल पड़ा। गुआटेमाला में ही स्थानीय व्यक्तियों से इस पेड़ का विवरण प्राप्त हुआ। वे लोग इसे शैतान वृक्ष कहा करते हैं। अन्त में इस तरह के कई पेड़ देखने को मिले। इस पेड़ को बन्दर, आरमाडिलो इत्यादि खाते हुए देखा। बहुत-बहुत खोज-पड़ताल के बाद एक कच्ची उम्र का छोटा-सा पौधा मिला जिसे मैं उखाड़कर ले आया। दो बरसों के दरमियान पेड़ का क्या आकार हो गया है, देख ही रहे हो।"

"अब यह पेड़ क्या खाता है ?"

"जो कुछ भी देता हूं, खा लेता है। चूहे दानी से चूहा पकड़कर दिया है। उसके बाद प्रयाग से कहा कि बिल्ली-कुत्ते अगर दब जाएं तो ले आओ। यह सब भी खाने को दिया। उसके बाद हमारा तुम्हारा जो आहार है—यानी मुर्गी, बकरा वगैरह भी—दिया है। आजकल इसकी भूख बड़ी तेज हो गयी है। इसके आहार का इन्तज़ाम नहीं हो पाता है। तीसरे पहर जब इसकी नींद टूटती है तो बड़ा ही छटपटाता है। कल तो एक कांड ही हो गया। प्रयाग एक मुर्गी देने गया था। जिस तरह हाथी को खिलाया जाता है, उसी तरह इसे भी खिलाना पड़ता है। शुरू में पेड़ के मस्तक में एक ढक्कन खुलता है। उसके बाद अपने सूंड़ से हाथ में रखे आहार को उठाकर मस्तक के गड्ढे में डाले देता है। जो कुछ भी खाने को मिल जाए। उसे पेट के अन्दर डालकर कुछ क्षणों के लिए निश्चिन्त हो जाता है। उसके बाद अगर सूंड़ को फिर हिलाये तो समझ में आता है कि इसे और कुछ खाने के लिए चाहिए।"

"इतने दिनों तक दो मुर्गियां या एक छोटा बकरा एक ही दिन में खाकर समाप्त कर देता था। कल से इस नियम में व्यतिक्रम हो रहा है। कल दूसरी मुर्गी देने के बाद प्रयाग दरवाज़ा बन्द कर चला आया। जब पेड़ बेचैनी की हालत में सूंड़ पटकता है तो एक तरह की आवाज़ होती है। दूसरी मुर्गी देने के बावजूद अचानक उसी तरह की आवाज सुनकर प्रयाग इसके कारण का पता लगाने गया।

"मैं उस समय कमरे में बैठा डायरी लिख रहा था। एकाएक ज़ोरों की एक चीख सुनायी पड़ी। मैं दौड़ता हुआ वहां पहुंचा। देखा, सेन्टोपस एक सूंड़ प्रयाग के दाहिने हाथ को कसकर दबाये हुए है। प्रयाग जी-जान से हाथ छुड़ाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उसके साथ ही सेंटोपस का दूसरा सूंड़ लपलपाता हुआ प्रयाग की ओर बढ़ रहा है।

"मैं दौड़ता हुआ गया और लाठी से सूंड़ पर ज़ोरों से मार [illegible] फिर अपने हाथों से प्रयाग को किसी तरह खींचकर बाहर निकाला [illegible] उसकी जान बचायी। लेकिन चिन्ता की बात यही है कि सेन्टोपस [illegible]

के हाथ का थोड़ा-सा मांस नोच लिया था और उसे अपने पेट में डाल लिया था। यह चीज मैंने अपनी आंखों से देखी है।"

हम लोग चहलकदमी करते हुए बरामदे पर पहुंच चुके थे। कांति बाबू कुरसी पर बैठ गए। उसके बाद जेब से रूमाल निकालकर सिर के पसीने की बूंदों को पोंछते हुए बोले, "सेन्टोपस को मनुष्य के प्रति लोभ या आक्रोश हो सकता है, इसका इंगित इसके पहले नहीं मिला था। कल जब इसका पता चला तो इसे मार डालने के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय मुझे सूझ नहीं रहा है। कल एक बार भोजन मे जहर मिलाकर इसे मार डालने की कोशिश की थी लेकिन पेड़ मे आश्चर्यजनक बुद्धि दीख पड़ी। उसने खाने के पदार्थ को सूंड़ से उठाकर नीचे पटक दिया। अब एकमात्र उपाय यही है कि इसे गोली से मार दिया जाए। परिमल, तुम्हे क्यो बुलाकर ले आया हूं, यह बात समझ रहे हो न ?"

कुछ देर तक चुप रहने के बाद मैं बोला, "गोली लगने से यह मरेगा या नही, यह बात आप जानते हैं ?"

कांति बाबू ने कहा, "मरेगा या नही, कह नही सकता। तब हा, मुझे इस बात पर विश्वास है कि उसमे मस्तिष्क नामक चीज है। उसमे सोचने की शक्ति है, इसका प्रमाण मिल ही चुका है, क्योकि मैं बहुत बार उसके निकट जा चुका हूं, लेकिन उसने कभी मुझ पर आक्रमण नही किया है। वह मुझे पहचानता है—जिस तरह कि कुत्ते अपने मालिक को पहचानते हैं। प्रयाग पर उसके आक्रोश का यही कारण है कि उसने पेड से कई बार हंसी-दिल्लगी करने की कोशिशें की हैं। भोजन का लोभ देकर भी भोजन न दिया था या सूड के पास खाना ले जाकर वापस ले आया था। मस्तिष्क उसमे है ही और मुझे विश्वास है, मस्तिष्क जिस स्थान मे हुआ करता है, वही है—यानी उसके सिर मे। जिस स्थान विशेष को उसके सूंड घेरे हुए हैं, तुम्हें वही— उसके सिर पर—निशाना लगाकर गोली चलानी है।"

अभिजित ने एकाएक कहा, "यह कौन-सी बड़ी बात है ! इसकी परीक्षा एक मिनट के अन्दर ही की जा सकती है। परिमल, तुम्हारी बदूक···"

कांति बाबू ने हाथ के इशारे से उसे बोलने से रोका और कहा, "शिकार अगर सोई हुई हालत मे हो तो उसे मारना क्या उचित है ? परिमल का हन्टिंग कोड (शिकार का नियम) क्या बताता है ?"

मैंने कहा, "शिकार अगर सोयी हुई हालत मे हो तो उस पर गोली चलाना नीति के विरुद्ध है खास तौर से शिकार जब चल-फिर नही पाता हो तो वहां यह सवाल पैदा होता ही नही।"

कान्ति बाबू ने फ्लास्क से चाय निकालकर हमें दी। चाय पीना खत्म

होते न होते पन्द्रह मिनट के बीच ही सेन्टोपस की नींद खुल गई।

बादशाह बगल के कमरे में कुछ देर से छटपट कर रहा था। अचानक खटखट और जोरों से भौंकने की आवाज सुनकर अभिजित और मैं वहीं गए। देखा, बादशाह अपने दांतों से बकलस तोड़ने की कोशिश कर रहा है। अभिजित बादशाह को धमकाकर शांत करने गया, तभी कारखाने के कमरे से एक प्रकार की सप-सप आवाज आयी, उसके साथ ही एक तरह की तीव्र गंध। गंध उस तरह की थी जिसकी तुलना करना मुश्किल है। बचपन में मेरे टॉन्सिल का जब ऑपरेशन हुआ था तो मुझे क्लोरोफार्म सुंघाया गया था। वह गंध भी कुछ इसी प्रकार की थी।

कांति बाबू ने व्यस्तता के साथ कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, "चलो, समय हो चुका है।"

मैंने पूछा, "यह गंध किस चीज की आ रही है?"

"सेन्टोपस की। यही गंध निकालकर ये सब शिकार..."

कांति बाबू की बात समाप्त नहीं हो सकी। बादशाह ने बकलस को एक बार जोरों से खींचा और उसे तोड़कर अभिजित को एक ही धक्के में जमीन पर पटक दिया, उसके बाद तीर की तरह उस ओर दौड़ पड़ा जहां से गंध आ रही थी।

अभिजित किसी तरह उठकर खड़ा हुआ। उसके मुंह से 'सर्वनाश' शब्द निकला और वह बादशाह के पीछे-पीछे दौड़ने लगा।

मैं गोली भरी बन्दूक लेकर कारखाने के कमरे की ओर दौड़ा। वहां जाने पर देखा, बादशाह ने एक लम्बी छलांग लगायी और खुली हुई खिड़की पर चढ़ गया। अभिजित की रोकने की चेष्टा को विफल बनाता हुआ वह कमरे के अन्दर कूद पड़ा।

कांति बाबू ने ज्योंही दरवाजा खोला, हमें रामपुरी हाउन्ड का हृदय विदारक आर्तनाद सुनाई पड़ा।

हमने अन्दर जाने पर देखा, बादशाह एक सूंड़ में अंट नहीं रहा है, अत: सेन्टोपस एक के बाद दूसरे एवं दूसरे के बाद तीसरे सूंड़ से उसे मरण-पाश में जकड़ रहा है।

कांति बाबू ने चिल्लाकर कहा, "अब तुम लोग आगे मत बढ़ना। परिमल, गोली चलाओ।"

मैंने ज्योंही बन्दूक उठाई, मेरे कानों में जोरों की आवाज आई, "ठहरो।"

अभिजित की दृष्टि में उसके कुत्ते की कीमत कितनी अधिक है, बात उसी समय मेरी समझ में आई। कांति बाबू की वर्जना को पूरे तौर

नकार कर वह दौड़ता हुआ वहां गया और सेन्टोपस के तीन सूंडों में से एक को कसकर पकड़ लिया।

उस समय एक अद्भुत दृश्य पर नजर पड़ते ही मेरे होश उड़ गए।

बादशाह को छोड़कर सेन्टोपस ने अपने तीनों सूंडों से अभिजित पर आक्रमण किया और बाकी चारों सूंड जैसे आदमी के खून के लोभ में सजग होकर लोलुप जिह्वा की तरह लपलपाने लगे।

कांति बाबू ने दुबारा कहा, "चलाओ गोली···गोली चलाओ। वह उसका सिर है।"

मैंने सेन्टोपस के सिर में एक ढक्कन खुलते देखा। ढक्कन के नीचे एक गड्ढा है। अभिजित को शून्य में उठाए सभी सूंड उसी गड्ढे की ओर बढ़ रहे हैं।

अभिजित का चेहरा रक्तहीन और पीला पड़ गया, उसकी आंखें जैसे बाहर निकल रही हों।

भीषण संकट की घड़ी में—मैंने इसके पहले भी देखा है—मेरे तमाम स्नायु अचानक जैसे जादू की तरह संयत और क्रियाशील हो जाते हैं।

मैंने निष्कंप हाथ में बंदूक थामकर, सेंटोपस के सिर पर, दोनों चक्रों के दरमियान निशाना साधकर गोली चला दी।

गोली दागने के एक पल बाद ही पेड़ के सिर से रक्त का फव्वारा छूटने लगा। तमाम सूंड अभिजित से अलग हटकर जमीन की तरफ झुक गए, और तत्काल वही गंध और देखते न देखते उस गंध ने तीव्र होकर मेरी चेतना को हर लिया ··।

•

इस घटना को हुए चार महीने का अरसा गुजर चुका है। मैंने अब अपने असमाप्त उपन्यास को फिर से लिखना शुरू कर दिया है।

बादशाह को हम जिन्दा नहीं रख सके। लेकिन इस बीच अभिजित ने एक मॅस्टिफ और एक तिब्बती कुत्ते के बच्चे का इन्तजाम कर लिया है। इसके अलावा उसे एक रामपुरी हाउंड का भी पता चला है। अभिजित के पंजर की दो हड्डियां टूट गई थीं। दो महीने तक पलस्तर लगाए रखने के बाद हड्डियां जुड़ी हैं।

कांति बाबू कल आए थे। उन्होंने मुझे बताया कि वे तमाम कीटखोर पेड़-पौधों को हटा देने के बारे में सोच रहे हैं।

"बल्कि साधारण साग-सब्जी लेकर अनुसंधान करना कहीं बेहतर है। झींगा, नेनुआ, परवल वगैरह के बारे में। अगर तुम चाहो तो तुम्हें कुछ

पेड़-पौधे दे सकता हूं। तुमने मेरा बड़ा ही उपकार किया है। मान लो एक नेपेनथिस ही दूं तो तुम्हारे घर के कीड़े-मकोड़े···"

मैंने उन्हें टोका, "नहीं-नहीं। आप उन सब चीजों को फेंकना चाहते हों तो फेंक दें। कीड़े-मकोड़े पकड़ने के लिए मुझे पेड़-पौधों की ज़रूरत नहीं है।"

किग कंपनी के कैलेण्डर की ओर से आवाज़ आई, "ठीक, ठीक, ठीक।"

बंकु बाबू का मित्र

बकु बाबू को कभी किसी ने क्रोध में आते नही देखा है। सचमुच अगर वे क्रोध मे आ जाएं तब उनका रूप क्या होगा, वे क्या कहेंगे —इसका अनुमान लगाना मुश्किल है।

हालांकि बात ऐसी नही है कि क्रोध आने के मौके नही आते हैं। पिछले बाईस बरसों से वे कांकुड़गाछी प्राइमरी स्कूल में भूगोल और बंगला पढाते आ रहे हैं। इस अरसे के दरमियान कितने ही छात्र आए और गए मगर बंकुबाबू के पीछे पड़ने का सिलसिला—ब्लैकबोर्ड में उनका चित्र बनाना, उनके बैठने की कुरसी मे गोंद लगा देना, दीवाली की रात में उनके पीछे पटाखाबाजी करना—बाईस बरसो से छात्र-परम्परा के रूप में चला आ रहा है।

लेकिन बकु बाबू कभी गुस्से मे नही आए। बस, गला खंखारकर इतना ही कहा है, "छि: !"

इसका अवश्य ही कोई कारण है और वह यह कि अगर वे गुस्से मे आकर मास्टरी छोड़ देते हैं तो उनके जैसे गरीब आदमी के लिए इस उम्र में कोई मास्टरी या नौकरी ढूढना बड़ा ही मुश्किल है। और दूसरा कारण यह है, कि पूरे क्लास के शैतान छात्रों के बीच दो-चार भले छात्र अवश्य रहते है; उन लोगों से मेल-जोलकर तथा उन्हे पढाकर बकु बाबू को इतना आनन्द प्राप्त होता है कि इसी से उनकी मास्टरी सार्थक हो जाती है। ऐसे छात्रों को वे यदा-कदा अपने घर पर ले आते हैं। उसके बाद कटोरा भर भुरभुरी खिलाकर कहानी के बहाने देश-विदेश की आश्चर्यजनक घटनाएं उन्हें सुनाते हैं। अफीका की कहानी, मेरु की खोज की कहानी, ब्राजिल की आदमखोर मछलियो की कहानी, समुद्र-गर्भ मे समाए हुए एटलेन्टिस महादेश की कहानी—बंकुबाबू इन सबों का वर्णन बड़े ही चमत्कारिक तरीके से करते हैं।

शनि और रविवार की शाम के वक्त बकु बाबू गाव के वकील श्रीपति मजुमदार के अड्डे मे शामिल होते हैं। बहुत बार उन्होने सोचा है, अब नहीं जाऊगा, अबकी आखिरी बार जा रहा हू। छात्रों की टिटकारी

बरदाश्त करने लायक हो जाने के बावजूद बूढ़ों का उनके पीछे पड़ना उन्हें बरदाश्त नहीं होता। इस बैठक में उन्हें केन्द्र बनाकर जो हसी-दिल्लगी चलती है, वह सचमुच कभी-कभी बरदाश्त के बाहर हो जाती है।

यही तो उस दिन की बात है, दो महीने भी न गुजरे होंगे, भूत-प्रेत की बातें चल रही थी। बंकु बाबू यों सबके सामने अपनी राय जाहिर करने के अभ्यस्त नही हैं। न जाने उस दिन क्या हुआ कि वे कह बैठे कि वे भूत-प्रेत से नही डरते हैं। अब जाएं तो कहां जाएं! ऐसे मौके को लोग भला हाथ से जाने दें! रात में घर लौटते समय बंकु बाबू की रास्ते में बड़ी ही दुर्गति हुई। मित्तिर खानदान के इमली के पेड़ के तले कोई लिकलिक लम्बा आदमी अपनी देह में भूसा वगैरह लगाकर अंधेरे में उनके बदन पर कूद पड़ा। यह काम इसी अड्डे के षड्यंत्र के अलावा और हो ही क्या सकता है!

बंकु बाबू को डर नहीं लगा। तब हां, चोट अवश्य ही लगी थी। तीन दिनों तक उनकी गरदन मे दर्द रहा था। और, सबसे जो बड़ी बात हुई वह यह कि उनके नये कुरते में स्याही वगैरह लग गई थी तथा वह कई जगह फट भी गया था। भला, यह कोई मजाक में मजाक है!

इसके अलावा उनके पीछे पड़ने का धंधा लगा ही हुआ है। जैसे छाता या जूता छिपा देना, पान में असली मसाले की जगह मिट्टी मिला देना, जोर-जबरन गीत गाने को बाध्य करना इत्यादि।

फिर भी उन्हें अड्डे पर आना पडता है। न आने पर श्रीपति बाबू पता नही, क्या सोचें। एक तो वे गांव के गण्यमान्य व्यक्ति हैं, दिन को रात और रात को दिन बनाने की उनमें सामर्थ्य है, उस पर बंकुबाबू न हों तो उनका काम चल नही सकता। उनका कहना है: एक ऐसे व्यक्ति का रहना जरूरी है जिसको लेकर खासे मजेदार ढंग से उससे रगड़ किया जाए, वरना अड्डेबाजी का अर्थ ही क्या है? बंकुबिहारी को बुला लाओ।

०

आज की अड्डेबाजी में जोर-शोर से बहस-मुबाहसा चल रहा था यानी सैटेलाइट (उपग्रह) के सम्बन्ध में चर्चा चल रही थी। आज ही, सूर्यास्त के कुछ क्षटा पहले उत्तर दिशा के आकाश मे एक गतिमान प्रकाश दीख पड़ा है। तीनेक महीने पहले भी एक बार उसी तरह का प्रकाश दीख पड़ा था और उसके सम्बन्ध मे [illegible] में [illegible] खोज-पड़ताल सिलसिला चला था। बाद मे मालूम [illegible] रूसी था। 'सटका' या 'फोसका'—इसी [illegible] था।

बंकु बाबू का मित्र

बंकु बाबू को कभी किसी ने क्रोध में आते नहीं देखा है। सचमुच अगर वे क्रोध में आ जाएं तब उनका रूप क्या होगा, वे क्या कहेंगे —इसका अनुमान लगाना मुश्किल है।

हालांकि बात ऐसी नहीं है कि क्रोध आने के मौके नहीं आते हैं। पिछले बाईस बरसों से वे कांकुड़गाछी प्राइमरी स्कूल में भूगोल और बंगला पढ़ाते आ रहे हैं। इस अरसे के दरमियान जितने ही छात्र आए और गए मगर बंकुबाबू के पीछे पड़ने का सिलसिला—ब्लैकबोर्ड में उनका चित्र बनाना, उनके बैठने की कुरसी में गोंद लगा देना, दीवाली की रात में उनके पीछे पटाखाबाजी करना—बाईस बरसों से छात्र-परम्परा के रूप में चला आ रहा है।

लेकिन बंकुबाबू कभी गुस्से में नहीं आए। बस, गला खंखारकर इतना ही कहा है, "छिः !"

इसका अवश्य ही कोई कारण है और वह यह कि अगर वे गुस्से में आकर मास्टरी छोड़ देते हैं तो उनके जैसे गरीब आदमी के लिए इस उम्र में कोई मास्टरी या नौकरी ढूंढना बड़ा ही मुश्किल है। और दूसरा कारण यह है, कि पूरे क्लास के शैतान छात्रों के बीच दो-चार भले छात्र अवश्य रहते हैं; उन लोगों से मेल-जोलकर तथा उन्हें पढ़ाकर बंकु बाबू को इतना आनन्द प्राप्त होता है कि इसी से उनकी मास्टरी सार्थक हो जाती है। ऐसे छात्रों को वे यदा-कदा अपने घर पर ले आते हैं। उनके बाद कटोरा भर मुरमुरी खिलाकर कहानी के बहाने देश-विदेश की आश्चर्यजनक घटनाएं उन्हें सुनाते हैं। अफ्रीका की कहानी, मेरु की खोज की कहानी, ब्राजिल की आदमखोर मछलियों की कहानी, समुद्र-गर्भ में समाए हुए एटलेन्टिस महादेश की कहानी—बंकुबाबू इन सबों का वर्णन बड़े ही चमत्कारिक तरीके से करते हैं।

शनि और रविवार की शाम के वक्त बंकु बाबू गांव के वकील श्रीपति मजुमदार के अड्डे में शामिल होते हैं। बहुत बार उन्होंने सोचा है, अब नहीं जाऊंगा, अबकी आखिरी बार जा रहा हूं। छात्रों की टिटकारी

बरदाश्त करने लायक हो जाने के बावजूद बूढ़ों का उनके पीछे पड़ना उन्हें बरदाश्त नहीं होता। इस बैठक में उन्हें केन्द्र बनाकर जो हंसी-दिल्लगी चलती है, वह सचमुच कभी-कभी बरदाश्त के बाहर हो जाती है।

यही तो उस दिन की बात है, दो महीने भी न गुजरे होंगे, भूत-प्रेत की बातें चल रही थी। बंकु बाबू यों सबके सामने अपनी राय जाहिर करने के अभ्यस्त नहीं हैं। न जाने उस दिन क्या हुआ कि वे कह बैठे कि वे भूत-प्रेत से नहीं डरते हैं। अब जाएं तो कहां जाएं! ऐसे मौके को लोग भला हाथ से जाने दें! रात में घर लौटते समय बंकु बाबू की रास्ते मे बड़ी ही दुर्गति हुई। मित्तिर खानदान के इमली के पेड़ के तले कोई लिकलिक लम्बा आदमी अपनी देह मे भूसा वगैरह लगाकर अंधेरे में उनके बदन पर कूद पड़ा। यह काम इसी अड्डे के षड्यंत्र के अलावा और हो ही क्या सकता है!

बंकु बाबू को डर नहीं लगा। तब हां, चोट अवश्य ही लगी थी। तीन दिनों तक उनकी गरदन में दर्द रहा था। और, सबसे जो बड़ी बात हुई वह यह कि उनके नये कुरते में स्याही वगैरह लग गई थी तथा वह कई जगह फट भी गया था। भला, यह कोई मजाक मे मजाक है!

इसके अलावा उनके पीछे पड़ने का धंधा लगा ही हुआ है। जैसे छाता या जूता छिपा देना, पान में असली मसाले की जगह मिट्टी मिला देना, जोर-जबरन गीत गाने को बाध्य करना इत्यादि।

फिर भी उन्हें अड्डे पर आना पड़ता है। न आने पर श्रीपति बाबू पता नहीं, क्या सोचें। एक तो वे गांव के गण्यमान्य व्यक्ति हैं, दिन को रात और रात को दिन बनाने की उनमे सामर्थ्य है, उस पर बंकुबाबू न हो तो उनका काम चल नहीं सकता। उनका कहना है : एक ऐसे व्यक्ति का रहना जरूरी है जिसको लेकर खासे मजेदार ढंग से उससे रगड़ किया जाए, वरना अड्डेबाजी का अर्थ ही क्या है? बंकुबिहारी को बुला लाओ।

○

आज की अड्डेबाजी में ज़ोर-शोर से बहस-मुबाहसा चल रहा था यानी सैटेलाइट (उपग्रह) के सम्बन्ध में चर्चा चल रही थी। आज ही, सूर्यास्त के कुछ क्षण पहले उत्तर दिशा के आकाश में एक गतिमान प्रकाश दीख पड़ा है। तीनेक महीने पहले भी एक बार उसी तरह का प्रकाश दीख पड़ा था और उसके सम्बन्ध मे अड्डे में काफी खोज-पड़ताल का सिलसिला चला था। बाद में मालूम हुआ था कि वह एक रूसी उपग्रह था। 'खटका' या 'फोसका'—इसी किस्म का कुछ उसका नाम था। सुनने

में आया है कि वह चार सौ मील ऊपर पृथ्वी के चारों तरफ घूम रहा है और वैज्ञानिकों को उससे नये नये तथ्यों की जानकारी प्राप्त हो रही है।

आज के प्रकाश को बड़ बाबू ने सबसे पहले देखा था। उसके बाद उन्होंने ही निधु मुख्तार को बुलाकर दिखाया था।

किन्तु अड्डे पर पहुंचने के बाद बड़ बाबू ने पाया कि निधु बाबू ने सबसे पहले प्रकाश पर दृष्टि पड़ने का श्रेय येनकेन प्रकारेण अपने आपको दे डाला है और इस वजह से अपनी बहुत ही तारीफ कर रहे हैं। बड़ बाबू ने कुछ भी न कहा।

उपग्रह के सम्बन्ध में यहां किसी को कोई विशेष जानकारी नहीं है, लेकिन पृथ्वी पार करने के लिए टिकट नहीं खरीदनी पड़ती है या झांकने से पुलिस नहीं पकड़ती है इसलिए सभी बातों की रफूगरी कर रहे हैं।

चंडी बाबू ने कहा, "चाहे जो कहो भैया, यह सब उपग्रह वगैरह के सम्बन्ध में माथा-पच्ची करना हमें शोभा नहीं देता। हम लोगों के लिए जैसा वह है, सांप के माथे पर मणि होना वैसा ही है। कहां आकाश के किस कोने में प्रकाश का एक बिन्दु देख लिया है और उसी के सम्बन्ध में अखबारों में लिख रहा है और उसी को पढ़कर तुम इस बैठक में पान चबाते-चबाते वाहवाही लूट रहे हो। मानो, यह तुम्हारी ही कीर्ति हो, तुम्हारा ही गौरव हो। तालियों की तड़तड़ाहट जैसे तुम्हें ही मिलनी चाहिए। हु !"

रामकन्हाई की उम्र कम है। वह बोला, "चाहे मेरा कारनामा न हो, मगर है तो आदमी का ही। सबसे श्रेष्ठ मनुज है जग में।"

चंडी बाबू ने कहा, "अरे, रहने दो। बेवजह की···आदमी ने नहीं तो क्या बन्दर ने उपग्रह बनाया है? मनुष्य के अतिरिक्त है ही क्या?"

निधु मुख्तार ने कहा, 'ठीक है। उपग्रह की बात रहे। उसके अन्दर कोई आदमी नहीं है, सिर्फ एक यंत्र ही चक्कर काट रहा है। सो तो लट्टू भी चक्कर काटती है। स्विच दबा देने से पंखा भी घूमने लगता है। खैर। मगर रॉकेट? रॉकेट की बात यों ही अनदेखी नहीं की जा सकती है।"

चंडी बाबू ने मुंह बिदकाकर कहा, "रॉकेट! अरे, रॉकेट धोकर तो तुम्हें पीना नहीं है। रॉकेट! मैं दाद देता अगर यह हमारे मुल्क में तैयार होता, किले के मैदान से छोड़ने से अगर चंद्रमा तक पहुंच जाता, हम टिकट खरीदकर देख आते तो इसका कोई मानी होता।"

रामकन्हाई ने कहा, "आपने ठीक कहा है। हम लोगों के लिए रॉकेट जैसा, घोड़े का अंडा भी वैसा ही।"

भैरव चक्रवर्ती ने कहा, "मान लो, दूसरे-दूसरे ग्रहों से कोई चीज इस

पृथिवी पर आती है···"

"आने से क्या होगा ? हम-तुम तो उसे देख न पाएंगे।"

"सो तो ठीक है।"

अड्डे के सभी सदस्यों ने चाय की प्याली को होंठों से लगाया। इसके बाद अब बातचीत का सिलसिला चल नहीं सकता।

तभी बंकू ने एक कास का टुकड़ा उठाकर धीरे से कहा, "अगर यही आ जाए ?"

निधु बाबू ने अवाक् होने का बहाना करते कहा, "बंका अब क्या कह रहा है जी ? अयं ! कौन यहां आयेगा ? कहां से आयेगा ?"

बंकू बाबू ने फिर आहिस्ता से कहा, "दूसरे ग्रह से कोई आदमी वगैरह···"

भैरव चक्रवर्ती ने अपनी आदत के अनुसार बंकू बाबू की पीठ पर एक धौल जमाते हुए दांत निपोरकर कहा, "वाह, बंकू बिहारी, वाह ! दूसरे ग्रह से आदमी यहां आएगा ? इस घनघोर दिहात में ? लंदन में नहीं, मास्को में नहीं, न्यूयार्क में भी नहीं यहां तक कि कलकत्ते में भी नहीं—बल्कि कांकुड़ गाछी में ? तुम्हारा शौक तो कम मालूम नहीं होता।"

बंकू बाबू चुप हो गए। लेकिन उनका मन कहने लगा, यह असंभव ही कैसे हो सकता है ? बाहर से जो आते हैं, उनका उद्देश्य रहता है पृथिवी पर आना। उतना हिसाब करके अगर न ही आये ? कांकुड़ गाछी में न आना जैसे सम्भव है उसी तरह आना भी तो संभव है।

श्रीपतिबाबू ने अब तक अपना कोई विचार प्रकट नहीं किया था। अब वे सम्भल कर बैठ गए और सभी का ध्यान उनकी तरफ खिंच गया। वे चाय का गिलास रखकर अभिज्ञ की तरह गम्भीर आवाज में बोले, "देखो, दूसरे ग्रह से अगर आदमी आयेगा भी तो इस गए-गुजरे देश में नहीं आयेगा। मेरी यह बात गांठ बांधकर रख लो। खा-पीकर मगन रहना ही उनका काम नहीं है। और वे इतने बेवकूफ भी नहीं हैं। मुझे विश्वास है कि वे लोग साहब क्लास के हैं और आकर उतरेंगे भी तो साहबों के मुल्क में ही—पश्चिम में। समझ रहे हो न ?"

बंकू बाबू के अतिरिक्त सभी ने हामी भरी।

चंडी बाबू ने निधु मुक्तार की कमर पर एक थाप जमाकर बंकू बाबू की ओर इशारा किया और नकियाते हुए कहा, "मुझे तो भैया, लग रहा कि बंकू ठीक ही कह रहा है। जहां बंकुबिहारी के जैसा आदमी है वहां लोगों के लिए आना स्वाभाविक है। कहो, निधु, ठीक कह रहा हूं न मान लो, अगर कोई स्पेसिमेन (नमूना) ले जाना होगा तो बंकू के अ

दूसरा कौन आदमी मिलेगा ?"

निधु मुक्तार ने हा मे हा मिलाते हुए कहा, "ठीक कह रहे हो। चाहे अक्ल को बात हो, चाहे चेहरे की या चाहे ताकत की, वाका बिलकुल आदर्श है।"

रामकन्हाई ने कहा, "एकदम जादूघर में रखने लायक है। या चिड़ियाघर में।"

बकु बाबू ने मन-ही-मन कहा, 'अगर नमूने की बात ही ली जाए तो ये लोग ही क्या उन्नीस हैं ? यह जो श्रीपति बाबू हैं, उनका थुथना ऊंटे की तरह है। और वह भैरव चक्रवर्ती—कछुए की तरह इनकी आंखें हैं, निधु मुक्तार छछूंदर है, रामकन्हाई बकरी, चडी बाबू, चमगादड़। अगर चिड़ियाघर में ही रखना होगा तो…'

बकु बाबू की आखों मे आंसू उमड़ आए। वे उठकर खड़े हो गए। सोचा था, आज अड्डेबाजी जमेगी। उनका मन उदास हो गया। अब रहना बेकार है।

"यह क्या, जा क्यों रहे हो जी ?" श्रीपति बाबू ने चिन्ता के स्वर में कहा।

"हा, रात हो चुकी है।"

"रात कहा हुई है ? कल तो छुट्टी का दिन है। बैठो, चाय पीकर जाना।"

"नही। अब जा रहा हूं। परीक्षा की कुछ कॉपियां हैं। नमस्कार !"

रामकन्हाई ने कहा, "देखिएगा, बंकुदा, आज अमावस्या है। मगलवार को आदमी के साथ-साथ भूतों की संख्या मे भी वृद्धि होती है।"

o

बकु बाबू को पंचाघोष की बंसवारी के बीच प्रकाश दिखाई पड़ा। उनके हाथ मे कोई रोशनी नही थी। सरदी का मौसम रहने के कारण सांप का डर नही था। इसके अलावा रास्ता भी जाना-पहचाना था। यों उस रास्ते से लोग-बाग कम ही गुजरते हैं। बकु बाबू के लिए यह रास्ता शार्ट-कट है, इसलिए वे इस रास्ते से आते-जाते हैं।

कुछ देर पहले से ही उनके मन मे एक तरह का खटका पैदा हो रहा था। और-और दिनों के बजाय एक दूसरी ही तरह का भाव। लेकिन वह [illegible] आज बंसवारी

[illegible] कुल नही आ

[illegible] वे बंसवारी

के जितना अन्दर घुसते थे, झींगुरों की आवाज उतनी ही बढ़ती जाती थी। आज उलटी ही बात है। यही वजह है कि इतना सन्नाटा रेंग रहा है।

बात क्या है ? झींगुरों का दल नींद में खो गया है क्या ?

सोच ही रहे थे कि बीसेक हाथ दूर, पूरब दिशा में प्रकाश देखा।

शुरू में उन्हें लगा, आग लगी है। बंसवारी के बीच खाली स्थान में, जहां डबरा है, उसके चारों ओर काफी दायरे के दरमियान डाल और पत्तों पर एक गुलाबी आभा छाई हुई है। नीचे, डबरे की तमाम जगह को घेर-कर गुलाबी आभा फैली है। लेकिन आग नहीं है, क्योंकि वह प्रकाश स्थिर है।

बंकू बाबू आगे बढ़ने लगे।

कानों में एक तरह की आवाज आ रही है। मगर वह समझ के बाहर है। एकाएक कान बन्द करने से जिस तरह री-री-री-री-री-री आवाज होती है वह आवाज भी ठीक उसी तरह की है।

बंकू बाबू की देह यद्यपि सिहर रही है, फिर भी एक अदम्य कुतूहल के वशीभूत होकर वे आगे बढ़ते जा रहे हैं।

डबरे से तीस हाथ की दूरी पर, बड़ी बंसवारी पार करने के बाद उनकी निगाह उस वस्तु पर गई। एक विशालकाय, उलटकर रखे हुए शीशे के कटोरे की सी वस्तु, पूरे डबरे को घेरकर पड़ी हुई है और उसके स्वच्छ-प्राय छाजन में से एक तीव्र, लेकिन स्निग्ध गुलाबी आभा छिटक रही है, जो समूचे वन को प्रकाशमान कर रही है।

बंकू बाबू ने ऐसा आश्चर्यजनक दृश्य स्वप्न में भी न देखा था।

बंकू बाबू कुछ देर तक घनघोर आश्चर्य में डूबते-उतरते रहे, उसके बाद उन्होंने देखा, वह वस्तु स्थिर होने पर भी निर्जीव नहीं है। धीमे स्पन्दन की झलक मिल रही है। श्वास-प्रश्वास लेने पर जिस तरह आदमी की छाती धड़कती है, उसी तरह वह वस्तु हिल-डुल रही है।

अच्छी तरह से देखने के लिए बंकू बाबू ज्यों ही चार हाथ आगे बढ़े होंगे कि उनके शरीर में विद्युत प्रवाह दौड़ने लगा। दूसरे ही क्षण उन्हें महसूस हुआ कि उनके हाथ और पैर किसी अदृश्य बंधन से बंध गए हैं। अब उनके शरीर में शक्ति नामक चीज नहीं है। वह न तो आगे बढ़ पा रहे हैं और न पीछे ही हट पा रहे हैं।

कुछ देर तक इसी प्रकार जड़वत् खड़े रहने के बाद बंकू बाबू ने देखा, उस वस्तु का स्पन्दन धीरे-धीरे थम गया और वह शब्द जो कानों को प्रिय लग रहा था, एकाएक रुक गया। उसके बाद एकाएक रात की निस्तब्धता भंग कर बहुत-कुछ आदमी की तरह, पर अत्यन्त ही महीन गले की चिल्ला-

दूसरा कौन आदमी मिलेगा ?"

निधु मुक्तार ने हां में हां मिलाते हुए कहा, "ठीक कह रहे हो। चाहे अक्ल की बात हो, चाहे चेहरे की या चाहे ताकत की, बांका बिलकुल आदर्श है।"

रामकन्हाई ने कहा, "एकदम जादूघर में रखने लायक है। या चिड़ियाघर में।"

बंकु बाबू ने मन-ही-मन कहा, 'अगर नमूने की बात ही ली जाए तो ये लोग ही क्या उन्नीस हैं ? यह जो श्रीपति बाबू हैं, उनका थुथना ऊंटे की तरह है। और वह भैरव चक्रवर्ती—कछुए की तरह इसकी आंखें हैं, निधु मुक्तार छछूंदर है, रामकन्हाई बकरी, चंडी बाबू, चमगादड़। अगर चिड़ियाघर में ही रखना होगा तो···'

बंकु बाबू की आंखों में आंसू उमड़ आए। वे उठकर खड़े हो गए। सोचा था, आज अड्डेबाजी जमेगी। उनका मन उदास हो गया। अब रहना बेकार है।

"यह क्या, जा क्यों रहे हो जी ?" श्रीपति बाबू ने चिन्ता के स्वर में कहा।

"हां, रात हो चुकी है।"

"रात कहां हुई है ? कल तो छुट्टी का दिन है। बैठो, चाय पीकर जाना।"

"नहीं। अब जा रहा हूं। परीक्षा की कुछ कॉपियां हैं। नमस्कार !"

रामकन्हाई ने कहा, "देखिएगा, बंकुदा, आज अमावस्या है। मंगलवार को आदमी के साथ-साथ भूतों की संख्या में भी वृद्धि होती है।"

o

बंकु बाबू को पचाघोष की बंसवारी के बीच प्रकाश दिखाई पड़ा। उनके हाथ में कोई रोशनी नहीं थी। सरदी का मौसम रहने के कारण सांप का डर नहीं था। इसके अलावा रास्ता भी जाना-पहचाना था। यों उस रास्ते से लोग-बाग कम ही गुजरते हैं। बंकु बाबू के लिए यह रास्ता शार्ट-कट है, इसलिए वे इस रास्ते से आते-जाते हैं।

कुछ देर पहले से ही उनके मन में एक तरह का खटका पैदा हो रहा था। और-और दिनों के बजाय एक दूसरी ही तरह का भाव। लेकिन वह क्या है, समझ नहीं पा रहे थे। अचानक उन्हें याद आया, आज बंसवारी में झींगुरों की आवाज नहीं गूंज रही है। नहीं, आवाज बिलकुल नहीं आ रही है। यही तो और-और दिनों से अन्तर है। और-और दिन वे बंसवारी

के जितना अन्दर घुसते थे, झींगुरों की आवाज उतनी ही बढ़ती जाती थी। आज उलटी ही बात है। यही वजह है कि इतना सन्नाटा रेंग रहा है।

बात क्या है? झींगुरों का दल नींद में खो गया है क्या?

सोच ही रहे थे कि बीसेक हाथ दूर, पूरब दिशा में प्रकाश देखा।

शुरू में उन्हें लगा, आग लगी है। बंसवारी के बीच खाली स्थान में, जहां डबरा है, उसके चारों ओर काफी दायरे के दरमियान डाल और पत्तों पर एक गुलाबी आभा छाई हुई है। नीचे, डबरे की तमाम जगह को घेर-कर गुलाबी आभा फैली है। लेकिन आग नहीं है, क्योंकि वह प्रकाश स्थिर है।

बंकू बाबू आगे बढ़ने लगे।

कानों में एक तरह की आवाज आ रही है। मगर वह समझ के बाहर है। एकाएक कान बन्द करने से जिस तरह री-री-री-री-री-री आवाज होती है वह आवाज भी ठीक उसी तरह की है।

बंकू बाबू की देह यद्यपि सिहर रही है, फिर भी एक अदम्य कुतूहल के वशीभूत होकर वे आगे बढ़ते जा रहे हैं।

डबरे से तीस हाथ की दूरी पर, बड़ी बंसवारी पार करने के बाद उनकी निगाह उस वस्तु पर गई। एक विशालकाय, उलटकर रखे हुए शीशे के कटोरे की सी वस्तु, पूरे डबरे को घेरकर पड़ी हुई है और उसके स्वच्छ-प्राय छाजन में से एक तीव्र, लेकिन स्निग्ध गुलाबी आभा छिटक रही है, जो समूचे वन को प्रकाशमान कर रही है।

बंकू बाबू ने ऐसा आश्चर्यजनक दृश्य स्वप्न में भी न देखा था।

बंकू बाबू कुछ देर तक घनघोर आश्चर्य में डूबते-उतरते रहे, उसके बाद उन्होंने देखा, वह वस्तु स्थिर होने पर भी निर्जीव नहीं है। धीमे स्पन्दन की झलक मिल रही है। श्वास-प्रश्वास लेने पर जिस तरह आदमी की छाती धड़कती है, उसी तरह वह वस्तु हिल-डुल रही है।

अच्छी तरह से देखने के लिए बंकू बाबू ज्यों ही चार हाथ आगे बढ़े होंगे कि उनके शरीर में विद्युत प्रवाह दौड़ने लगा। दूसरे ही क्षण उन्हें महसूस हुआ कि उनके हाथ और पैर किसी अदृश्य बंधन से बंध गए हैं। अब उनके शरीर में शक्ति नामक चीज नहीं है। वह न तो आगे बढ़ पा रहे हैं और न पीछे ही हट पा रहे हैं।

कुछ देर तक इसी प्रकार जड़वत् खड़े रहने के बाद बंकू बाबू ने देखा, उस वस्तु का स्पन्दन धीरे-धीरे थम गया और वह शब्द जो कानों को प्रिय लग रहा था, एकाएक रुक गया। उसके बाद एकाएक रात की निस्तब्धता भंग कर बहुत-कुछ आदमी की तरह, पर अत्यन्त ही महीन गले की चिल्ला-

हट सुनाई पड़ी, "मिलिपिपिंग ब्यूक, मिलिपिपिंग ब्यूक।"

बंकु बाबू चिहुककर जड़वत् हो गए। बाप रे, यह कौन-सी भाषा है और जो बोल रहा है, वह है कहां ?

दूसरी चिल्लाहट सुनते ही बंकु बाबू की छाती धौंकनी की तरह चलने लगी।

"हू आर यू ? हू आर यू ?"[1]

यह तो अंग्रेजी है। हो सकता है उन्हीं से सवाल किया जा रहा है।

बंकु बाबू ने थूक निगलकर कहा, "आइ एम बंकु बिहारी सर—बंकु बिहारी दत्त।"[2]

सवाल पूछा गया, "आर यू इंगलिश ? आर यू इंगलिश ?"[3]

बंकु बाबू ने चिल्लाकर कहा, "नो सर। बेंगाली कायस्थ सर।"[4]

थोड़ी देर तक चुप्पी छाई रही, उसके बाद स्पष्ट उच्चारण में शब्द बाहर आया, "नमस्कार !"

बंकु बाबू ने राहत की सांस लेकर कहा, "नमस्कार !" इतना कहते ही उन्हें महसूस हुआ, उनके हाथ और पैरों का अदृश्य बंधन अपने आप खुल गया है। वे चाहते तो भाग सकते थे, पर भागे नहीं। क्योंकि उन्होंने देखा, उस विशालकाय शीशे के स्तूप का एक हिस्सा आहिस्ता-आहिस्ता दरवाजे की तरह खुल गया।

उस दरवाजे से शुरू में चिकने बॉल की तरह का एक सिर बाहर निकला, उसके बाद एक अद्भुत प्राणी का शरीर।

सिर के अलावा लम्बे-छरहरे शरीर का तमाम हिस्सा एक झलमलाती गुलाबी आभा से ढका था। चेहरे पर कान और नाक के स्थान पर दो-दो और होंठ के स्थान पर एक छेद थे। रोआं या बाल का कहीं नामोनिशान नहीं था। हल्दी के रंग की दोनों गोल-गोल आंखें इस तरह चमक रही थीं जैसे कोई रोशनी जल रही हो।

वह आदमी धीरे-धीरे बंकु बाबू की ओर आया और तीन हाथ के फासले पर रुककर उनकी ओर अपलक ताकने लगा। बंकु बाबू के हाथ अपने आप जुड़ गए।

लगभग एक मिनट तक देखने के बाद वह प्राणी बांसुरी की तरह महीन आवाज में बोला, "तुम मनुष्य हो ?"

बंकु बाबू ने कहा, "हां।"

---

1. तुम कौन हो ?
2. मैं बंकु बिहारी हूं, सर।
3. क्या तुम अंग्रेज हो ?
4. नहीं सर, मैं बंगाली कायस्थ हूं।

प्राणी बोला, "यह पृथिवीलोक है ?"

बंकु बाबू बोले, "हां।"

"ठीक ही समझा हूं। यन्त्रों ने गड़बड़ी पैदा की है। प्लुटो में जाने की बात थी। मन में एक प्रकार का सन्देह था, यही वजह है कि शुरू में तुमसे प्लुटो भाषा में सवाल किया था। जब देखा, तुम कोई जवाब न दे रहे हो तो समझ गया, पृथिवी पर आ पहुंचा हूं। मेहनत बेकार साबित हुई। छिः छिः इतनी दूर आने पर ! और एक बार ऐसा ही हुआ था। जाना था बुध पर और चला गया बृहस्पति पर। एक दिन का अन्तर हुआ, और क्या, हें हें हें।"

बंकु बाबू क्या कहें, उनकी समझ में नहीं आया। इसके अलावा उन्हें यों ही बेचैनी जैसी लग रही थी, क्योंकि वह प्राणी अपनी पतली-पतली उंगलियों से उनके हाथ-पैर दबा-दबाकर देखने लगा था।

दबाना बन्द करके वह प्राणी बोला, "मैं केनियस ग्रह का मांग हूं। आदमी से बहुत ही ऊंचे स्तर का प्राणी।"

यह लिकलिक-सा चार फुट का प्राणी मनुष्य से ऊंचे स्तर का है ? कहने से ही हो गया ? बंकु बाबू को हंसने की इच्छा हुई।

लेकिन आश्चर्य की बात, उस प्राणी ने बंकु बाबू के मन का भाव समझ लिया। वह बोला, "इसमें अविश्वास करने की कोई बात नहीं। इसका सबूत है।···तुम कितनी भाषाएं जानते हो ?"

बंकु बाबू ने सर खुजलाते हुए कहा, "बंगला, अंग्रेजी और वो हिन्दी यानी···"

"यानी ढाई भाषाएं।"

"हां वह···"

"मैं चौदह हजार भाषाएं जानता हूं। तुम्हारे सौर जगत् में ऐसी कोई भाषा नहीं, जिसे मैं न जानता होऊं। इसके अलावा दूसरे-दूसरे एकतीस ग्रहों की भाषाओं की मुझे जानकारी है। इनमें से पचीस ग्रहों में मैं खुद जा चुका हूं। तुम्हारी उम्र कितनी है ?"

"पचास।"

"मेरी उम्र है आठ सौ तैंतीस वर्ष। तुम जानवर खाते हो ?"

बंकु बाबू ने अभी-अभी कुछ दिन पहले काली पूजा में बकरे का मांस खाया था। इनकार करें तो कैसे ?

यांग ने कहा, "हम नहीं खाते। कुछ सौ साल पहले ही हमने छोड़ दिया है। पहले खाते थे। हो सकता है मैं तुम्हें भी खा जाता।"

बंकु बाबू भय से सिहर उठे।

"यह वस्तु देख रहे हो न ?"

याग ने कंकड की तरह एक वस्तु बंकु बाबू के हाथ मे रख दी। उसे हाथ मे लेते ही बंकु बाबू के सर्वांग में ऐसी सिहरन दौड गई कि उन्होंने तत्काल उस पत्थर को वापस कर दिया।

यांग ने हंसकर कहा, "चूंकि यह वस्तु मेरे हाथ में थी, इसलिए तुम उस वक्त आगे नही बढ पाए। कोई आगे नही बढ सकता है। दुश्मन को बिना घायल किए शक्तिहीन बना देने वाली ऐसी कोई दूसरी वस्तु नहीं है।"

बंकु बाबू अब सचमुच हैरान हो गए—हैं !

याग ने कहा, "ऐसी कोई जगह या दृश्य बताओ जिसे तुम देखना चाहते हो पर देखना संभव नही हो पाता हो।"

बंकु बाबू ने सोचा, सारी दुनिया ही देखने को बाकी रह गई है। भूगोल पढाता हू मगर बगाल के कुछ गाव और शहर के अलावा मैंने देखा ही क्या है ? बगाल को ही पूरा कहां देख पाया हूं ? हिमालय की बर्फ नहीं देखी है, दीघा का समुद्र नही देखा है, सुन्दरवन का जगल नही देखा है—यहा तक कि शिवपुर के बगीचे के बरगद के उस दरख्त तक को मैंने नहीं देखा है।

-बंकु बाबू ने कहा, "मैंने बहुत कुछ देखा ही नहीं है। जैसे गरम मुल्क के आदमी। इसलिए उत्तरी ध्रुव को देखने की बडी ही इच्छा होती है।"

याग ने शीशा लगी हुई एक नली निकालकर बंकु बाबू के चेहरे के सामने रखा और कहा, "इसे आंखों पर लगाओ।"

आखो पर लगाते ही बंकु बाबू के रोंगटे खड़े हो गए। यह क्या सम्भव है ? उनकी आखो के सामने बर्फ की मरुभूमि फैली है। उस मरुभूमि के बीच-बीच मे मस्तक ऊचा किए पर्वत के समान तुषारखंड खडे हैं। ऊपर, चटख नीले आकाश मे इन्द्रधनुष के रंगो में बने चित्र क्षण-क्षण रूप बदल रहे हैं···अरोरा बोरियालिस। वह क्या है ? वह क्या है ? इगलू वह रहा ध्रुवीय भालू का झुण्ड। और वह पेंगुइन की जमात। वह कौन-सा बीभत्स जानवर है ? गौर से देखने के बाद बंकु बाबू ने पहचाना—यह दरियाई घोड़ा है। एक नही, दो हैं। भयंकर लडाई चल रही है। मूली की तरह जुड़े दांतो को एक ने दूसरे के शरीर पर गड़ा दिया। शुभ्र हिम-शय्या पर लाल रक्त की धारा बहने लगी।···

पूस की ठड मे बर्फ का दृश्य देखकर बंकु बाबू के शरीर से पसीना छूटने लगा।

याग ने कहा, "ब्राजिल जाने की तुम्हे इच्छा नही होती है ?"

बंकु बाबू को मांसखोर पिरान्हा मछली की याद आ गई। आश्चर्य है ! इस प्राणी को उनके मन की बातों का कैसे पता चल जाता है ?

बंकु बाबू ने नली को फिर आंखों से लगाया।

घना जंगल। दुर्भेद अंधकार में लता-गुल्मों की फांक से पिघलकर आती हुई धूप की चिगलियां। एक ओर एक विशाल वृक्ष है। उस पर कौन सी चीज़ लटकी हुई है ? बाप रे, इतने बड़े सांप की बंकु बाबू ने कभी कल्पना तक न की थी। अचानक उन्हें याद आया कि कहीं उन्होंने ब्राजील के ऐनाकंडा के बारे में पढ़ा है। यह तो अजगर का बाप है। लेकिन मछली कहां है ? वह रही नहर। दोनों किनारे परती ज़मीन पर घड़ियाल बदन मे धूप लगा रहे हैं। घड़ियालों की जमात पर जमात है। उनमें से एक की देह मे हलचल होती है। वह पानी मे उतरने जा रहा है। वह झपाक से कूद पड़ा। बंकु बाबू को आवाज़ तक सुनाई पड़ी। लेकिन यह क्या हुआ ? घड़ियाल पानी से बिजली की गति से क्यों बाहर निकल आया ? बंकु बाबू ने फटी-फटी आंखों से देखा, घड़ियाल के निचले हिस्से मे मांस नामक चीज़ नहीं के बराबर है, सिर्फ हड्डियां बची हुई हैं। देह के बाकी हिस्से को पांच दांतवाली मछलियां दनादन निगलती जा रही हैं।

बंकु बाबू से अब देखा नहीं गया। उनके हाथ-पैर थरथराने लगे, माथा चकराने लगा।

यांग ने कहा, "अब विश्वास हो रहा है न, कि हम श्रेष्ठ हैं।"

बंकु बाबू ने जीभ से होंठ चाटते हुए कहा, "बात तो सही है। बिलकुल सही। आप लोग असाधारण हैं। हमसे सौ गुना आगे।"

यांग ने कहा, "ठीक है। तुमको देखकर और तुम्हारे हाथ-पांव दबाने के बाद लगता है, निकृष्ट कोटि के प्राणी होने के बावजूद तुम आदमी के लिहाज से बुरे नहीं हो। तब हां, तुम में दोष इतना ही है कि तुम बहुत ज़्यादा निरीह हो और यही वजह है कि तुम जीवन में उन्नति नहीं कर सके। अन्याय का विरोध नहीं करना या चुपचाप अपमान बरदाश्त कर लेना आदमी क्या, किसी भी प्राणी को शोभा नहीं देता। खैर, तुमसे जान-पहचान होने की कोई बात न थी, लेकिन हो गई तो अच्छा ही महसूस हुआ। तब हां, पृथ्वी पर ज़्यादा वक्त बरबाद करने से कोई फायदा नहीं। मैं जा रहा हूं।"

बंकु बाबू ने कहा, "अच्छा, जाइए, यांग बाबू। आपसे जान-पहचान होने के कारण मैं भी बहुत"···

बंकु बाबू का वाक्य पूरा न हो पाया। पलक गिरते न गिरते यांग कब रॉकेट के अन्दर चला गया और कब रॉकेट पंचा घोष की बंसवारी से ऊपर

जाकर आंखों से ओझल हो गया। इसका बंकु बाबू को पता तक न चला। सहसा उन्हें प्रतीत हुआ कि झींगुरों ने फिर से बोलना शुरू कर दिया है। रात काफी ढल चुकी है।

घर लौटते वक्त बंकु बाबू को एक आश्चर्यजनक भाव का बोध हुआ। कितनी बड़ी घटना उनके जीवन में घटित हो गई! कुछ क्षण पहले वे उसे ठीक-ठीक समझ नहीं सके थे। कहां सौर जगत् का कौन-सा ग्रह, जिसका नाम तक किसी ने सुना नहीं, उसी ग्रह का एक आदमी—आदमी नहीं बल्कि याग—आकर उससे बातचीत कर गया। कितने अचरज की बात है! कितना अद्भुत। तमाम दुनिया में और किसी दूसरे से नहीं, सिर्फ उसी से बातचीत की। उनसे यानी बंकु विहारी दत्त, कांकुड़ गाछी प्राइमरी स्कूल के भूगोल और बंगला के शिक्षक से। आज, अभी से अन्ततः एक अनुभव के सन्दर्भ में, वे सारी दुनिया में अकेले हैं।

बंकु बाबू ने देखा, अब वे चल नहीं रहे हैं बल्कि नाच रहे हैं।

०

दूसरे दिन रविवार था। श्रीपति बाबू के मकान पर ज़ोर-शोर से अड्डेबाज़ी जमी थी। कल के प्रकाश की खबर आज अखबार में छपी है लेकिन जो कुछ छपा है, नगण्य ही है। बंगाल के मात्र दो-चार स्थानों में वह प्रकाश देखा गया था। इसीलिए उसे फ्लाइंग सॉसर या उड़नतश्तरी समझा जा रहा था।

आज अड्डे पर पंचा घोष भी पहुंचे हैं। उनकी चालीस बीघे की बंसवारी में जो डबरा है उसके चारों तरफ के बांसों में से दस बांस रातों रात नंगे हो गये हैं। सरदियों में बांस के पत्ते झरते ज़रूर हैं मगर एकाएक इस तरह ठूंठ हो जाना बड़ा ही अस्वाभाविक है। इसी विषय पर बातचीत का दौर चल रहा था कि तभी भैरव चक्रवर्ती ने एकाएक कहा, "आज बंकु को आने में देर क्यों हो रही है?"

बात तो सही है, अब तक किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया था।

निधु मुक्तार ने कहा, "बांका क्या आज आसानी से इधर आएगा? कल ज़बान खोलने के कारण उसकी इतनी दुर्गति हुई थी कि कुछ मत पूछो।"

श्रीपति बाबू ने चिन्ता के स्वर में कहा, "यह कहने से कैसे चलेगा? बंकु का होना ज़रूरी है। राम कन्हाई, तुम जाओ और उसे पकड़कर यहां ले आओ।"

"चाय पी लूं फिर जाऊंगा", इतना कहकर रामकन्हाई चाय की प्याली

को होंठों से लगाने ही जा रहा था कि बंकु बाबू ने कमरे में प्रवेश किया।

'प्रवेश किया' कहना पर्याप्त नहीं लगता है। मानो, तूफ़ान के एक हल्के झोंके ने कमरे में अन्दर आकर सबको हैरत में डाल दिया।

उसके बाद तूफ़ान का खेल शुरू हुआ। शुरू में बंकु बाबू ने एक मिनट तक कहकहा लगाया—ऐसा कहकहा इसके पहले किसी ने कभी सुना न था। खुद बंकु बाबू ने भी न सुना था।

उसके बाद हंसना रोककर, ज़ोरों से खखार कर, गम्भीर स्वर में कहना शुरू किया : दोस्तो ! मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ आपको यह सूचना दे रहा हूं कि इस अड्डे पर मेरा आज का आना आखिरी आना है। आप लोगों के दल को त्यागने के पूर्व आप लोगों के सामने कुछ शब्द प्रकट करना चाहता हूं और मैं इसी उद्देश्य से यहां आया हूं। नम्बर एक—जो सब पर लागू होता है—आप लोग सभी बेकार का बकवास करते हैं। जिस विषय की जानकारी न हो और उस पर बहुत ज़्यादा बोला जाए तो लोग बोलने वाले को बेवकूफ़ कहते हैं। नम्बर दो—यह बात मैं चंडीबाबू से कह रहा हूं—आप लोगों की जितनी उम्र हो चुकी है, उस उम्र में दूसरे का छाता-जूता छिपा देना न केवल अन्याय है, बल्कि बचपना भी है। कृपया मेरा छाता और कत्थई कैनवॅस् के जूते कल तक मेरे घर पहुंचा दें। निधु बाबू, आप अगर मुझे बांका कहकर पुकारिएगा तो मैं आपको जोका कहकर पुकारूंगा। आपको यह बात समझ लेनी चाहिए। और श्रीपति बाबू, आप गण्यमान्य व्यक्ति हैं, आपको मुसाहिबों की ज़रूरत है। मगर आप समझ लें कि मैं उस दल में नहीं हूं। अगर आप कहें तो मैं अपनी पालतू बिल्ली आपके पास भेज दे सकता हूं। वह बहुत ही अच्छे तरीके से पांव चाट सकती है।···अरे, पंचा बाबू भी आए हैं। आपको भी समाचार दे दूं—कल रात क्रेनियस ग्रह से यांग नाम का व्यक्ति आकर बसवारी के डबरे में उतरा था। वह आदमी—यूड़ी, यांग बड़ा ही भला है।"

यह कहकर बंकु बाबू ने अपने बाए हाथ से भैरव चक्रवर्ती की पीठ पर एक चपत जमाई और दर्प के साथ कमरे से बाहर निकल आए।

ठीक उसी क्षण रामकन्हाई के हाथ से चाय से भरी प्याली नीचे गिर पड़ी और सभी के कपड़े-लत्ते गरम चाय से तर हो गए।

विपिन चौधरी का स्मृतिभ्रम

विपिन चौधरी हर सोमवार को दफ्तर से लौटने के वक्त न्यू मार्केट के कालीचरण की दुकान से किताबें खरीदा करते हैं। जासूसी किताबें, रहस्य रोमांच की पुस्तकें, भूत-प्रेत की कहानियां। एक साथ कम से कम पांच पुस्तकें बिना खरीदे उनके हफ्ते भर का खुराक पूरा नही होता है। घर पर वे अकेले हैं। लोगो से मिलना-जुलना उन्हे अच्छा नही लगता, अड्डेबाजी करने का नशा नही है, दोस्त-मित्रों की संख्या भी बहुत कम है। शाम के समय जो आदमी काम से उनके घर आते हैं, काम खत्म होते ही वे वापस चले जाते हैं। जो लोग उठते नही या उठना नही चाहते, उन्हें आठ बजते ही विपिन बाबू उनसे कहते हैं, "डाक्टरों ने मुझे आदेश दिया है कि साढ़े आठ तक मैं भोजन कर लिया करूं। अन्यथा मत लें···" खाना खाने के बाद वे आधे घंटे तक विश्राम करते हैं, उसके बाद हाथ में कहानी की किताब लेकर सीधे बिस्तर पर चले जाते हैं। यह नियम कितने दिनों से चल रहा है। खुद विपिन बाबू को इसके बारे में पता नही है।

आज कालीचरण की दुकान मे किताबों को उलटते-पुलटते समय विपिन बाबू को लगा, कोई आदमी कुछ देर से उनकी बगल मे खड़ा है। विपिन बाबू ने सिर उठाकर देखा। एक मोटा थुलथुले बदन का आदमी चेहरे पर सरलता का भाव लिए उनकी ओर देखकर मुसकरा रहा है।

"शायद आप मुझे पहचान नही रहे हैं ?"

विपिन बाबू को थोड़ी-बहुत घबराहट महसूस हुई। उन्हें यह बात कहा याद आ रही है कि उस व्यक्ति को वे जानते-पहचानते हैं। ऐसा कोई चेहरा भी उन्हें याद नही आ रहा है।

"यह जरूर है कि आप व्यस्त आदमी हैं। बहुत तरह के आदमियों से हर रोज आपकी मुलाकात होती है, इसीलिए शायद···"

"आपसे इसके पहले मेरी जान-पहचान हुई थी ?" विपिन बाबू ने पूछा।

उस आदमी ने तनिक हैरत मे आकर कहा, "सात दिनो तक दोनो वक्त आपसे भेंट होती रही है। मैंने गाड़ी का इन्तजाम कर दिया, उसी

गाड़ी से आप हुंड्रू का जलप्रपात देख आए। यह बात उन्नीस सौ अट्ठावन की है—रांची की। मेरा नाम है परिमल घोष।"

"रांची ?" अब विपिन बाबू की समझ में आया, गलती उनकी नहीं, उसी व्यक्ति की है। क्योंकि विपिन बाबू आज तक रांची नही गए हैं। जाने के बारे मे बहुत बार सोचा था, लेकिन जाना हो नहीं पाया। विपिन बाबू ने मुसकराकर कहा, "मैं कौन हूं—यह आप जानते हैं ?"

उस आदमी ने आश्चर्य में आकर कहा, "आप कौन है, यह बात भला मैं नही जानूंगा ? आप क्या कह रहे हैं ? विपिन चौधरी को कौन नही जानता ?"

विपिन बाबू ने बाहर की ओर ताकते हुए मीठे स्वर में कहा, "फिर भी आप गलती मे हैं। बीच-बीच मे ऐसा होता है। मैं कभी रांची नही गया हूं।"

अब उस आदमी ने ज़ोरों का एक ठहका लगाया।

"आप क्या कह रहे हैं मिस्टर चौधरी ? जलप्रपात देखने के लिए जाने पर आपको पत्थर से चोट लगी और आपका घुटना छिल गया था। मैंने ही आइडिन लाकर दिया था। दूसरे दिन नेतरहाट जाने के लिए मैं गाडी लेकर आया था। पाव मे दर्द रहने के कारण आप जा नही सके थे। कुछ भी आपको याद नही आ रहा है ? आपकी जान-पहचान के एक व्यक्ति भी उस बार गए थे—दीनेश मुखर्जी। आपने एक बंगला किराये पर लिया था। आपने बताया था, होटल मे भोजन करना आपको अच्छा नहीं लगता है। अच्छा यही रहेगा कि बावर्ची रखकर रसोई बनवा लिया करेंगे। दीनेश मुखोपाध्याय अपनी बहन के घर पर ठहरे थे। चांद पर जाने के बारे मे आप दोनो मे एक दिन बहस छिड़ गई थी। आपको याद नही आ रहा ? सब भुला बैठे ? और बताऊ, आपके कंधे पर एक झोला लटक रहा था और उसमे कहानी की किताबें थी। आप बाहर जाते थे तो उसे साथ ले लेते थे। कहिए, ठीक कह रहा हूं न ?"

विपिन बाबू ने गम्भीर और सयत स्वर मे कहा, "आप अट्ठावन के किस महीने की बात कह रहे हैं ?"

उस आदमी ने कहा, "महालया के ठीक बाद की बात है। या तो आसिन या कार्त्तिक महीना होगा।"

विपिन बाबू ने कहा, "जी नही। उस वर्ष पूजा के अवसर पर मैं कानपुर में अपने एक मित्र के मकान पर था। आप गलती कर रहे हैं। नमस्कार !"

लेकिन वह आदमी गया नही। अवाक्-अपलक दृष्टि से विपिन बाबू

की ओर ताकता हुआ बुडबुडाने लगा, "कितने आश्चर्य की बात है ! एक दिन शाम के वक्त आपके बगले के ओसारे पर बैठकर मैंने चाय पी थी। आपने अपने परिवार के बारे मे बताया था, कि आपके कोई सतान नही है, कि आपकी पत्नी का देहान्त बारह-तेरह वर्ष पूर्व हो चुका है, कि आपका एकमात्र भाई पागल है और यही वजह है कि आप पागलखाना देखने नही गए। आपने कहा . "भाई की बातें याद आ जाती हैं···"

विपिन बाबू जब पुस्तको की कीमत चुकाकर लौटने लगे, उस समय भी वह आदमी उनकी ओर फटी-फटी आंखो से ताक रहा था।

बारट्राम स्ट्रीट के 'लाइट हाउस' सिनेमा के पास विपिन चौधरी की ब्यूक गाडी खड़ी थी। गाडी के अन्दर आकर उन्होंने ड्राइवर से कहा, "जरा गंगा के किनारे से होते हुए चलो, सीताराम।"

चलती गाडी में दिमाग जब थोडा ठडा हुआ तो विपिन बाबू को अफसोस होने लगा। बेकार और धूर्त्त आदमी को उन्होने इतना वक्त व्यर्थ ही दिया। रांची वे नहीं गए थे, कभी नही। मात्र छह-सात बरसो की स्मृति आदमी इतनी सरलता से भूल नही सकता, अगर···

विपिन बाबू का दिमाग एकाएक चक्कर काटने लगा।

अगर उनका दिमाग गडबड़ा न गया हो।

किन्तु वैसा क्यो होने लगा। वे मजे से दफ्तर में काम कर रहे हैं। इतना बडा दफ्तर है—इतनी बडी जिम्मेदारी का काम है। कही किसी प्रकार की त्रुटि हो रही हो, उन्हे मालूम नही। आज भी उन्होने एक बैठक में आधे घंटे तक भाषण दिया है!

परन्तु···

परन्तु उस आदमी को इनके बारे में इतनी जानकारी कैसे हासिल हुई?—किताबो की झोली, पत्नी की मृत्यु, भाई के पागलपन की बातें! गलती हुई है सिर्फ रांची के मामले में ही। गलती क्यो कहा जाए, बल्कि जान-सुनकर वह झूठ बोला है। अट्ठावन के आसिन महीने में वे रांची नही गए थे; गए थे तो कानपुर और वह भी अपने मित्र हरिदास बागची के घर पर। हरिदास को लिखने से ही···न, हरिदास को पत्र लिखना न हो पाएगा।

विपिन बाबू को सहसा याद आया, हरिदास बागची आज से एक मास पूर्व अपने कारोबार के सदर्भ मे सपत्नीक जापान गए हुए है। जापान का पता विपिन बाबू को मालूम नही है। अत: पत्र लिखकर सबूत मंगाने का रास्ता बन्द हो गया है।

मगर सबूत की आवश्यकता ही क्या है? *अगर ऐसा हुआ होता कि*

उन्नीस सौ अट्ठावन के आसिन महीने में रांची की किसी हत्या के सम्बन्ध में पुलिस उन्हें अपराधी साबित करने की कोशिश करती तो उन्हें हरिदास बागची से चिट्ठी प्राप्त करने की जरूरत पड़ती। उन्हें खुद पता है कि वे रांची नहीं गए थे। बस, झंझट समाप्त।

गंगा की हवा लगने से यद्यपि विपिन चौधरी का दिमाग बहुत कुछ ठंडा हो गया, लेकिन मन में एक खटका, एक अशांति-बोध बना रहा।

हेस्टिंग्स के पास आने पर विपिन बाबू ने अपने पैंट के कपड़े को मोड़कर ऊपर उठाते हुए देखा कि दाहिने घुटने पर एक इंच लम्बा दाग है या नहीं। वह दाग कब का है, समझ में नहीं आया। बचपन में कभी झटका खाकर गिरने से विपिन बाबू का घुटना छिल गया था? बहुत-बहुत कोशिश करने के बावजूद वैसी कोई बात उन्हें याद नहीं आई।

चड़कडांगा के पास आने पर उन्हें दीनेश मुखर्जी की याद आई। उस आदमी ने बताया है कि दीनेश मुखर्जी भी उन दिनों रांची में ही था। फिर दीनेश को पूछने से ही काम बन जाएगा। वह निकट ही रहता है—वेणी-नंदन स्ट्रीट में। क्या अभी तुरन्त उनके पास चलूं? किन्तु रांची जाने की बात अगर असत्य हो तो दीनेश से उसके संदर्भ में कुछ पूछने पर वह विपिन बाबू को पागल करार कर देगा। नहीं-नहीं; यह बचकना उनके लिए किसी भी हालत में संभव नहीं है। अपने-आपको यों कसौटी पर कसकर बेवकूफ बनाना कोई मानी नहीं रखता। और, दीनेश का व्यंग्य कितना निर्मम हो सकता है, विपिन बाबू इसके अनुभवी रह चुके हैं।···

घर वापस आने पर, ठंडे कमरे में बैठकर, ठंडा शर्बत पीने के बाद विपिन बाबू की उद्विग्नता बहुत-कुछ कम हो गई। वह आदमी बेकार लोगों की जमात का मालूम होता है। कोई काम नहीं है, इसीलिए काम के आदमियों को पकड़-पकड़कर परेशान करता है।

रात में खाना खाने के बाद विपिन बाबू जब नयी किताब लेकर बिछावन पर लेटे तो न्यू मार्केट में उस आदमी से जो बातें हुई थीं, उनके ध्यान से उतर गईं।

•

दूसरे दिन दफ्तर में काम करते-करते विपिन बाबू को लगा, ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है। कल की घटना उनकी स्मृति में उतनी ही स्पष्ट होती जा रही है। वही गोल-गोल-सा चेहरा, आंखों की सरल दृष्टि और मुसकराहट उन्हें याद आने लगी। उस आदमी को जब उनकी अन्दरूनी बातों की इतनी जानकारी है तो रांची के बारे में उसने इतनी

क्यों की ?

लंच के ठीक पहले—यानी जब एक बजने में पांच मिनट बाकी थे—विपिन बाबू अपने-आपको संयत नहीं रख सके और टेलीफोन की डायरेक्टरी खोलकर बैठ गए। दीनेश मुखर्जी को फोन करना होगा। फोन करना ही अच्छा रहेगा। इसमें घबराने की कम गुंजाइश रहती है।

टू-थ्री-फाइव-सिक्स-वन-सिक्स।

विपिन बाबू ने डायल किया।

"हैलो!"

"कौन—दीनेश ? मैं विपिन बोल रहा हूं।"

"क्या खबर है ?"

"वो अट्ठावन की एक घटना तुम्हें याद है या नहीं—यही जानने के लिए फोन कर रहा हूं।"

"अट्ठावन ? कौन-सी घटना के बारे में पूछना है ?"

"उस वर्ष क्या तुम कलकत्ते में ही थे ? पहले मैं यही जानना चाहता हूं।"

"ठहरो। अट्ठावन—फिफ्टी एट'''ठहरो, अपनी डायरी देख लूं। जरा थामे रहो।"

कुछ देर तक चुप्पी रेंगती रही। विपिन बाबू को अपने सीने के अन्दर एक तरह की कपकपी का अनुभव होने लगा। लगभग एक मिनट के बाद दीनेश मुखर्जी का स्वर सुनाई पड़ा।

"हां मिल गया। मैं दो बार बाहर गया था।"

"एक बार फरवरी में गया था—पास ही—केस्टो नगर। मेरे एक भांजे की शादी थी। और दूसरी बार'''वह तो तुम्हें ही मालूम ही होगा। वही रांची। उस बार तुम भी गए थे। मगर पूछ क्यों रहे हो ?"

"एक जरूरत थी। ठीक है। थैंक यू'''"

विपिन बाबू ने टेलीफोन रख दिया और सिर पर हाथ रखकर बैठ गए। उनके कानों में भांय-भांय शब्द गूंजने लगा, हाथ-पांव जैसे बिलकुल ठंडे हो गए। साथ में जो टिफिन-बॉक्स लाए थे, उसमें सैंडविच था। उन्होंने उसे खाया तक नहीं। खाने की इच्छा नहीं हुई। उनकी भूख भाग गई।

लंच का वक्त जब गुजर गया तो विपिन बाबू ने सोचा, ऐसी स्थिति में उनके लिए दफ्तर में बैठकर काम करना असम्भव है। पचीस बरसों से वे काम करते आ रहे हैं मगर कभी ऐसा नहीं हुआ। निरलस और कर्मठ के रूप में उनकी ख्याति थी। कर्मचारीगण उनसे वैसे ही डरते थे जैसे लोग शेर को देखकर डरते हैं। चाहे जितनी ही विपत्तियां क्यों न आए, चाहे

कितनी ही बड़ी समस्या का सामना क्यो न करना पड़े, कभी वे मतिभ्रम के शिकार नही होते थे। ठडे दिमाग से काम करते हुए वे हमेशा विपत्तियों पर जय प्राप्त करते आए है।

लेकिन आज सब गड़बडा गया है।

ढाई बजे विपिन बाबू घर लौट आए और तमाम खिडकियां और दरवाज़े बन्द कर बिछावन पर लेट गए, फिर अपने मन को स्वाभाविक स्थिति मे लाकर सोचने लगे कि क्या करना चाहिए। सिर में चोट लगने या किसी प्रकार की दुर्घटना होने से आदमी अपनी पूर्व स्मृति बीच-बीच में खो बैठता है। लेकिन एक के अलावा तमाम बातें याद हों—ऐसा कोई उदाहरण उन्हें कभी नही मिला है। उन्हे बहुत दिनों से राची जाने की इच्छा थी। वे राची गए हों और इस बात को भुला बैठे हों, यह बिलकुल असभव है।

विपिन बाबू जब-जब बाहर जाते हैं तो बेयरा को अपने साथ ले जाते है। लेकिन उनके साथ आजकल जो बेयरा है, वह नया आदमी है। सात वर्ष पूर्व राम स्वरूप उनका बेयरा था। अगर वे रांची गए होगे तो वह भी निश्चितरूपेण उनके साथ होगा। परन्तु अब वह नहीं है, उसे गए तीन वर्ष बीत चुके हैं।

विपिन बाबू शाम तक अकेले ही अपने घर मे रहे। मन ही मन तय किया कि अगर कोई उनके घर पर आएगा तो वे उससे नही मिलेंगे।

सात बजे नौकर ने आकर सूचना दी कि धनी व्यापारी सेठ गिरिधारी प्रसाद उनसे मिलने आए हैं। गिरिधारीप्रसाद नामी व्यक्ति है। परन्तु उस समय विपिन बाबू की मानसिक अवस्था ऐसी थी कि लाचार होकर उन्हें नौकर से कहना पड़ा कि वे नीचे उतरने मे असमर्थ है। गिरिधारीप्रसाद भाड मे जाएं।

साढे सात बजे नौकर फिर उनके पास आया। विपिन बाबू तद्रा की हालत मे थे। एक बुरे सपने की शुरुआत हो गई थी। तभी नौकर की पुकार से उनकी नीद खुल गई। अबकी कौन आया? नौकर ने कहा, "चुन्नी बाबू। कह रहे है कि बहुत ज़रूरी काम है।"

ज़रूरत क्या हो सकती है, यह विपिन बाबू को मालूम है। चुन्नी स्कूल मे उनका सहपाठी रह चुका है। आजकल दुरवस्था में फस गया है। कई दिनों से उनके पास नौकरी की उम्मीद मे आ रहा है। विपिन बाबू उसके लिए कुछ कर नही सकते। यही वजह है कि हर बार उन्होने कह दिया है: 'नही होगा'। चुन्नी जोक की तरह पकड़ लेता है!

विपिन बाबू ने बेहद ऊब के साथ खबर भेज दी कि न केवल आज,

बल्कि एक लम्बे अरसे तक वे चुन्नी से नहीं मिल पाएंगे।

नौकर के कमरे से जाते ही विपिन बाबू को खयाल आया, हो सकता है, चुन्नी को अट्ठावन की घटना थोड़ी-बहुत याद हो। उससे एक बार पूछ लेने में हर्ज ही क्या है ?

विपिन बाबू जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ तय कर नीचे बैठक खाने में आए। चुन्नी जाने को तैयार हो चुका था, विपिन बाबू को उतरते देखकर उसमें थोड़ी आशा बंधी और वह मुड़कर खड़ा हो गया।

विपिन बाबू ने बगैर किसी तरह की भूमिका बांधे कहा, "सुनो चुन्नी, तुमसे एक···यानी बेढब सवाल करना है। मुझे पता है, तुम्हारी स्मरण-शक्ति बड़ी तीव्र है। तुम मेरे घर पर लगातार कई बरसों से बीच-बीच में आते रहते हो। सोचकर देखो, तुम्हें याद आता है या नहीं—कि मैं सन् अट्ठावन में रांची गया था या नहीं ?"

चुन्नी बोला, "अट्ठावन ? अट्ठावन ही होगा। या सन् उनसठ की बात है ?"

"रांची जाने के विषय में तुम्हें कोई संदेह है ?"

चुन्नी को बड़ा ही अचंभा जैसा लगा।

"तुम्हें जाने के बारे में ही संदेह हो रहा है ?"

"मैं गया था ? तुम्हे ठीक-ठीक याद आ रहा है ?"

चुन्नी सोफे से उठ चुका था मगर फिर बैठ गया। उसके बाद वह कुछ देर तक विपिन चौधरी की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखता रहा और फिर बोला, "विपिन, आजकल तुम नशे का सेवन कर रहे हो क्या ? इसके बारे में तुम बदनाम नहीं थे। तुम रूखे स्वभाव के आदमी हो, मित्रों के प्रति तुममें कोई संवेदना नहीं है—इतना ही जानता था। लेकिन तुम्हारा दिमाग तो बिलकुल साफ था। कम से कम कुछ दिन पहले तक था।"

"मेरे जाने की बात तुम्हे याद है ?" विपिन बाबू की आवाज़ में थरथराहट थी।

इस बात का जवाब न देकर चुन्नी ने उनसे पूछा, "तुम्हे याद है कि इसके पहले मैं किस तरह की नौकरी कर रहा था ?"

"वाह क्या कहने। तुम हावड़ा स्टेशन में बुकिंग क्लर्क का काम करते थे !"

"तुमको यह बात याद है मगर मैंने ही तुम्हारे लिए रांची की बुकिंग कराई थी—यह बात तुम्हें याद नहीं ? तुम जिस दिन जा रहे थे, तुम्हारे डिब्बे में जाकर मैं तुमसे मिला, डाइनिंग कार में खबर पहुंचाकर, तुम्हारे खाने का इन्तजाम करा दिया, तुम्हारे डिब्बे में पंखा चल नहीं रहा था,

आदमी बलाकर उसे चालू कराया। यह सब तुम भुला बैठे ? तुम्हें क्या हो गया है ?"

विपिन बाबू ने एक लम्बी सांस ली और वे धम से सोफे पर बैठ गए।

चुन्नी ने कहा, "तुम बीमार हो ? तुम्हारा चेहरा स्वस्थ जैसा नहीं दीख रहा है।"

विपिन बाबू ने कहा, "कुछ वैसा ही लग रहा है। कुछ दिनों तक कामों का दबाव बढ गया था। किसी स्पेशलिस्ट से मिलूंगा···"

शायद विपिन बाबू की हालत का ही खयाल कर चुन्नी ने नौकरी के सम्बन्ध में चर्चा नहीं की। वह आहिस्ता-आहिस्ता बैठक से बाहर निकल आया।

●

परेशचंद को नौजवान डॉक्टर कहा जा सकता है, चालीस से कम उम्र का है। चेहरे पर बुद्धि की दीप्ति छाई रहती है। विपिन बाबू के बारे में पता चलने पर वे चिंतित हो उठे। विपिन बाबू ने उनसे बुझे हुए स्वर में कहा, "देखिए डॉक्टर चन्द, आपको मेरी यह बीमारी दूर करनी ही है। दफ्तर न जाने के कारण मेरे कारोबार की कितनी हानि हो रही है, यह मैं आपको समझा नहीं सकता। आजकल तरह-तरह की दवाइयां निकल चुकी है। मेरी इस बीमारी के लिए कोई दवा नहीं है ? जितना भी रुपया-पैसा लगे, मैं दूंगा। अगर विदेश से मगाने की ज़रूरत पड़ेगी तो उसका भी इन्तज़ाम करूंगा। लेकिन यह बीमारी आपको ठीक करनी ही होगी।"

डॉक्टर ने कुछ देर तक सोचा-विचारा, फिर सिर हिलाते हुए कहा, "जानते हैं मिस्टर चौधरी, बात क्या हे ? मेरे लिए यह बीमारी बिलकुल नई है, मेरे अनुभवों के दायरे के बाहर की है। तब हां, मैं एक उपाय बता सकता हूं। कामयाबी हासिल होगी या नहीं—कह नहीं सकता, मगर आप अज़माइश करके देख सकते हैं। हानि होने की कोई आशका नहीं है।"

विपिन बाबू उत्कंठित होकर कुहनी के बल बैठ गए।

डॉक्टर ने कहा, "मुझे जहां तक याद है—और मुझे विश्वास है, आपकी भी अभी यही धारणा है— कि आप सचमुच रांची गए थे। लेकिन, कारण चाहे जो भी हो, जाने की बात आप बिलकुल भुला बैठे हैं। मेरी सलाह है कि आप एक बार फिर रांची जाएं। तब हो सकता है, जगह देखने पर आपको पहले की ट्रिप की बातें याद हो जाएं। यह असम्भव नहीं है। आज इस वक्त और कुछ नहीं किया जा सकता है। मैं एक टिकिया का नाम लिख देता हूं। उसे खाने से हो सकता है नींद आ जाए। नींद आना

ज़रूरी है वरना आपकी अशांति और साथ ही साथ आपकी बीमारी भी बढ़ जाएगी। आप एक कागज दें, मैं दवा का नाम लिख देता हूं।"

चाहे टिकिया के कारण हो या चाहे डाक्टर की सलाह के कारण, दूसरे दिन सवेरे विपिन बाबू को अन्य दिनों की अपेक्षा स्वस्थता का अनुभव हुआ।

सवेरे के नाश्ते से निबटकर विपिन बाबू ने टेलीफोन से दफ्तर को बहुत से आदेश दिए और उसी दिन रांची की टिकट कटा ली।

दूसरे दिन रांची स्टेशन पहुंचते ही उन्हें लगा, वे यहां कभी नहीं आए थे।

स्टेशन से बाहर आकर उन्होंने एक गाड़ी ठीक की और इधर-उधर का चक्कर काटने लगे। चक्कर काटने पर उन्हें लगा, यहां की राह-बाट मकान-इमारत, प्राकृतिक दृश्य, मोराबादी पहाड़, होटल, बंगला—किसी से उनका तनिक भी परिचय नहीं है। हुंड्रू जलप्रपात को वे पहचान पाएंगे? जल-प्रपात का दृश्य देखते ही उन्हें क्या पुरानी बातें याद आ जाएंगी?

खुद उस बात पर विश्वास न होने पर भी, यह सोचकर कि कलकत्ता लौटने के बाद कहीं अनुताप न करना पड़े, एक गाड़ी का इन्तज़ाम कर दोपहर के वक्त हुंड्रू की ओर रवाना हुए।

उसी दिन तीसरे पहर पांच बजे एक पिकनिक पार्टी के दो गुजरातियों ने विपिन बाबू को अचेतन अवस्था में पत्थर के टीले के पास देखा। इन दोनों व्यक्तियों की शुश्रूषा के कारण विपिन बाबू होश में आए और बोले, "मैं रांची नहीं आया था। मेरा सब बरबाद हो गया। अब कोई उम्मीद नहीं है···"

दूसरे दिन सवेरे विपिन बाबू कलकत्ता लौट आए। उन्होंने मान लिया कि अगर वे इस रहस्य का उद्घाटन नहीं कर सके तो सचमुच अब कोई आशा नहीं है। धीरे-धीरे वे अपनी कार्य-क्षमता, आत्म-विश्वास, उत्साह, बुद्धि, विवेचना—सब कुछ खो बैठेंगे। आखिर क्या उन्हें उसी रांची के···?

इसके बाद विपिन बाबू कुछ सोच नहीं सके। सोचना चाहा भी नहीं।···

घर लौटकर किसी तरह स्नान कर विपिन बाबू ने अपने सिर पर बर्फ की थैली रखी और बिछावन पर लेट गए। नौकर से कहा कि वह जाकर डॉक्टर को बुला लाए। जाने के पहले नौकर ने उनके हाथ में एक पत्र थमा-कर कहा, कोई आदमी इसे पत्र-पेटी में डाल गया था। हरे रंग का लिफाफा

था। उसके ऊपर लाल स्याही से लिखा था; 'श्री विपिन बिहारी चौधरी आवश्यक नितान्त व्यक्तिगत'।

तबियत खराब रहने के बावजूद न जाने क्यों, विपिन बाबू को लगा, पत्र पढ़ना जरूरी है। लिफाफा खोलकर देखा। पत्र में यही लिखा था :

प्रिय विपिन,

एकाएक बड़ा आदमी बन जाने का दुष्परिणाम तुममें देखने को मिलेगा, इसकी आशा नहीं थी। दुरवस्था में पड़े बचपन के एक मित्र के लिए कोई न कोई उपाय निकालना तुम्हारे लिए क्या असंभव था? मेरे पास पैसे नहीं हैं, मेरी सामर्थ्य साधारण ही है। मुझमें जो चीज है, वह है कल्पना-शक्ति। उसी में से कुछ खर्च कर तुमसे अदना-सा बदला लिया।

न्यू मार्केट के वह आदमी मेरे पड़ोसी हैं। वे नाम-गिरामी एक अभिनेता हैं। दीनेश मुखर्जी तुम्हारे प्रति सदय नहीं है, यही वजह है कि उन्हें हाथ में करने में किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई। घुटने मे चोट लगने की बात तुम्हें जरूर ही याद होगी—वही चांदपाल घाट मे पिछड़कर गिरने की बात, सन् उन्नीस सौ छत्तीस में···?

अब क्या? अब तुम्हारी तबियत ठीक हो जाएगी। मेरा एक उपन्यास प्रकाशक ने पसन्द किया है। कुछ महीने उसी से गुजार लूंगा। इति।

तुम्हारा मित्र,
चुन्नी लाल

डॉक्टर चंद के आते ही विपिन बाबू ने कहा, "मैं ठीक हूं। रांची स्टेशन पर उतरते ही सब कुछ याद आ गया।"

डॉक्टर ने कहा, "वेरी स्ट्रेंज! सोचता हूं, आपका केस किसी डॉक्टरी जरनल में छपवा दू।"

विपिन बाबू ने कहा, "आपको इसीलिए बुलाया है कि देखिए कि मेरी कमर की हड्डी कहीं टूट तो नहीं गई है। रांची मे फिसलकर गिर पड़ा था। बहुत ही दर्द है।"

ज़रूरी है वरना आपकी अशांति और साथ ही साथ आपकी बीमारी भी बढ़ जाएगी। आप एक कागज़ दें, मैं दवा का नाम लिख देता हूं।"

चाहे टिकिया के कारण हो या चाहे डाक्टर की सलाह के कारण, दूसरे दिन सवेरे विपिन बाबू को अन्य दिनों की अपेक्षा स्वस्थता का अनुभव हुआ।

सवेरे के नाश्ते से निबटकर विपिन बाबू ने टेलीफोन से दफ्तर को बहुत से आदेश दिए और उसी दिन रांची की टिकट कटा ली।

दूसरे दिन रांची स्टेशन पहुंचते ही उन्हें लगा, वे यहां कभी नहीं आए थे।

स्टेशन से बाहर आकर उन्होंने एक गाड़ी ठीक की और इधर-उधर का चक्कर काटने लगे। चक्कर काटने पर उन्हें लगा, यहां की राह-बाट मकान-इमारत, प्राकृतिक दृश्य, मोराबादी पहाड़, होटल, बंगला—किसी से उनका तनिक भी परिचय नहीं है। हुंड्रू जलप्रपात को वे पहचान पाएंगे? जल-प्रपात का दृश्य देखते ही उन्हें क्या पुरानी बातें याद आ जाएंगी?

खुद उस बात पर विश्वास न होने पर भी, यह सोचकर कि कलकत्ता लौटने के बाद कहीं अनुताप न करना पड़े, एक गाड़ी का इन्तजाम कर दोपहर के वक्त हुंड्रू की ओर रवाना हुए।

उसी दिन तीसरे पहर पांच बजे एक पिकनिक पार्टी के दो गुजरातियों ने विपिन बाबू को अचेतन अवस्था में पत्थर के टीले के पास देखा। इन दोनों व्यक्तियों की शुश्रूषा के कारण विपिन बाबू होश में आए और बोले, "मैं रांची नहीं आया था। मेरा सब बरबाद हो गया। अब कोई उम्मीद नहीं है…"

दूसरे दिन सवेरे विपिन बाबू कलकत्ता लौट आए। उन्होंने मान लिया कि अगर वे इस रहस्य का उद्घाटन नहीं कर सके तो सचमुच अब कोई आशा नहीं है। धीरे-धीरे वे अपनी कार्य-क्षमता, आत्म-विश्वास, उत्साह, बुद्धि, विवेचना—सब-कुछ खो बैठेंगे। आखिर क्या उन्हें उसी रांची के…?

इसके बाद विपिन बाबू कुछ सोच नहीं सके। सोचना चाहा भी नहीं।…

घर लौटकर किसी तरह स्नान कर विपिन बाबू ने अपने सिर पर बर्फ की थैली रखी और बिछावन पर लेट गए। नौकर से कहा कि वह जाकर डॉक्टर को बुला लाए। जाने के पहले नौकर ने उनके हाथ में एक पत्र थमाकर कहा, कोई आदमी इसे पत्र-पेटी में डाल गया था। हरे रंग का लिफाफा

था। उसके ऊपर लाल स्याही से लिखा था; 'श्री विपिन विहारी चौधरी आवश्यक नितान्त व्यक्तिगत'।

तबियत खराब रहने के बावजूद न जाने क्यों, विपिन बाबू को लगा, पत्र पढ़ना जरूरी है। लिफाफा खोलकर देखा। पत्र में यही लिखा था :

प्रिय विपिन,

एकाएक बडा आदमी बन जाने का दुष्परिणाम तुममें देखने को मिलेगा, इसकी आशा नही थी। दुरवस्था में पड़े बचपन के एक मित्र के लिए कोई न कोई उपाय निकालना तुम्हारे लिए क्या असभव था? मेरे पास पैसे नहीं हैं, मेरी सामर्थ्य साधारण ही है। मुझमे जो चीज है, वह है कल्पना-शक्ति। उसी में से कुछ खर्च कर तुमसे अदना-सा बदला लिया।

न्यू मार्केट के वह आदमी मेरे पड़ोसी हैं। वे नाम-गिरामी एक अभिनेता है। दीनेश मुखर्जी तुम्हारे प्रति सदय नही है, यही वजह है कि उन्हें हाथ मे करने में किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई। घुटने मे चोट लगने की बात तुम्हें जरूर ही याद होगी—वही चांदपाल घाट में पिछड़कर गिरने की बात, सन् उन्नीस सौ छत्तीस में…?

अब क्या? अब तुम्हारी तबियत ठीक हो जाएगी। मेरा एक उपन्यास प्रकाशक ने पसन्द किया है। कुछ महीने उसी से गुजार लूगा। इति।

तुम्हारा मित्र,
चुन्नी लाल

डॉक्टर चंद के आते ही विपिन बाबू ने कहा, "मैं ठीक हूं। राची स्टेशन पर उतरते ही सब कुछ याद आ गया।"

डॉक्टर ने कहा, "वेरी स्ट्रेंज! सोचता हूं, आपका केस किसी डॉक्टरी जरनल में छपवा दूं।"

विपिन बाबू ने कहा, "आपको इसीलिए बुलाया है कि देखिए कि मेरी कमर की हड्डी कहीं टूट तो नही गई है। राची में फिसलकर गिर पड़ा था। बहुत ही दर्द है।"

दो जादूगर

"पांच, छह, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह।"

सुरपति ने पेटियों की गिनती कर अपने असिस्टेन्ट अनिल की तरफ मुड़कर कहा, "ठीक है। सबको ब्रेकवैन में भेज दो। अब सिर्फ पचीस मिनट बाकी हैं।"

अनिल ने कहा, "आपकी गाड़ी भी ठीक है, सर। कूपे। दो बर्थ आपके नाम से रिज़र्व करा लिया है। किसी तरह की असुविधा नहीं होगी।" उसके बाद मुसकराकर कहा, "गार्ड साहब भी आपके भक्त हैं। आपका शो 'न्यू एम्पायर' मे देख चुके हैं। ओ सर, इधर आइए।"

गार्ड वीरेन बख्शी ने खुलकर हंसते हुए अपना दाहिना हाथ सुरपति की ओर बढ़ा दिया।

"आइए सर, जिस हाथ की सफाई देखकर मैंने इतनी खुशियां हासिल की हैं, उस हाथ से एक बार हाथ मिलाकर अपने आपको कृतार्थ कर लूं।"

सुरपति मंडल की ग्यारह पेटियों में से किसी एक की ओर देखते ही उसका परिचय मिल जाता है। हर पेटी की बगल और ढक्कन पर साफ-साफ बड़े हरूफों मे अंग्रेज़ी मे लिखा है: 'मंडलस मिरकल्स'। इससे ज्यादा परिचय की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि ठीक दो महीने पहले कलकत्ते के न्यू एम्पायर थियेटर मे मंडल की जादूगरी का प्रमाण पाकर दर्शकों ने बार-बार तालियां पीट-पीटकर वाहवाही दी थी। अखबारो ने भी काफी प्रशंसा की थी। एक सप्ताह का कार्यक्रम भीड़ के कारण चार सप्ताहों तक चला था। फिर भी जैसे लोगों का मन नहीं भरा था। थियेटर के मालिक के अनुरोध से ही मंडल को वादा करना पड़ा है कि बड़े दिन की छुट्टियों मे वह फिर से तमाशा दिखाएगा।

"कोई असुविधा हो तो बताइएगा, सर।"

गार्ड साहब ने सुरपति को उसके डिब्बे में बिठा दिया। सुरपति ने इधर-उधर देखकर इत्मीनान की एक सांस ली। बढ़िया डिब्बा है।

"अच्छा सर, फिर···"

"बहुत-बहुत धन्यवाद!"

गार्ड के जाने के बाद सुरपति ने अपनी बेंच के कोने में, खिड़की के पास सटकर बैठते हुए जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला। शायद यह उसके विजय अभियान की शुरुआत है : दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, काशी, लखनऊ। इस सफर में इन्हीं कुछ स्थानों में जाना है। इसके बाद कितने ही प्रदेश बाकी हैं, कितने ही नगर, कितने ही उपनगर। और क्या सिर्फ हिन्दुस्तान ही ? उसके बाहर भी एक दुनिया है—विराट विस्तृत जगत्। बंगाली होने से क्या महत्त्वाकांक्षी नहीं होगा ? सुरपति दिखा देगा। अब तक जिस अमेरिका के जादूगर हुडिनी के बारे में पढ़कर उसे रोमांच का अनुभव होता था, उसी अमेरिका में उसकी ख्याति फैल जाएगी। बंगालियों की दौड़ कहां तक हो सकती है, इसे वह दुनिया के लोगों के सामने प्रमाणित कर देगा। कुछ वर्ष गुज़र जाएं। अभी तो कुल मिलाकर शुरू ही किया है।

हांफते हुए आकर अनिल ने कहा, "सब ठीक-ठाक है, सर। एवरीथिंग।"

"तालों को चेक कर लिया है ?"

"हां, सर।"

"गुड।"

"मैं दो बोगी के बाद ही हूं।"

"लाइन क्लियर हो गई है।"

"अभी-अभी हो चली। मैं चलता हूं।···वर्धमान में आप चाय पीजिएगा क्या ?"

"मिले तो बुरा नहीं।"

"मैं ले आऊंगा।"

अनिल चला गया। सुरपति ने सिगरेट जलाकर खिड़की के बाहर अपनी आंखें फैला दीं। कुली, मुसाफिर, खोमचेवाले प्लेटफार्म के दोनों ओर शोरगुल कर रहे हैं। उस ओर ताकते-ताकते सुरपति अनमनेपन में डूब गया। उसकी दृष्टि में धुंधलापन सिमट आया। स्टेशन का कोलाहल थम गया। उसका मन बहुत दूर, बहुत पीछे की ओर, चला गया। अभी उसकी उम्र तेंतीस साल है, उन दिनों वह सात या आठ साल का था। दिनाजपुर जिले का एक छोटा-सा एक गांव—पांच पुकुर। शरद ऋतु की शांत दोपहर। एक बूढ़ी औरत टाट की झोली लिए मति मोदी की दुकान के ठीक सामने बरगद के पेड़ के तले बैठी है। बच्चे-बूढ़ों की भीड़ उसे घेर कर खड़ी है। बुढ़िया की उम्र क्या है ? साठ भी हो सकती है और नब्बे भी हो सकती है। सिकुड़े गालों पर असंख्य झुर्रियां हैं, हंसती है तो झुर्रियों

की सख्या दुगुनी हो जाती है। पोपले मुंह से धारा-प्रवाह बोले जा रही है।
भानुमती का खेल।

बुढ़िया ने भानुमती का तमाशा दिखाया था। वही पहली और अंतिम बार देखा था। लेकिन जो कुछ देखा था, सुरपति को वह भूला नहीं और न भूलेगा ही। उसकी दादी की भी उम्र पैंसठ वर्ष है, सुई मे धागा पिरोते वक्त सारा शरीर थरथर कापता है। लेकिन उस बुढ़िया के सिकुड़े हाथों मे कितना जादू है। आखों के सामने से एक हाथ, दो हाथ की दूरी पर रखी चीजों को फूक मारकर गायब कर देती है और फिर बात की बात मे फूक मारकर बाहर निकाल देती है—रुपया, मार्बल, लट्टू, सुपारी, कबूतर।

यह जादू देखकर सुरपति की आखो मे बहुत दिनो तक नींद नहीं आई थी। उसके बाद जब नींद आई तो एक महीने तक वह बीच-बीच में नींद में चिल्ला उठता था : 'मैजिक, मैजिक'।

उसके बाद जब भी गांव में मेला लगता, सुरपति जादू की उम्मीद में वहा की दौड लगाता था। लेकिन उस तरह आश्चर्य में डालने वाली चीज फिर कभी उसकी आखो के सामने नहीं आई।

जब सुरपति सोलह वर्ष का हुआ, वह कलकत्ते में अपने चाचा के विप्रदास स्ट्रीट के मकान में आकर रहने लगा। आने का उद्देश्य था इंटरमिडिएट की पढाई पढना। कॉलेज की पुस्तकों के साथ-साथ वह जादू की पुस्तकें भी पढ़ता था। कलकत्ता आने पर दो-चार महीने के अन्दर ही सुरपति ने जादू की तमाम पुस्तकें खरीद ली और कुछ दिनो के अन्दर ही पुस्तकों के तमाम जादू सीख लिए। उसे ताश के बहुत से पैकेट खरीदने पड़े थे। घटों तक आईने के सामने खडा होकर उसे जादूगरी का अभ्यास करना पडा था। कालेज मे जब सरस्वती की पूजा होती या दोस्त मित्रों की जब सालगिरह मनाई जाती, सुरपति अपनी जादूगरी का प्रदर्शन करता था।

जब वह इंटरमिडियेट के द्वितीय वर्ष मे था, उसे अपने मित्र गौतम की बहन की शादी के अवसर पर निमत्रण मिला। सुरपति के जादूगरी सीखने के इतिहास मे यह एक अविस्मरणीय दिवस है, क्योंकि इसी शादी के अवसर पर उसे त्रिपुरा बाबू से मिलने का मौका मिला था। स्विनहो स्ट्रीट की आलीशान इमारत के पीछे के मैदान मे शामियाना खडा किया गया है। शामियाने के एक कोने मे त्रिपुराचरण मल्लिक मेहमानो से घिरे एक दरी पर बैठे है। एकाएक अगर उनपर दृष्टि जाए तो वे बिलकुल नगण्य ही मालूम होगे। उम्र चौवालीस वर्ष। घुंघराले बाल, माग कढी हुई।

हसमुख। होठों के कोनों में पान का दाग। राह-बाट में ऐसे अनगिनत आदमी दीख पड़ते है। किन्तु उसके सामने ही दरी पर जो कुछ घटित हो रहा है, यह देखकर उनके बारे मे राय बदल देनी पड़ती है। शुरू में सुरपति अपनी आखो पर विश्वास ही नहीं कर पाता है। चांदी की एक अट्ठन्नी लुढ़कती हुई तीन हाथ के फासले पर रखी सोने की एक अंगूठी के पास जाती है, उसके बाद उस अंगूठी को अपने साथ लेकर त्रिपुरा बाबू के पास लौट आती है। सुरपति इतना अचकचा जाता है कि उसमे तालिया पीटने की सामर्थ्य नही रह जाती है। उसके बाद जादूगरी के बहुत से करिश्मे दिखाए जाते हैं। गौतम के ताऊ जादू के तमाशे देखते हुए सिगरेट जलाना चाहते हैं कि सारी तीलियां दियासलाई के बक्से से नीचे गिर पड़ती हैं। उनको झुकते हुए देखकर त्रिपुरा बाबू कहते हैं, "आप उठाने की तकलीफ क्यों कर रहे हैं सर। मुझे दीजिए, उठा देता हूं।"

उसके बाद तीलियों को दरी के एक कोने में जमा करके अपने बाएं हाथ में दियासलाई का डब्बा लेकर त्रिपुरा बाबू पुकारते हैं, "आ तू तू तू, आ-आ-आ···"

और तीलियां पालतू बिल्ली-कुत्ते की तरह एक-एक कर डिब्बे के अन्दर आने लगती हैं।

उस रात खाना-पीना खत्म होने के बाद सुरपति ने त्रिपुरा बाबू को एकात मे पाकर उनसे जान-पहचान की। सुरपति में जादूगरी के प्रति लगाव देखकर उन्हें बड़ा ही आश्चर्य लगा। उन्होने कहा, "बंगाली जादू देखते हैं और चले जाते हैं। देखने वालों की तादाद उतनी रहती नही। तुममें इसके प्रति दिलचस्पी देखकर सचमुच मैं हैरान रह गया।"

इसके दो दिन बाद सुरपति त्रिपुरा बाबू के घर पर जाता है। उसे मकान कहना ठीक न होगा। मिर्जापुर स्ट्रीट के एक मेस का टूटा-फूटा एक कमरा। अभाव और दरिद्रता की ऐसी शक्ल सुरपति की निगाह में कभी नही आई थी। त्रिपुरा बाबू सुरपति से अपनी जीविका के बारे में बताने लगे। जादूगरी दिखाने के लिए वे पचास रुपये बतौर फीस के लेते हैं। महीने मे दो बायने भी मिल जाएं, इसमे सदेह है। कोशिश करते तो और अधिक कमा सकते थे, लेकिन त्रिपुरा बाबू मे कोशिश का अभाव है। इतने गुणी व्यक्ति मे महत्वाकाक्षा का इतना अभाव हो सकता है, सुरपति ने इसकी कल्पना नही की थी। जब उसने इसके बारे मे जिक्र किया तो त्रिपुरा बाबू ने कहा, "क्या हो सकता है? इस गए-गुजरे मूल्क मे अच्छी चीज की कौन कद्र करता है? कितने ऐसे आदमी हैं जिनमे सचमुच कला की समझदारी हो? उस दिन विवाह की मजलिस में तुमने जादूगरी की इतनी

तारीफ की, लेकिन किसी और से कहाँ इतनी तारीफ सुनने को मिली? जैसे ही खबर आई कि पत्तल बिछ गए हैं, सभी मजलिस छोड़कर हड़बड़ाते हुए पेट-पूजा करने चले गए।"

सुरपति ने अपने कई सगे-सम्बन्धियों और मित्रों के यहाँ उत्सवों के मौके पर त्रिपुरा बाबू के मजलिस का इन्तजाम कर दिया था। कुछ तो कृतज्ञतावश और कुछ स्वाभाविक स्नेह के कारण त्रिपुरा बाबू सुरपति को जादू सिखाने को राजी हो गए थे। सुरपति ने जब पैसे की चर्चा की तो उन्होंने तीव्र विरोध प्रकट किया। "तुम इस तरह की बातें मत कर करो," उन्होंने कहा था, "मेरा एक उत्तराधिकारी तैयार हो गया, यही क्या कम नहीं है। तुममें जब इतना शौक और उत्साह है तो मैं तुम्हें सिखा दूँगा। पर हाँ, जल्दबाजी मत करो। यह एक साधना है। जल्दबाजी में कुछ नहीं होगा। अच्छी तरह सीख जाओगे तो तुम्हें एक तरह की सृष्टि का आनन्द प्राप्त होगा। बहुत ज्यादा रुपया-पैसा या नाम की आशा मत रखो। इतना जरूर है कि तुम्हारी मेरी जैसी बदतर हालत कभी न होगी, क्योंकि तुममें महत्त्वाकांक्षा है, मुझमें नहीं है..."

सुरपति ने डरते-डरते पूछा, "सभी जादू सिखा दीजिएगा न? अठन्नी और अंगूठीवाला जादू भी सिखा दीजिएगा न?"

त्रिपुरा बाबू ने हँसते हुए कहा, "एक-एक सीढ़ी तय करते हुए आगे बढ़ना होगा। घबराओ मत। लगे रहो। साधना जरूरी है। ये सब प्राचीन काल की वस्तुएँ हैं। आदमी के मन में जब वास्तव में शक्ति थी, एकाग्रता थी, तब इन जादुओं का उद्भव हुआ था। मुझे कितनी कठिन साधना करनी पड़ी है, जानते हो?"

●

त्रिपुरा बाबू से छह महीने तक जब तालीम मिल चुकी थी, तब एक घटना घटी।

एक दिन कॉलेज जाने के रास्ते में सुरपति ने चौरंगी में हर तरफ दीवार और लैम्पपोस्ट पर विज्ञापन चिपके हुए देखे—'शेफाल्लो द ग्रेट'। निकट जाकर जब पढ़ा तो सुरपति की समझ में बात आई। शेफाल्लो इटली का एक नामी जादूगर है। वह कलकत्ते में जादू दिखाने आ रहा है। उसके सहकारी के रूप में आ रही है—मादम पैलमो।

सुरपति ने न्यू एम्पायर की एक रुपये वाली गैलरी में बैठकर शेफाल्लो का जादू देखा था। जादूगरी के सभी करिश्मे दिलचस्प और अचंभे में डालनेवाले थे। इसके पहले इन जादुओं के सम्बन्ध में सुरपति ने पुस्तकों

में ही पढ़ा था। आंखों के सामने से साबुत आदमी धुएं में खो जाते हैं, उसके बाद अलादीन के चिराग की बाजीगरी की तरह धुए की कुंडली से बाहर निकल आते है। एक लड़की को लकड़ी की पेटी के अन्दर डालकर शेफाल्लो ने आरी से पेटी को दो टुकड़ों में कर डाला। पांच मिनट के बाद ही वह लड़की एक दूसरी पेटी से मुसकराती हुई बाहर निकल आई। उसके शरीर मे खरोंच तक न आई थी। उस दिन तालियां पीटते-पीटते सुरपति की हथेलियां लाल हो गई थीं।

शेफाल्लो को देख-देखकर उस दिन सुरपति बार-बार अचकचा उठता था। वह जितना बड़ा जादूगर है, उतना ही बड़ा अभिनेता। पहनावे के रूप में काला चमकीला सूट है, हाथ मे जादू की छड़ी, सिर पर टॉप-हैट। उस हैट से शेफाल्लो ने जादू के बल क्या नहीं निकाला! एक बार खाली हैट मे हाथ डालकर एक खरगोश का कान पकड़कर निकाला। उसने कुल मिलाकर कान फटफटाया ही था कि कबूतर निकल आया—एक, दो, तीन, चार। जादू के कबूतर फड़फड़ाते हुए मंच के चारों तरफ चक्कर काटने लगे। उसी बीच शेफाल्लो ने उसी हैट से चॉकलेट निकालकर दर्शकों के बीच फेंक दिया।

इन सारी क्रियाओं के साथ शेफाल्लो के मुह से अजस्र शब्द धारा झर रही थी। सुरपति ने पुस्तक में पढ़ा था कि इसे 'पैटर' या बड़बड़ाना कहते हैं। यह पैटर ही जादूगरों का मुख्य अवलंब होता है। दर्शक जब पैटर मे गोते लगाते रहते हैं, जादूगर उसी बीच हाथ की सफाई का असली काम निकाल लेते हैं।

परन्तु मादाम पैलर्मो इसका अपवाद थी। उसकी जबान से एक भी शब्द न निकल रहा था। निर्वाक् मशीन के पुतले की तरह वह तमाशा दिखा रही थी। फिर वह हाथ की सफाई का मौका कैसे निकालती है? इसका उत्तर सुरपति को बाद मे मिला था। मच पर इस तरह के जादू दिखाए जा सकते हैं जिनमें हाथ की सफाई की कोई जरूरत नही पड़ती। इस तरह के जादू यन्त्रों की करामातों पर निर्भर करते है और यन्त्रों को चलाने के लिए मंच के काले पर्दे के पीछे आदमी होते है। आदमी को दो हिस्से में काटकर जोड़ देना या धुए के बीच गायब कर देना, कल-कब्जों का काम है। तुम्हारे पास पैसे हों तो तुम भी उन कल-कब्जों को खरीदकर या बनवाकर ये सब जादू दिखा सकते हो। इतना जरूर है कि जादू को जमाना, दिलचस्प बनाना, साज-पोशाक से चित्ताकर्षक बनाकर दिखाना बहादुरों का काम है, एक कला है। सभी इस कला से परिचित नहीं होते इसीलिए पैसा रहने से ही कोई बड़ा जादूगर हो सकता है, बात ऐसी नहीं

है। सभी क्या···

सुरपति की स्मृतियों का जाल छिन्न-विच्छिन्न हो गया।

गाडी ज्यों ही एक जबरदस्त झटके के साथ प्लेटफार्म से सरकने लगी, जोरों से दरवाजा खोलकर एक आदमी अन्दर आया···यह क्या ? सुरपति बाधा देने जा रहा था, पर ठिठक गया।

यह तो त्रिपुरा बाबू हैं—त्रिपुरा चरण मल्लिक !

सुरपति को इस तरह के अनुभव और कई बार हो चुके हैं। हो सकता है किसी परिचित व्यक्ति से बहुत दिनों से मुलाकात नहीं हो रही है। सहसा किसी दिन उसकी याद आती है या उसके बारे में बातचीत चलती है। तभी एक क्षण बीतते न बीतते वह आदमी आकर मौजूद हो जाता है।

फिर भी सुरपति को लगा, आज के इस आविर्भाव ने जैसे आगे की तमाम घटनाओं को पीछे छोड़ दिया है।

सुरपति के मुंह से कुछ क्षणों तक एक शब्द भी न निकला। त्रिपुरा बाबू ने धोती के छोर से ललाट पर छलक आई पसीने की बूंदों को पोंछते हुए, हाथ की गठरी को एक कोने में रखा और सुरपति के सामनेवाली बेंच पर बैठ गए। उसके बाद सुरपति की ओर ताकते हुए मुसकराकर कहा, "तुम्हें आश्चर्य लग रहा है ?"

किसी तरह थूक निगलकर सुरपति ने कहा, "आश्चर्य यानी कहने का मतलब है कि आप जिन्दा हैं, मेरी यह धारणा थी ही नहीं।"

"क्यों ?"

"मेरी बी० ए० परीक्षा समाप्त होने के कुछ दिन बाद मैं आपके मेस में गया था। जाने पर देखा, ताला लटका हुआ है। मैनेजर ने—नाम मैं भूल गया हूं —कहा कि आप गाडी से दबकर···।"

त्रिपुराबाबू ने एक ठहाका लगाया और उसके बाद कहा, "अगर वैसा होता तो आराम ही मिलता। चिन्ता-फिक्र से छुटकारा मिल जाता।"

सुरपति बोला, "दूसरी बात यह है कि कुछ दिन पहले मैं आपके बारे में सोच रहा था।"

"क्या कह रहे हो तुम !" त्रिपुराबाबू के चेहरे पर विषाद की एक छाया आई। "मेरे बारे में सोच रहे थे ? अब भी मेरे बारे में सोचते हो ? सुनकर हैरान हो गया।"

सुरपति ने दांत से जीभ काटते हुए कहा, "यह आप क्या कह रहे हैं त्रिपुराबाबू ? मैं इतनी आसानी से भुला बैठूंगा ? मैंने आप से ही जादू की विद्या सीखी है। आज खासतौर से पुराने दिनों की याद आ रही थी। आज मैं तमाशा दिखाने बाहर जा रहा हूं। बंगाल से यह पहली बार बाहर जा

रहा हूं। अब मैं पेशेवर जादूगर हो गया हूं। आपको यह मालूम है ?"

त्रिपुराबाबू ने सिर हिलाया।

"मालूम है। मुझे सब कुछ मालूम है। सब कुछ मालूम होने के कारण ही तुमसे मिलने के लिए आज आया हूं। बारह बरसों के दरमियान तुम क्या कर रहे हो, क्या नहीं कर रहे हो, किस तरह तुम बड़े आदमी बन गए हो; इस स्थिति में आ गए हो—इनमें से किसी बात से मैं अनजान नहीं हूं। उस दिन मैं न्यू मार्केट में था—तुम्हारे शो के पहले दिन। पीछे की बेंच पर बैठा था। लोगों ने तुम्हारे कला-कौशल की कैसी तारीफ की, यह देख चुका हूं। मैं थोड़ा-बहुत गौरव का अनुभव कर रहा था। मगर…"

त्रिपुराबाबू चुप हो गए। सुरपति क्या कहे, सोच नहीं सका। वह कहे तो क्या कहे ? त्रिपुराबाबू अगर क्षुब्ध हैं तो उनसे कुछ कहा नहीं जा सकता। सचमुच अगर वे शुरुआत न कराते तो आज वह इतनी उन्नति नहीं कर सकता था। बदले में सुरपति ने उनके लिए क्या किया है ? बल्कि बारह बरसों के दरमियान उनकी यादें धीरे-धीरे मलिन होती जा रही हैं। उनके प्रति जो कृतज्ञता का भाव होना चाहिए, वह भी कम हो गया है।

त्रिपुराबाबू ने फिर से कहना शुरू किया, "तुम्हारी उस दिन की सफलता पर मुझे गर्व हुआ था। लेकिन उसके साथ अफसोस का भाव भी था। जानते हो, इसका कारण क्या है ? तुमने जिस रास्ते का चुनाव किया है, वह असली जादूगर का रास्ता नहीं है। तुम्हारा कारोबार बहुत कुछ लोगों को भुलाने का है, उसमें करिश्मा है, यन्त्रों का कौशल है। तुम्हारा अपना कौशल नहीं। तुम्हें मेरा जादू याद है ?"

सुरपति उसे भूला नहीं। लेकिन उसके साथ-साथ उसे महसूस होता था कि त्रिपुराबाबू अपने अच्छे-अच्छे जादू सिखाने से कतराते रहते थे। वे कहते, "अब भी समय नहीं आया है।" और वह समय कभी आया ही नहीं। उसके पहले ही शेफाल्लो आ गया और उसके बाद दो महीने के अन्दर ही त्रिपुराबाबू लापता हो गए।

उस दिन मेस जाने पर त्रिपुराबाबू जब नहीं मिले तो सुरपति को थोड़ा दुख हुआ था। लेकिन वह क्षणस्थायी था। क्योंकि उस समय उनके मन पर शेफाल्लो बहुत कुछ छाया हुआ था। शेफाल्लो के स्थान पर अपने आपको कल्पना कर वह सपनों का जाल बुनता रहता था। वह देश-देश में जादू दिखाकर पैसे कमाएगा, नाम कमाएगा, लोगों के बीच बांटेगा। लोगों से तालियां मिलेंगी, शाबाशी मिलेगी।

त्रिपुरा बाबू खिड़की से बाहर की ओर ताक रहे हैं। … बार उन्हें गौर से देखा। सचमुच वे बदतर हालत में मालूम

सिर के करीब-करीब सभी बाल पक चुके हैं, गालों पर झुरियां पड़ गई हैं, आंखें कोटर में धस गई हैं। लेकिन आंखों में क्या मलिनता आई है? ऐसा तो लग नहीं रहा है। आश्चर्य की बात है। उनकी आंखों में तीक्ष्णता है।

त्रिपुरा बाबू ने एक लम्बी सांस लेकर कहा, "जानता हूं, कि तुमने इस रास्ते का चुनाव क्यों किया है। मैं जानता हूं, तुम्हें इस पर विश्वास है—और इसके लिए हो सकता है मैं ही थोड़ा-बहुत जिम्मेदार हूं—कि निखालिस चीज की कद्र नहीं होती है। मंच पर जादू चल सके, इसके लिए थोड़ी चटक चाहिए, तड़क-भड़क चाहिए। है न यह बात?"

सुरपति ने इनकार नहीं किया। शेफाल्लो के देखने के बाद से ही उसमें यह धारणा बन गई थी। लेकिन तड़क-भड़क का अर्थ क्या बुरा होना है? आजकल समय बदल गया है। विवाह की मजलिस में दरी पर बैठकर तुम कितना कमा लोगे या कौन तुम्हारा नाम ही जानेगा? त्रिपुरा बाबू की हालत वह अपनी आंखों से देख चुका है। निखालिस जादू दिखाकर आदमी का पेट न भरे तो फिर उस जादू की सार्थकता ही क्या है?

सुरपति ने त्रिपुरा बाबू को शेफाल्लो के बारे में बताया। जिस चीज को देखकर हजारों दर्शकों को आनन्द मिलता है, जिसकी वे तारीफ करते हैं, उसकी क्या कोई सार्थकता नहीं? निखालिस जादू के प्रति सुरपति में अश्रद्धा का भाव नहीं है। लेकिन उस रास्ते में जाने पर भविष्य का दरवाज़ा बन्द मिलता है। यही वजह है कि सुरपति ने इस रास्ते का चुनाव किया है।

त्रिपुरा बाबू एकाएक उत्तेजित हो उठे। अपने पैरों को बेंच पर मोड़कर वे सुरपति की ओर झुक गए।

"सुनो सुरपति, अगर तुम सचमुच समझ पाते कि असली जादू क्या है, तो तुम नकली के पीछे दौड़ न लगाते। हाथ की सफाई उसका एक अंग मात्र है। उसके भी कितने भेद-उपभेद हैं, उसकी कोई सीमा नहीं। योग की क्रियाओं की तरह उन हाथ की सफाइयों के लिए महीने पर महीना और वर्ष पर वर्ष बिताना पड़ता है, तब अभ्यास सधता है। लेकिन इसके अतिरिक्त भी बहुत-कुछ है। हिपनोटिज्म! सिर्फ आंखों की ताकत के बल पर तुम आदमी को पूरे तौर पर अपने अधीन कर पाओगे। इस तरह वश में करोगे कि वह तुम्हारे हाथ का पुतला हो जाएगा। उसके बाद है क्लेयरवयेन्स या टेलीपैथी या थॉटरीडिंग। दूसरे के चिन्तन के जगत् में तुम बेरोकटोक विचरण कर पाओगे। किसी व्यक्ति की नाड़ी टटोलते ही बता दोगे कि वह क्या सोच रहा है। उसी तरह की तालीम मिल जाएगी तो छूने की भी जरूरत न पड़ेगी। सिर्फ एक मिनट तक उसकी आंखों में झांकने से

ही उनके मन की बातें, पेट की बातें—सब कुछ जान लोगे। यह सब क्या कोई कम जादू है ? दुनिया के तमाम श्रेष्ठ जादुओं के मूल में ये सब चीजें हैं। इसमे कल-कब्जों का कोई काम नहीं है। सिर्फ साधना, निष्ठा और एकाग्रता है।"

त्रिपुरा बाबू सांस लेने के लिए रुके। ट्रेन की आवाज़ के कारण उन्हें ज़ोर-ज़ोर से बोलना पड़ रहा था। शायद इसकी वजह से वे ज्यादा थक गए थे। अब वे सुरपति की ओर और भी बढ आए और कहा, "मैं तुम्हें यह सब चीज़ सिखाना चाहता था लेकिन तुमने परवा नहीं की। तुम धीरज नहीं रख सके। एक विदेशी बुजुर्ग की तड़क-भड़क और टीम-टाम ने तुम्हारा दिमाग बदल दिया। जिस रास्ते में तुरन्त अर्थ की प्राप्ति होने लगे, असली रास्ते को छोडकर तुम उस रास्ते पर चले गए ?"

सुरपति के होंठ सिल गए थे। वह सचाई के साथ किसी भी अभियोग का प्रतिकार नहीं कर सकता।

त्रिपुरा बाबू ने सुरपति के कंधे पर हाथ रखा और अपनी आवाज़ को धीमा करके कहा, "मैं तुमसे एक अनुरोध करने आया हूं, सुरपति ! कह नहीं सकता, मुझे देखकर तुम समझ रहे हो या नहीं कि मेरी हालत कितनी बुरी है। इतने तरह का जादू जानता हूं, लेकिन रुपया पैदा करने के जादू से मैं आज भी अनजान रह गया। महत्त्वाकांक्षा का अभाव ही मेरे लिए काल साबित हुआ वरना मुझे रोटी की फिक्र क्यों करनी पड़ती ? अभी मैं लाचार होकर ही तुम्हारे पास आया हूं, सुरपति। मैं खुद अपने पैरों पर खड़ा होऊं, इसकी न मुझमें ताकत है और न अब मेरी वह उम्र ही है। लेकिन मुझे इतना विश्वास है कि इस बुरे वक्त में तुम मुझे—थोड़ा-सा सैकरिफाइस कर—मदद करोगे। बस, इसके बाद तुम्हें परेशान नहीं करूंगा।"

सुरपति का कलेजा धड़कने लगा। त्रिपुरा बाबू किस प्रकार की मदद चाह रहे हैं ?

त्रिपुरा बाबू ने कहना जारी रखा, "हो सकता है, यह योजना तुम्हारे लिए कुछ कठिन प्रतीत हो, मगर इसके अलावा कोई चारा नहीं है। दूसरे मुश्किल की बात यह है कि मुझे केवल रुपये की ही जरूरत नहीं है। मुझमें एक नया शौक पैदा हो गया है। बहुत बड़े पैमाने पर एक नया [illegible] हे तमाम श्रेष्ठ देशों को एक बार दिखाने की इच्छा हो रही है। [illegible] यही पहला और अंतिम [illegible] हो, मगर इस शौक को [illegible] रहा हूं, सुरपति !"

एक अजब आशंका से सुरपति की छाती धड़कने लगी।

त्रिपुरा बाबू ने अब अपना असली प्रस्ताव रखा। "लखनऊ में तुम्हारे जादू-प्रदर्शन की व्यवस्था की गई है। तुम वहीं जा रहे हो। मान लो, आखिरी वक्त में तुम बीमार हो जाते हो। दर्शकों को बिलकुल निराश करके लौटा देने के बजाए अगर तुम्हारे स्थान पर कोई···"

सुरपति चहुंक उठा। त्रिपुरा बाबू यह क्या कह रहे हैं! सचमुच यह आदमी टूट चुका है अन्यथा वे इस तरह का प्रस्ताव रखते ही क्यों?

सुरपति चुप्पी साधे है, यह देखकर त्रिपुरा बाबू ने कहा, "अनिवार्य कारणों से तुम्हारे गुरु तुम्हारी जगह पर जादू दिखाएंगे—इस तरह की सूचना तुम प्रचारित कर देना। इससे क्या लोग काफी निराशा का अनुभव करेंगे? मुझे तो ऐसा नहीं लगता है। मुझे पूर्ण विश्वास है, लोगों को मेरा जादू अच्छा ही लगेगा। फिर मैं भी प्रस्ताव रखता हूं, पहले दिन तुम्हें जितना पैसा मिलना चाहिए, उसका आधा तुम्हें मिलेगा ही। उसमें हिस्से के तौर पर मुझे जितना मिलेगा, उसमें ही मेरा काम चल जाएगा। उसके बाद तुम जिस ढर्रे पर चल रहे हो, उसी पर चलना। मैं फिर तुम्हें तंग नहीं करने आऊंगा। तुम्हें केवल एक दिन का मौका देना है, सुरपति।"

"असंभव!" सुरपति का माथा गरम हो गया।

"असंभव! आप जो कुछ कह रहे हैं, खुद भी उसे समझ नहीं रहे हैं, त्रिपुरा बाबू। बंगाल के बाहर मेरी यह पहली प्रदर्शनी होने जा रही है। लखनऊ के शो पर कितना कुछ निर्भर कर रहा है, आप इसे समझ नहीं पा रहे हैं? अपने कैरियर के आरम्भ में ही मैं झूठ का सहारा लूं? आप ऐसी बातें कैसे सोच रहे हैं?"

त्रिपुरा बाबू कुछ देर तक सुरपति की ओर ताकते रह गए। उसके बाद ट्रेन की आवाज को चीरती हुई उनकी दृढ़ और संयत आवाज तैरने लगी।

"अठन्नी और अंगूठी के उस जादू पर तुममें अब तक लोभ है?"

"सुरपति चौंक पड़ा। लेकिन त्रिपुरा बाबू की दृष्टि में कोई परिवर्तन न आया।

"क्यों?"

त्रिपुरा बाबू ने मीठी हंसी हंसकर कहा, "अगर तुम मेरे प्रस्ताव से सहमत हो जाते हो तो मैं तुम्हें वह जादू सिखा दूंगा। अगर अभी वादा करो तो अभी तुरन्त सिखा दे सकता हूं। और, अगर तुम वादा नहीं करते हो···"

कर्कश सीटी बजाती हुई हावड़े की तरफ जाने वाली एक ट्रेन सुरपति वगैरह की ट्रेन की बगल से होती हुई गुजर गई। उसके डब्बों की रोशनी

मे त्रिपुरा बाबू की आंखें जलती हुई दीखीं। रोशनी और आवाज बंद हो गई तो सुरपति ने कहा, "और अगर राजी न होऊं तो ?"

"फिर उसका नतीजा अच्छा नहीं होगा, सुरपति। एक बात जान लो। मैं अगर दर्शकों के बीच मौजूद रहूं, और मेरा मन चाहे तो मैं किसी भी जादूगर को अपदस्थ कर सकता हूं, उसे परेशानी में डाल सकता हूं—यहां तक कि उसे निकम्मा बना दे सकता हूं।"

त्रिपुरा बाबू ने अपनी जेब से एक जोड़ा ताश निकालकर सुरपति की ओर बढ़ाया।

"लो, अपने हाथ की सफाई दिखाओ। कोई कठिन नहीं, बल्कि सहज सफाई। एक ही बार की फेंट में पीछे के गुलाम को इस सिरे पर ले आओ।"

सुरपति जब सोलह बरस का था, उसने आईने के सामने खड़े होकर एक सप्ताह तक इसका अभ्यास किया था और पूरे तौर से सीख लिया था।

और आज ?

सुरपति ने अपने हाथ में ताश उठाया और पाया कि उसकी उंगलियां अवश होती जा रही हैं। और न केवल उंगलियां बल्कि उंगलियों के साथ-साथ नाड़ी, कुहनी—पूरा हाथ। धुंधलाती आंखों से सुरपति ने देखा, त्रिपुरा बाबू के होंठों के कानों में एक अजीब ही तरह की हंसी है और वे अमानवीय तीक्ष्ण दृष्टि से सुरपति की आंखों में झांक रहे हैं। सुरपति का माथा पसीने से भीग गया, पूरे जिस्म में उसे एक थरथराहट का अहसास हुआ।

"अब मेरी सामर्थ्य समझ में आई ?"

सुरपति के हाथों से ताश का पैकेट अपने आप बेंच पर गिर पड़ा। त्रिपुरा बाबू ने ताश की पत्तियों को सहेजकर गम्भीर स्वर में कहा, "तैयार हो ?"

सुरपति की जड़ता और सुस्ती का भाव दूर हो चुका था। उसने थके और धीमे स्वर में कहा, "वह जादू सिखा दीजिएगा न ?"

अपने दाहिने हाथ की तर्जनी को सुरपति की नाक के सामने ले जाकर त्रिपुरा बाबू ने कहा, "लखनऊ के प्रथम शो में तुम्हारी अस्वस्थता के कारण तुम्हारे स्थान पर तुम्हारे गुरु त्रिपुराचरण मल्लिक अपनी जादूगरी दिखाएंगे। यह तुम्हें स्वीकार है न ?"

"हां, स्वीकार है।"

तुम्हें जो पैसे मिलेंगे उसका आधा हिस्सा मुझे दोगे, इस बात पर

तैयार हो न ?"

"ठीक है।"

"फिर आओ।"

सुरपति ने अपनी जेब टटोलकर एक अठन्नी और उंगली से प्रवाल-जड़ी अगूठी निकाली और उन्हे त्रिपुरा बाबू के हाथों मे थमा दिया।···

o

वर्धमान मे जब गाडी थमी, अनिल चाय लेकर अपने बॉस के डब्बे के सामने आया और उन्हे नीद की बाहों मे ऊघते पाया। कुछ झिझक के साथ अनिल ने धीमे स्वर मे 'सर' कहकर पुकारा और सुरपति तडफड़ा कर उठ बैठा।

"क्या···क्या बात है ?"

"आपके लिए चाय ले आया हू, सर। आपको डिसटर्ब किया, अन्यथा न सोचेंगे।"

"मगर···?" सुरपति इधर-उधर ताकने लगा। उसकी आखो में वहशीपन की छाया तैर रही थी।

"क्या हुआ, सर ?"

"त्रिपुरा बाबू···?"

"त्रिपुरा बाबू ?" अनिल हतप्रभ हो उठा।

"नही-नही···वे तो इक्यावन मे ही···बस से दबकर···मगर मेरी अगूठी कहा है ?"

"कौन-सी अगूठी, सर ? मूगा तो आपके हाथ मे ही है।"

"हा-हां। और···"

सुरपति ने जेब मे हाथ डालकर एक अठन्नी निकाली। अनिल ने देखा, सुरपति का हाथ थरथरा रहा है।

"अनिल, अन्दर आओ। जल्दी से। खिड़कियो को बन्द कर दो। हां, एक बार देख आओ।"

सुरपति ने बेंच के एक छोर पर अगूठी और दूसरे पर अठन्नी रखी। उसके बाद इष्ट नाम का जाप कर और नियति पर विश्वास रखकर सपने मे मिले कौशल का प्रयोग किया : अपनी दृष्टि को एकाग्र कर अगूठी पर टिका दी।

वह अठन्नी एक वशीभूत बालक की तरह लुढ़कती हुई अंगूठी के पास गई और उसे अपने साथ लिए सुरपति की ओर लुढ़कती हुई चली आई।

सुरपति 'हाथ की अजीब सफाई' कहकर अगर चाय की प्याली अनिल

के हाथों से लेकर थाम न लेता तो वह अनिल के हाथ से नीचे गिर जाती।

●

लखनऊ की जादू-प्रदर्शनी में जब पहले दिन परदा उठा, सुरपति मंडल ने उपस्थित दर्शकों के सामने खड़े होकर जादू-विद्या के शिक्षक स्वर्गीय त्रिपुराचरण मल्लिक के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आज प्रदर्शनी का अंतिम खेल है। सुरपति ने निखालिस स्वदेशी जादू कहकर जिसका ब्योरा दिया, वह है अंगूठी और अठन्नी का खेल।

अनाथ बाबू का भय

अनाथ बाबू से मेरी जान-पहचान ट्रेन के डब्बे में हुई थी। मैं जलवायु-परिवर्तन के लिए रघुनाथपुर जा रहा था। यों मैं कलकत्ते में एक अखबार के दफ्तर में काम करता हूं। पिछले कुछ महीनों से काम का दबाव इतना बढ़ गया था कि मेरी सांस घुटने लगी थी। इसके अलावा मैं लिखने-पढ़ने का शौकीन हूं। दो-चार कहानियों का प्लॉट मेरे दिमाग में चक्कर काट रहा था, लेकिन काम इतना ज्यादा था कि फुरसत निकाल ही नहीं पा रहा था। अत: किसी तरह की दुविधा में न पड़कर दस दिनों की बकाया छुट्टी और एकाध जिस्ता कागज लेकर निकल पड़ा।

इतनी-इतनी जगहों को छोड़कर रघुनाथपुर के लिए क्यों रवाना हुआ, इसका एक कारण है। वहां बिना खर्च के रहने का इन्तजाम हो गया था। मेरे कॉलिज के सहपाठी वीरेन विश्वास का पैतृक मकान रघुनाथपुर में है। कॉफी हाउस में बैठकर जब इस बात की चर्चा कर रहा था कि छुट्टियों में कहां जाऊं तो वीरेन ने खुशी के साथ अपना वह मकान ऑफर कर कहा, "मैं भी जाता, मगर झंझटों में फंसा हूं, यह तुम जानते ही हो। तब हां, तुम्हें कोई असुविधा नहीं होगी। हम लोगों का पचास बरसों का पुराना नौकर भारद्वाज उस मकान में है। वही तुम्हारी देख-रेख करेगा। तुम चले जाओ।"

गाड़ी में मुसाफिरों की भीड़ थी। मेरी बेंच पर बगल में ही अनाथ बंधु मित्र बैठे थे। कद नाटा। उम्र लगभग पचास वर्ष। मांग बीच से कढ़ी, खिचड़ी बाल। दृष्टि तीक्ष्ण। होठों पर एक ऐसा भाव छाया रहता है जैसे मन के हर कोने में हमेशा मनोरंजक विचार चक्कर काट रहा हो। एकाएक उन पर दृष्टि पड़े तो लगता है, वे जैसे पचास वर्ष पुराने नाटक के किसी पात्र के अभिनय के लिए सुसज्जित होकर आए हों। उस तरह का कोट, उस तरह का कमीज का कॉलर, चश्मा और खासतौर से उस तरह के बूट जूते—आजकल कोई धारण नहीं करता है।

अनाथ बाबू से जान-पहचान होने के बाद पता चला कि वे रघुनाथपुर जा रहे हैं। कारण पूछने पर वे अनमने से हो गए। यह भी हो सकता है कि ट्रेन की आवाज के चलते मेरा सवाल उनके कानों में पहुंचा ही नहीं।

वीरेन के पैतृक मकान को देखकर मन प्रसन्न हो गया। मकान बहुत सुन्दर है। सामने ज़मीन का एक टुकड़ा है। उसमें फूल के पौधे और साग-सब्ज़ी लगे हैं। आसपास कोई दूसरा मकान नहीं है, अतः पड़ोसियों के उत्पात से भी रक्षा होती रहेगी।

भारद्वाज के विरोधों के बावजूद मैंने अपने लिए छत के ऊपर का कमरा चुन लिया। वहां धूप, हवा और निर्जनता—तीनों पर्याप्त मात्रा में मिलेंगी। कमरे के अन्दर जाकर अपना सरो-सामान सजाने के वक्त देखा, दाढ़ी बनाने का अपना उस्तरा साथ नहीं ले आया हूं। सुनकर भारद्वाज ने कहा, "इससे हर्ज ही क्या होने जा रहा है, मुन्नाबाबू ? कुंडुबाबू की दुकान पर पांच मिनट के अन्दर जाया जा सकता है। वहां जाने से ब्लेड मिल जाएगा।"

तीसरे पहर चार बजे चाय पीकर कुंडु बाबू की दुकान की ओर चल पड़ा। जाकर देखा, वह अड्डेबाज़ी के लिए खासी अच्छी जगह है। दुकान के अन्दर दो बेंचों पर छह-सात प्रौढ़ बैठकर गपशप कर रहे हैं। उनमें से एक उत्तेजित होकर कह रहे हैं, "अरे भैया, यह कोई सुनी-सुनाई बात नहीं, अपनी आंखों से देखा है। तीस वर्ष बीत गए तो इसका यह मतलब नहीं कि मन से सब धुल-पुंछ गया। इस तरह की स्मृतियां इतनी आसानी से नहीं भूलतीं, और खासकर जब हलधर दत्त मेरा अन्तरंग मित्र रह चुका है। उसकी मौत के लिए आंशिक रूप में मैं खुद ज़िम्मेदार हूं, यह विश्वास अब तक बना हुआ है।"

एक पैकेट सेवेन ओ'क्लाक खरीदकर मैं दो-चार और दूसरी चीज़ों की खोज-पड़ताल करने लगा। भले आदमी का कहना जारी था, "सोच-कर देखिए, मेरा मित्र मुझसे दस रुपए की बाज़ी लगाकर उस उत्तर-पश्चिम के कमरे में रात बिताने गया। दूसरे दिन नहीं लौटा। अन्त में जितेन, बख्शी, हरिचरण साह, मैं और तीन-चार दूसरे-दूसरे व्यक्ति, जिनका नाम मुझे याद नहीं, हलधर की तलाश में हालदार भवन गए। जाकर देखा, वह उस कमरे में मरकर अकड़ गया है। उसकी आंखों की दृष्टि शहतीरों पर टिकी है। और, उस दृष्टि में भय की जो बानगी मैंने देखी, उससे सिवा भूत-प्रेत के और किसके बारे में सोच सकता हूं ? देह में घायल होने का कोई चिह्न न था, शेर के नोचने-खमोटने का कोई निशान न था, सांप के दंशन का कोई चिह्न न था—कुछ भी नहीं।

पांचेक मिनट और रुकने के बाद बातचीत के संदर्भ में मोटे तौर से एक धारणा बंधी। घटना यों है : रघुनाथपुर के दक्षिणी अंचल में हालदार भवन नामक एक दो सौ वर्ष पुराना खंडहरनुमा राजमहल है।

आपके सामने अपनी प्रशंसा करने से लाभ ही क्या हो सकता है मगर इतना कह दूं, इसके सम्बन्ध में इस देश में शायद ही मुझसे ज्यादा कोई जानता हो।"

उनकी बातें सुनकर मुझे यह नहीं लगा कि वे झूठ बोल रहे हैं या बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हैं। बल्कि उनके बारे में सहज ही एक विश्वास और श्रद्धा का भाव पैदा हो गया।

कुछ देर तक चुप रहने के बाद अनाथ बाबू ने कहा, "हिन्दुस्तान में कम-से-कम तीन सौ भुतहा मकानों में मैंने रातें गुजारी हैं।"

"क्या कह रहे हैं, आप!"

"हां। और जानते हैं, वह भी कैसी-कैसी जगहों में? मसलन जबलपुर, कार्सियांग, चेरापूंजी, काथी, कटोया, जोधपुर, आजिमगंज, हजारीबाग, सिउड़ी, बारासात। और कितनी जगहों का नाम गिनाऊं? छप्पन डाक-बंगलों और कम से कम तीस नीलकोठियों में मैंने रातें बिताई हैं। इसके अलावा कलकत्ते और उसके आसपास के कम से कम पचास मकानों में। मगर..."

अनाथ बाबू एकाएक चुप हो गए। उसके बाद सिर हिलाते हुए धीरे-धीरे कहा, "भूत ने मुझे धोखा दिया है। हो सकता है जो लोग भूतों को नहीं चाहते, भूत उन्हीं के पास आते हैं। मुझे बार-बार निराश ही होना पड़ा है। तमिलनाडु के त्रिचनापल्ली में साहबों के डेढ़ सौ वर्ष पुराने परित्यक्त क्लब में भूत मेरे बिलकुल पास आ गया था। जानते हैं, किस तरह? कमरा घुप अंधेरा था, हवा का नामोनिशान नहीं। जितनी बार मोमबत्ती जलाने के लिए तीली जलाता हूं, वह फूंक मार कर उसे बुझा देता है। अन्त में तेरह तीलियां बरबाद होने के बाद मोमबत्ती जली और प्रकाश फैलते ही भूत जो गायब हुआ तो फिर नहीं आया। एक बार कलकत्ते के झामापुकुर के एक भुतहा मकान में भी एक दिलचस्प अनुभव हुआ था। मेरे सिर पर इतने बाल देख रहे हैं न! लेकिन उस मकान में एक अंधेरे कमरे में भूत के इन्तजार में बैठे रहने पर आधी रात के वक्त ब्रह्मतालु के पास मच्छर ने काट लिया। बात क्या है? अंधेरे में डरते हुए मैंने अपने सिर पर हाथ रखकर देखा और पाया, वहां एक भी बाल नहीं है। पूरा सिर ही चिकना और गंजा है। यह मेरा सिर है या कि किसी दूसरे के सिर पर हाथ रखकर उसे अपना सिर समझ रहा हूं? मगर मच्छर के दंश का अनुभव मैंने ही किया है। टॉर्च जलाकर आईने में देखा और कहीं कोई गंजापन न था। मेरे सिर पर पहले जैसे बाल थे, वैसे ही हैं। बस, इन दो के अतिरिक्त भूतों के संबंध में और कोई अनुभव नहीं है, हालांकि मैंने

इतनी-इतनी कोशिशें की हैं। यही वजह है कि भूत देखने की आशा एक तरह से छोड़ ही चुका था, तभी एक पुरानी, जिल्ददार 'प्रवासी' में रघुनाथपुर के इस मकान के बारे में उल्लेख मिला। इसीलिए तय किया कि एक बार आखिरी कोशिश करके देख ही लूं।"

अनाथ बाबू की बातें सुनते-सुनते कब उस मकान के सदर फाटक पर पहुंच गया, इसका खयाल ही न रहा। उन्होंने अपनी जेब-घड़ी देखकर कहा, "आज पांच बजकर इकतीस मिनट पर सूर्यास्त होगा। अभी सवा पांच बज रहे हैं। चलिए, धूप रहते ही एक बार उस कमरे को देख आऊं।"

संभवतः भूत का नशा संक्रामक होता है, क्योंकि मैंने अनाथ बाबू के प्रस्ताव का विरोध नहीं किया। बल्कि मकान के अन्दरूनी हिस्से और खासतौर से उस कमरे को देखने की एक तीव्र इच्छा हो रही थी।

सदर दरवाज़े से घुसने पर विशाल आंगन और नाट्यशाला पर दृष्टि गई। एक सौ-डेढ़ सौ बरसों के दरमियान यहां कितने उत्सव-त्योहार, पूजा, नाटक और वार्तालाप हो चुके हैं। मगर आज उनका कहीं कोई निशान न था।

आंगन के तीन तरफ बरामदे हैं। हम लोगों के दाहिने तरफ के बरामदे पर एक टूटी पालकी पड़ी है। पालकी से दसेक हाथ की दूरी पर दोमंज़िले पर जाने की सीढ़ी है।

सीढ़ी इतनी अंधेरी थी कि अनाथ बाबू को अपने कोट की जेब से टार्च निकालकर जलाना पड़ा। प्रायः अदृश्य मकड़ी के जालों के व्यूह का भेदकर हम किसी तरह दोमंज़िले पर पहुंचे। मन ही मन कहा, इस घर में भूत का रहना अस्वाभाविक नहीं है।

दोमंज़िले के बरामदे पर खड़े होकर हमने हिसाब लगाया कि अगर बाएं से सीधे जाया जाए तो सामने जो कमरा है, वही उत्तर-पश्चिम वाला कमरा है। अनाथ बाबू ने कहा, "समय बरबाद करने से कोई फायदा नहीं। चलिए, हम लोग आगे बढ़ें।"

यहां यह बात बता दूं कि बरामदे में केवल एक ही चीज़ थी और वह थी एक घड़ी। ऐसी घड़ी को 'ग्रैन्डफादरवाच' कहा जाता है। मगर उसकी हालत अत्यन्त शोचनीय थी—शीशा नहीं है, वही सुई गायब है, पेंडुलम टूटकर एक किनारे पड़ा है।

उत्तर-पश्चिम के कमरे का दरवाज़ा भिड़ा हुआ था। अनाथ अपने दाहिने हाथ की तर्जनी से सावधानी के साथ ठेलकर दरवाज़े खोल रहे थे, मेरी देह बिना किसी कारण के सहसा सिहर उठी।

परन्तु कमरे के अन्दर जाने पर किसी प्रकार की अस्वाभाविकता का अहसास न हुआ। देखकर लगा, किसी जमाने में यह बैठक रही होगी। कमरे के बीच एक विशाल मेज है, जिसके सिर्फ चारों पाए ही साबुत हैं, ऊपर का तख्ता गायब है। मेज के पास, खिड़की की तरफ एक आरामकुर्सी है। इतना जरूर है कि अब वह आरामदेह होगी या नहीं, इसमें संदेह है, क्योंकि इसका एक हत्था और बैठने की जगह पर बेंत का थोड़ा हिस्सा गायब है।

ऊपर की ओर ताकने पर हाथ से खींचने वाला एक पंखे का टूटा हुआ हिस्सा दीख पड़ा। यानी उसमें रस्सी नहीं है, लकड़ी का डंडा टूटा हुआ है और झालर आधा फटा हुआ।

इसके अलावा कमरे में खाने बना बन्दूक रखने का एक आला है, बिना नली का एक नैचा और दो मामूली हत्थाविहीन कुर्सियां।

अनाथ बाबू कुछ देर तक स्तब्ध खड़े रहे। लगा, ध्यानपूर्वक किसी चीज के अनुभव के लिए कोशिश कर रहे हैं। लगभग एक मिनट के बाद बोले, "एक तरह की गंध का अहसास हो रहा है।"

"किस तरह की गंध का ?"

"मद्रासी धूप, मछली का तेल और मुर्दा जलाने की गंधों से मिली एक तरह की गंध।"

मैंने दो-चार बार जोरों से सांस ली। बहुत दिनों से बन्द कमरे को खोलने में जिस तरह की सड़ी गंध निकलती है, सिवा उस गंध के और किसी तरह की गंध मालूम न हुई। इसीलिए मैंने कहा, "वैसा महसूस नहीं हो रहा है।"

कुछ देर तक चुप रहने के बाद अनाथ बाबू ने अचानक अपनी बायीं हथेली पर दाहिने हाथ से एक मुक्का जमाते हुए कहा, "ठीक है। मैं इस गंध को पहचानता हूं। इस घर में निश्चय ही भूत है। तब हां, हजरत दीखेंगे या नहीं, यह बात कल रात के पहले समझ में नहीं आएगी। चलिए।"

अनाथ बाबू ने तय कर लिया कि दूसरे दिन रात के समय उन्हें इस कमरे में रहना है। लौटते वक्त बोले, "आज इसलिए नहीं आ रहा कि कल अमावस्या है, जो भूतों के लिए सबसे सुविधाजनक तिथि हुआ करती है। इसके अलावा दो-चार चीजें अपने साथ रखना जरूरी है। वे घर पर छूट गई हैं, कल लेकर आऊंगा। आज सर्वेक्षण करके जा रहा हूं।"

अनाथ बाबू मुझे घर तक छोड़ने आए और जब जाने लगे तो आहिस्ता से बोले, "मेरी इस योजना की बातें किसी से मत बताए। इन लोगों की

बातचीत आप आज सुन ही चुके हैं—इन लोगों में इतना भय और पूर्वाग्रह है कि कहीं अड़चन डालकर मेरी योजना को विफल न बना दें। हां, एक बात और। चूंकि आपको अपने साथ लेकर नहीं जाऊंगा इसलिए कुछ अन्यथा न सोचेंगे। इन मामलों में, समझ रहे हैं न, अकेला रहे बिना कोई उपाय निकालना मुश्किल है।"

●

दूसरे दिन कागज-कलम लेकर बैठने के बावजूद लेखन का कार्य अधिक आगे बढ़ नहीं पाया। मन में हालदार भवन के उत्तर-पश्चिम का कमरा घूमता रहा। इसके अलावा मन में यह विचार भी मंडराता रहा कि रात में अनाथ बाबू को किस तरह के अनुभवों के दौर से गुजरना पड़ेगा। इसके कारण मेरे मन में बेचैनी और अशान्ति थी।

तीसरे पहर अनाथ बाबू को हालदार भवन के फाटक तक पहुंचा आया। आज उनके बदन पर काला बंद गले का कोट है, कंधे पर पानी का फ्लास्क और हाथ में वही कल वाला तीन सेल का टॉर्च। फाटक से अन्दर जाने के पहले कोट की दोनों जेबों में हाथ डालकर उन्होंने दो बोतलें बाहर निकालीं और मुझे दिखाकर बोले,"यह देखिए, इसमें मैंने अपने फारमूले से बनाया तेल रखा है—शरीर की खुली जगहों में इसे लगा लेने से मच्छर नहीं काटेंगे। और, दूसरे में है कारबॉलिक एसिड। इसे घर के आसपास छिड़क देने से सांपों के उत्पात से निश्चिन्त रहा जा सकता है। यह कहकर दोनों बोतलों को जेब के हवाले किया, टार्च को माथे से छुलाकर मुझे सलामी ठोकी और बूटों को खटखटाते हुए अनाथ बाबू हालदार भवन की ओर चल दिए।

●

रात में मुझे ठीक से नींद नहीं आई।

सुबह होते ही भारद्वाज से कहा कि वह मेरे फ्लास्क में दो आदमी के लायक चाय भर दे। चाय आ जाने के बाद मैं फ्लास्क लिए हालदार भवन की ओर रवाना हो गया।

हालदार भवन के फाटक के पास पहुंचने के बाद मुझे कहीं कोई आहट नहीं सुनाई पड़ी। अनाथ बाबू का नाम लेकर पुकारूं या सीधे दोमंजिले पर चला जाऊं, जब यही सोच रहा था तभी एकाएक कानों में आवाज आई, "ए साहब, मैं इधर हूं।"

अब मेरी दृष्टि अनाथ बाबू पर गई जो महल के पूर्वी जंगल

से चहल-कदमी करते हुए मेरी ओर आ रहे थे। उन्हें देखकर ऐसा महसूस ही नहीं हुआ कि रात मे उन्हें किसी प्रकार का भयावह या अस्वाभाविक अनुभव हुआ है। मेरी ओर आकर हंसते हुए नीम की एक डंठल दिखाकर बोले, "कुछ मत कहिए जनाब ! नीम की इस डंठल की खोज में आधे घंटे तक जंगल की खाक छाननी पड़ी है। मैं दातुन के बाद ही मुंह धोने का अभ्यस्त हूं।"

हठात् रात की बातों के बारे मे पूछने में कैसा-कैसा तो लगा। मैंने कहा, "चाय ले आया हूं। यहां पीजिएगा या घर चलिएगा ?"

"चलिए न, उस फव्वारे के पास जाकर पिएं।"

गरम चाय से एक घूंट लेने के बाद अनाथ बाबू के मुंह से तृप्ति सूचक शब्द 'आह' निकला और फिर वे मेरी ओर मुड़कर मुसकराते हुए बोले,

"आपके मन मे बड़ी ही उत्सुकता जग रही होगी ?"

मैंने सकपकाते हुए कहा, "हां, यानी एक...."

"ठीक है। सुनिए। शुरू में ही बता दूं : एक्सपिडिशन हायली सक्सेस-फुल।[1] "मेरा यहां आना सार्थक हुआ।"

अनाथ बाबू ने एक मग चाय पीकर खतम कर डाला और दूसरा मग ढालते हुए अपनी बातें शुरू की :

"आप जब मुझे पहुचाकर चले गए तब पांच बज रहे थे। घर के अन्दर जाने के पहले मैंने आसपास का सर्वक्षण कर लिया। बहुत बार भूतों के बजाय जिन्दा आदमी या जानवरों के उपद्रवों की ज्यादा आशंका रहती है। बहरहाल मैंने देखा कि आसपास संदेहजनक कोई वस्तु नहीं है।

"घर के अन्दर जाकर मैंने उन तमाम कमरों को देख लिया जो खुले हुए थे। इतने दिन हो चुके हैं अतः सरो-समान पड़ा हुआ हो, इसकी सम्भावना नही थी। एक कमरे मे मलबे, कुछ लोहा-लक्कड़ और चारेक चमगादड के अतिरिक्त और कोई चीज़ देखने में न आई। मुझ पर नज़र पड़ने पर भी चमगादड़ों के दल ने हटने का नाम नहीं लिया। मैंने भी उनके साथ छेड़खानी नही की।

"जब साढ़े छह बज गए, दोमंजिले के असली कमरे के अन्दर जाकर रात बिताने का इन्तज़ाम करने लगा। अपने साथ मैं एक झाड़न ले आया था, उससे आराम कुर्सी को झाड़-पोंछकर साफ़ किया। न जाने, उस पर कब से गर्द की परतें जमी हुई थीं।

---

1. अभियान पूर्णतः सफल रहा।

"कमरे के अन्दर एक घुटन फैली थी, अतः मैंने खिड़की खोल दी। हजरत भूत अगर सशरीर आना चाहें, इसीलिए बरामदे के दरवाजे को भी खुला छोड़ दिया। उसके बाद टॉर्च और फ्लास्क फर्श पर रखकर टूटी बेंत की उस आरामकुर्सी पर लेट गया। मैं बहुत ही बेचैनी महसूस कर रहा था, मगर इसके पहले भी इसकी अपेक्षा बदतर हालत में रात गुजारे रहने के कारण मैंने कुछ खयाल नहीं किया।

"आश्विन के महीने में साढ़े पांच बजे ही सूर्यास्त हो जाता है। देखते-देखते अंधकार गहराने लगा और, उसके साथ-साथ वह गंध भी आहिस्ता-आहिस्ता स्पष्टतर होती गई। यों तो मैं शांत प्रकृति का आदमी हूं, सहज ही कभी उत्तेजना में नहीं आता हूं मगर कल अन्दर ही अन्दर एक उत्तेजना महसूस कर रहा था।

"कह नहीं सकता कि उस समय वक्त क्या हो रहा था, तब मेरा अनुमान है, नौ या साढ़े नौ बजे होंगे, कमरे के अन्दर एक जुगनू आया। एक मिनट तक वह इधर-उधर चक्कर काटता रहा और फिर खिड़की से बाहर चला गया।

"उसके बाद कब सियार और झींगुरों की आवाज थम गई और कब मैं नींद में खो गया, याद नहीं है।

"एक आवाज सुनकर मेरी नींद खुल गई। डिंग-डांग आवाज कर घड़ी ने बारह बजाए। मीठी परन्तु तेज आवाज। यह घड़ी की जैसी ही आवाज थी और बरामदे की तरफ से आ रही थी।

"कुछ ही क्षणों में नींद बिलकुल दूर हो गई और सजग होने पर मेरा ध्यान और दो चीजों पर गया। पहला यह कि मैं आरामकुरसी पर सच-मुच आराम से ही लेटा हुआ हूं। बेंत का टूटा हुआ हिस्सा जुड़ गया है और किसी ने मेरी पीठ के पीछे एक तकिया रख दिया है। दूसरा यह कि मेरे माथे पर झालरदार एक नया हाथ से खींचने वाला पंखा है और उससे एक रस्सी दीवार के सूराख से होती हुई बरामदे पर चली गई है। न जाने कौन उस रस्सी को खींच रहा है और पंखे के हिलने-डुलने से मैं फुरहरी हवा का अनुभव कर रहा हूं।

"मैं अवाक् होकर सब देख रहा हूं और उनका उपभोग कर रहा हूं, तभी न जाने कैसे अमावस की रात में वह कमरा प्रकाश से जगमगाने लगा। उसके बाद मेरे नथुनों में एक अजीब ही गंध आई। मैंने करवट बदली और देखा, कोई अनजान व्यक्ति एक नैचा रख गया है और उससे मीठी-मीठी गंध निकल रही है। उम्दा से उम्दा अंबुरी तम्बाकू की'"

अनाथ बाबू एक क्षण चुप रहे। उसके बाद मेरी ओर मुड़कर

हुए बोले, "बड़ा ही मनोरम परिवेश था। था न ?"

मैंने कहा, "सुनकर तो अच्छा ही लगा। फिर मोटे तौर से आपकी रात आराम से ही बीती ?"

मेरा सवाल सुनकर अनाथ बाबू के चेहरे पर एकाएक गंभीरता उतर आई। कुछ देर तक मैंने प्रतीक्षा की, फिर धीरज गवाकर पूछ ही बैठा, "फिर क्या आपके साथ कोई खौफनाक घटना नहीं घटी ? आपने भूत नहीं देखा ?"

अनाथ बाबू ने पुनः मेरी ओर आंखें फैला दीं। लेकिन अब होठों पर पहले की मुसकराहट न थी। भर्राए स्वर में उन्होंने पूछा, "परसों जब आप कमरे के अन्दर गए थे तो शहतीरों की ओर आपने गौर से देखा था ?"

मैंने कहा, "शायद खूब अच्छी तरह नहीं देखा था। क्यों, बात क्या है ?"

अनाथबाबू ने कहा, "वहां एक खास चीज़ है, आप उसे जब तक देख नहीं लेते हैं, बाकी घटना मैं आपको समझा नहीं पाऊंगा। चलिए।"

अंधेरी सीढ़ियां तय करते हुए अनाथ बाबू ने मुझसे इतना ही कहा, "अब मैं भूतों के पीछे दौड़ नहीं लगाऊंगा, सीतेश बाबू। कभी नहीं। मेरा वह शौक अब पूरा हो चुका है।"

बरामदे से जाते हुए मैंने घड़ी की ओर देखा, वह पहले जैसी थी, वैसी ही टूटी हालत में अब भी थी।

कमरे के दरवाजे के सामने पहुंचकर अनाथ बाबू ने कहा, "जाइए।"

दरवाजा उढ़का हुआ था। हाथ से उसे ठेलकर मैं कमरे के अन्दर गया। उसके बाद दो कदम आगे बढ़ते ही मेरी आंखें फर्श की ओर गईं और मेरी पूरी देह उसी क्षण विस्मय और आशंका से सिहर उठी।

बूट पहने कौन फर्श पर पड़ा है ? और बरामदे की तरफ से किसका ठहाका आ रहा है—वह ठहाका जो हालदार भवन के कोने-कोने को प्रतिध्वनित कर रहा है, जो मेरे खून को पानी बनाकर मेरी तमाम चेतना और ज्ञान को जड़ बनाता जा रहा है। फिर क्या···

इसके बाद मुझे कुछ याद नहीं है।

जब मेरी चेतना लौटी, भारद्वाज को अपने पैताने खड़ा पाया। भवतोष मजुमदार पंखे से हवा झल रहे थे। मेरी आंखें खुलते देखकर भवतोष बाबू ने कहा, "भाग्यवश सिधु चरण ने आपको उस घर के अन्दर जाते देखा था वरना पता नहीं आपकी क्या हालत होती। आप किस बुद्धि के भरोसे वहां गए थे ?"

मैंने कहा, "अनाथ बाबू जिस रात···"

भवतोष बाबू ने मुझे टोकते हुए कहा, "अब अनाथ बाबू ! कल मैंने जो इतनी बातें कहीं, उन्हें किसी बात पर विश्वास नहीं आया। भाग्य कहिए कि उनके साथ आप रात गुजारने नहीं गए थे। उनकी हालत देख ली न। हलधर के साथ जो हुआ, उनके साथ भी वही बात हुई। मरकर लकड़ी हो गए। उनकी आंखों में भी वही दृष्टि थी, देखने का वही भाव, वही शहतीरों की तरफ देखना···।"

मैंने मन ही मन कहा, नहीं मर कर वे लकड़ी नहीं हो गए हैं। मैं जानता हू, वे मर कर क्या हो गए हैं। कल सुबह भी अगर जाऊं तो वे मिलेंगे उनके शरीर पर होगा काला कोट, पैरों में बूट और वे हालदार भवन के पूरबी जंगल से हाथों में नीम के दातुन थामे, हंसते हुए, बाहर निकलते दीखेंगे।

शिवु और राक्षस की कहानी

"आ शिवु, इधर सुनते जा।"

शिवु जब स्कूल जाता था, फटिकदा अकसर उसे इसी तरह पुकारा करता था।

फटिकदा का मतलब है पगला फटिक।

जयनारायण बाबू के मकान से आगे बढ़ने पर, चौराहे के पास, जहां आज दस बरसों से स्टीम रोलर पड़ा हुआ है, ठीक उस स्टीम रोलर के सामने फटिकदा की छोटी-सी टीन की चाल है। न जाने, फटिक आठो पहर ओसारे पर बैठकर खुट-खुट कौन-सा काम करता रहता है। शिवु को इतना ही मालूम है कि फटिकदा बहुत ही गरीब है। लोग कहा करते हैं, फटिक किसी ज़माने में खूब लिखा-पढ़ा करता था, इसीलिए वह पागल हो गया है। मगर जब शिवु फटिक की बातें सुनता है तो उसे लगता है, फटिक की तरह बुद्धिमान व्यक्ति कोई दूसरा नहीं है।

तब हां, यह सच है कि फटिक की ज्यादातर बातें अजीब और पागलपन से भरी हुआ करती हैं, "कल चांद के आसपास का हिस्सा देखा था? बाईं ओर एक सींग जैसा कुछ निकला हुआ था। कुछ दिनों से कौवे अजीब सुर में पुकार रहे हैं। सुना है? सबको ठंड लग गई है।"

शिवु को हंसने का मन करता है, कभी-कभी ऊब भी महसूस होती है। जिन बातों का कोई उत्तर नहीं हो सकता, जिनका सचमुच कुछ अर्थ नहीं होता, उन बातों को सुनने का मतलब है समय नष्ट करना। यही वजह है कि कभी-कभी फटिक के पुकारने पर भी शिवु उसके पास नहीं जाता। "आज मेरे पास वक्त नहीं है फटिकदा, दूसरे दिन आऊंगा।" यह कहकर वह स्कूल की ओर चल देता है।

आज भी उसने सोचा था कि वह नहीं जाएगा, परन्तु फटिकदा ने आज बहुत ज्यादा दबाव डाला।

"मैं तुझे जो कहना चाहता हूं, उसे न सुनेगा तो तेरी हानि होगी।"

शिवु सुन चुका है कि पागल आदमी बीच-बीच में ऐसी बातें बोला करता है जो सामान्य मनुष्य के लिए असंभव है। इसीलिए हानि के बारे में सोचते ही वह डरता हुआ फटिक की ओर चला गया।

मैं बहुरूपिए की तरह रंग बदलने में समर्थ हो जाऊंगा।'

शिबु ने कहा, "फटिकदा, मैंने देख लिया?"

"क्या?"

"दांत।"

"ओ। कैसा मालूम हुआ?"

"यों सब ठीक है, पान का दाग है और दो दांत कुछ बड़े हैं।"

"कौन-कौन से?"

"बगल के। यहां के।" शिबु ने उंगली से बताया।

"हूं। यहां के दांत को क्या कहा जाता है, मालूम है?"

"क्या?"

"श्वदन्त। कुकुर दांत।"

"ओ।"

"आदमी के जबड़े में इतना बड़ा कुकुरदांत इसके पहले कभी देखा है।"

"शायद नहीं।"

"कुकुर दांत कितना बड़ा होता है, जानते हो?"

"कुत्ते का।"

"ईडियट! सिर्फ कुत्ते का ही क्यों? सभी मांसाहारी जानवरों के श्वदंत बड़े होते हैं। उन्हीं दांतों से कच्चे मांस को नोच-नोचकर हड्डियों को भी चबाकर खाते हैं। खासकर हिंसक जीव-जन्तु।"

"ओ।"

"और किसके श्वदंत बड़े होते हैं?"

शिबु आकाश-पाताल सोचने लगा। और किसका हो सकता है? आदमी और जीव-जन्तुओं के अलावा दांतवाले और होते ही क्या हैं?

फटिकदा ने अपने इमामदिस्ते में एक अखरोट और एक चम्मच काला जीरा डालकर क[illegible] "[illegible] हैं।"

"राक्षसों के [illegible]?

और, आजकल [illegible] का अस्तित्व तो दन्तकथाओं की पुस्तकों के पृष्ठों में ही है। राक्षसों के बारे में शिबु ने ढेरों कहानियां पढ़ी हैं: उनके दांत मूली की तरह होते हैं, सूप की तरह...

शिबु चौंक पड़ा।

सूप की तरह पीठ!

जनार्दन बाबू की पीठ सीधी नहीं है। कैसी तो कुबड़े की जैसी, सूप

की तरह। शिवु ने किसी से सुना था कि जनार्दन बाबू वात के मरीज हैं, इसलिए पीठ सीधी कर चल नहीं पाते।

मूली की तरह दांत, सूप की तरह पीठ...और ? और पता नहीं राक्षसों के क्या-क्या होते हैं।

और गेंद की तरह आंखें।

जनार्दन बाबू की आंखों को शिवु ने ध्यान से देखा है ? नहीं; नहीं देखा है। ध्यान से देखने की सभावना नहीं है।

वजह यह है कि जनार्दन बाबू चश्मा लगाते हैं और उनके चश्मे के कांच का रंग मटमैला है। उनकी आंखों का रंग लाल या बैंगनी या कि हरा है, यह समझना नामुमकिन है।

शिवु गणित मे तेज है। लघुतम समापवर्त्तक, महत्तम समापवर्त्तक, भिन्न—किसी को हल करने मे वह असमर्थ नहीं रहता है। कम से कम कुछ दिन पहले तक उसके साथ यही बात थी ! प्यारीचरण बाबू जब गणित शिक्षक थे, उसे हर रोज दस मे से दस अंक प्राप्त होते थे। मगर दो दिनों से शिवु थोड़ी बहुत उलझन महसूस कर रहा है। कल उसने मन के जोर से स्वयं को बहुत कुछ संभाल लिया था। सुबह नींद टूटते ही उसने मन ही मन कहना शुरू किया था कि वे राक्षस नहीं हो सकते। आदमी राक्षस नहीं हुआ करते। चाहे पहले होते हों, मगर अब नहीं हुआ करते। जनार्दन बाबू राक्षस नहीं है, वे मनुष्य हैं। क्लास में भी बैठा-बैठा वह इन्हीं बातों को दुहरा रहा था। तभी एक बात हो गई।

ब्लैक बोर्ड पर एक हिसाब लिखकर जनार्दन बाबू अनमने जैसे हो गए और अपना चश्मा उतारकर उसे चादर के छोर से पोंछने लगे। और ठीक उसी वक्त शिवु से उनकी आंखें टकरा गयीं।

शिवु ने जो कुछ देखा उससे उसके हाथ-पांव ठंडे पड़ गए।

जनार्दन बाबू की आंखों की सफेदी—सफेद रंग की नहीं, चटख लाल रंग की है—पल्टू की पेंसिल की तरह लाल।

यह देखने के बाद शिवु बेचैन हो उठा।

•

यों शिवु छुट्टी होने पर सीधे घर नहीं जाता है। वह शुरू में मित्तिर के बगीचे में जाता है। छतिवन के पेड़ के तले लाजवंती की जो लताएं हैं, उन्हें वह अपनी उंगलियों से छेड़-छेड़कर नींद मे मशगूल कर देता है। उसके बाद वह सरलदीघि के किनारे जाता है। तालाब के पानी मे ठीकरे फेंककर वह भीमरी खेलता है। उसका ठिकरा अगर सात बार से ज्यादा

फलांगता हुआ उस पार पहुंच सके तो वह ट्रेन का रेकार्ड तोड़ सकेगा। सरलदीघि के बाद ही ईंट की भट्ठियों का मैदान है। यहां वह सजी हुई ईंटों की छल्ली पर दसेक मिनट तक व्यायाम करने के बाद कुहनी के बल चलता हुआ मैदान पार करता है और उसके बाद मकान के खिड़कीनुमा दरवाजे के पास आता है।

आज मित्तिर के बगीचे में आने पर उसे लाजवंती लताएं झुकी हुई मिलीं। ऐसी बात क्यों हुई? लताओं पर से कोई चहलकदमी करते हुए गया है? इस रास्ते से कोई तो आता-जाता नहीं है!

अब शिवू को बगीचे में रहने की इच्छा नहीं हुई। एक अजीब सन्नाटा रेंग रहा है। आज जैसे जल्दी-जल्दी शाम घिरती जा रही है। कौए क्या रोज इसी तरह चिल्लाते हैं या किसी वजह से वे डर गए हैं? सरलदीघि के किनारे हाथ से किताबें नीचे उतारकर रखते ही शिवू ने महसूस किया, आज ठीकरे उछालना ठीक नहीं है। आज उसे ज्यादा देर तक बाहर नहीं रहना चाहिए। अगर रहेगा तो हो सकता है, विपत्ति का सामना करना पड़े।

एक विशाल मछली जैसी किसी चीज ने पोखर के बीच छलांग लगाकर गहरे पानी में डुबकी लगाई।

शिवू ने किताबें उठा लीं। उस पार के बरगद पर झूलते चमगादड़ों ने पेड़ को स्याह जैसा बना डाला है। थोड़ी देर के बाद उनके उड़ने का समय आएगा। फटिकदा ने उससे कहा है कि चमगादड़ों के सिर में खून न रहने का कारण वह एक दिन उसे बता देगा।

जामुन के पीछे की झाड़ी से एक तक्षक की आवाज आयी, "खोक्! खोक्! खोक्!"

शिवू अपने घर की ओर रवाना हुआ।

ईंटों के भट्ठे के पास आते ही उसकी नजर जनार्दन बाबू पर पड़ी।

ईंटों की छल्ली से बीसेक हाथ की दूरी पर एक बेर का पेड़ है। उसके पास दो बकरियां खेल रही हैं और जनार्दन बाबू अपने हाथों में किताब और छाता थामे उनका खेल देख रहे हैं।

शिवू सांस रोककर चुपचाप ईंट की एक छल्ली पर चढ़ गया और दो ईंटों की फांक से अपनी गरदन को यथासंभव आगे बढ़ाकर, जनार्दन बाबू को देखने लगा।

उसने देखा, बकरियों की ओर ताकते-ताकते जनार्दन बाबू ने दो बार अपने दाहिने हाथ को उलटकर उससे होंठों के नीचे के हिस्से को सहलाया।

जीभ से लार टपके बिना कोई आदमी इस तरह अपने होंठों के नीचे का हिस्सा नहीं पोंछता है।

उसके बाद शिवू ने देखा, जनार्दन बाबू उस प्रकार नीचे की ओर झुक पड़े, जिस तरह कि लोग आक्रमण करने की स्थिति में किया करते हैं।

उसके बाद एकाएक हाथ से किताब और छाता फेंककर एक ही झपट्टे में बकरी के एक बच्चे को पकड़कर हाथों में उठा लिया। और, उसी क्षण शिवू को बकरी के बच्चे की चीख और जनार्दन बाबू की हंसी सुनाई पड़ी।

शिवू ने एक ही छलांग मे ईंट की छल्ली को पार किया। दूसरी छलांग मे वह एक दूसरी छल्ली को ज्योंही फलांगना चाहता था कि वह फिसलकर धड़ाम से गिर पड़ा।

"वहां कौन है ?"

किसी तरह शिवू ने जब अपने आपको संभाला तो देखा, जनार्दन बाबू बकरी के बच्चे को नीचे रखकर उसकी ओर आ रहे हैं।

"कौन हो ? शिव तुम ? चोट लग गई ? तुम वहां क्या कर रहे थे ?"

शिवू ने बोलने की चेष्टा की, पर उसका गला सूख गया था। उसे इच्छा हो रही थी कि बदले में वह जनार्दन बाबू से पूछे कि आप वहां क्या कर रहे थे; कि आपके हाथ में बकरी का बच्चा क्यों था, कि आपकी जीभ से लार क्यों टपक रही थी।

जनार्दन बाबू शिवू के पास आये और बोले, "लो, मेरा हाथ पकड़ो।"

बिना उनका हाथ पकड़े शिवू किसी तरह उठकर खड़ा हुआ।

"तुम्हारा घर निकट ही है न ?"

"हां सर।"

"वही लाल जैसा मकान ?"

"हा सर।"

"ओ।"

"मैं चल रहा हूं, सर।"

"वह क्या है—खून ?"

शिवू ने देखा, उसका घुटना छिल गया है और थोड़ा-सा रक्त चूकर नीचे गिर पड़ा है। जनार्दन बाबू उसी रक्त की ओर ताक रहे हैं और उनके चश्मे के कांच आग की तरह चमक रहे हैं।

"मैं चल रहा हू, सर।"

शिवू ने किसी तरह जमीन पर से अपनी किताबें उठायीं।

"सुनो, शिवराम।"

फलांगता हुआ उस पार पहुंच सके तो वह ट्रेन का रेकार्ड तोड़ सकेगा। सरलदीघि के बाद ही ईंट की भट्टियों का मैदान है। यहां वह सजी हुई ईंटों की छल्ली पर दसेक मिनट तक व्यायाम करने के बाद कुहनी के बल चलता हुआ मैदान पार करता है और उसके बाद मकान के खिड़कीनुमा दरवाजे के पास आता है।

आज मित्तिर के बगीचे में आने पर उसे लाजवंती लताएं झुकी हुई मिली। ऐसी बात क्यों हुई? लताओं पर से कोई चहलकदमी करते हुए गया है? इस रास्ते से कोई तो आता-जाता नहीं है!

अब शिबु को बगीचे में रहने की इच्छा नहीं हुई। एक अजीब सन्नाटा रेंग रहा है। आज जैसे जल्दी-जल्दी शाम घिरती जा रही है। कौए क्या रोज इसी तरह चिल्लाते हैं या किसी वजह से ये डर गए हैं? सरलदीघि के किनारे हाथ से किताबें नीचे उतारकर रखते ही शिबु ने महसूस किया, आज ठीकरे उछालना ठीक नहीं है। आज उसे ज्यादा देर तक बाहर नहीं रहना चाहिए। अगर रहेगा तो हो सकता है, विपत्ति का सामना करना पड़े।

एक विशाल मछली जैसी किसी चीज ने पोखर के बीच छलांग लगाकर गहरे पानी में डुबकी लगाई।

शिबु ने किताबें उठा ली। उस पार के बरगद पर झूलते चमगादड़ों ने पेड़ को स्याह जैसा बना डाला है। थोड़ी देर के बाद उनके उड़ने का समय आएगा। फटिकदा ने उससे कहा है कि चमगादड़ों के सिर में खून न रहने का कारण वह एक दिन उसे बता देगा।

जामुन के पीछे की झाड़ी से एक तक्षक की आवाज आयी, "खोक्! खोक्! खोक्!"

शिबु अपने घर की ओर रवाना हुआ।

ईंटों के भट्ठे के पास आते ही उसकी नजर जनार्दन बाबू पर पड़ी।

ईंटों की छल्ली से बीसेक हाथ की दूरी पर एक बेर का पेड़ है। उसके पास दो बकरियां खेल रही हैं और जनार्दन बाबू अपने हाथों में किताब और छाता थामे उनका खेल देख रहे हैं।

शिबु सांस रोककर चुपचाप ईंट की एक छल्ली पर चढ़ गया और दो ईंटों की फांक से अपनी गरदन को यथासंभव आगे बढ़ाकर, जनार्दन बाबू को देखने लगा।

उसने देखा, बकरियों की ओर ताकते-ताकते जनार्दन बाबू ने दो बार अपने दाहिने हाथ को उलटकर उससे होंठों के नीचे के हिस्से को सहलाया।

जीभ से लार टपके बिना कोई आदमी इस तरह अपने होंठों के नीचे का हिस्सा नहीं पोंछता है।

उसके बाद शिवु ने देखा, जनार्दन बाबू उस प्रकार नीचे की ओर झुक पड़े, जिस तरह कि लोग आक्रमण करने की स्थिति में किया करते हैं।

उसके बाद एकाएक हाथ से किताब और छाता फेंककर एक ही झपट्टे में बकरी के एक बच्चे को पकड़कर हाथों में उठा लिया। और, उसी क्षण शिवु को बकरी के बच्चे की चीख और जनार्दन बाबू की हंसी सुनाई पड़ी।

शिवु ने एक ही छलांग मे ईंट की छल्ली को पार किया। दूसरी छलांग में वह एक दूसरी छल्ली को ज्योंही फलांगना चाहता था कि वह फिसलकर धड़ाम से गिर पड़ा।

"वहां कौन है?"

किसी तरह शिवु ने जब अपने आपको संभाला तो देखा, जनार्दन बाबू बकरी के बच्चे को नीचे रखकर उसकी ओर आ रहे हैं।

"कौन हो? शिवराम? चोट लग गई? तुम वहां क्या कर रहे थे?"

शिवु ने बोलने की चेष्टा की, पर उसका गला सूख गया था। उसे इच्छा हो रही थी कि बदले में वह जनार्दन बाबू से पूछे कि आप वहां क्या कर रहे थे; कि आपके हाथ में बकरी का बच्चा क्यों था, कि आपकी जीभ से लार क्यों टपक रही थी।

जनार्दन बाबू शिवु के पास आये और बोले, "लो, मेरा हाथ पकड़ो।"

बिना उनका हाथ पकड़े शिवु किसी तरह उठकर खड़ा हुआ।

"तुम्हारा घर निकट ही है न?"

"हा सर।"

"वही लाल जैसा मकान?"

"हा सर।"

"ओ।"

"मैं चल रहा हूं, सर।"

"वह क्या है—खून?"

शिवु ने देखा, उसका घुटना छिल गया है और थोड़ा-सा रक्त चूकर नीचे गिर पडा है। जनार्दन बाबू उसी रक्त की ओर ताक रहे है और उनके चश्मे के काच आग की तरह चमक रहे हैं।

"मैं चल रहा हूं, सर।"

शिवु ने किसी तरह जमीन पर से अपनी किताबें उठायी।

"सुनो, शिवराम।"

जनार्दन बाबू ने आगे बढ़कर शिवु की पीठ पर अपना हाथ रखा। शिवु के कलेजे पर जैसे घुरमस की चोटें पड़ने लगीं।

"अच्छा ही हुआ कि तुम एकान्त मे मिल गए। सोचा था, तुमसे एक बात पूछूं। गणित मे तुम कठिनाई महसूस करते हो? आज इतने आसान सवालो को भी तुम हल नही कर सके। अगर तुम्हें कोई कठिनाई महसूस हो तो छुट्टी के बाद मेरे घर पर आया करो, मैं तुम्हें समझा दिया करूंगा। गणित ऐसा विषय है जिसमे पूर्णांक प्राप्त किए जा सकते हैं। मेरे घर पर आओगे न?"

शिवु किसी तरह दो कदम पीछे हटा। जनार्दन बाबू का हाथ अपनी पीठ से अलगकर थूक निगलते हुए बोला, "नहीं सर। मैं खुद हल कर लूगा, सर। कल ठीक हो जाएगा।"

"ठीक है। तब हां, कठिनाई हो तो बताना। और एक बात। तुम मुझ से इतना डरते क्यों हो? मैं क्या राक्षस हूं जो दांत से काटकर खा डालूंगा? अयं! ह···ह···ह···ह···"

●

ईंट की भट्ठी से एक ही दौड़ मे घर लौट आने के बाद शिवु ने देखा, सामने के मकान में हीरेन ताऊ आए हुए हैं। हीरेन ताऊ कलकत्ते में रहते हैं। वे मछली पकड़ने के शौकीन हैं। बाबूजी और हीरेन ताऊजी प्रातः हर रविवार सरलदीघि मे मछली पकडने जाते हैं। अब की भी शायद वे लोग जाएंगे, क्योंकि शिवु ने देखा, चींटी के अंडों का चारा बनाया गया है।

शिवु ने यह भी देखा कि अब की हीरेन ताऊजी बंदूक भी लेकर आए हैं। सुनने मे आया है, बाबूजी और हीरेन ताऊजी सोनापुर की झील मे चाहा का शिकार करने जाएगे। बाबूजी भी बंदूक चलाते हैं मगर वे हीरेन ताऊजी की तरह निशानेबाज नहीं हैं।

रात में खा-पीकर शिवु शयन-कक्ष मे गया और सोचने लगा। जनार्दन बाबू के राक्षस होने मे अब उसे किसी प्रकार का सदेह न रह गया था। भाग्यवश फटिकदा ने उसे होशियार कर दिया था। वरना आज हो सकता है ईंट की भट्ठी में ही···। इसके बाद शिवु सोच नही सका।

बाहर खुली चांदनी फैली है। भजु के घर तक साफ-साफ दीख रहा है। शिवु की परीक्षा निकट है, अतः वह रात मे जल्दी ही सो जाता है और भोर में उठकर पढ़ता है। जब तक वह रोशनी नही बुझा देता, उसकी आंखों मे नींद उतरती नही है। इतना जरूर है कि अगर चांदनी रात न होती तो

वह रोशनी जलाकर रखता, क्योंकि ऐसा न करता तो सम्भवत: भय से उसे नींद ही न आती। बाबूजी और हीरेन ताऊजी अभी खाने बैठे हैं, मां उन्हें खिला रही है।

खिड़की के बाहर, चांदनी के प्रकाश में चमकते बेल के वृक्ष की ओर ताकते-ताकते शिवु की आंखों में नींद उतर आई थी। तभी किसी चीज पर दृष्टि पडते ही उसकी नींद भाग खड़ी हुई और उसके रोंगटे खडे हो गए।

दूर से एक आदमी उसकी खिड़की की ही ओर चला आ रहा है।

वह आदमी थोड़ा कुबडा है और उसकी आंखों पर चश्मा है। चश्मे के काच चादनी में चमक रहे हैं।

जनार्दन बाबू !

शिवु का गला फिर से सूख गया।

जनार्दन बाबू ने दबे पावों बेल के वृक्ष को पार किया और आहिस्ता-आहिस्ता वे खिडकी के बिलकुल निकट आकर खड़े हो गए। शिवु ने अपनी बगल से तकिए को जोरों से अकवार भर लिया।

कुछ देर तक इधर-उधर ताकने के बाद जनार्दन बाबू ने झिझक के साथ कहा, "शिवराम है जी ?"

यह क्या ? उनके स्वर मे अनुनासिक भाव क्यों है ? रात में उनका राक्षसपन और भी तीव्र हो जाता है ?

"शिवराम !" दूसरी बार पुकार आई।

अब शिवु की मा ने ओसारे पर से कहा, "ए शिवु बाहर कोई पुकार रहा है। तू सो गया क्या ?"

जनार्दन बाबू खिडकी से ओझल हो गए। कुछ देर के बाद उनकी आवाज सुनाई पड़ी, "शिवराम अपनी ज्यामिति की किताब ईंट की भट्ठी पर छोड आया था। कल रविवार है, स्कूल में उससे मुलाकात नहीं होगी। आज सुबह उठकर उसे पढना है, इसीलिए···"

उसके बाद फुसफुसाकर क्या कहा, शिवु को सुनाई नही पडा। आखिर में सिर्फ बाबूजी की बातें सुनाई दीं, "हा अगर आपका यह कहना है तो अच्छा ही है। न होगा तो आपके घर पर ही भेज दिया करूंगा।···हां, कल से।"

शिवु के न तो होंठ ही थरथराए और न गले से ही आवाज निकली, लेकिन उसका मन चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा, "नहीं, नहीं, नहीं, मैं नहीं जाऊंगा, किसी भी हालत में नहीं जाऊंगा। आप लोगों को कुछ भी मालूम नहीं है। वे राक्षस हैं! जाते ही मुझे खा जायेंगे।"

दूसरे दिन रविवार होने पर भी शिबु सुबह-सुबह फटिकदा के मकान पर पहुचा। उसे फटिकदा से बहुत-कुछ कहना है।

उसको देखकर फटिकदा बोला, "स्वागतम् ! तेरे घर के पास नाग-फणी का पौधा है न ? दाव से थोड़ा-सा काटकर मुझे दे जाना। दिमाग में एक तरह की नई रसोई पकाने की बात आई है।"

शिबु ने भर्राई आवाज में कहा, "फटिकदा !"

"क्या ?"

"तुमने बताया था कि जनार्दन बाबू राक्षस हैं⋯"

"किसने कहा है ?"

"तुम्ही ने तो कहा था।"

"बिलकुल नही। तुमने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया।"

"कैसे ?"

"मैंने तुमसे कहा था कि जनार्दन बाबू के दांतों को गौर से देखना। उसके बाद तूने बताया कि उनके श्वदन्त बड़े-बड़े हैं। मैंने कहा, यैसे कुकुर दांत राक्षसों के भी होते है। इसका मतलब क्या यह है कि जनार्दन बाबू राक्षस हैं ?"

"फिर वे राक्षस नही हैं ?"

"ऐसा मैंने नही कहा था।"

"फिर ?"

फटिकदा ओसारे पर खड़ा हो गया और उसने जोरो से एक उबासी ली। फिर बोला, "आज तेरे ताऊजी पर नजर पड़ी। लगता है, मछली पकड़ने आए हैं। मॅक्काडी साहब ने बंसी से एक बार शेर पकड़ा था। उसकी कहानी मालूम है ?"

शिबु ने मरियल की तरह कहा, "फटिक दा, तुम क्या अट-सट बक रहे हो ? जनार्दन बाबू सचमुच ही राक्षस है। मैं जानता हू कि वे राक्षस हैं। मैंने बहुत कुछ देखा-सुना है।"

उसके बाद शिबु ने फटिक से पिछले दो दिनों की घटनाओं के बारे मे बताया। सब कुछ सुनने के बाद फटिक ने गंभीरता के साथ सिर हिलाते हुए कहा, "हूम ! तो तू इसके संबंध मे क्या करने जा रहा है ?"

"तुम्ही बता दो फटिकदा। तुम्हे तो सब मालूम ही है।"

अपना सिर झुकाकर फटिक सोचने लगा।

मौका देखकर शिबु ने कहा, "अभी मेरे घर पर बंदूक है।"

फटिक ने दांत पीसकर कहा, "बलिहारी है तुम्हारी बुद्धि की ! बंदूक रहने से क्या होगा ? बंदूक से राक्षस को मारेगा ? गोली घूमकर चली

आएगी और जो गोली चलायेगा, उसी को आकर लगेगी।"

"ऐसा ?"

"जी हां। बेवकूफ कहीं का।"

"फिर ?" शिवु की आवाज धीमी होती जा रही थी। "फिर क्या होगा फटिक दा ? आज से मुझे बाबूजी···"

"ज्यादा मत बक। बढ़-बढ़कर मेरे कान का परदा फाड़ रहा है।"

दो मिनट तक सोचने के बाद फटिक शिवु की ओर मुड़कर बोला, "जाना ही पड़ेगा।"

"कहां ?"

"जनार्दन बाबू के घर पर।

"क्यों ?"

"उनकी जन्मकुंडली देखनी है। मैं अभी निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कह सकता हूं। जन्मकुंडली देखने पर सब पता चल जाएगा। पेटी-चंगेरी उलटने-पुलटने से जन्मकुंडली मिल ही जाएगी।"

"मगर···"

"तू चुप रह। पहले योजना सुन ले। हम दोनों दोपहर में जाएंगे। आज रविवार है, वे घर पर ही रहेंगे। तू मकान के पिछवाड़े में जाकर जनार्दन बाबू को पुकारना। जब बाहर निकलें तो कहना, गणित समझने के लिए आया हूं। उसके बाद दो-चार आलतू-फालतू बातें कर उन्हें अटकाकर रखना। मैं उसी मौके पर मकान के सामने की तरफ से अन्दर जाकर जन्मकुंडली ले आऊंगा। फिर तू इधर से भागना और मैं उधर से *भागूंगा*। बस।"

"उसके बाद ?" शिवु को योजना बहुत ही अच्छी लगी हो, बात ऐसी नहीं थी। लेकिन फटिक पर निर्भर करने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं था।

"तीसरे पहर तुझे फिर से मेरे घर पर आना है। तब तक जन्मकुंडली देखकर, पुरानी कुछ पोथियों को उलट-पलटकर मैं बिलकुल तैयार रहूंगा। अगर देखकर पता चला कि जनार्दन बाबू सचमुच राक्षस है तो फिर उसका उपाय मैं जानता हूं। तू घबराना मत। और अगर देखकर पता चला कि राक्षस नहीं है तो फिर चिन्ता की कोई बात ही नहीं।"

फटिकदा ने बताया था कि दोपहर में बाहर निकलेंगे। यही वजह है कि खा-पीकर शिवु फटिक के घर पर आया। पांचेक मिनट के बाद फटिकदा ने बाहर आकर कहा, "मेरी बिल्ली को सुंघनी की आदत लग गई है। झंझटों की क्या कोई कमी है ? शिवु ने देखा, फटिक के हाथों में एक

जोड़ा चमड़े का फटा दस्ताना और साइकिल की एक घंटी है। घंटी को शिबू के हाथ में थमाते हुए कहा, "इसे तू रख ले। मुसीबत में फंसने पर इसे *बजा देना। मैं आकर तेरी रक्षा करूंगा।*"

पूरबी महल्ले के अंतिम छोर पर, दीन गोविन्द के मकान के बाद ही जनार्दन मास्टर का मकान है। ये अकेले ही रहते हैं, घर में नौकर तक नहीं रखते। बाहर से यह समझना मुश्किल है कि इस घर में कोई राक्षस रहता है।

जब रास्ता थोड़ा ही बाकी बच गया, शिबू और फटिकदा अलग-अलग हो गए।

मकान के पिछवाड़े में पहुंचने के बाद शिबू को लगा, उसका गला फिर से सूखता जा रहा है। जनार्दन बाबू को पुकारने के वक्त अगर उसके गले से आवाज़ न निकले तो ?

मकान के पिछवाड़े एक दीवार है, उस दीवार में एक दरवाज़ा और दरवाज़े के पास ही अमरूद का एक पेड़। उस पेड़ के आसपास झाड़-झखाड़ों का जंगल है।

शिबू दबे पांवों आगे बढ़ता गया। अब वह देर करेगा तो फटिकदा की सारी योजना चौपट हो जाएगी।

थोड़ी-सी और हिम्मत बटोरने के लिए शिबू अमरूद के पेड़ पर हाथ रखकर उसके सहारे टिकने जा रहा था और *'मास्टर-साहब'* कहकर-पुकारने जा रहा था कि तभी 'चिचमिच' आवाज़ सुनकर उसने नीचे की ओर देखा और कालभैरवी की एक लता के झुरमुट में एक गिरगिट को जाते हुए देखा। गिरगिट जिस रास्ते से गुजरा, उसकी बगल में सफेद जैसी कोई चीज़ पड़ी हुई दीखी।

बांस की एक कमाची से झुरमुट में सूराख करते ही शिबू सिहर उठा! यह तो हड्डी है। जानवर की हड्डी। किस तरह के जानवर की ? बिल्ली की या कुत्ते की या कि बकरे की ?

"वहां क्या देख रहे हो शिवराम ?"

शिबू की रीढ़ की हड्डी में बिजली खेल गई। उसने पीछे की ओर मुड़कर देखा और जनार्दन बाबू को खिड़की के पल्लों को हटाकर, गरदन *बढ़ाए अपनी ओर अजीब निगाहों से ताकते हुए पाया।*

"कुछ खो गया है ?"

"नहीं सर···मैं मैं···"

"तुम क्या मेरे पास ही आ रहे थे ? फिर पिछवाड़े के दरवाज़े से क्यों ? आओ अन्दर चले आओ।"

पीछे की ओर मुड़ते ही शिवु ने पाया, उसका एक पैर लता में फंस गया है।

"कल से मुझे सरदी-बुखार हो गया है। रात में तुम्हारे घर पर गया था न। तब तुम सोए थे।"

शिवु इतनी जल्दी-जल्दी भाग नहीं पाएगा। उधर फटिकदा का काम खत्म हो ही नहीं पाएगा। वह बीच में ही पकड़ लिया जाएगा। एक बार मन में हुआ कि घंटा बजाए। फिर मन में हुआ कि अभी वह किसी विपत्ति में फंसा नहीं है। हो सकता है कि फटिकदा बिगड़ने लगें।

"तुम झुक कर क्या देख रहे थे ?"

शिवु को तत्काल कोई उत्तर सूझ नहीं पड़ा। जनार्दन बाबू ने आगे बढ़कर कहा, "बड़ी ही गंदी जगह है। उधर न जाना ही अच्छा है। न जाने कुत्ता कहां से मांस लाकर हड्डी वहां फेंक देता है। उसे एक-एक बार डांटूंगा, मगर हो नहीं पाता है। मुझे जीव-जन्तु बहुत अच्छे लगते हैं न!'

जनार्दन बाबू ने अपने हाथ के पिछले हिस्से से होंठों के नीचे का हिस्सा पोंछा।

"तुम अन्दर जाओ शिवु···तुम्हारा गणित···"

अब देरी नहीं करनी चाहिए। "आज नहीं कल आऊंगा," यह कहकर शिव ने मुड़कर दौड़ लगाई और एक ही दौड़ में मैदान, रास्ता, नीलू का मकान, कार्तिक का मकान, हरेन का मकान—सबको पारकर वह माहा-बाबू के गिरे मकान के ओसारे पर आकर हांफने लगा। आज की बात उसे कभी नहीं भूलेगी। उसमें इतनी हिम्मत हो सकती है, उसने स्वयं कभी इस पर सोचा नहीं था।

●

तीसरा पहर आते न आते शिवु फटिक के मकान पर आकर हाजिर हुआ। पता नहीं, फटिकदा को उसकी जन्मकुंडली में क्या मिला होगा।

शिवु पर नजर पड़ते ही फटिक ने सिर हिलाया।

"सब गड़बड़ हो गया।"

"क्यों फटिक दा ? जन्मकुंडली नहीं मिली ?"

"मिल गई है। तेरे गणित के शिक्षक राक्षस हैं, इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। वे राक्षस ही नहीं, बल्कि पिरिन्डी राक्षस हैं। मामला गंभीर है। साढ़े तीन सौ पुरखों पूर्व ये लोग पूरे राक्षस थे। मगर इनमें तेजी इतनी है कि अब भी इनमें दो-चार आधे राक्षस के रूप में मिल जाते हैं।

अब किसी भी देश में, पूरा राक्षस मिलता नहीं है। है तो सिर्फ अफ्रीका के किसी इलाके में, ब्राजिल और बोनियो वगैरह स्थानों में। तब हां, आधा राक्षस अब भी कभी-कदा सभ्य देशों में मिल जाता है। जनार्दन बाबू भी उसी किस्म के हैं।"

"फिर गड़बड़ क्यों ?" शिबू की आवाज थरथरा उठी। अगर फटिकदा हार मान लें तो उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा जाएगा।

"तुमने सवेरे बताया था कि तुम उपाय जानते हो ?"

"मैं न जानता होऊं, ऐसी कोई चीज नहीं है।"

"फिर ?"

फटिकदा कुछ गंभीर हो गया। उसके बाद बोला, "मछली के पेट में क्या रहता है ?"

लो, फटिक दा फिर पागलपन करने लगा ! शिबू ने रोनी-रोनी-सी आवाज में कहा, "फटिक दा, राक्षस की बातें चल रही थीं और तुम मछली की बात ले आए।"

"क्या रहता है ?" फटिक ने गरजते हुए कहा।

"पो—पोटा ?" फटिकदा की आवाज सुनकर शिबू बेहद डर गया था।

"तेरा सिर ! इतनी कम विद्या से तू बगुले का परखम भी लगा न पाएगा। ढाई वर्ष की उम्र में मैंने एक श्लोक लिखा था जो अब भी याद है :

> नर या बंदर या जितने भी जीव जगत के
> हृत् पिंडों में प्राण रहा करते हैं सबके।
> मत्स्य-उदर में प्राण बसा करते दनुजों के
> वे न सहज ही अतः मरा करते मनुजों से।"

बात तो ठीक है। शिबू ने बहुत-सी किताबों में पढ़ा है कि राक्षसों के प्राण मछलियों के पेट में रहते हैं। उसे यह बात याद रखनी चाहिए थी।

श्लोक को दुहराते हुए फटिक ने कहा, "दोपहर जब तू मास्टर के घर पर गया तो जनार्दन राक्षस को किस हालत में पाया ?"

"बताया कि उन्हें सरदी-बुखार है।"

"होगा ही। फटिक की आंखें चमकने लगीं। होगा नहीं ? प्राण खतरे में जो है ! जैसे ही कतला मछली बंसी से पकड़ी गई है, वैसे ही बुखार आ गया। यह तो होगा ही।"

उसके बाद शिबू की ओर बढ़कर, उसकी कमीज के अगले हिस्से को एकाएक मुट्ठी में कसते हुए बोला, "हो सकता है, अभी भी वक्त है। तेरे

ताऊजी आधा घंटा पहले सरलदीघि ? उस आधे मन की कतला मछली पकड़कर घर लौटे हैं। देखते ही मुझे अन्दाज लग गया कि उसके पेट में ही जनार्दन राक्षस के प्राण हैं। अभी बुखार के बारे में सुनकर मेरा विश्वास पक्का हो गया। उस मछली को चीर कर देखना होगा।"

"मगर यह कैसे संभव हो पाएगा फटिकदा ?"

"आसानी से। तुझ पर ही निर्भर है। और अगर यह न हो पाया तो तू किस मुसीबत में फस सकता है, इसकी कल्पना करते ही मेरा पसीना छूटने लगता है।"

एक घंटे के बाद शिवु सरलदीघि की आधे मन की उस कतला मछली को एक डोरी से बांधकर, घसीटता हुआ फटिक के मकान के सामने आया। थकावट के मारे वह हांफ रहा था।

फटिक ने कहा, "किसी को पता नहीं है न ?"

"नहीं," शिवु ने कहा, "बाबूजी नहा रहे थे, ताऊजी श्रीनिवास को डांट-फटकार रहे थे और मां सांझबाती में व्यस्त थी। नारियल की रस्सी खोजने में देर हो गई। और उफ, इतनी भारी है!"

"परवाह नहीं। पेशियां सुदृढ़ होंगी।"

फटिक मछली लेकर अन्दर चला गया। शिवु ने सोचा, फटिकदा में आश्चर्यजनक बुद्धि और ज्ञान है। उसकी वजह से इस बार शिवु के प्राणों की रक्षा हुई। हे भगवान्! ऐसा करना कि जनार्दन राक्षस के प्राण मछली के पेट में ही मिलें।

दस मिनटों के बाद फटिक बाहर निकला और शिवु की ओर हाथ बढ़ाकर बोला, "ले। इसे कभी अपने से अलग मत करना। रात में तकिया के नीचे रखकर सोना। स्कूल जाते वक्त अपनी पैंट की बाईं जेब में रख लेना। अगर यह तेरे हाथ में रहेगा तो राक्षस केंचुए की तरह असहाय रहेगा और इसे इमामदिस्ते में कूटते ही राक्षस की जान खत्म हो जाएगी। मेरी राय में कूटने की जरूरत नहीं पड़ेगी, हाथ में रख लेना ही काफी है, क्योंकि बहुत बार ऐसा देखने में आया कि पिरिन्ढी राक्षस चौवन वर्ष की उम्र के बाद पूरा आदमी हो गया है। तेरे जनार्दन मास्टर का उम्र अभी तिरपन वर्ष, ग्यारह महीना, छब्बीस दिन है।"

शिवु ने अब साहस बटोरकर अपनी हथेली की ओर देखा—भीगी मिसरी के दाने-सा पत्थर अभी-अभी उगे चांद के प्रकाश में झिलमिला रहा है।

पत्थर को जेब के हवाले कर शिवु घर की तरफ मुड़ा। पीछे से फटिक दा ने कहा, "तेरे हाथ में चोइआ की गंध आ रही है। तरह

से धो लेना। और बेवकूफ जैसा बना रहना वरना तू पकड़ में आ जाएगा।"

•

दूसरे दिन गणित के पीरियड में कक्षा के अन्दर जाने के ठीक पहले जनार्दन बाबू को छींक आई, उसके बाद चौखट में ठोकर लगने के कारण उनके जूते का सोल फट गया। उस वक्त शिबु का बायां हाथ उसकी पैंट के अन्दर था।

फलाफल खत्म होने पर शिबु को बहुत दिनों के बाद दस में दस अंक प्राप्त हुए।

टेरोडैकटिल का अंडा

बदन बाबू अब ऑफिस के बाद कर्जन पार्क नही आते।

पहले इससे अच्छा था। सुरेन्द्र बनर्जी की प्रतिमा के पास एकाध घंटे तक चुपचाप बैठकर वे आराम करते थे और जब ट्राम की भीड़ थोड़ी कम हो जाती थी, शाम होते न होते अपने शिव ठाकुर लेन के मकान में लौट आते थे।

अब चूंकि ट्राम की लाइन अन्दर तक चली आई है, इसलिए पार्क में बैठने पर पहले जैसा आनन्द नही मिलता है। मगर इस भीड़ में, पसीने से लथपथ, लटकते हुए घर भी कैसे वापस जाए?

केवल यही नही, दिन भर में कम से कम एक घंटे तक चुपचाप बैठकर कलकत्ते के खुले हुए सौंदर्य का अगर उपभोग न किया जाए तो बदन बाबू को अपना जीवन बेमानी लगने लगता है। किरानी होने पर भी वे कल्पनाशील व्यक्ति हैं। इस कर्जन पार्क में ही बैठे बैठे उन्होंने मन ही मन अनेक कहानियां बुनी हैं। मगर लिख नहीं पाए हैं। समय ही कहां है? लिखने से हो सकता है ख्याति प्राप्त होती। ऐसा उनके हृदय मे विश्वास है।

इतना जरूर है कि उनकी सारी कहानियां मैदान में ही समाप्त नहीं हो गई हैं।

उनका पंगु पुत्र विल्टु अब बड़ा हो चुका है। वह सात बरस का है। बिछावन पर से उठकर खड़ा नहीं हो पाता है। फलस्वरूप वह अपना ज्यादा से ज्यादा समय मां या बाबू जी से कहानी सुनकर बिताता है। जानी-पहचानी कहानियां, छपी कहानियां, भूतों की कहानियां, लघु कथा इत्यादि, हंसी-मजाक की कहानियां, देश-विदेश की परियों की कहानियां तीन बरसों के दरमियान सुन चुका है। कम से कम एक हजार कहानियां। इन ... बदन बाबू हर रात उसे एक नई कहानी सुनाते हैं। इन कहानियों ... उन्होंने कर्जन पार्क में ही बैठकर गढ़ा है।

लेकिन पिछले एक महीने मे इस नियम में बहुत ... चुका है! जिन कहानियों को उन्होंने सुनाया है, वे उतनी ... यह बात विल्टु के चेहरे को देखते ही समझ में आ ...

असमय नहीं है। एक तो योंही ऑफिस में काम का दबाव रहता है, उस पर विश्राम करने की जगह में साथ साथ चिन्तन का सुअवसर भी हाथ से निकल गया है।

कर्जन पार्क छोड़ने के बाद वे कई दिनों तक लालदीघि के किनारे जाकर बैठे। वहां उन्हें अच्छा न लगा। टेलीफोन के उस विशाल दैत्याकार भवन ने आकाश के बहुत-कुछ अंश को अपने में समेटकर सब-कुछ बरबाद कर दिया है।

उसके बाद लालदीघि के मैदान में भी ट्राम की लाइन आ गई और बदन बाबू को भी आराम के लिए दूसरे स्थान की तलाश करनी पड़ी।

●

आज वे गंगा के किनारे आए हैं।

आउट्राम घाट के दक्षिण में रेलवे लाइन पार करके आने से थोड़ा चलने के बाद ही यह बेंच मिलती है। तोप का किला सामने ही दीख पड़ता है। लाट की मचान के सिरे पर अब भी बांस है। तोपों के सिरे पर मानो आत्मदम हो।

बदन बाबू को स्कूल की बातें याद हो आईं. एक बजते ही छड़ाम से तोप की आवाज होती थी। उसी वक्त टिफिन की छुट्टी होती थी और हेडमास्टर हरिनाथ बाबू अपनी जेबघड़ी का वक्त मिलाते थे।

इस स्थान को निर्जन नहीं कहा जा सकता। सामने नदी में नावों की कतारें हैं और उन पर बैठे मल्लाह बातचीत करते रहते हैं। दूर धूसर रंग का एक जापानी जहाज लंगर डाले खड़ा है। और भी दूर, खिदिरपुर की तरफ, शाम के आकाश को छूता मस्तूल और घरसी है।

वाह, खासी अच्छी जगह है।

बेंच पर बैठना चाहिए।

वह रहा शुकतारा, स्टीमर के धुएं के अन्तराल से धुंधला-धुंधला जैसा दीख रहा है।

बदन बाबू को लगा, इतना बड़ा आकाश उन्होंने बहुत दिनों से नहीं देखा है। अहा, कितना विशाल है, कितना विराट्! ऐसा न हो तो कल्पना का पक्षी डैनों को फैलाए कैसे उड़े?

बदन बाबू ने कैनवस् के जूतों को उतारा और पांव मोड़कर बाबू साहब की तरह बैठ गए!

आज वे यहां बैठे-बैठे एक नहीं, अनेक कहानियों का प्लॉट गढ़ेंगे।

बिल्टु का हंसता हुआ चेहरा जैसे उनकी आंखों के सामने तैरने लगा।

नमस्कार !

लो, यहां भी बाधा ही है।

बदन बाबू ने मुड़कर देखा। एक दुबला-पतला व्यक्ति। उम्र करीब पचास वर्ष। पहनावे के रूप में कत्यई रंग के कोट-पैंट। कंधे पर टाट की झोली। शाम की धुंधली रोशनी में चेहरा साफ-साफ नहीं दीख पड़ता है, मगर आंखों की दृष्टि अस्वाभाविक तौर पर तीक्ष्ण है।

और वह क्या है ? स्टेथेस्कोप है क्या है ?

उस आदमी की छाती के पास लटकते एक यंत्र से रबर की दो नलियां निकलकर उसके कानों के अन्दर चली गई हैं।

अजनबी ने मीठी हंसी हंसते हुए कहा, "डिस्टर्ब तो नहीं कर रहा हूं ? अन्यथा न सोचें। आपको यहां इसके पहले कभी नहीं देखा था, इसीलिए…"

बदन बाबू को ऊब महसूस हुई। अरे बाबा, मैं एकान्त में ही अच्छी हालत में था। ज़ोर-जबरन जान-पहचान क्यों कर रहे हो ? सब बेकार हो गया। बेचारे विल्टू को वे क्या कैफियत देंगे ?

वे बोले, "इसके पहले कभी आया नहीं था, इसीलिए मुझ पर नजर नहीं पड़ी थी। इतने बड़े शहर में देखे हुए लोगों के बनिस्बत अनदेखों की संख्या ज्यादा होती है। है न यह बात ?"

अजनबी ने बदन बाबू के व्यंग्य को अनसुना करके कहा, "मैं पिछले चार बरसों से यहां लगातार आ रहा हूं।"

"ओह !"

"ठीक यहीं। एक ही स्थान पर। इसी बेंच पर बैठा करता हूं। मेरे प्रयोग की जगह यही है।"

'प्रयोग ? गंगा के किनारे खुली, जगह में किस तरह का प्रयोग करता है ? यह आदमी अधपगला है क्या ?

या कुछ और ही हो सकता है ? गुंडा वगैरह ? कलकत्ता शहर के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता।

सर्वनाश ! बदन बाबू को आज ही तनखा मिली है। रूमाल की गांठ में एक सौ रुपये के दो फड़फड़ाते नोट बंधे हैं। इसके अलावा पॉकेट, में रखे मनीबैग में नोट व रेजगारी मिलाकर पचपन रुपये बत्तीस नए पैसे हैं।

बदन बाबू उठकर खड़े हो गए। सावधान हो जाने पर फिर

खतरे का डर नहीं रहता।

"यह क्या साहब ? चल दिए ? गुस्से में आ गए ?"

"नहीं-नहीं, बात ऐसी नहीं है।"

"फिर। अभी-अभी आप बैठे ही थे। इसी बीच उठकर खड़े हो गए ?"

बात तो सही है। वे इस तरह का बचपना क्यों कर रहे हैं ? डर की कौन-सी बात है ? तीस गज की दूरी पर सामने की नावों में कम से कम एकाध सौ आदमी हैं।

फिर भी बदन बाबू ने कहा, "चलूं, देर हो गई है।"

"देर ? अभी तो सिर्फ साढ़े पांच बजे हैं।"

"बहुत दूर जाना है।"

"कितनी दूर ?"

"बागबाजार।"

"अरे राम-राम-राम ! अगर आप श्री रामपुर या चुचड़ा या कम से कम दक्षिणेश्वर कहते तो कोई बात थी।"

"वह भी क्या कम दूर है ? ट्राम से जाने पर पूरा चालीस मिनट लगता है। उस पर दस मिनट पाव पैदल चलना अलग से।"

"आप ठीक ही कह रहे हैं।"

अजनबी एकाएक गम्भीर हो गया। उसके बाद बुदबुदाया, "चालीस जोड़ दस बराबर पचास।... मैं मिनट और घंटों का हिसाब लगाने का अभ्यस्त नहीं हूं। हमलोग...बैठिए न ! जरा बैठ जाइए।"

बदन बाबू बैठ गए।

अजनबी की आवाज और दृष्टि में कुछ ऐसी चीज थी जिसके कारण बदन बाबू उसके अनुरोध को ठुकरा नहीं सके। मन ही मन कहा : शायद इसीको हिप्टोनिज्म कहते हैं।

अजनबी ने कहा, "मैं जिसको-तिसको अपने पास बैठने को नहीं कहता। आप पर नजर पड़ते ही मुझे लगा, आप भावुक व्यक्ति हैं। आप केवल रुपया, आना, पाई लेकर ही इस दुनिया में जिन्दा रहने वाले नहीं हैं, जैसा कि निन्यानवे पॉयन्ट नाइन रेकरिंग परसेन्ट लोग हुआ करते हैं। कहिए, ठीक कह रहा हूं न ?"

बदन बाबू ने सकपकाते हुए कहा, "जी, मतलब है कि..."

"आप विनम्र भी हैं। यह भी अच्छी बात है। बड़ाई करना मुझे पसन्द नहीं। अगर मैं बड़ाई करता तो कोई मुझसे आगे नहीं बढ़ पाता।"

अजनबी चुप हो गया। उसके बाद अपने कानों से नलियां हटाकर उस यंत्र को बेंच पर रखा, उसके बाद बोला, "डरने की कोई बात नहीं है। अंधेरे में हाथ से स्विच गिर पड़े तो भयंकर कांड हो जाएगा।"

वदन बाबू के होंठों पर एक प्रश्न मंडरा रहा था, अब वह बाहर निकल आया!

"आपका यह यंत्र स्टेथेस्कोप है या और कुछ दूसरा ही?"

उस आदमी ने इस सवाल पर कोई ध्यान ही न दिया। बड़ा ही असभ्य मालूम होता है! उत्तर देने के बदले एक अवान्तर प्रश्न पूछ बैठा।

"आप लिखा-पढ़ा करते हैं?"

"आपका लिखने का मतलब कहानी से है?"

"चाहे कहानी हो या निबन्ध या कुछ भी हो। बात यह है कि मैं यह सब नहीं जानता। मगर मेरे पास जो अनुभव हैं, मैंने जो खोजें की हैं, उन्हें भविष्य के लिए लिखा जाता तो अच्छा रहता।"

अनुभव? खोज? यह आदमी क्या बक रहा है?

"आपने कितने प्रकार के सैलानियों को देखा है?"

सचमुच इस आदमी के सवालों का कोई ओर-छोर नहीं है। एक ही सैलानी को देखने का सौभाग्य कितनों को प्राप्त होता है?

वदन बाबू ने कहा, "सैलानी कई तरह के होते हैं, यह मुझे मालूम नहीं है।"

"यह क्या! तीन तरह के बारे में कोई भी बता सकता है: जलचर, थलचर और नभचर। पहली कोटि में वास्को डि० गामा, कैप्टन स्कॉट, कोलम्बस आते हैं। स्थल में ह्वेनसांग, मांगो पार्क, लिविंगस्टोन से लेकर उमेश भट्टाचार्य तक हैं। और आकाश में भ्रमण करने वालों में प्रोफेसर पिकार्ड, जो बैलून से पचास हजार फुट ऊंचाई तक गया था और इसके अलावा गोगरिन। इतना जरूर है कि ये सब मामूली बातें हैं। जिस तरह के सैलानी की बात कह रहा हूं, वह न तो जल या थल या नभ में विचरण करता है।

"फिर?"

"काल में।"

"यानी?"

"काल के बीच विचरण करना। मैं अतीत में विचरण कर सकता हूं, भविष्य में कर सकता हूं। स्वेच्छा से भूत और भविष्य में विचरण कर सकता हूं। चूंकि वर्तमान में हूं ही, अतः उसके लिए माथापच्ची नहीं

खतरे का डर नहीं रहता।

"यह क्या साहब ? चल दिए ? गुस्से में आ गए ?"

"नहीं-नहीं, बात ऐसी नहीं है।"

"फिर। अभी-अभी आप बैठे ही थे। इसी बीच उठकर खड़े हो गए ?"

बात तो सही है। वे इस तरह का बचपना क्यों कर रहे हैं ? डर की कौन-सी बात है ? तीस गज की दूरी पर सामने की नावों में कम से कम एकाध सौ आदमी हैं।

फिर भी बदन बाबू ने कहा, "चलू, देर हो गई है।"

"देर ? अभी तो सिर्फ साढ़े पांच बजे हैं।"

"बहुत दूर जाना है।"

"कितनी दूर ?"

"बागबाजार।"

"अरे राम-राम-राम ! अगर आप श्री रामपुर या चुचड़ा या कम से कम दक्षिणेश्वर कहते तो कोई बात थी।"

"वह भी क्या कम दूर है ? ट्राम से जाने पर पूरा चालीस मिनट लगता है। उस पर दस मिनट पांव पैदल चलना अलग से।"

"आप ठीक ही कह रहे हैं।"

अजनबी एकाएक गम्भीर हो गया। उसके बाद बुदबुदाया, "चालीस जोड़ दस बराबर पचास। मैं मिनट और घंटों का हिसाब लगाने का अभ्यस्त नहीं हू। हमलोग···बैठिए न ! ज़रा बैठ जाइए।"

बदन बाबू बैठ गए।

अजनबी की आवाज और दृष्टि में कुछ ऐसी चीज थी जिसके कारण बदन बाबू उसके अनुरोध को ठुकरा नहीं सके। मन ही मन कहा : शायद इसीको हिप्टोनिज्म कहते हैं।

अजनबी ने कहा, "मैं जिसको-तिसको अपने पास बैठने को नहीं कहता। आप पर नजर पड़ते ही मुझे लगा, आप भावुक व्यक्ति हैं। आप केवल रुपया, आना, पाई लेकर ही इस दुनिया में जिन्दा रहने वाले नहीं हैं, जैसा कि निन्यानवे पॉयन्ट नाइन रेकरिंग परसेन्ट लोग हुआ करते हैं। कहिए, ठीक कह रहा हू न ?"

बदन बाबू ने सकपकाते हुए कहा, "जी, मतलब है कि···"

"आप विनम्र भी हैं। यह भी अच्छी बात है। बड़ाई करना मुझे पसन्द नहीं। अगर मैं बड़ाई करता तो कोई मुझसे आगे नहीं बढ़ पाता।"

अजनबी चुप हो गया। इसके बाद उसने [illegible] उस यंत्र को बेंच पर रखा, उसके बाद बोला, "तुमने भी कोई बात [illegible] है। अंधेरे में हाथ से स्विच गिर पड़े तो [illegible]।"

बदन बाबू के होंठों पर एक [illegible] आया!

"आपका यह यंत्र टेलिस्कोप है या और कुछ [illegible]?"

उस आदमी ने इस सवाल पर कोई [illegible] असभ्य मालूम होता है! उत्तर देने के बदले [illegible] बैठा।

"आप लिखा-पढ़ा करते हैं?"

"आपका लिखने का मतलब कहानी से है?"

"चाहे कहानी हो या निबंध या कुछ भी हो। [illegible] सब नहीं जानता। मगर मेरे पास जो अनुभव हैं, [illegible] उन्हें भविष्य के लिए लिखा जाता तो अच्छा [illegible]।"

अनुभव? शोध? यह आदमी क्या कह रहा है?

"आपने कितने प्रकार के सैलानियों को देखा है?"

सचमुच इस आदमी के सवालों का कोई ओर-छोर नहीं है। [illegible] सैलानी को देखने का सौभाग्य कितनों को प्राप्त होता है?

बदन बाबू ने कहा, "सैलानी कई तरह के होते हैं, पर मुझे [illegible] नहीं है।"

"यह क्या! तीन तरह के बारे में कोई भी [illegible] थलचर और नभचर। पहली कोटि में [illegible] कोलम्बस आते हैं। स्थल में ह्वेनसांग, [illegible] उमेश भट्टाचार्य तक हैं। और आकाश में [illegible] पिकार्ड, जो बैलून से पचास हजार फुट ऊंचाई तक [illegible] अलावा गोगरिन। इतना जरूर है कि ये सब मामूली बातें हैं। जिस तरह के सैलानी की बात कह रहा हूं, वह न तो जल या थल या नभ में विचरण करता है।

"फिर?"

"काल में।"

"यानी?"

"काल के बीच विचरण करना। मैं अतीत में विचरण कर सकता हूं, भविष्य में कर सकता हूं। स्वेच्छा से भूत और भविष्य में विचरण कर सकता हूं। चूंकि वर्तमान में हू ही, अत: उसके लिए माथापच्ची

करता।"

अब बदन बाबू के सामने बात स्पष्ट हो गई। वे बोले, "आप एच० जी० वेल्स के बारे में कह रहे हैं? टाइम मशीन? वही न—कि साइकिल की तरह की एक चीज़ को दबाकर हैंडिल खींचते ही आदमी अतीत काल में चला जाता है और दूसरे को खींचते ही भविष्य में विचरण करने लगता है। उसी कहानी पर विलायत में एक सिनेमा बनाया गया था।"

वह आदमी उपेक्षा की हंसी हंसता हुआ बोला, "वह तो कहानी है। मैं सच्ची घटना के बारे में कह रहा हूं। मेरे साथ ही यह घटना घटी है। यह मेरा ही अनुभव है। यह मेरी मशीन की बात है। किसी साहब लेखक की मनगढ़त हवाई कहानी नहीं है।"

कहीं स्टीमर का भोंपू बज उठा।

अचकचाकर बदन बाबू ने अपने हाथों को चादर के अन्दर समेट लिया और सिकुड़कर बैठ गये। कुछ देर बाद नावों के प्रकाश के अतिरिक्त कुछ भी न दीखेगा।

बदन बाबू ने गहराते अंधेरे में अजनबी की ओर एक बार फिर से निगाह डाली। उसकी आंखों की पुतलियों में संध्या के आकाश की अंतिम लाली तैर रही थी।

अजनबी ने अपने चेहरे को आसमान की ओर किया। वह कुछ देर तक खामोश रहा, उसके बाद बोला, "मुझे हंसने की इच्छा होती है। तीन सौ वर्ष पहले यहां, ठीक इसी बेंच के पास की जगह पर एक मगर और उसके सिर पर बैठा हुआ एक बगुला धूप सेंक रहे थे। वह जो पुआल से लदी नाव है, वहीं से एक हॉलैंड के पाल तने जहाज़ के डेक पर खड़े होकर एक नाविक ने मुंहभरनी बंदूक से उसे मारा था। एक ही गोली में मगर ठंडा हो गया था। बगुले ने ज्योंही हड़बड़ाकर उड़ना चाहा, उसकी एक पांख खिसककर मेरे पैरों के नीचे गिर पड़ी। यह वही पांख है।"

अजनबी ने अपनी झोली में एक झकझक सफेद पांख निकालकर उसे बदन बाबू के हाथ में थमा दिया।

"ये लाल-लाल दाग किस चीज़ के हैं?"

बदन बाबू की आवाज़ में थरथराहट थी।

अजनबी बोला, "मगर का थोड़ा-सा रक्त छिटककर बगुले की देह में लग गया था।"

बदन बाबू ने पांख लौटा दी।

अजनबी की आंखों की रोशनी सिमटती जा रही है। गंगा की धारा में जलकुम्भी बहती हुई जा रही है। अब आंखों में दीख नहीं रहा है। पानी,

मिट्टी, आकाश—सब कुछ मटमैले रग में बदलते जा रहे है।

"जानते हैं, वह क्या है ?"

बदन बाबू ने हाथ मे लेकर देखा। वह लोहे का एक छोटा-सा तिकोना बर्छा है, जिसका ऊपरी हिस्सा सुईनुमा है।

अजनबी ने कहा, "यह दो हज़ार वर्ष पुराना है। नदी के बीच में,—उस बोया के पास से होता हुआ एक मकरमुखी जहाज़ कसीदे-कढ़े पाल को ताने समुद्र की ओर जा रहा है। सभवतः वह वाणिज्य-पोत है। बलिद्वीप या कहीं व्यापार करने के लिए जा रहा है। पछिहा हवा में बत्तीसों पतवारों की छपछप आवाज़ मैं यहां से सुन रहा हूं।"

"आप सुन रहे हैं ?"

"हां। मैं नहीं तो फिर कौन ? यहा—यहां यह बेंच है—मैं एक बर-गद के पास छिपा हुआ हूं।"

"छिपे हुए क्यों हैं ?"

"लाचारी मे। यह इतनी विपत्तियों से घिरी जगह है, यह बात मालूम नहीं थी। इतिहास के पृष्ठों पर ये बातें लिखी हुई नहीं हैं।"

"आप शेर वगैरह के बारे में कह रहे हैं ?"

"शेरों की मांद है। आदमी है। मेरी कमर के बराबर चपटी नाक वाला, स्याह काला वनमानुष। कानों मे बाली, नाक मे छल्ला, देह में गोदना गुदा हुआ। हाथों में तीर-धनुष। तीर के छोर पर जहरीला फलक।"

"क्या कह रहे हैं आप ?"

"ठीक ही कह रहा हू। एक भी शब्द असत्य नहीं है।"

"आपने देखा ?"

"सुनिए तो सही। बैशाख का महीना है। आंधी चल रही है। इस तरह की आंधी इसके पहले नहीं आई थी। मकरमुखी जहाज़ देखते-देखते ही पानी में डूब गया।"

"उसके बाद ?"

"उससे निकलकर एक आदमी टूटे तख्ते पर चढ़ता है और हिमक जल-जन्तुओं, मगरों से बचता हुआ परती जमीन पर आता है···बाप रे!···"

"क्या हुआ ?"

"उस वनमानुष ने उसकी क्या हालत कर दी, उसे आप जब तक अपनी आंखों से नहीं देख लेते हैं···इतना ज़रूर है कि अन्त-अन्त तक मैं भी नहीं देख सका। एक तीर बरगद के तने मे आकर बिंध गया था। उसी से मैंने स्विच दबा दिया और वर्तमान में लौट आया।"

अजनबी दम लेने के लिए चुप हो गया।

गिरजा की घड़ी से डिंग-डांग आवाज आ रही है। छह बज चुका। रोशनी एकाएक तेज क्यों हो गई ?

वदन बाबू की आखें पूरब की ओर गईं। ग्रैण्ड होटल की छत के पीछे से त्रयोदशी का चांद उगता हुआ दीख रहा है।

अजनबी ने कहा, "पहले जैसा था, अब भी वैसा ही है। देश में ऐसे बहुतेरे व्यक्ति हैं जिनके नाम-धाम का पता किसी को नहीं है, किन्तु उनकी विद्या-बुद्धि पश्चिम के किसी वैज्ञानिक से तिलमात्र कम नहीं है। इन लोगों को आमतौर से कागज-पेंसिल, किताब, प्रयोगशाला वगैरह की कोई जरूरत महसूस नहीं होती है। ये लोग एकांत में चुपचाप बैठकर सोचते रहते हैं और अपने दिमाग में बड़े-बड़े फ़रमूले को हलकर समस्या का समाधान करते हैं।"

अजनबी के चुप होते ही बदन बाबू बोले, "आप क्या उन्हीं लोगों में से हैं ?"

"नहीं", अजनबी ने कहा, "मगर भाग्यवश एक व्यक्ति से मेरी भेंट हुई थी। अवश्य ही भेंट यहां नहीं हुई थी। इस अंचल में नहीं। जवानी के दिनों में पहाड़ों पर मैंने काफी सैर किया है। उन्हीं पहाड़ों में एक से भेंट हो गई थी। वे असाधारण व्यक्ति थे। नाम था गणितानंद। इतना जरूर था कि वे लिखकर ही गणित हल करते थे। वे जहां रहते थे, उसके आसपास के तीस मील के दरमियान फैले पहाड़ों पर जितने बड़े-बड़े खड थे, उनकी जड़ से चोटी तक गणित के अंकों से भरे हुए थे। खड़िया से लिखा हुआ था। अपने गुरु से ही गणितानन्दजी ने अतीत और भविष्य में विचरण करने का रहस्य सीखा था। गणितानन्द से ही मुझे इस बात की जानकारी प्राप्त हुई है कि हिमालय में एवरेस्ट से भी पांच हजार फुट ऊंची एक दूसरी चोटी थी। आज से सैंतालीस हजार वर्ष पहले एक प्रलयकारी भूकम्प हुआ था और उस भूकम्प में उस चोटी का आधा हिस्सा धरती के अन्दर समा गया। उसी भूकम्प से उत्तरी हिमालय के एक पहाड़ में दरार पड़ गई और उससे एक झरना निकल पड़ा। उसी झरने की सृष्टि है यह नदी जो हमारे सामने प्रवाहित हो रही है।"

आश्चर्य की बात है ! बहुत ही आश्चर्य की बात।

धोती के छोर से माथे के पसीने को पोंछते हुए बदन बाबू बोले, "यह यन्त्र आपको उन्हीं से मिला था ?"

अजनबी ने कहा, "हां। यानी मिला था, यह नहीं कहा जा सकता। उन्होंने इसके उत्पादनों के बारे में बता दिया था। मैंने उन्हीं मसालों से

खुद ही इस यन्त्र को बनाया है। ये जो आप नलियां देख रहे हैं, वे रबर की नही हैं। यह एक किस्म के पहाड़ी वृक्ष की डाल है। इस यन्त्र की एक भी वस्तु के लिए मुझे किसी दुकान या कारीगर के पास जाना नही पड़ा था। इसका सब कुछ प्राकृतिक उपादनो से तैयार किया गया है। डायल पर मैंने खुद चिह्न लगाकर अंक बिठाए हैं। तब हां, चूंकि मेरे हाथों से ही तैयार हुआ है, इसलिए बीच-बीच मे बिगड़ जाता है। भविष्य का स्विच कई दिनो से काम ही नही कर रहा है।"

"आप भविष्य में पहुच चुके हैं ?"

"एक ही बार। तब हां, ज्यादा दूर तक नही जा सका। तीसवीं सदी के बीच तक पहुंच सका था।"

"कैसा दीख पड़ा ?"

"देखूंगा भला क्या ? तब वहा विशाल सड़क है और मैं ही एकमात्र मनुष्य हूं जो चहलकदमी कर रहा है। एक अजीब गाड़ी के नीचे आते-आते मैं बच गया। इसके बाद मैं नही गया।"

"और अतीत की कितनी दूरी आपने तय की है ?"

"वह भी एक गडबड़ ही है। मेरे इस यंत्र से सृष्टि के आरम्भ में नहीं जाया जा सकता है।"

"यह बात है ?"

"बहुत-बहुत कोशिशें करने के बाद मैं सबसे दूर जहां तक जा सका हूं, उस समय सरिसृप का आविर्भाव हो चुका था।"

बदन बाबू का गला सूखने लगा। बोले, "किस प्रकार का सरिसृप ? सांप···?"

"अरे, नहीं-नही। सांप तो बच्चा है।"

"फिर ?"

"यही जैसे ब्रटोरस, टिरानोसरस, डाइनोसरस वगैरह।"

"इसका मतलब यह हुआ कि आप उस देश मे भी पहुंच चुके है।"

"यही तो गलती है। उस देश मे क्यों ? आपकी धारणा क्या यही है कि ये सब चीजें हमारे देश मे नही थी ?"

"ये सब चीजें थी ?"

"आपके कहने का मतलब ? यही थी। इस बेंच की बगल में ही थी।"

बदन बाबू की रीढ की हड्डी मे एक ···

अजनबी ने कहा, "तब गंगा नाम नहीं था। ऊबड़-खाबड़ पत्थर के टीले थे और था लता-गुल्म, ·

अजनबी दम लेने के लिए चुप हो गया।

गिरजा की घडी से डिंग-डांग आवाज आ रही है। छह बज चुका। रोशनी एकाएक तेज़ क्यो हो गई ?

वदन बाबू की आखें पूरब की ओर गईं। ग्रैण्ड होटल की छत के पीछे से त्रयोदशी का चाद उगता हुआ दीख रहा है।

अजनबी ने कहा, "पहले जैसा था, अब भी वैसा ही है। देश मे ऐसे बहुतेरे व्यक्ति है जिनके नाम-धाम का पता किसी को नही है, किन्तु उनकी विद्या-बुद्धि पश्चिम के किसी वैज्ञानिक से तिलमात्र कम नही है। इन लोगो को आमतौर से कागज़-पेंसिल, किताब, प्रयोगशाला वगैरह की कोई जरूरत महसूस नही होती है। ये लोग एकात मे चुपचाप बैठकर सोचते रहते है और अपने दिमाग से बड़े-बडे फरमूले को हलकर समस्या का समाधान करते है।"

अजनबी के चुप होते ही बदन बाबू बोले, "आप क्या उन्ही लोगों में से है ?"

"नही", अजनबी ने कहा, "मगर भाग्यवश एक व्यक्ति से मेरी भेंट हुई थी। अवश्य ही भेंट यहा नही हुई थी। इस अचल मे नही। जवानी के दिनो में पहाड़ों पर मैंने काफी सैर किया है। उन्ही पहाडो मे एक से भेंट हो गई थी। वे असाधारण व्यक्ति थे। नाम था गणितानंद। इतना जरूर था कि वे लिखकर ही गणित हल करते थे। वे जहा रहते थे, उसके आसपास के तीस मील के दरमियान फैले पहाड़ों पर जितने बड़े-बडे खंड थे, उनकी जड़ से चोटी तक गणित के अकों से भरे हुए थे। खड़िया से लिखा हुआ था। अपने गुरु से ही गणितानन्दजी ने अतीत और भविष्य में विचरण करने का रहस्य सीखा था। गणितानन्द से ही मुझे इस बात की जानकारी प्राप्त हुई है कि हिमालय मे एवरेस्ट से भी पाच हजार फुट ऊंची एक दूसरी चोटी थी। आज से सैंतालीस हजार वर्ष पहले एक प्रलयकारी भूकम्प हुआ था और उस भूकम्प मे उस चोटी का आधा हिस्सा धरती के अन्दर समा गया। उसी भूकम्प मे उत्तरी हिमालय के एक पहाड मे दरार पड गई और उसमे एक झरना निकल पडा। उसी झरने की सृष्टि है यह नदी जो हमारे सामने प्रवाहित हो रही है।"

आश्चर्य की बात है ! बहुत ही आश्चर्य की बात।

धोती के छोर मे माथे के पसीने को पोछते हुए वदन बाबू बोले, "यह यन्त्र आपको उन्ही से मिला था ?"

अजनबी ने कहा, "हा। यानी मिला था, यह नही कहा जा सकता। उन्होने इसके उत्पादनो के बारे मे बता दिया था। मैंने उन्ही मसालो से

नाया है। ये जो आप नलियां देख रहे हैं, वे रबर की
त के पहाडी वृक्ष की डाल है। इस यन्त्र की एक भी
ी दुकान या कारीगर के पास जाना नहीं पडा था।
तिक उपादनो से तैयार किया गया है। डायल पर
र अक बिठाए हैं। तब हां, चूकि मेरे हाथों से ही
बीच-बीच मे बिगड़ जाता है। भविष्य का स्विच
ही कर रहा है।"

पहुंच चुके हैं ?"

ब हा, ज्यादा दूर तक नही जा सका। तीसवी सदी
था।"

?"

? तब वहा विशाल सडक है और मैं ही एकमात्र
ी कर रहा है। एक अजीब गाड़ी के नीचे आते-
बाद मैं नही गया।"

कितनी दूरी आपने तय की है ?"

ई ही है। मेरे इस यंत्र से सृष्टि के आरम्भ में नहीं

ों करने के बाद मैं सबसे दूर जहां तक जा सका हूं,
ाविर्भाव हो चुका था।"

सूखने लगा। बोले, "किस प्रकार का सरिसृप ?

ांप तो बच्चा है।"

टिरानोसरस, डाइनोसरस वगैरह।"

हुआ कि आप उस देश में भी पहुंच चुके है।"

उस देश मे क्यो ? आपकी धारणा क्या यही है
ा मे नही थी ?"

मतलब ? यही थी। इस बेंच की बगल में ही

ी हड्डी में एक सिरहन दौड गई।

ब गंगा नाम नही था। इन स्थानों मे तब ऊबड़-
और था लता-गुल्म, पेड़-पौधो का जंगल। वह

दृश्य मैं भूलूंगा नहीं। जहां जेटी है, वहां सेवार से भरा हुआ एक डबरा था। मैं उसे अपनी आंखों के सामने देख रहा हूं। एक अग्निलोक पलक कर जल उठी और एक मिनट तक हिल-डुल कर फिर बुझ गई। उसी रोशनी में दो गाजर जैसी आंखें दीख पड़ीं। चीनी ड्रैगन[1] की तसवीर आपने देखी है न ? वे भी ठीक वैसी ही थीं। किताब में मैं तसवीर देख चुका था। समझ गया वह उसी तरह का स्टेगोसरस है। पता नहीं, किस चीज का पत्ता चबाता हुआ वह जलमय भूमि में छप-छप शब्द करता हुआ आ रहा है। जानता हूं, यह आदमी को नहीं खाएगा क्योंकि यह उद्भिज्जीवी हुआ करता है। फिर डर से मैं थूक नहीं निगल पा रहा हूं। वर्तमान में लौटने के लिए ज्योंही स्विच दबाता हूं कि तभी अपने सिर के ऊपर फड़ फड़ शब्द सुनकर मैं चौंककर देखता हूं। एक टेरोडैक्टिल है। वह न तो चिड़िया है, न जानवर और न ही चमगादड़। उसने पानी में गोते लगाकर उस जानवर पर आक्रमण किया। इस आक्रोश का कारण तब समझ में आया जब मेरी दृष्टि निकट ही स्थित पत्थर के टीले पर पड़ी। उस पत्थर में एक बड़ा सूराख था और उस सूराख के अन्दर था एक सफेद चमचमाता हुआ गोल अंडा। टेरोडैक्टिल का अंडा। नजर पड़ते ही लोभ न संभाल सका, हालांकि डर लग रहा था। उधर लड़ाई चल रही थी और इधर मैं अंडे को अपनी बगल में दबाकर... हो हो हो।' मगर बदन बाबू को हंसी नहीं आई। यह सब क्या कहानी की दुनिया से परे भी घटित होता है ?

"आपकी परीक्षा करने के लिए मैं यह यंत्र देता, मगर...."

बदन बाबू के सिर की नसें फड़कने लगीं। थूक निगलकर बोले, "मगर क्या ?"

"फल मिलने की बहुत ही कम सम्भावना है।"

"क्यों ?"

"फिर भी आप एक बार कोशिश करके देख सकते हैं। लाभ चाहे न हो पर हानि होने की कोई सभावना नहीं है।"

बदन बाबू ने अपनी गरदन आगे बढ़ा दी। जय मां जगत्तारिणी। निराश मत करना मां !

अजनबी ने नलियों के मुंह को बदन बाबू के कानों में ठूंस दिया और चट से उनके दाहिने हाथ की नाड़ी पकड़ ली।

"नाड़ी टटोलनी है।"

बदन बाबू ने बलि पर चढ़ने वाले बकरे की तरह धीमी आवाज में

---

1. सर्प सदृश्य पौराणिक राक्षस।

पूछा, "अतीत या भविष्य ?"

अजनबी ने कहा, "अतीत। सिक्स थाउजैंड बी० सी०। अपनी आंखें दबाकर बंद कर लें।"

बदन बाबू ने धैर्यहीन उत्कंठा के साथ एक क्षण तक अपनी आंखें मूंद कर रखी, फिर कहा, "कहां, कुछ भी नहीं हो रहा है।"

अजनबी ने यंत्र को निकाल लिया।

"होने की संभावना करोड़ मे एक की होती है।"

"क्यों ?"

"मेरे और आपके सिर के बालो की संख्या अगर एक ही होती तो आपके लिए भी यह यंत्र काम करता।"

बदन बाबू फटे बैलून की तरह चिपके हो गए। हाय-हाय ! ऐसा मौका हाथ से निकल गया।

अजनबी ने अपनी झोली के अन्दर हाथ डाला।

चादनी अब चारो ओर स्पष्ट दीख रही है।

"एक बार हाथ मे लेकर देख सकता हूं ?" बदन बाबू यह कहने का लोभ संभाल नहीं सके।

अजनबी ने उस सफेद चमचमाती वस्तु को उनकी ओर बढा दिया। खासा वजनदार है। साथ ही साथ बडा ही चिकना।

"दीजिए। अब चलूं। रात हो चुकी है।"

बदन बाबू ने अंडे को वापस कर दिया। न जाने और कितने प्रकार के अनुभव इस आदमी ने बटोरे हैं। पूछा, "कल आप यहां आइएगा न ?"

"कोशिश करूंगा। ढेरों काम है। पुस्तकों में लिखे ऐतिहासिक तथ्यों का अब भी मूल्यांकन नही कर पाया हूं। कलकत्ते के निर्माण से सम्बन्धित बातो की एक बार छानबीन करनी है। हजरत चार्नक को लेकर लोग बडी ज्यादती कर रहे हैं।...चलूं। जयगुरु।"

●

ट्राम पर चढते ही झूठमूठ का एक बहाना बनाकर बदन बाबू को उतर जाना पड़ा। जेब में हाथ डालते ही उन्हे अंधेरा ही अंधेरा दीखने लगा।

मनीबैग गायब था।

घर की ओर पांव-पैदल चलते हुए उन्होने एक उसांस ली और मन ही मन कहने लगे, 'समझ गया। जब मैंने आंखें बंद की, उस आदमी ने नाड़ी टटोलने के लिए मेरा हाथ पकड़ा था...इस्स छि: छि: छि: ! आज

मैं बड़ा ही बेवकूफ बना।'

●

जब वे घर पहुंचे, रात के आठ बज रहे थे।

बाबूजी पर नजर पड़ते ही बिल्टु की आखें चमकने लगी।

अब बदन बाबू भी बहुत-कुछ हलकापन महसूस करने लगे थे।

कमीज का बटन खोलते-खोलते बोले, "आज तुम्हें एक अच्छी-सी कहानी सुनाऊगा।"

"सचमुच? और-और दिनों की तरह तो नहीं?"

"नहीं रे। सचमुच।"

"किस चीज की कहानी, बाबू जी?"

"टैरोडैकटिल के अंडे की। उसके अलावा और बहुत सारी कहानियां। एक ही दिन में यह सब कहानियां समाप्त नहीं होंगी।"

सच कहने में हर्ज ही क्या है? बिल्टू की खुशियों का खुराक आज एक दिन में ही उन्हें जितना मिला है उसकी कीमत क्या पचपन रुपए बत्तीस पैसे भी न होगी?

चमगादड़ की विभीषिका

चमगादड़ को मैं कतई बरदाश्त नहीं कर पाता। मेरे भवानीपुर के फ्लैट मे शाम के वक्त खिड़की की सलाखों की फांक से जब चमगादड़ कमरे के अन्दर चले आते हैं तो मुझे लाचार होकर काम बन्द करना पड़ता है। खासतौर से गरमी के दिनो मे जब पंखा चलता रहता है और चमगादड़ अन्दर आकर सिर के ऊपर चक्कर काटता रहता है तो मुझे लगता है, अभी इसे रॉड से धक्का लगेगा और वह फर्श पर गिरकर छटपटाने लगेगा। ऐसी स्थिति में, मैं बिलकुल हक्का-बक्का-सा हो जाता हू। अकसर मुझे कमरे से बाहर चला जाना पड़ता है। अपने नौकर विनोद से कहता हूं कि वह चमगादड़ को भगाने का कोई इन्तजाम करे। एक बार विनोद ने मेरे बैडमिन्टन के रैकेट से एक चमगादड़ को मार डाला था। सच कहूं, न केवल अशांति का बोध होता है, बल्कि उसके साथ आतंक का एक मिला-जुला भाव रहता है। मैं चमगादड़ के चेहरे को बरदाश्त कर ही नही पाता हू। वह न तो चिड़िया है और न जानवर। उस पर इस तरह सिर नीचे कर पावों से वृक्ष की शाखा को कसकर पकड़े लटकना—यह सब देखकर लगता है, चमगादड़ नामक जीव का अस्तित्व न होना ही संभवतः अच्छा रहता।

कलकत्ते मे मेरे कमरे के अन्दर चमगादड़ इतनी बार आ चुका है कि मुझे लगता है, इस जीव में मेरे प्रति एक पक्षधरता है। किन्तु इतना कुछ होने पर भी मैंने यह नहीं सोचा था कि सिउड़ी आने पर अपने वासस्थान मे प्रवेश कर ज्योंही मैं शहतीर की ओर ताकूगा, मुझे वहां भी एक चमगादड़ लटकता हुआ मिलेगा। यह तो बड़ी ज्यादती है। जब तक उसे यहां से विदा नही कर लेता हू तब तक मैं इस कमरे मे रह नहीं सकूगा।

मुझे इस मकान का पता अपने पिताजी के मित्र तीनकौड़ी चाचा से चला था। कभी वे सिउड़ी में ही डॉक्टरी किया करते थे। अब रिटायर्ड होकर कलकत्ते में रह रहे हैं। यह कहने की जरूरत नहीं है कि सिउड़ी मे उनके बहुत से जाने-पहचाने लोग हैं। इसलिए जब मुझे सात-एक दिनों के लिए सिउड़ी जाने की जरूरत पड़ी, तो मैं तीनकौड़ी चाचा के पास ही गया। उन्होंने सुनने के बाद कहा, "सिउड़ी जा रहे हो? क्यों? वहां क्या

"अब नहीं आएगा। उसने यहां कोई बसेरा नहीं बनाया है कि आएगा ही। रात में किसी समय अन्दर घुस गया है। दिन के वक्त आंखों से दिखाई नहीं पड़ता है। यही कारण है कि बाहर नहीं जा सका है।"

चाय पीकर मैं कमरे के सामने पड़ी एक पुरानी बेंत की कुरसी पर आकर बैठ गया।

मकान शहर के एक कोने में है। सामने उत्तर की दिशा में बहुत बड़ा आम का एक बगीचा है। तने की फांक से दूर दिगत विस्तृत धान का खेत दीख पड़ता है। पच्छिम की ओर एक बंसवारी में ऊपर की तरफ गिरजा का गुंबद दीख पड़ता है। यह सिउड़ी का एक प्रसिद्ध पुराना गिरजा है। सोचा, धूप कुछ कम हो जाए तो जरा उधर से घूम आऊं। कल से काम शुरू करूंगा। खोज-पड़ताल करने पर पता चला है कि सिउड़ी एवं उसके आसपास जीर्ण मंदिर हैं। मेरे पास कैमरा और बहुतेरी फिल्में हैं। इन मंदिरों में जो नक्काशी है, उसकी मुझे तस्वीरें लेनी है। ईंटों की आयु अब कितने दिनों की है? ये सब अगर नष्ट हो जाती हैं तो बंगाल को अपनी अमूल्य संपदा से हाथ धोना पड़ेगा।

मैंने अपनी कलाई-घड़ी की ओर देखा। साढ़े पांच बज रहे थे। गिरजा के गुंबद के पीछे सूर्य अदृश्य हो गया। मैं अंगड़ाई लेकर, कुरसी से उठ खड़ा हुआ और बरामदे की सीढ़ी की ओर पांव बढ़ाया। तभी मेरे कान के पास सांय-सांय शब्द करती हुई न जाने कौन सी चीज़ उड़कर आम के बगीचे की ओर चली गई।

शयन-कक्ष में प्रवेश कर मैंने शहतीर की ओर देखा। चमगादड़ वहां नहीं है।

खैर, अब चैन मिला। कम से कम शाम तो निश्चिन्तता के साथ बीतेगी। हो सकता है, मेरे लेखन का कार्य थोड़ा-बहुत आगे बढ़ सके। वर्धमान, बांकुड़ा और चौबीस परगना के मंदिरों को इसके पहले ही देख चुका हूं। सोचा था, उनके संबंध में लिखने का काम सिउड़ी के प्रवास में ही आरंभ करूंगा।

जब धूप ढल गई, अपना टार्च हाथ में लिए मैं गिरजा की ओर चल पड़ा। वीरभूम की लाल मिट्टी, ऊबड़-खाबड़ जमीन और ताड़ों की कतार—ये सब चीजें मुझे बहुत ही अच्छी लगती हैं। तब हां, सिउड़ी में मैं पहली बार आया हूं। यद्यपि मैं प्राकृतिक सौंदर्य के उपभोग के निमित्त नहीं आया हूं, फिर भी आज की शाम लाल गिरजा के आसपास का स्थान मुझे बड़ा ही मनोरम प्रतीत हुआ। मैं चहल-कदमी करता हुआ गिरजा से आगे बढ़कर पच्छिम की तरफ थोड़ी दूर और निकल गया। मेरे सामने

करना है ?"

मैंने उन्हे बताया कि मैं बगाल के प्राचीन ढहे मदिरों के सबंध में अनुसधान कर रहा हू। मुझे एक पुस्तक लिखनी है। इतने सुन्दर-सुन्दर मदिर चारो ओर फैले हैं, लेकिन उनके सबध मे आज तक एक भी प्रामाणिक ग्रथ नही लिखा गया है।"

"अहो, तुम तो कलाकार हो। लगता है, तुममे उन चीजो के प्रति लगाव है। बडी अच्छी बात है। लेकिन सिर्फ सिउडी ही क्यो ? उस तरह के मन्दिर वीरभूम के अनेक स्थानो मे है। सुरुल हेतमपुर, दुबराजपुर, फूलबेरा, वीरसिंहपुर—इन स्थानो मे अच्छे-अच्छे मदिर है। तब हा, वे सब क्या इतने अच्छे है कि उन पर पुस्तकें लिखी जाए ?"

खैर, तीनकौडी चाचा ने मुझे एक मकान का पता बताया। "पुराने मकान मे रहने मे तुम्हे कोई आपत्ति तो नही है ? मेरा एक रोगी उस मकान मे रहता था। अब वह कलकत्ता चला आया है। तब हा, जहां तक मुझे पता है, वहा देखभाल करने के लिए कोई दरबान रहता है। खासा बडा मकान है। तुम्हें कोई असुविधा नही होगी। तुम्हे इसके लिए पैसा भी नही देना है, क्योकि मैं रोगी को तीन बार यम के हाथ मे बचा चुका हू। तुम उसके मकान के एक कमरे मे सातेक दिनो के लिए अतिथि बनकर रहोगे, मैं अगर उससे ऐसा अनुरोध करू तो वह खुशी से इस बात को मान लेगा।"

यही हुआ। लेकिन रिक्शा लेकर जब मैं स्टेशन से सरो-सामान लेकर उस मकान मे अपने कमरे के अन्दर गया तो चमगादड़ पर नज़र पड़ी।

मैंने घर की देखरेख करनेवाले दरबान को बुलाया।

"तुम्हारा नाम क्या है जी ?"

"जी, मुझे मधुसूदन कहते है।"

"ठीक है, तो सुनो मधुसूदन, वह चमगादड जी हमेशा ही इस कमरे में वास करते है या मेरे स्वागत के निमित्त इनका आना हुआ है ?"

मधुसूदन ने शहतीर की ओर ताकते हुए सिर खुजलाया और कहा, "इस पर मैंने कभी ध्यान नही दिया है हुजूर। यह कमरा बन्द ही रहा करता है। आप आज आने वाले थे, इसीलिए इसे खोल दिया है।"

"मगर ये हजरत रहेगे तो मेरा रहना नामुमकिन है।"

"आप चिन्ता मत करें मालिक। शाम होने पर वह अपने आप चला जाएगा।"

"माना कि चला जाएगा। मगर कल जिससे लौटकर न आए इसकी कोई न कोई व्यवस्था करनी होगी।"

थोड़ा-सा स्थान रेलिंग से घिरा था, जो दूर से किसी के बगीचे जैसा लगता था। लगता है, लोहे का एक फाटक भी लगा है।

थोड़ी दूर और आगे बढ़ने पर समझ मे आया, वह बगीचा नही, कब्रिस्तान है। उस कब्रिस्तान में तीसेक कब्रें हैं। किसी-किसी पर नक्काशी किया हुआ पत्थर या ईंटों का स्तंभ है। किसी-किसी मिट्टी की कब्र पर शिलापट रखा हुआ है। ये सब बहुत ही पुराने हैं, इसमे संदेह की कोई गुंजाइश नही। स्तंभो मे दरारें पड़ गई हैं। किसी-किसी दरार मे बरगद के पेड़ उग आए हैं।

फाटक खुला हुआ ही था। भीतर जाकर मैं शिलापटो पर अस्पष्ट उगी लिखावट को पढ़ने की कोशिश करने लगा। एक पर सन् 1793 लिखा हुआ था, दूसरे पर 1788। जितनी भी कब्रें थीं सबकी सब गोरे लोगो की थी। अंग्रेजी राज्य के प्रारंभिक काल मे हिन्दुस्तान आने पर इनमें से अधिकांश की मृत्यु महामारी के प्रकोप से अल्पायु मे हुई थी। एक शिलापट पर की लिखावट कुछ स्पष्ट रहने के कारण मैं ज्यों ही टॉर्च जलाकर झुकते हुए पढ़ने जा रहा था, तभी मुझे अपने पीछे पदचाप सुनाई पड़ी। मैंने मुड़कर देखा। एक अधेड़ नाटे कद का आदमी करीब दस हाथ की दूरी पर खड़ा मेरी ओर देखता हुआ मुसकरा रहा था। पहनावे के रूप में उस व्यक्ति के बदन पर अैल्पैका का कोट और पैंटलुन था। हाथ मे पैबंद लगा एक छाता।

"आप चमगादड़ को पसन्द नही करते हैं? यह बात सही है न?"

उस आदमी की बातो से मैं चिहुक उठा। यह बात उसे कैसे मालूम हुई? मुझे विस्मय मे पाकर वह आदमी बोला, "आप सोच रहे हैं कि मुझे इस बात की जानकारी कैसे हुई? सीधी-सी बात है। आप जब अपने मकान के दरबान से चमगादड को बाहर भगाने को कह रहे थे तब मैं आसपास ही मौजूद था।"

"ओह, यह बात है!"

उस आदमी ने मुझे नमस्कार किया।

"मेरा नाम है जगदीश पर्सिवैल मुखर्जी। हम लोग चार पुरखो से सिउड़ी मे वास करते आ रहे है। मैं ईसाई जो ठहरा— इसलिए शाम के वक्त गिरजा और कब्रगाह के इर्द-गिर्द चक्कर काटना मुझे अच्छा लगता है।"

अंधेरा बढ़ता जा रहा है, यह देखकर आहिस्ता-आहिस्ता घर की ओर कदम बढ़ाया। वह आदमी मेरे साथ हो लिया। वह कैसा-कैसा तो लग रहा था। यों वह निरीह जैसा लग रहा था किन्तु उसके गले की आवाज

में धीमेपन के साथ कर्कशता का संयोग था। इसके अलावा जो आदमी ज़ोर-जबरन जान-पहचान करता है, मुझे वह यों भी भला नहीं लगता है।

मैंने टॉर्च का बटन दबाया मगर वह जला नहीं। याद आया, हावड़ा स्टेशन में एक जोड़ा बैटरी खरीदने का मैंने निश्चय किया था, मगर वैसा नहीं कर सका था। बड़ी ही मुश्किल है! रास्ते में अगर साप-बिच्छू रहे तो दीखेगा भी नहीं।

उस आदमी ने कहा, "आप टॉर्च के लिए फिक्र मत करें। मैं अंधेरे में चलने का आदी हूं। मुझे अच्छी तरह दीख पड़ता है। मगर सावधान रहें, सामने एक गड्ढा है।"

उस आदमी ने मेरे हाथ को पकड़कर खींचा और मुझे बायीं तरफ हटा दिया। उसके बाद बोला, "वैम्पायर किसे कहते हैं, यह आपको मालूम है?"

मैंने संक्षेप में कहा, "मालूम है।"

वैम्पायर के बारे में कौन नहीं जानता? खून चूसने वाले चमगादड़ को वैम्पायर बैट कहा जाता है। वह घोड़ा, गाय, बकरी इत्यादि के गले में खून चूसकर पीता है। मुझे इस बात की जानकारी नहीं है कि इस किस्म के चमगादड़ हमारे देश में है या नहीं, तब हां, विदेशी पुस्तकों में वैम्पायर बैट के बारे में पढ़ा है। विदेश की भूतों की कहानी की पुस्तकों में मैंने पढ़ा है कि न केवल चमगादड़, बल्कि आधी रात के समय लाशें भी कब्र से बाहर निकलकर जीवित सोये मनुष्य के गले से खून चूसकर पीती हैं। उन्हें भी वैम्पायर ही कहा जाता है। काउन्ट ड्रैकुला की लोमहर्षक कहानी मैं तभी पढ़ चुका हूं जब मैं स्कूल में पढ़ता था।

मुझे यह सोचकर ऊब महसूस हुई कि चमगादड़ों के प्रति मुझ में एक विरोधी भावना है, यह बात जानते हुए भी इस आदमी ने जबरन चमगादड़ की चर्चा क्यों छेड़ दी।

इसके बाद हम लोग कुछ देर तक खामोश रहे।

आम के बगीचे की बगल से होते हुए जब हम घर के निकट पहुंचे तो एकाएक वह आदमी बोल पड़ा, "आपसे परिचित होने के कारण मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई। कुछ दिनों तक ठहरिएगा न?"

मैंने कहा, "लगभग एक सप्ताह।"

"ठीक है, फिर मुलाकात होगी ही।" उसके बाद कब्रगाह की ओर उंगली से इशारा करते हुए बोला, "शाम के वक्त उधर आने पर मुझसे मुलाकात होगी। मेरे बाप-दादे की कब्रें भी उधर ही हैं। कल आइएगा, दिखा दूंगा।"

मैंने मन ही मन कहा, 'तुमसे जितनी ही कम मुलाकातें हों, उतना ही अच्छा। चमगादड़ों का उपद्रव जिस तरह बरदाश्त के बाहर है, चमगादड़ के संदर्भ में चर्चा भी उतनी ही अरुचिकर। सोचने के लिए बहुत सी दूसरी बातें भी हैं।'

बरामदे की सीढ़ियां तय करते वक्त मैंने देखा, वह आम के बगीचे में अदृश्य हो गया। बगीचे के पीछे के धान के खेतों में तब सियारों का समवेत संगीत मुखर हो चुका था।

आश्विन का महीना है, फिर भी उमस महसूस हो रही है। खा-पीकर जब मैं बिस्तर पर लेटा, कुछ देर तक करवटें बदलता रहा, उसके बाद सोचा, चमगादड़ों के भय से मैंने खिड़की-दरवाजे बन्द कर दिए थे। उन्हें खोल देने से हो सकता है, थोड़ा आराम महसूस हो।

लेकिन दरवाज़ा खोलने का साहस न हुआ। इसका कारण चमगादड़ नहीं था। दरबान की नींद अगर पतली हो तो चोरों के उपद्रव से रक्षा हो सकती है। मगर इस तरह के कस्बों में दरवाज़ा खोलकर रखने से अकसर यह देखने में आता है कि कुत्ते कमरे के अन्दर आकर चप्पल-जूते गायब कर देते हैं। मुझे इस तरह के अनुभव इसके पहले हो चुके हैं। इसलिए बहुत देर तक सोचने के बाद मैंने दरवाजा नहीं खोला। पश्चिम दिशा की खिड़की अवश्य ही खोल दी। देखा, बहुत ही ताज़ा हवा आ रही है।

मैं क्योंकि थकान से चूर था इसलिए नींद आने में देर नहीं लगी।

नींद में मैंने सपने में देखा, खिड़की की सलाख से अपना मुंह सटाकर शाम का वह आदमी हंस रहा है। उसकी आखें बटरा हरे रंग की हैं, दांत पतले-पतले और पैने। उसके बाद मैंने देखा, वह दो कदम पीछे हटा और फिर दो हाथ ऊंचा उठकर फलांगते हुए, सलाख के बीच से कमरे के अन्दर चला आया। उसके कदमों की आहट से मेरी नींद टूट गई।

आंख खोलकर देखा—सुबह हो चुकी थी। बाप रे, कितना विचित्र स्वप्न था।

मैं बिस्तर से उठकर खड़ा हुआ और मधुसूदन को पुकारकर उससे चाय लाने के लिए कहा।

मधुसूदन जब बरामदे की बेंत की मेज़ पर चाय रखकर जाने लगा, मुझे उसका चेहरा उदास जैसे लगा। मैंने पूछा, "क्या हुआ है मधुसूदन? तबियत खराब है क्या? या रात में ठीक से नींद नहीं आई?"

मधुसूदन ने कहा, "नहीं बाबूजी, मुझे कुछ नहीं हुआ है। जो कुछ हुआ है, वह मेरे बछड़े के साथ हुआ।"

"क्या हुआ है?"

"कल रात सांप ने डस लिया और वह मर गया।"

"यह क्या ? मर गया ?"

"मरेगा नहीं हुजूर ? कुल मिलाकर सात दिनों का ही बछड़ा था। गले के पास डस लिया था। पता नहीं, गेहुअन था या और कोई दूसरा हो।"

मेरा मन विचलित हो उठा। गले के पास ? गले में डंस लिया ? कल ही जैसे...

एकाएक मुझे याद हो आया। वैम्पायर बैट। वैम्पायर बैट गले से खून चूस लेता है। किन्तु दूसरे ही क्षण मुझे लगा, सर्पदंश से अगर बछड़ा मर जाता है तो इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है ? बछड़ा अगर सोया हुआ हो तो गले में डंस लेना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। मैं दोनों के बीच व्यर्थ ही एक सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा कर रहा हूं।

मधुसूदन को संवेदना के दो शब्द कहने के बाद मैं अपना काम शुरू करने के खयाल से ज्यों ही कमरे के अन्दर जाने लगा, मेरी निगाह अपने-आप शहतीर की ओर चली गई। कल का वही चमगादड़ पता नहीं कब अपनी जगह पर आकर जम गया है।

उस खिड़की को खोलने से ही ऐसी बात हुई है। गलती मेरी ही है। मन ही मन सोचा, आज रात चाहे जितनी भी उमस क्यों न हो, खिड़की और दरवाजे बन्द ही रखूंगा।

•

पूरा दिन मंदिर में आनन्द में ही कटा। अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के इन जीर्ण मन्दिरों पर उकरी नक्काशी देखकर सचमुच मैं अचम्भे में खो गया।

जब मैं हेतमपुर से बस पर सवार होकर मिउड़ी पहुंचा तो साढ़े चार बज रहे थे।

घर लौटने का रास्ता कब्रिस्तान के निकट से ही जाता है। तमाम दिन काम में मशगूल रहने के कारण उस आदमी की बातें लगभग भूल ही चुका था। इसलिए कब्रिस्तान के बाहर सहिजन वृक्ष के तले उस पर अचानक नजर पड़ते ही मैं चौंक पड़ा। दूसरे ही क्षण मुझे लगा, इसे न देख पाने का बहाना कर उसे नजर-अन्दाज करते हुए निकल जाना ही अच्छा रहता। किन्तु अब इसका उपाय न था। सिर झुकाकर पांवों की गति मैंने ज्योंही तेज कर दी कि वह आदमी तेज कदमों से चलता हुआ मेरे पास आ गया।

"रात में आपको अच्छी तरह नींद आई थी तो ?"

मैंने संक्षेप में 'हां' कहा और आगे बढ़ना जारी रखा। लेकिन वह आज भी मेरा पिंड छोड़ने वाला नहीं था। मेरी तेज़ चाल से तालमेल बिठाते हुए बोला, "जानते हैं, मुझमें क्या उन्माद है? रात में मैं सो ही नहीं पाता। दिन के वक्त गहरी नींद में खो जाता हूं और शाम से रात भर इधर-उधर चहलकदमी करता रहता हूं। इस चक्कर काटने में कितना आनन्द है, इसे आपको कैसे समझाऊं? आपको पता है कि इस कब्रगाह और इसके पास देखने-सुनने लायक कितनी चीज़ें हैं? जो ये लोग मिट्टी के अन्दर ताबूत में बरसों तक बन्दी की हालत में रहकर साल पर साल गुज़ार देते हैं, उनकी अतृप्त वासना के बारे में आप कुछ जानते हैं? इनमें से कोई क्या इस तरह बन्दी बनकर रहना चाहता है? कोई नहीं। सभी मन-ही-मन सोचते हैं, काश, बाहर निकल पाता! मगर कठिनाई क्या है?—निकलने का रहस्य हर किसी को मालूम नहीं है। उसी शोक में कोई रोता है, कोई कराहता है और कोई लम्बी सांसें खींचता रहता है। आधी रात में जब चारों तरफ सन्नाटा रेंगने लगता है, सियार सो जाते हैं, झींगुर बोलते-बोलते थक जाते हैं, तब वे जिसकी श्रवण-शक्ति तीव्र हुआ करती है—जैसे मेरी—मिट्टी के नीचे ताबूत में बन्द प्राणियों के शोक के उद्गार सुन पाते हैं। इतना ज़रूर है कि जिसके बारे में मैंने आपसे कहा, सुनने के लिए कान पतला होना चाहिए। मेरी आंख और कान दोनों बहुत ही अच्छे हैं। एकदम चमगादड़ के जैसे···"

मन-ही-मन सोचा, मधुसूदन से इस आदमी के बारे में पूछताछ करूंगा। इसे पूछूं तो सही उत्तर देगा, इस बात पर मुझे विश्वास नहीं है। यह आदमी यहां का कब का बाशिन्दा है? क्या करता है? इसका मकान कहां है?

मेरे पीछे-पीछे चलते हुए वह आदमी कहने लगा, "मैं किसी से ललक कर जान-पहचान नहीं करता, मगर आपसे कर रहा हूं। आशा है, जब तक आप यहां रहेंगे मुझे अपनी संगति से वंचित नहीं करेंगे।"

अब मैं अपना क्रोध संभाल न सका। चहलकदमी रोककर मैं उस आदमी की तरफ मुड़कर बोला, "मैं यहां सात दिनों के लिए आया हूं। मेरे ज़िम्मे बहुत सारे काम हैं। आपकी संगति का मौका मिलेगा, ऐसा नहीं लगता।"

मेरी बात सुनकर आरम्भ में उस आदमी का चेहरा बुझ गया। उसके बाद मीठे किन्तु दृढ़ स्वर में मुसकराते हुए कहा, "आप मुझसे न भी मिल पाएं तो भी मैं आपसे मिल सकता हूं। आप जिस वक्त काम करते हैं—

बाद ही मैं नीद की बाहो मे सो गया था।

कब मेरी नीद टूटी, पता नही और कुछ देर तक यह बात समझ में नही आई कि क्यो टूट गई। उसके बाद पूरबी दीवार पर चतुष्कोण चादनी देखते ही मेरी छाती धड़धड़ करने लगी।

पता नही खिड़की कब खुल गई और उसमे चांदनी आकर दीवार पर झूल रही थी।

उसके बाद मैंने देखा, चतुष्कोण प्रकाश के ऊपर किसी चीज की छाया बार-बार हिल-डुल रही है।

सास रोके, गरदन घुमाकर मैंने ज्योंही ऊपर की ओर ताका, चमगादड पर मेरी निगाह गई।

मेरी खाट के ठीक ऊपर ही चमगादड चरखी की तरह घूम रहा है और घूमते हुए आहिस्ता-आहिस्ता नीचे मेरी ओर आ रहा है।

जी-जान से कोशिश करने पर जितनी हिम्मत बटोर सकता था, मैंने अपने आपमे उतनी हिम्मत बटोरी। इस हालत मे दुर्बलता को प्रश्रय देने से विपत्ति अवश्यभावी है। चमगादड़ की तरफ से बिना अपनी आखें हटाए, मैंने अपने दाहिने हाथ को खाट के पास पडी मेज की ओर बढाया और उस पर रखी अपनी मजबूत जिल्द मढी कापी उठा ली।

तीन-चार हाथ की दूरी से ज्यों ही चमगादड़ मेरी कठ नली की ओर कूदा, मैंने कॉपी से उसके माथे पर जोरो से प्रहार किया।

चमगादड़ छिटककर खिड़की की सलाख से जाकर टकराया और कमरे के बाहर मैदान मे गिर पड़ा। दूसरे ही क्षण 'खर-खर' आवाज हुई लगा, कोई चीज जैसे घास पर दौड़ती भाग गई।

मैंने खिडकी के पास जाकर गरदन बढ़ाकर देखा। कही कुछ नही था। चमगादड का निशान तक न था।

उस रात फिर मैं सो नहीं सका।

सुबह धूप निकलते ही रात की विभीषिका बहुत कुछ दूर हो गई। वह चमगादड वैम्पायर हो सकता है, अब तक इसका कोई ठीक-ठीक प्रमाण मेरे पास न था। चमगादड नीचे मेरी ओर आ रहा था, इसका मतलब यह नही कि वह मेरा खून ही पीने आ रहा था। वह अजीब आदमी अगर वैम्पायर का प्रसग न छेडता तो मेरे दिमाग में यह बात आती ही क्यों ? कलकत्ते में जिस जाति का चमगादड़ कमरे के अन्दर आता है, यह भी उसी जाति का चमगादड प्रतीत होता।

खैर ! अभी हेतमपुरा का काम बाकी है। चाय पीकर साढ़े छह बजे मैं निकल पड़ा।

पटल बाबू फिल्म स्टार बने

पटल बाबू ने कुल मिलाकर कंधे से झोली लटकाई ही थी कि बाहर से निशिकान्त बाबू ने पुकारा, "पटल, घर मे है जी ?"

"जी हां ! ठहरिए, अभी आया।"

निशिकान्त घोष नेपाल भट्टाचार्य लेन मे पटल के मकान के तीन मकान बाद ही रहते हैं। वे बड़े ही विनोदी व्यक्ति हैं।

पटल बाबू झोली लटकाए हुए आए और बोले,"बात क्या है ? सुबह-सुबह कैसे आना हुआ ?"

"तुम कब तक वापस आ रहे हो ?"

"एकाध घंटे मे। क्यों ?"

"उसके बाद कही जाना तो नही है ? आज टैगोर का बर्थ-डे है। कल मुझे अपने छोटे साले से नेताजी फार्मेसी में मुलाकात हुई थी। वह फ़िल्म में काम करता है—आदमी लाकर जुटा देता है। उसने बताया कि किसी तसवीर के एक दृश्य के लिए एक आदमी की जरूरत है। वह जैसा आदमी चाह रहा है, समझ रहे हो न, उसकी उम्र पचास वर्ष होनी चाहिए, कद नाटा हो और सर गंजा। मुझे तत्काल तुम्हारी याद आ गई। इसीलिए मैंने उसे तुम्हारा पता बता दिया है। कह दिया है, सीधे तुमसे आकर बात करे। आज दिन में दस बजे आएगा। तुम्हे कोई आपत्ति तो नही है ? उन लोगो का जो रेट है उसके हिसाब से कुछ पेमेन्ट भी करेगा···"

सुबह-सुबह इस तरह के समाचार की पटल बाबू ने आशा नही की थी। बावन वर्ष की उम्र मे अभिनय करने का प्रस्ताव रखा जा सकता है, उनके जैसे नगण्य मनुष्य के लिए इसका अनुमान करना सचमुच कठिन ही है। यह तो जैसे उनके चिन्तन के परे की कोई वस्तु है।

"क्यों जी, हां या ना जो कहना हो, कह डालो। किसी जमाने मे तुम अभिनय कर चुके हो न ?"

"हां यानी इसमे ना कहने की कौन-सी बात है ? वह आए फिर बात-चीत करके देखूगा। आपने अपने साले का नाम क्या बताया ?"

"नरेश। नरेश दत्त। उम्र लगभग तीस वर्ष, लम्बा, दोहरे बदन का। कहा है, दस-साढ़े दस बजे तक आएगा।"

बाजार जाने के बाद आज पटल बाबू अपनी पत्नी की फरमाइशें भुला बैठे और काला जीरा की जगह मिर्च खरीद लाए। सेंधा नमक की बात उनके ध्यान में रही ही नही। इसमें आश्चर्य की कोई बात नही है। किसी जमाने मे पटल बाबू अभिनय के बड़े शौकीन थे। वह शौक शौक न होकर नशे जैसा था। यात्रा, थियेटर, पूजा-पर्व, महल्ले के क्लब के समारोह इत्यादि मे उनका बंधा-बंधाया काम था अभिनय करना। कितनी ही बार इश्तहारों मे पटल बाबू का नाम छप चुका है—'पराशर की भूमिका में श्री शीतलाकान्त राय (पटल बाबू)।' एक जमाना ऐसा भी था कि उनके नाम से ज्यादा टिकटें बिका करती थीं।

तब वे कांचरापाड़ा में रहते थे। वही वे रेलवे के कारखाने मे नौकरी करते थे। उन्नीस सौ चौंतीस ईस्वी में कलकत्ते के हडसन एण्ड किम्बलो कम्पनी मे ज्यादा रुपये की नौकरी और नेपाल भट्टाचार्य लेन में मकान मिल जाने के कारण पटल बाबू सपत्नीक कलकत्ता चले आए। कुछ वर्ष अच्छी तरह ही व्यतीत हो गए। दफ्तर का साहब पटल बाबू के प्रति स्नेह का भाव रखता था। उन्नीस सौ तैंतालीस ईस्वी में पटल बाबू जब एक थियेटर व पार्टी बनाने को थे कि युद्ध के कारण दफ्तर में छंटनी हुई और पटल बाबू की नौ बरसों की मनचाही नौकरी कपूर की गन्ध की तरह उड़ गई।

उसी समय से आज तक का अरसा पटल बाबू ने रोजगार धंधे की खोज मे गुजार दिया है। शुरू मे उन्होंने मनिहारी की दुकान खोली थी। पांच बरसों के बाद वह बन्द हो गई। उसके बाद एक छोटे-से बंगाली दफ्तर मे कुछ दिनों तक किरानी के पद पर रहे। दफ्तर के बड़े मालिक बंगाली साहब मिस्टर मिटार की उच्छृ खलता और बेवजह क्रोध मे आ जाने के स्वभाव को बरदाश्त न कर पाने के कारण उन्होंने खुद ही नौकरी छोड़ दी थी। उसके बाद इस दस साल के दरमियान जीवन-बीमा की दलाली से लेकर कौन-सा ऐसा काम है, जिसे पटल बाबू ने नहीं किया हो ? लेकिन अभाव और तंगी कभी दूर नहीं हुई। आजकल वे एक लोहा-लक्कड़ की दुकान में दौड़-धूप कर रहे है। उनके एक चचेरे भाई ने कहा है कि वहां कोई-न-कोई इन्तजाम हो जाएगा।

और अभिनय ? यह तो जैसे उनके पूर्वजन्म की बातें हो चुकी हैं। अनजाने ही एक आह निकलती है और धुंधली यादें मन में तैरने लगती हैं। पटल बाबू की स्मरण-शक्ति तीव्र है, यही वजह है कि अब भी अच्छे-अच्छे पार्ट के बेहतरीन अंश उन्हें याद है : 'सुनो, बार-बार गाडीव की झनकार। अपना दल है आकुल महासमर में। जो हैं शत समीर हुंकार। घुमा रहे हैं

पटल बाबू फिल्म स्टार बने

पटल बाबू ने कुल मिलाकर कंधे से झोली लटकाई ही थी कि बाहर से निशिकान्त बाबू ने पुकारा, "पटल, घर में है जी ?"

"जी हां ! ठहरिए, अभी आया।"

निशिकान्त घोष नेपाल भट्टाचार्य लेन में पटल के मकान के तीन मकान बाद ही रहते हैं। वे बड़े ही विनोदी व्यक्ति हैं।

पटल बाबू झोली लटकाए हुए आए और बोले,"बात क्या है ? सुबह-सुबह कैसे आना हुआ ?"

"तुम कब तक वापस आ रहे हो ?"

"एकाध घंटे में। क्यों ?"

"उसके बाद कहीं जाना तो नहीं है ? आज टैगोर का बर्थ-डे है। कल मुझे अपने छोटे साले से नेताजी फार्मेसी में मुलाकात हुई थी। वह फ़िल्म में काम करता है—आदमी लाकर जुटा देता है। उसने बताया कि किसी तसवीर के एक दृश्य के लिए एक आदमी की जरूरत है। वह जैसा आदमी चाह रहा है, समझ रहे हो न, उसकी उम्र पचास वर्ष होनी चाहिए, कद नाटा हो और सर गंजा। मुझे तत्काल तुम्हारी याद आ गई। इसीलिए मैंने उसे तुम्हारा पता बता दिया है। कह दिया है, सीधे तुमसे आकर बात करे। आज दिन में दस बजे आएगा। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है ? उन लोगों का जो रेट है उसके हिसाब से कुछ पेमेन्ट भी करेगा..."

सुबह-सुबह इस तरह के समाचार की पटल बाबू ने आशा नहीं की थी। बावन वर्ष की उम्र में अभिनय करने का प्रस्ताव रखा जा सकता है, उनके जैसे नगण्य मनुष्य के लिए इसका अनुमान करना सचमुच कठिन ही है। यह तो जैसे उनके चिन्तन के परे की कोई वस्तु है।

"क्यों जी, हां या ना जो कहना हो, कह डालो। किसी जमाने में तुम अभिनय कर चुके हो न ?"

"हां यानी इसमें ना कहने की कौन-सी बात है ? वह आए फिर बात-चीत करके देखूंगा। आपने अपने साले का नाम क्या बताया ?"

"नरेश। नरेश दत्त। उम्र लगभग तीस वर्ष, लम्बा, दोहरे बदन का। कहा है, दस-साढ़े दस बजे तक आएगा।"

बाजार जाने के बाद आज पटल बाबू अपनी पत्नी की फरमाइशें भूला बैठे और काला जीरा की जगह मिर्च खरीद लाए। सेंधा नमक की बात उनके ध्यान में रही ही नहीं। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। किसी ज़माने मे पटल बाबू अभिनय के बड़े शौकीन थे। वह शौक शौक न होकर नशे जैसा था। यात्रा, थियेटर, पूजा-पर्व, महल्ले के क्लब के समारोह इत्यादि मे उनका बंधा-बंधाया काम था अभिनय करना। कितनी ही बार इश्तहारों मे पटल बाबू का नाम छप चुका है—'पराशर की भूमिका में श्री शीतलाकान्त राय (पटल बाबू)।' एक ज़माना ऐसा भी था कि उनके नाम से ज्यादा टिकटें बिका करती थीं।

तब वे कांचरापाड़ा मे रहते थे। वहीं वे रेलवे के कारखाने में नौकरी करते थे। उन्नीस सौ चौंतीस ईस्वी में कलकत्ते के हडसन एण्ड किम्बलो कम्पनी मे ज्यादा रुपये की नौकरी और नेपाल भट्टाचार्य लेन में मकान मिल जाने के कारण पटल बाबू सपत्नीक कलकत्ता चले आए। कुछ वर्ष अच्छी तरह ही व्यतीत हो गए। दफ्तर का साहब पटल बाबू के प्रति स्नेह का भाव रखता था। उन्नीस सौ तैंतालीस ईस्वी में पटल बाबू जब एक थियेटर व पार्टी बनाने को थे कि युद्ध के कारण दफ्तर में छटनी हुई और पटल बाबू की नौ बरसो की मनचाही नौकरी कपूर की गन्ध की तरह उड़ गई।

उसी समय से आज तक का अरसा पटल बाबू ने रोजगार धंधे की खोज मे गुज़ार दिया है। शुरू में उन्होने मनिहारी की दुकान खोली थी। पांच बरसों के बाद वह बन्द हो गई। उसके बाद एक छोटे-से बंगाली दफ्तर मे कुछ दिनों तक किरानी के पद पर रहे। दफ्तर के बड़े मालिक बंगाली साहब मिस्टर मिटार की उच्छृंखलता और बेवजह क्रोध में आ जाने के स्वभाव को बरदाश्त न कर पाने के कारण उन्होने खुद ही नौकरी छोड दी थी। उसके बाद इस दस साल के दरमियान जीवन-बीमा की दलाली से लेकर कौन-सा ऐसा काम है, जिसे पटल बाबू ने नही किया हो? लेकिन अभाव और तंगी कभी दूर नही हुई। आजकल वे एक लोहा-लक्कड की दुकान मे दौड-धूप कर रहे है। उनके एक चचेरे भाई ने कहा है कि वहा कोई-न-कोई इन्तज़ाम हो जाएगा।

और अभिनय? यह तो जैसे उनके पूर्वजन्म की बातें हो चुकी हैं। अनजाने ही एक आह निकलती है और धुंधली यादें मन में तैरने लगती है। पटल बाबू की स्मरण-शक्ति तीव्र है, यही वजह है कि अब भी अच्छे-अच्छे पार्ट के बेहतरीन अंश उन्हें याद हैं: 'सुनो, बार-बार गाडीव की झनकार। अपना दल है आकुल महासमर में। जो हैं शत समीर हुंकार। घुमा रहे हैं

गदा पर्वताकार—वृकोदर—संचालन में।' ...सोचने पर अब भी रोमांच का अनुभव होता है।

नरेशदत्त ठीक साढ़े बारह बजे आए। पटल बाबू उम्मीद लगभग छोड़ चुके थे और स्नान करने की तैयारियां कर रहे थे कि दरवाज़े पर दस्तक पड़ी।

"आइए, आइए!" पटल बाबू दरवाज़ा खोलकर आगंतुक को घर के अन्दर खींचते हुए ले आए और टूटे हत्थे वाली कुरसी उनकी ओर बढ़ा दी और कहा, "बैठिए।"

"नहीं-नहीं। बैठूंगा नहीं। शायद निशिकान्त बाबू ने आपसे मेरे बारे में कहा होगा..."

"हां-हां। मैं अलबत्ता दंग रह गया। इतने दिनों के बाद..."

"आपको कोई आपत्ति नहीं है न?"

शर्म से पटल बाबू का सिर नीचे झुक गया।

"मेरे द्वारा...हे हे...मतलब है कि काम चल जाएगा तो?" नरेश बाबू ने गम्भीरता के साथ पटल बाबू को एक बार सिर से पैर तक गौर से देखा, फिर कहा, "अच्छी तरह चल जाएगा। मगर काम कल ही है।"

"कल? रविवार में?"

"मगर किसी स्टूडियो में नहीं। जगह के बारे में आपको बता जाता हूं। मिशन रोड और बेंटिक स्ट्रीट के मोड़ पर फैराडे हाउस है। देखा है न? सात मंजिली इमारत? उसी के सामने ठीक आठ बजे चले आइएगा। काम वहीं है। बारह बजे तक आपको फुर्सत मिल जाएगी।"

नरेश बाबू उठकर खड़े हुए। पटल बाबू ने घबराकर कहा, "आपने पार्ट के बारे में कुछ बताया ही नहीं।"

"आपका पार्ट है...पेडेस्ट्रियन यानी राहगीर का। एक अनमना तुनक मिज़ाज पेडेस्ट्रियन!...अच्छी बात है, आपके पास बन्द गले का कोट है?"

"शायद है।"

"वही पहनकर आइएगा। रंग गहरा है न?"

"बादामी किस्म का है। मगर गरम कपड़ा है।"

"सो होने दीजिए। हम लोगों का सीन भी सरदियों का है। अच्छा ही है...याद रखिएगा कल साढ़े आठ बजे फैराडे हाउस।"

पटल बाबू के दिमाग में एकाएक एक सवाल पैदा हुआ।

"पार्ट में संवाद है न? बोलना पड़ेगा तो?"

"ज़रूर। स्पीकिंग पार्ट है।...आपने इसके पहले अभिनय किया है?"

"हां···थोड़ा-बहुत···"

"फिर पैदल चलाने की खातिर ही आपके पास क्यों आता ? सो तो सड़क से किसी भी राहगीर को पकड़ने से काम चल जाता।···संवाद है और कल यहां पहुंचते ही आपको मिल जाएगा। अच्छा, चलूं···"

नरेश दत्त के चले जाने के बाद पटल बाबू ने अपनी पत्नी के पास जाकर उसे तमाम बातें बताईं।

"जो बात मेरी समझ मे आई, अजी ओ समझ रही हो न ? यह पार्ट कोई खास बड़ा नहीं है। पैसा कम ही मिलेगा और यह भी कोई बड़ी बात नहीं है। असली बात है, थियेटर मे मेरा पहला पार्ट क्या था, तुम्हें याद है न ?—मृत सैनिक का पार्ट। सिर्फ मुंह बाये, आंख मूंदे, हाथ पांव पसारे पड़े रहना। और उसी से आहिस्ता-आहिस्ता मैंने कितनी उन्नति की, याद है न ? वाट्स साहब का हैंड शेक याद है ? और हम लोगों की म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन चारुदत्त के द्वारा दिया गया वह मेडल ? यह तो पहली सीढ़ी है। कहो, ठीक कह रहा हूं न ? मान, नाम, धन, ख्याति अगर सुरक्षित है इस जग में। हे गृहिणी मेरी, प्राप्त करूंगा मैं सब कुछ को !···"

बावन वर्ष की उम्र के रहने के बावजूद पटल बाबू उछल जैसे पड़े।

पत्नी ने कहा, "यह क्या हो रहा है ?"

"फिक्र मत करो, रानी। शिशिर भादुड़ी सत्तर साल की उम्र में चाणक्य की भूमिका में कितने जोर से उछलते थे, यह बात याद है ? आज मैंने फिर से जवानी हासिल की है।"

"तुम हमेशा ख्याली पुलाव पकाते रहते हो। यही वजह है कि अब तक तुम कुछ भी नहीं कर पाए।"

"होगा-होगा। सब कुछ होगा। अच्छी बात है। आज तीसरे पहर थोड़ी-सी चाय पिऊंगा और उसके साथ अदरक का रस, नहीं तो गला ठीक से···"

●

दूसरे दिन मेट्रोपोलिटन की घड़ी में जब आठ बजकर सात मिनट हो रहे थे, पटल बाबू एस्प्लेनेड पहुंचे। वहां से बेंटिक स्ट्रीट। मिशनरी के मोड़ से फैराडे हाउस में पहुंचने मे और दस मिनट लगे।

दफ्तर के गेट के सामने बेहद तैयारियां हो रही हैं। तीन-चार गाड़ियां हैं। उनमे से एक खासी बड़ी है—लगभग बस की तरह—उसकी छत पर सारी सामान रखे हुए हैं। सड़क के ठीक किनारे फुटपाथ पर एक तिपाये

काले रंग के यन्त्र की जैसी कोई चीज है। उसके गिर्द कई व्यक्ति व्यस्तता के साथ चहल-क़दमी कर रहे हैं। गेट के ठीक मुहाने पर, एक लोहे के तिपाये डण्डे के ऊपर लोहे का एक दूसरा डण्डा आड़ा-आड़ा सुलाया हुआ है और उसके किनारे मधुमक्खी के छत्ते की जैसी कोई चीज़ लटक रही है। इसके अलावा तीसेक व्यक्ति इधर-उधर खड़े हैं। पटल बाबू ने देखा, उन लोगों के बीच गैर बंगाली भी हैं, किन्तु उन आदमियों को कौन-सा काम करना है, इस बात का वे अनुमान नहीं लगा सके।

नरेश बाबू कहां हैं ? सिवा उनके पटल बाबू को कोई पहचानता नहीं है।

पटल बाबू धड़कते कलेजे से दफ्तर के फाटक की ओर चल पड़े।

वैशाख का महीना। खादी का बन्द गले का कोट बड़ा ही भारी लग रहा था। पटल बाबू को अपने गले के चारों तरफ पसीने की बूंदों का अनुभव हुआ।

"अतुल बाबू, इधर आइए।"

अतुल बाबू ? पटल बाबू ने मुड़कर देखा। दफ्तर के बरामदे के एक खम्भे के पास खड़े होकर नरेश बाबू उन्हीं को पुकार रहे हैं। भले आदमी ने गलत नाम से पुकारा है। ऐसा होना अस्वाभाविक नहीं है। एक ही दिन का परिचय है। पटल बाबू ने आगे बढ़कर नमस्कार किया और बोले, "लगता है, मेरा नाम आपने ठीक-ठीक नहीं लिखा है। नाम है शीतलकांत राय। लोग अलबत्ता पटल बाबू के नाम से ही मुझे जानते हैं। थियेटर में भी इसी नाम से जानते थे।"

"ओ, आप तो समय के बड़े ही पाबन्द हैं।"

पटल बाबू मुसकराये।

"नौ वर्ष तक हडसन क्रिम्बरली में मैंने काम किया है। एक दिन भी लेट नहीं हुआ था। नॉट ए सिंगल डे।"

"ठीक है। आप एक काम करें। वहां छांह में जाकर थोड़ी देर प्रतीक्षा कीजिए। मैं इधर का काम आगे बढ़ा लूं।"

तिपाये यन्त्र के पास से एक आदमी ने पुकारा, "नरेश !"

"सर ?"

"वे क्या हम लोगों के आदमी हैं ?"

"हां, सर। आप ही···यानी धक्के का जो मामला है···"

"अच्छा। ठीक है। अभी जगह क्लियर करो। शॉट लेना है।"

पटल बाबू दफ्तर के पास ही पान की एक दुकान के छाजन के तले जाकर खड़े हो गए। फ़िल्माने का काम उन्होंने पहले नहीं देखा था।

उनके लिए सब कुछ नया जैसा है। थियेटर से इसकी कोई समानता नही। यहां के आदमी कितनी मेहनत कर रहे हैं! उस वजनदार यंत्र को अपनी पीठ पर लादे एक इक्कीस-बाइस वर्ष का नौजवान इधर से उधर रख रहा है। यन्त्र का वजन कम-से-कम बीस-पचीस सेर होगा ही।

परन्तु उनका संवाद कहां है? अब ज्यादा वक्त नही है। फिर भी पटल बाबू को यह मालूम नही है कि उन्हें क्या कहना है।

अचानक पटल बाबू को घबराहट महसूस होने लगी। वे आगे बढ़कर जाएं? वह रहे नरेश बाबू! एक बार जाकर उनसे पूछ लेना क्या उचित नही होगा? पार्ट चाहे छोटा हो या बड़ा, अच्छी तरह से करने के लिए उन्हें तैयारी करनी ही है। नही तो इतने-इतने लोगों के बीच भूल होने से उन्हें अजीब स्थिति में पड़ना होगा। बीस बरसों से उन्होंने अभिनय नही किया है।

पटल बाबू आगे बढ रहे थे, तभी जोरों की एक आवाज सुनकर वे ठिठककर खड़े हो गए।

"साइलेन्स।"

उसके बाद नरेश बाबू की आवाज सुनाई पड़ी, "अब शॉट लिया जाएगा। आप लोग कृपया चुपचाप रहें। बातचीत मत करें, अपनी जगह से हटें नही, कैमरे की ओर बढ़ें नही।"

उसके बाद पहले वाले आदमी की आवाज फिर से सुनाई पड़ी, "साइलेन्स! टेकिंग!" अबकी पटल बाबू की आंखें उस आदमी पर पड़ीं। मध्यवयस्क, मोटा-सोटा वह आदमी तिपाये यंत्र के सामने ही खड़ा है। गले के एक चैन में दूरबीन जैसी कोई चीज लटक रही है। वही क्या डायरेक्टर है? कितने आश्चर्य की बात है कि उन्होंने डायरेक्टर तक का नाम नहीं पूछा।

अबकी एक-एक कर बहुत-सी तेज आवाजें पटल बाबू के कानों में आईं, "स्टार्ट साउण्ड! रनिंग! एक्शन!"

'एक्शन' कहते ही पटल बाबू ने देखा, चौराहे से एक गाड़ी आकर दफ्तर के सामने रुकी। चेहरे पर गुलाबी रंग लेपा हुआ, सूट पहने एक युवक गाड़ी का दरवाजा खोलकर लगभग पछाड़ खाते हुए बाहर निकला और जल्दी-जल्दी दफ्तर के फाटक के पास जाकर खड़ा हो गया। दूसरे ही क्षण पटल बाबू ने चिल्लाहट सुनी, "कट!" और तभी निस्तब्धता को भेदकर जनता का कोलाहल गूंज उठा।

पटल बाबू के पास ही एक आदमी खड़ा था। उसने झुककर पटल बाबू से पूछा, "उस युवक को पहचानते हैं?"

काले रंग के यन्त्र की जैसी कोई चीज है। उसके गिर्द कई व्यक्ति व्यस्तता के साथ चहल-कदमी कर रहे हैं। गेट के ठीक मुहाने पर, एक लोहे के तिपाये डण्डे के ऊपर लोहे का एक दूसरा डण्डा आड़ा-आड़ी सुलाया हुआ है और उसके किनारे मधुमक्खी के छत्ते की जैसी कोई चीज लटक रही है। इसके अलावा तीसेक व्यक्ति इधर-उधर खड़े हैं। पटल बाबू ने देखा, उन लोगों के बीच गैर बंगाली भी हैं, किन्तु उन आदमियों को कौन-सा काम करना है, इस बात का वे अनुमान नहीं लगा सके।

नरेश बाबू कहां हैं ? सिवा उनके पटल बाबू को कोई पहचानता नहीं है।

पटल बाबू धड़कते कलेजे से दफ्तर के फाटक की ओर चल पड़े।

वैशाख का महीना। खादी का बन्द गले का कोट बड़ा ही भारी लग रहा था। पटल बाबू को अपने गले के चारों तरफ पसीने की बूंदों का अनुभव हुआ।

"अतुल बाबू, इधर आइए।"

अतुल बाबू ? पटल बाबू ने मुड़कर देखा। दफ्तर के बरामदे के एक खम्भे के पास खड़े होकर नरेश बाबू उन्हीं को पुकार रहे हैं। भले आदमी ने गलत नाम से पुकारा है। ऐसा होना अस्वाभाविक नहीं है। एक ही दिन का परिचय है। पटल बाबू ने आगे बढ़कर नमस्कार किया और बोले, "लगता है, मेरा नाम आपने ठीक-ठीक नहीं लिखा है। नाम है शीतलकांत राय। लोग अलबत्ता पटल बाबू के नाम से ही मुझे जानते हैं। थियेटर में भी इसी नाम से जानते थे।"

"ओ, आप तो समय के बड़े ही पाबन्द हैं।"

पटल बाबू मुसकराये।

"नौ वर्ष तक हडसन किम्बरली में मैंने काम किया है। एक दिन भी लेट नहीं हुआ था। नॉट ए सिंगल डे।"

"ठीक है। आप एक काम करें। वहां छाह में जाकर थोड़ी देर प्रतीक्षा कीजिए। मैं इधर का काम आगे बढ़ा लूं।"

तिपाये यन्त्र के पास से एक आदमी ने पुकारा, "नरेश !"

"सर ?"

"ये क्या हम लोगों के आदमी हैं ?"

"हां, सर। आप ही···यानी धक्के का जो मामला है···"

"अच्छा। ठीक है। अभी जगह क्लियर करो। शॉट लेना है।"

पटल बाबू दफ्तर के पास ही पान की एक दुकान के छाजन के तले जाकर खड़े हो गए। फिल्माने का काम उन्होंने पहले नहीं देखा था।

उनके लिए सब कुछ नया जैसा है। थियेटर से इसकी कोई समानता नहीं। यहां के आदमी कितनी मेहनत कर रहे हैं! उस वजनदार यंत्र को अपनी पीठ पर लादे एक इक्कीस-बाइस वर्ष का नौजवान इधर से उधर रख रहा है। यन्त्र का वजन कम-से-कम बीस-पचीस सेर होगा ही।

परन्तु उनका संवाद कहां है? अब ज्यादा वक्त नहीं है। फिर भी पटल बाबू को यह मालूम नहीं है कि उन्हें क्या कहना है।

अचानक पटल बाबू को घबराहट महसूस होने लगी। वे आगे बढ़कर जाएं? वह रहे नरेश बाबू! एक बार जाकर उनसे पूछ लेना क्या उचित नहीं होगा? पार्ट चाहे छोटा हो या बड़ा, अच्छी तरह से करने के लिए उन्हें तैयारी करनी ही है। नहीं तो इतने-इतने लोगों के बीच भूल होने से उन्हें अजीब स्थिति में पड़ना होगा। बीस बरसों से उन्होंने अभिनय नहीं किया है।

पटल बाबू आगे बढ़ रहे थे, तभी जोरों की एक आवाज सुनकर वे ठिठककर खड़े हो गए।

"साइलेन्स।"

उसके बाद नरेश बाबू की आवाज सुनाई पड़ी, "अब शॉट लिया जाएगा। आप लोग कृपया चुपचाप रहें। बातचीत मत करें, अपनी जगह से हटें नहीं, कैमरे की ओर बढ़ें नहीं।"

उसके बाद पहले वाले आदमी की आवाज़ फिर से सुनाई पड़ी, "साइलेन्स! टेकिंग!" अबकी पटल बाबू की आंखें उस आदमी पर पड़ीं। मध्यवयस्क, मोटा-सोटा वह आदमी तिपाये यंत्र के सामने ही खड़ा है। गले के एक चेन में दूरबीन जैसी कोई चीज़ लटक रही है। वही क्या डायरेक्टर है? कितने आश्चर्य की बात है कि उन्होंने डायरेक्टर तक का नाम नहीं पूछा।

अबकी एक-एक कर बहुत-सी तेज आवाजें पटल बाबू के कानों में आईं, "स्टार्ट साउण्ड! रनिंग! एक्शन!"

'एक्शन' कहते ही पटल बाबू ने देखा, चौराहे से एक गाड़ी आकर दफ्तर के सामने रुकी। चेहरे पर गुलाबी रंग लेपा हुआ, सूट पहने एक युवक गाड़ी का दरवाजा खोलकर लगभग पछाड़ खाते हुए बाहर निकला और जल्दी-जल्दी दफ्तर के फाटक के पास जाकर खड़ा हो गया। दूसरे ही क्षण पटल बाबू ने चिल्लाहट सुनी, "कट!" और तभी निस्तब्धता को भेद-कर जनता का कोलाहल गूंज उठा।

पटल बाबू के पास ही एक आदमी खड़ा था। उसने झुककर पटल बाबू से पूछा, "उस युवक को पहचानते हैं?"

पटल बाबू ने कहा, "नहीं।"

वह बोला, "चंचलकुमार है। इस युवक ने बड़ी ही जल्दी तरक्की की है। एक ही साथ चार-चार फिल्मों में अभिनय कर रहा है।"

पटल बाबू बहुत कम सिनेमा देखा करते हैं, मगर चंचलकुमार का नाम दो-चार बार सुन चुके हैं। कांति बाबू ने सम्भवतः एक दिन इसी युवक की प्रशंसा की थी। युवक ने बड़ा ही अच्छा मेकअप किया है। अगर उसे विलायती सूट के बदले धोती-चादर पहना दिया जाए और मयूर की पीठ पर सवार करा दिया जाए तो बिलकुल कार्तिक जैसा दीखेगा। कांचरापाड़ा के मनोतोष उर्फ चिनु का चेहरा बहुत-कुछ ऐसा ही था। चिनु महिला का पार्ट बड़ा ही अच्छा करता था।

पटल बाबू अपने पास के व्यक्ति की ओर झुककर बुदबुदाए, "डायरेक्टर का नाम क्या है, साहब?"

उस आदमी ने अचकचाकर कहा, "वरेन मल्लिक। एक-एक कर उनकी तीन तसवीरों ने हिट किया है।"

खैर। कुछ आवश्यक बातों की जानकारी प्राप्त हो गई। वरना अगर पत्नी पूछती कि किसकी तसवीर में किस व्यक्ति के साथ अभिनय कर आए हो तो पटल बाबू को कठिनाई का सामना करना पड़ता।

नरेश मिट्टी की प्याली में चाय लिए पटल बाबू की ओर आए।

"आइए सर, गले को ज़रा तर कर लीजिए। अभी-अभी आपको पुकारा जाएगा।"

"मेरा संवाद अब भी दे देते तो···"

"संवाद? मेरे साथ आइए।"

नरेश तिपाये यन्त्र की ओर बढ़ा। उसके साथ पटल बाबू थे।

"ए शशांक!"

एक हाफ पैंट पहने युवक नरेश की ओर आया। नरेश ने उससे कहा, "आप अपना संवाद माँग रहे हैं। किसी कागज में लिखकर दे दो। वही धक्का के बारे में···"

शशांक पटल बाबू की ओर आया।

"आइए, भाई साहब···ए ज्योति, ज़रा अपना कलम दो। भाई साहब को उनका संवाद दे दूं।"

ज्योति ने अपनी जेब से कलम निकाल कर शशांक की ओर बढ़ाया। शशांक ने अपने हाथ की कापी से एक सादा पन्ना फाड़ लिया और कलम से उस पर कुछ लिखकर पटल बाबू को दिया।

पटल बाबू ने कागज ध्यान से देखा। उस पर लिखा था: 'आह!

आह !"

पटल बाबू का सर चकराने लगा। अगर कोट खोलकर रख दें तो अच्छा रहे। एकाएक तपिश बरदाश्त के बाहर हो गई है।

शशांक ने कहा, "आप तो बिलकुल गुमसुम हो गए भाई साहब ? क्या कठिन लग रहा है ?"

फिर क्या ये लोग मजाक कर रहे हैं ? तमाम बातें एक बहुत बड़ा परिहास है ? उनके जैसे निरीह और निर्विवादी आदमी को बुलाकर इतने बड़े शहर के इतने बड़े रास्ते के बीच मजाक किया जा रहा है ? आदमी क्या इतना निष्ठुर हो सकता है ?

पटल बाबू ने बुझे हुए स्वर में कहा, "बात क्या है, समझ मे नहीं आ रही।"

"क्यों ?"

"सिर्फ 'आह' ? और कोई बात नहीं ?"

शशांक ने अचकचाकर कहा,"आप क्या कह रहे हैं भाई साहब ? यही क्या कम है ? यह तो रेगुलर स्पीकिंग पार्ट है। वरेन मलिक की तसवीर में स्पीकिंग पार्ट ' आप कह क्या रहे हैं ! आप तो भाग्यशाली आदमी हैं, साहब ! जानते हैं, हम लोग की इस तसवीर मे आज तक लगभग डेढ़ सौ आदमी पार्ट कर चुके हैं। उन्हें एक भी शब्द कहने का मौका नहीं मिला। वे सिर्फ कैमरे के सामने से चहलकदमी करके चले गए हैं। बहुतों को चहलक़दमी करने का भी मौका न मिला, वे सिर्फ कैमरे के सामने मात्र खड़े रहे हैं। किसी-किसी का चेहरा दिखाई तक न पड़ा है। आज भी देखिए—जो लोग लैंप-पोस्ट के पास खड़े हैं, वे आज के दृश्य में हैं, लेकिन उनमें से किसी को कुछ बोलना नहीं है। यहां तक कि हम लोगों के जो नायक हैं—चंचलकुमार—उनका भी आज कोई डायलग नहीं है। मात्र आपको ही बोलना है।"

अब ज्योति नामक युवक ने पटल बाबू के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "सुनिए, भाई साहब, बात समझ लीजिए। चंचलकुमार इस दफ्तर के सबसे बड़े कर्मचारी हैं। सीन मे हम लोग यही दिखा रहे हैं कि दफ्तर में कैशबॉक्स तोड़ने की खबर पाकर वे हतप्रभ होकर दौड़ते हुए दफ्तर के अन्दर जा रहे हैं। ठीक उसी वक्त सामने पड़ जाते हैं आप यानी एक राहगीर। धक्का लगता है। धक्का लगने पर आप 'आह' कहते हैं और चंचलकुमार आपको और बिना ध्यान दिये दफ्तर में घुस जाते हैं। आपको अनदेखा करने के कारण उसकी मानसिक भावना प्रस्फुटित हो उठती है। यह बात कितनी महत्त्वपूर्ण है, आप सोचकर देखें।"

शशांक ने आगे बढ़कर कहा, "सुन लिया न ! अब ज़रा उस तरफ जाइए । इधर भीड लगाने से काम में असुविधा होगी । अब एक शॉट और है, उसके बाद आपको बुलाया जाएगा ।"

पटल बाबू आहिस्ता-आहिस्ता पान की दुकान की ओर हट गए । छावनी के नीचे पहुचने के बाद उन्होने कागज की ओर तिरछी निगाहो से देखा । फिर यह देखकर कि कोई उनकी ओर देख रहा है या नही, उन्होने कागज को मोड़-माड़कर नाली की ओर फेंक दिया ।

"आह !"

पटल बाबू के कलेजे से एक उसांस बाहर निकल आई ।

केवल एक ही बात—बात भी नही, शब्द : आह !

गरमी असह्य लग रही है । देह का कोट एक मन भारी लग रहा है । अब खड़ा रहना नही हो सकेगा; पैर अवश होते जा रहे हैं ।

पटल बाबू आगे बढ़कर पान की दुकान की दूसरी तरफ दफ्तर के दरवाज़े की सीढी पर बैठ गए । साढे नौ बज रहे हैं । रविवार की सुबह करालो बाबू के मकान में श्यामा संगीत हुआ करता है । पटल बाबू वहां नियमित रूप से जाकर सुना करते हैं । उन्हे अच्छा लगता है । वही चले जाए क्या ? जाने से हानि ही क्या है ? इन बेकार और नीच आदमियो के संसर्ग मे रविवार का प्रातःकाल बरबाद करने से लाभ ही क्या है ? साथ ही साथ अपमान का बोझ भी ढोना होगा ।

"साइलेन्स !"

धत्त ! तुम्हारा साइलेन्स जहन्नुम मे जाए ! जितना काम नही है, उससे बत्तीस गुना अधिक दिखावट और ढोंग कर रहे हो ! इससे तो थियेटर का काम···

थियेटर···थियेटर ··

बहुत दिनों की एक धुंधली-सी स्मृति पटल बाबू के मन मे तैरने लगी । एक गभीर, संयत परन्तु सुरीले कंठस्वर के द्वारा कहे गए कुछ मूल्यवान् उपदेश····"एक बात ध्यान में रखना पटल । तुम्हे चाहे जितना ही छोटा पार्ट क्यों न दिया जाए, यह जान लो कि इसमे अपमान की कोई बात नही है । कलाकार की हैसियत से तुम्हारा कर्तव्य यह है कि उस छोटे-से पार्ट से भी तुम रस की अन्तिम बूंद निचोडकर उसे सार्थक बना दो । थियेटर का काम है दस आदमी का मिल-जुलकर काम करना । सभी की सफलता पर नाटक की सफलता निर्भर करती है ।"

पकड़ाशी जी ने पटल बाबू को यही उपदेश दिया था । गगन पकड़ाशी ने । वे पटल बाबू के नाट्य गुरु थे । गगन पकड़ाशी पहुंचे हुए अभिनेता थे,

पर उनमें दंभ का लेश भी न था। वे ऋषितुल्य व्यक्ति थे और कलाकारों में सर्वश्रेष्ठ कलाकार।

पकड़ाशी जी और एक बात कहा करते थे : "नाटक का एक-एक शब्द वृक्ष का एक एक फल हुआ करता है। हर कोई उस फल के समीप नहीं पहुंच पाता है। जो पहुंच भी जाते हैं वे भी संभवतः उनका छिलका उतारना नहीं जानते। असली काम है तुम्हारा—अभिनेता का। तुम्हे जानना है कि किस तरह उस फल को तोड़कर उसका छिलका उतारा जाए और उससे रस निचोड़कर लोगों के बीच परोसा जाए।"

गगन पकड़ाशी की बातें याद आते ही पटल बाबू का मस्तक अपने आप झुक गया।

उनके आज के पार्ट में क्या वास्तव में कुछ नहीं है? एक ही शब्द उन्हें बोलना है : 'आह'। किन्तु एक ही शब्द को ही क्या अनदेखा कर दिया जाए?

आह, आह, आह, आह, आह—पटल बाबू अलग-अलग स्वरों में इस शब्द को दुहराने लगे। दुहराते-दुहराते उन्होंने धीरे-धीरे एक आश्चर्यजनक वस्तु का आविष्कार किया। इस 'आह' शब्द को ही अलग-अलग स्वरों में कहने से मनुष्य के मन की अलग-अलग स्थितियां व्यक्त होती हैं। चिकोटी काटने से आदमी जिस तरह आह कहता है, गरमी के दिनों में शर्बत पीने से उस तरह का आह नहीं कहता। ये दो 'आह' उच्चारण बिलकुल अलग-अलग कोटि के हैं। फिर अचानक कान को अगर सहलाया जाए तो एक दूसरी ही तरह की आह निकलती है। इसके अलावा और कितनी ही तरह की आह है—लंबी सांस की आह, तिरस्कार की आह, अभिमान की आह, द्रुत स्वर में बोली गई आह, विलंबित स्वर में कही गई आ-ह, चिल्लाकर कही गई आह, धीमे स्वर में बोली गई आह। फिर 'आ' को धीमे स्वर में कहकर 'ह' को जोरों से कहना। पटल बाबू को लगा, वे इस एक शब्द को लेकर एक संपूर्ण शब्दकोश लिख सकते हैं।

वे इतने निरुत्साह क्यों हो रहे थे? यह एक शब्द ही जैसे सोने की खान है। बड़े-बड़े अभिनेता इस एक शब्द से ही बाजी मार ले सकते हैं।

"साइलेन्स!"

डायरेक्टर ज़ोरों से चिल्लाया। पटल बाबू ने देखा, ज्योति उनके इर्द-गिर्द खड़ी भीड़ को हटा रहा है। ज्योति से एक बात कहनी है। पटल बाबू तेज़ कदमों से उसके पास चले गए।

"मेरा काम होने में अब कितनी देर है, भाई?"

आप इतना घबरा क्यों रहे हैं, भाई साहब? इन मामलों

रखने की जरूरत पड़ती है। आधा घंटा और इन्तजार कीजिए।"

"जरूर-जरूर। मैं इन्तजार करूंगा ही। मैं अगल-बगल ही रहूंगा।"

"यहां से चले मत जाइएगा।"

ज्योति चला गया।

"स्टार्ट साउण्ड।"

पटल बाबू दबे पांवों रास्ता पार कर दूसरी दिशा की एक गली के अन्दर चले गए। अच्छा ही हुआ। कुछ वक्त मिल गया है। जब ये लोग रिहर्सल वगैरह की परवा नहीं करते, तो वे खुद अपने पार्ट का थोड़ा-बहुत अभ्यास क्यों न कर लें। गली निर्जन है। एक तो ऐसा मुहल्ला है जहां दफ्तर ही दफ्तर हैं। यहां रहने वालों की संख्या कम है और फिर आज रविवार है। जो भी आदमी थे वे फेराडे हाउस की तरफ तमाशा देखने चले गए हैं।

पटल बाबू खंखारकर आज के खास दृश्य के खास 'आह' शब्द को रटने लगे। इसके साथ ही वे कांच की एक खिड़की में अपनी छाया देखते हुए इसका अभ्यास करने लगे कि अचानक धक्का लगने पर चेहरा किस तरह विकृत हो सकता है, हाथ कितना टेढ़ा होकर ऊपर की तरफ कितना उठ सकता है, उंगलियां कितनी अलग हो सकती हैं और पांवों की क्या हालत हो सकती है।

ठीक आधे घंटे के बाद पटल बाबू की बुलाहट हुई। अब उनके मन में निरुत्साह का कोई भाव नहीं है। उनके मन में उद्विग्नता भी दूर हो गई है। रह गई है तो केवल एक दबी हुई उत्तेजना और रोमांच। पचीस वर्ष पहले मंच पर अभिनय करने के समय, एक बड़े दृश्य में उतरने के पहले, जिस भाव का उन्हें अनुभव होता था, वही भाव रह गया है।

डायरेक्टर बरेन मल्लिक ने पटल बाबू को अपने पास बुलाकर कहा, "बात आपकी समझ में आ गई है?"

"जी हां।"

"ठीक है। मैं पहले कहूंगा : स्टार्ट साउण्ड। उसके उत्तर में अन्दर से साउण्ड रेकार्डिस्ट कहेगा : रनिंग। यह कहते ही कैमरा चलना शुरू कर देगा। उसके बाद मैं कहूंगा : एक्शन। यह कहते ही आप उस खंभे के पास से आना शुरू करेंगे। और नायक इस गाड़ी के दरवाजे से उस दफ्तर के फाटक की ओर जाएगा। इस बात का अन्दाज लगा लीजिए कि फुटपाथ के यहीं इसी जगह टकराहट होती है। नायक आपको अनदेखा कर दफ्तर में घुस जाएगा और आप ऊब के साथ आह कहकर फिर से चलना शुरू करेंगे।"

पटल बाबू ने कहा, "एक बार रिहर्सल···?"

"नहीं-नहीं, वरेन बाबू ने आपत्ति की, "बादल घिर रहे हैं। रिहर्सल करने के लिए वक्त नहीं है धूप रहते ही शॉट ले लेना है।"

"सिर्फ एक बात···"

"क्या ?"

गली में रिहर्सल करने के समय पटल बाबू के दिमाग में एक बात आई थी। साहस करके उसे कह डाला।

"मैं सोच रहा था कि···वो···मेरे हाथ में अगर अखबार रहे और मैं पढ़ता होऊं और धक्का लगे···यानी अनमनेपन के भाव को व्यक्त करने के लिए···" उनकी बात पूरी भी न हुई कि वरेन मल्लिक बोल उठा, "ठीक है ··ए साहब, आप अपना 'युगान्तर' इन्हें दे दें···हां। अब आप उस खंभे के पास अपनी जगह पर जाकर तैयार हो जाएं। चंचल, तुम रेडी हो ?"

गाड़ी के पास से नायक ने उत्तर दिया, "येस सर।"

"गुड। साइलेन्स।"

वरेन मल्लिक ने अपना हाथ उठाया, उसके बाद तत्काल हाथ गिरा कर कहा, "अहो, एक मिनट। केस्टो, तुम झट से इन्हें मूंछें दे दो। कैरेक्टर पूरा-पूरा नहीं उतर रहा है।"

"किस तरह की मूंछें सर ? नीचे झुकी हुई या ऊपर की तरफ ऐंठी हुई या बटरफ्लाई ? सब कुछ रेडी है।"

"बटरफ्लाई झट से दो, देर मत करो।"

एक काले नाटे कद का, बैकब्रश किया हुआ छोकरा पटल बाबू के पास आया और उसने अपने हाथ के टीन के बक्से में एक चौकोर काली मूंछ निकालकर पटल बाबू की नाक के नीचे गोंद से चिपका दिया।

पटल बाबू ने कहा, "देखना, भैया, टक्कर लगने से कहीं अलग न हो जाए।" छोकरे ने हंसकर कहा, "टकराहट ही क्यों, अगर आप दारा सिंह की तरह कुश्ती भी करें तो भी यह अलग होने वाली नहीं है।"

उस छोकरे के हाथ में आईना था। पटल बाबू ने झट से उसमें [illegible] चेहरा एकबार देख लिया। सचमुच मूंछें उन्हें बहुत ही फब रही हैं। पटल बाबू ने डायरेक्टर की तीक्ष्ण दृष्टि की मन ही मन प्रशंसा की।

"साइलेन्स ! साइलेन्स !"

पटल बाबू को मूंछों में देखकर दर्शकों के बीच एक [illegible] था; वरेन मल्लिक की हुंकार से वह कोलाहल दब गया।

पटल बाबू ने देखा, वहां इकट्ठी जनता में से अधिकांश [illegible]

ओर ताक रहे है।

"स्टार्ट साउण्ड !"

पटल बाबू ने खंखारकर गला साफ कर लिया। एक, दो, तीन, चार, पाच—पाचवा कदम अन्दाज से रखने पर पटल बाबू टक्कर लगने की जगह मे पहुचेंगे। चंचल बाबू को शायद चार कदम चलना है। इसलिए अगर दोनों एक साथ रवाना होते है तो पटल बाबू को जरा तेजी से चलना होगा। अगर ऐसा न हुआ तो···

"रनिग।"

पटल बाबू ने अखबार उठाकर उसे अपने चेहरे के सामने रखा। दस आने ऊब के साथ छह आना विस्मय मिलाकर आह कहने के बाद ही···

एक्शन !

जयगुरु !

खच खच-खच-खच···ठन्नन्नन ! पटल बाबू को एकाएक अधकार जैसा दीखने लगा। नायक के सिर से उनके कपाल में ठोकर लगी है। एक तीव्र यातना ने उन्हे एक क्षण के लिए अचेत जैसा कर दिया।

किन्तु दूसरे ही क्षण एक प्रचंड शक्ति का उपयोग कर उन्होने आश्चर्य जनक ढग से स्वय को संभाल लिया और दस आना ऊब के साथ तीन आना विस्मय एवं तीन आना यातना का भाव मिलाकर 'आह' शब्द का उच्चारण किया, फिर अखबार सभालकर चलाना शुरू कर दिया।

"कट !"

"ठीक हुआ ?" पटलबाबू तीव्र उत्कंठा के साथ बरेनबाबू की ओर बढे।

"बहुत ही बढ़िया हुआ। आप तो अच्छे अभिनेता हैं, साहब !··· सुरेन, काले शीशे को आखो से एक बार लगाकर देखो कि बादल किस हालत मे है।"

शशाक ने आकर पूछा, "भाई साहब, आपको चोट तो नही लगी ?"

चंचल बाबू अपने माथे को सहलाते हुए बोले, "आपका टाइम गजब का है, साहब ! मुझे तो बाप-दादे की याद आ गई···ओह···"

नरेश भीड़ हटाता हुआ आया और बोला, "आप जरा यहां छांह मे ठहरिए। एक और शॉट लेकर आपका काम खत्म कर दूगा।"

पटल बाबू भीड़ हटाते हुए, पसीना पोंछते हुए फिर से पान की दुकान

उनका आज का काम सचमुच अच्छा हुआ है। इतने दिनों तक बेकार रहने के बावजूद उनके अन्दर का कलाकार भोथरा नहीं हुआ है। गगन पकड़ाशी आज उन्हें देखते तो सचमुच बड़े ही खुश होते। किन्तु यह बात क्या इन लोगों की समझ में आई है। डायरेक्टर बरेन मल्लिक यह बात समझ पा रहे हैं? मामूली इस काम को निर्दोष भाव से करने के लिए उनमें जो ललक है और जो परिश्रम किया है, उसका सम्मान ये लोग कर पाएंगे? उनमें यह सामर्थ्य है? शायद ये लोग आदमी बुलाकर काम कराते हैं और पैसा चुका कर मुक्त हो जाते हैं। रुपया! कितना रुपया! कितना रुपया? पांच, दस, पचीस? उनको निश्चय ही रुपए का अभाव है परन्तु आज जो आनन्द मिला है, उसके सामने पांच रुपए हैं ही क्या?...

दस मिनट के बाद जब नरेश पटल बाबू को खोजते हुए पान की दुकान पर पहुंचे तो वे मिले ही नहीं। यह क्या, वे क्या रुपया वगैर लिए चले गए?

बरेन मल्लिक ने पुकारा, "धूप निकल आई है! साइलेन्स! साइलेन्स!...ऐ नरेश, चले आओ, भीड़ संभालो।"

नीलकोठी का आतंक

मेरा नाम है अनिरुद्ध बोस। उम्र उनतीस वर्ष। अभी तक मैंने शादी नहीं की है। पिछले आठ बरसों से मैं कलकत्ते के एक व्यवसायिक कार्यालय में नौकरी कर रहा हूं। जितनी तनखा मिलती है उससे मेरा खर्च मजे से चल जाता है। मैं सरदार शंकर रोड मे एक फ्लैट किराये पर लेकर रह रहा हू —दो मंजिले पर दो कमरे हैं, दक्खिन का हिस्सा खुला हुआ है। दो वर्ष पहले एक एम्बेसेडर गाड़ी खरीदी है। उसे मैं खुद ही चलाता हू। दफ्तर के बाहर थोड़ा-बहुत साहित्यिक काम किया करता हूं। मेरी तीनों कहानियां बंगला की मासिक पत्रिका मे छप चुकी हैं, जाने सुने व्यक्तियों से प्रशंसा भी प्राप्त हुई है। लेकिन इतनी बात मुझे मालूम है कि केवल लिखकर निर्वाह करना मेरे वश की बात नहीं है। पिछले कई महीने से कुछ भी लिख न पाया हूं, तब हां किताबें काफी संख्या में पढ़ गया हूं। सभी पुस्तकें बंगाल की नील की खेती से सम्बन्धित हैं। इस विषय मे मुझे एक अधिकारी कहा जा सकता है। कब अंग्रेजों ने आकर हमारे देश मे नील की खेती की शुरुआत की, हमारे गांवों के निवासियों पर उन्होंने कितना अत्याचार किया, किस तरह नील-विद्रोह हुआ और अन्त मे किस तरह जर्मनी के द्वारा कृत्रिम उपायों से नील तैयार किए जाने के फलस्वरूप इस देश से नील की खेती विदा हो गई—यह सब मेरी जबान पर है। जिस जानलेवा अनुभवों के कारण मेरे मन मे नील से सम्बन्धित कुतूहल पैदा हुआ, उसे बताने के लिए ही आज लिखने बैठा हूं।

यहां पहले अपने बचपन की बातें बताना जरूरी है।

मेरे पिताजी मुंगेर के नामी डॉक्टर थे। वहीं मेरा जन्म हुआ और वहीं मेरी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा। मेरे एक भाई मुझ से पांच बरस बड़े हैं। उन्होंने विलायत जाकर डॉक्टरी की परीक्षा पास की और अभी लंदन के पास ही गोल्डर्स ग्रीन नामक स्थान के अस्पताल मे काम कर रहे हैं। देश वापस आने के प्रति उनमें कोई आग्रह नहीं दीखता है। जब मेरी उम्र सोलह वर्ष थी, मेरे पिताजी का देहान्त हो गया। उसके कुछ महीने बाद मैं अपनी मां के साथ अपने बड़े मामा के घर कलकत्ता चला आया। मामा के घर पर ही रहकर मैंने सेन्ट जिवियर्स से बी० ए० पास किया। उसके

बाद कुछ दिनों तक मेरे मन मे साहित्यिक बनने की इच्छा रही, परन्तु मां के धमकाने पर नौकरी के लिए कोशिशें करनी पड़ी। मामा की पैरवी मे ही नौकरी मिली, तब हां उनका मुझे भी कुछ श्रेय है। छात्र की हैसियत से मेरा रेकार्ड अच्छा रहा है, मैं फटाफट अंग्रेज़ी बोल सकता हूं। इसके अलावा मुझमे आत्मनिर्भरता और चुस्ती है। इन दो चीजों ने विश्व विद्यालय मे निश्चय ही मेरी सहायता की है।

मगेर के अपने बचपन की बातें कहूं तो मेरे व्यक्तित्व के एक पहलू को समझने मे सहायता मिलेगी। कलकत्ते मे लगातार ज्यादा दिनों तक रहने पर मैं थकावट महसूस करने लगता हूं। यहां इतने आदमियों की भीड़-भाड़, ट्रामों की घर्घराहट, शोरगुल और जीवन-यापन की समस्याएं हैं। बीच-बीच में इच्छा होती है, इन सब चीजों से छुटकारा पाकर बाहर चला जाऊं। अपना मकान खरीदने के बाद कई बार ऐसा कर भी चुका हू। छुट्टियो मे कभी डायमड हारबर, कभी पोर्टकैनिंग और कभी दमदम के रास्ते से हसनाबाद तक घूम-फिर आया हूं। हर बार अकेले ही गया हूं, क्योंकि इस तरह की आउटिंग के प्रति उत्साह दिखाने वाला कोई आदमी मुझे नही मिला है।

इससे यह समझ में आ जाएगा कि कलकत्ता शहर में मेरे नाममात्र के भी मित्र नही है। इसीलिए प्रमोद का पत्र पाकर मेरा मन प्रसन्नता से भर गया। प्रमोद मुगेर मे मेरा सहपाठी रह चुका है। जब मैं कलकत्ता चला आया तो लगभग चार बरसों तक हमारे बीच पत्राचार चलता रहा। उसके बाद शायद मैंने ही पत्र लिखना बन्द कर दिया था। एक दिन ज्योंही मैं दफ्तर से वापस आया, मेरे नौकर गुरुदास ने मुझे एक पत्र दिया और बताया कि मामा जी के घर से आदमी आया था और यह पत्र दे गया है। लिफाफे पर की लिखावट पर नजर पड़ते ही मैं समझ गया कि यह प्रमोद का ही पत्र है। उसने दुमका से लिखा है : जगल-विभाग में काम कर रहा हूं···क्वार्टर मिला है ··सात दिनों की छुट्टी लेकर चले आओ···

छुट्टियां बाकी थी, अत: मैं जितनी जल्दी हो सकता है, दफ्तर के कामों को सहेजकर पिछले 27 अप्रैल को (तारीख आजीवन याद रहेगी।) सरो-मामान बाध कर और कलकत्ते की झझटो को दरकिनार कर दुमका के लिए रवाना हो गया।

प्रमोद ने अवश्य ही यह बात नही लिखी थी कि मैं मोटर से दुमका जाऊं। वैसा विचार मैंने ही किया था। दो सौ मील का पथ था। ज्यादा मे ज्यादा पांच घटे लगते। सोचा, दस बजते न बजते खाना खाकर निकल पड़ूंगा और सूर्यास्त के पहले ही पहुंच जाऊंगा।

काम की शुरुआत ही में एक बाधा उपस्थित हो गई। रसोई ठीक समय पर पक चुकी थी, मगर चावल खाकर ज्यों ही मुंह में पान डालने जा रहा था कि पिताजी के पुराने मित्र मोहित चाचा आ गए। एक तो वे यों ही दबंग आदमी हैं और उस पर दस बरसों के बाद मुलाकात हुई थी। जबान खोलकर यह नही कह सका कि मैं जल्दीबाज़ी में हूं। उन्हें चाय पिलानी पडी, फिर एक घंटे तक उनके सुख-दुःख की कहानी सुननी पडी।

मोहित चाचा को विदा कर और गाड़ी पर असबाब लादकर जैसे ही गाड़ी पर चढने जा रहा हू कि मेरे एकमञ्जिले के किराएदार भोला बाबू अपने चार वर्ष क लडके का हाथ थामे घर की ओर लौटते हुए दीख पड़े। मुझ पर नज़र पड़ते ही बोल उठे, "अकेले-अकेले कहा जा रहे हैं ?"

मेरा जवाब सुनकर उन्होने उद्विग्नता के साथ कहा, "इतनी दूर मोटर से अकेले जाइएगा ? कम से कम इस ट्रिप के लिए आपको किसी ड्राइवर का इन्तज़ाम करना चाहिए था।"

मैंने कहा, "चालक की हैसियत से मैं एक होशियार आदमी हूं। मेरे जतनों के कारण गाड़ी भी करीब-करीब नई है, इसलिए चिन्ता की कोई बात नही है।" उन्होने 'बेस्ट आफ लक' कहा और अपने लडके का हाथ थामे घर के अन्दर चले गए।

गाडी मे बैठकर स्टार्ट करने के पहले मैंने अपनी कलाई-घड़ी की ओर देखा। पौने ग्यारह बज चुके थे।

मैं हावडा होकर नही, बाली ब्रिज का रास्ता पकड़कर चला, फिर भी चंदन नगर पहुंचने मे डेढ घटे का समय लग गया। तीस मील की ही इस दूरी को तय करने मे इतना ऊबाऊ और अरोमाचकारी रास्ता मिलता है कि उत्साह ठडा पड़ जाता है। किन्तु उसके बाद ही शहर को पीछे छोडकर गाडी जब मैदान से होकर गुज़रती है तो यह रास्ता जादू की तरह काम करता है। मन तब कहता है। इसी के लिए आया हूं। इतने दिनो तक कहां था चिमनी के धुएं से वर्जित यह मसृण आकाश ! कहां थी मिट्टी की सुगन्ध से मिली हुई मन को मोहनेवाली यह मीठी वायु।

डेढ बजे जब वर्धमान के आसपास पहुंचा, मुझे भूख महसूस हुई। साथ मे सतरा था, फ्लास्क मे गरम चाय थी, मगर मन कुछ और ही चाह रहा था। सडक के किनारे ही स्टेशन है। गाड़ी रोककर एक रेस्तरा मे गया। वहा मैंने दो टोस्ट, एक आमलेट खाए और एक कप कॉफी पी। उसके बाद मैं पुनः रवाना हुआ। अब भी मुझे एक सौ तीस मील की दूरी तय करनी है।

वर्धमान से पचीस मील की दूरी पर पानागढ़ है। वहां से ग्रैंड ट्रंक रोड छोड़कर इलाम बाजार का रास्ता पकड़ना है। इलाम बाजार से सिउड़ी जाना होगा, सिउड़ी से मसान जोड़ और उसके बाद दुमका।

पानागढ़ के मिलेट्री कैंप नजर आने लगा था कि उसी वक्त मेरी गाड़ी के पीछे की तरफ से बैलून फटने की जैसी आवाज आई और तभी मेरी गाड़ी एक किनारे थोड़ी-सी झुक गई। कारण सहज ही समझ में आ गया।

गाड़ी से उतरकर मैंने सामने की ओर देखा। शहर अब भी कई मील दूर था। कहीं आसपास ही गाड़ी मरम्मत हो जाए, इसकी उम्मीद मुझे छोड़नी पड़ी। मेरे साथ स्टेपनी थी। जैक से गाड़ी उठाकर, फटे टायर को खोलकर उसकी जगह नया टायर लगाना मेरी सामर्थ्य के बाहर की बात नहीं थी। फिर भी ऐसी स्थिति में मेहनत करने की इच्छा नहीं हो रही थी। ग्रैंड ट्रंक रोड के बीच खड़ा होकर टायर लगाऊं, मेरी बगल से सरसराती हुई गाड़ियां निकल जाएं और वे मुझे हास्यास्पद स्थिति में देखें—यह बात मुझे कतई अच्छी न लग रही थी। लेकिन अब दूसरा कौन-सा उपाय है ? दस मिनट तक इधर-उधर चहल-क़दमी करने के बाद मैंने भगवान का नाम लिया और काम शुरू कर दिया।

नया टायर लगाकर और फटे टायर को कैरियर में रखकर जब खड़ा हुआ तो कमीज पसीने से तर हो चुकी थी। घड़ी में देखा, ढाई बज चुके थे। वातावरण में एक उमस का भाव था। एकाध घंटा पहले अच्छी हवा चल रही थी, हवा के झोंके से बनवारी हिलती-डुलती जैसी दीख रही थी। अभी चारों तरफ़ एक ठहराव जैसा भाव है। गाड़ी पर चढ़ते हुए पश्चिम के आकाश के नीचे, दूर के पेड़-पौधों के शिखरों पर नील छोहे रंग का आभास मिला। बादल छाए हैं। आंधी के बादल हैं ? काल वैशाखी ? सोचने से कोई लाभ नहीं है। स्पीडो मीटर की सुई को और आगे बढ़ाना होगा। फ्लास्क खोलकर मैंने गरम चाय पी और फिर से रवाना हो गया।

इलाम बाज़ार पार करते न करते आंधी का झोंका आ गया। घर में बैठकर जिस चीज़ का प्रसन्नता के साथ उपभोग कर चुका हूं, जिसके साथ ताल-मेल बिठाकर रवीन्द्रनाथ की कविता की आवृत्ति कर चुका हूं, उनके संगीत को गा चुका हूं—वही चीज कोलतार की सड़क पर चलती हुई गाड़ी में कितनी विभीषिकाओं की सृष्टि कर सकती है, उसकी मैंने कल्पना तक न की थी। और, बेकार की चीजें मैं कभी बरदाश्त नहीं कर पाता

'मुझे वह प्रकृति की शैतानी जैसी लगती है। असहाय आदमी से निष्ठुर मजाककर उसे बदतर स्थिति मे डालने का यह कैसा खेल है! बिजली चमक रही थी और बादलो के दमामे पर चोटें पड़ रही थी। कभी-कभी लग रहा था, मेरी इस निरीह एम्बेसेडर गाडी को लक्ष्य बनाकर बिजली के तीर छोड़े जा रहे हैं और अगर बादल ज़रा सावधानी से काम करे तो लक्ष्य वेध हो ही जाएगा।

इस दुर्योग के दौरान जब सिउड़ी पारकर मैं मसान जोड़ की सडक पर पहुंचा हू कि तभी एकाएक विस्फोट की जैसी आवाज़ हुई। उसे किसी भी हालत मे वज्रपात नही कहा जा सकता। समझ गया, मेरी गाड़ी का एक दूसरा टायर नाकाम हो चुका है।

मैंने उम्मीद छोड दी। मूसलाधार बारिस शुरू हो गई है। घडी साढ़े पाच बजा रही है। पिछले बीस मील तक स्पीडोमीटर की सुई को पन्द्रह से बीस के बीच रखना पडा है। वरना अब तक मसान जोड़ के पार पहुच जाता। कहां आ पहुचा हू? सामने की ओर देखने पर बात समझ में नहीं आती है। शीशे पर जैसे झरना बह रहा हो। वाइपर सप-सप आवाज़ कर रहा है, मगर उसे काम के बदले खेल ही कहा जा सकता है। नियमतः अप्रैल महीने मे अब भी सूर्य का प्रकाश रहना चाहिए था, मगर भाव देखने से लगता है कि रात हो चुकी है।

अपनी दाहिनी ओर के दरवाज़े को ज़रा अलग कर मैंने बाहर की ओर ताका। जो कुछ दीख पडा, उससे लगा, आसपास चाहे घनी बस्ती न हो मगर दो-चार पक्के मकान पेड़-पौधों के पीछे ज़रूर हैं। गाडी से उतरकर ज़रा इधर-उधर घूमकर देख आऊ, इसका उपाय नहीं है। तब हां, न देखने पर भी जो समझ मे आता है वह यह कि एकाध मील के दरमियान बाज़ार या दुकान नामक चीज़ नही है।

मेरे पास अब दूसरा टायर भी नही है।

पन्द्रह मिनटों तक गाड़ी मे बैठे रहने के बाद मन में एक सवाल पैदा हुआ : इतनी देर मे न तो कोई गाडी और न ही कोई आदमी मेरी गाड़ी के पास से गुज़रा। फिर क्या मैं गलत रास्ते पर चला आया हूं? मेरे साथ सड़क का नक्शा है। सिउडी तक मैं ठीक ही आया था। मगर उसके बाद अगर गलत रास्ते पर मुड गया होऊं तो? इस मूसलाधार वृष्टि मे ऐसा होना अस्वाभाविक नही है।

अगर गलती ही हो गई हो तो यह कोई अफ्रीका या अमेरिका का जंगल नही है कि मैं दिग्भ्रमित हो जाऊं। चाहे मैं जहां कहीं भी पहुंच गया हूं, बीरभूम के अन्तर्गत ही हू और शांति निकेतन के पचासेक मील दूरी के बीच

ही हूं। बारिश थमते ही सारी मुश्किलें आसान हो जाएंगी—यहां तक कि एकाध मील की दूरी से ही गाड़ी मरम्मत करनेवाली कोई दुकान भी मिल जा सकती है।

जेब से विल्स सिगरेट का पैकेट और दियासलाई निकालकर मैंने सिगरेट सुलगाई। भोला बाबू की बातें याद आ गईं। वे अवश्य ही भुक्त-भोगी रह चुके हैं अन्यथा इतना सही उपदेश देते ही क्यों? भविष्य में···

'पें-पें-पें-पें!'

मुझे तन्द्रा जैसी आ गई थी, हॉर्न की आवाज़ सुनकर चौकन्ना होकर बैठ गया। बारिश थोड़ी कम हुई है मगर गहरा अंधेरा फैल गया है।

'पें-पें-पें-पें!'

मैंने पीछे की तरफ मुड़कर देखा। एक लॉरी आकर खड़ी हो गई है। हार्न क्यों बजा रहा है? मैं क्या पूरी सड़क पर दखल जमाए हूं?

मैं दरवाज़ा खोलकर नीचे उतरा। लॉरी की कोई ग़लती न थी। टायर फटने के वक़्त मेरी गाड़ी ज़रा मुड़कर करीब-करीब आधी सड़क को रोककर खड़ी है। लॉरी के पार होने का रास्ता बाकी नहीं बचा है।

"गाड़ी साइड में कीजिए।"

शायद मुझे असहाय हालत में पाकर पंजाबी ड्राइवर उतरकर नीचे आया।

"क्या हुआ?—पंक्चर?"

मैंने फ्रांसीसी कायदे से कंधों को ज़रा उचका कर अपनी शोचनीय स्थिति की सूचना दी। "आप अगर ज़रा हाथ लगाएं तो इसे एक किनारे कर आपके जाने के लिए जगह बना दूं।" मैंने कहा।

अब लॉरी से पंजाबी का सहायक नीचे उतर पड़ा। हम तीनों ने ठेल-ठालकर स्टीयरिंग को घुमाकर, गाड़ी को एक किनारे कर दिया। उसके बाद पूछताछ करने पर पता चला कि यह दुमका जानेवाली सड़क नहीं है। मैं ग़लत रास्ते पर आ गया हूं। तब हां, दुमका जानेवाली सड़क तीन मील से ज्यादा दूर नहीं है। आसपास गाड़ी मरम्मत करनेवाली कोई दुकान नहीं है।

लॉरी चली गई। जब उसकी घर्घराहट खत्म हो गई, सन्नाटा रेंगने लगा और मेरी समझ में आ गया कि मैं घोर संकट के बीच फंस गया हूं।

आज रात दुमका पहुंच सकूं, इसकी कतई संभावना नहीं है। यह रात किस तरह गुज़रेगी, इसका कोई पता नहीं।

आसपास के डबरे में मेढकों ने कोरस संगीत गाना शुरू कर दिया है। कोई दूसरा वक़्त होता तो मिट्टी की सोंधी गंध से मन मचल उठता, लेकिन

ऐसी स्थिति में ऐसा क्यों होने लगा ?

मैं फिर गाड़ी के अन्दर चला गया। मगर इससे फायदा ही क्या है ? हाथ-पैर पसारकर आराम किया जा सके, ऐम्बेसेडर गाड़ी इसके लिए बिलकुल अनुपयुक्त होती है।

और एक सिगरेट जलाने ही जा रहा था कि अचानक बगल की खिड़की से एक हलकी जैसी रोशनी आकर स्टीयरिंग ह्वील पर पड़ी। मैंने फिर से दरवाज़े को खोलकर गरदन बढ़ाकर बाहर की ओर ताका। पेड़ों की फाक से रोशनी का एक चौकोर टुकड़ा दीख रहा है। लगता है, खिड़की है। धुएं का कारण आग होती है और किरासन तेल की रोशनी का कारण आदमी हुआ करता है। आसपास कोई मकान है और उसमे आदमी है।

मैं टार्च लेकर गाड़ी से उतरा। रोशनी ज्यादा दूर से नहीं आ रही थी। मेरे लिए यही उचित है कि आगे बढ़कर खोज-पड़ताल करूं। एक रास्ता भी है। संकरा रास्ता। शायद वह रास्ता रोशनी की तरफ से उधर ही आता है जिसे रास्ते पर मैं हूं। रास्ते के दोनों किनारे पेड़-पौधों की भरमार है और नीचे की तरफ झाड़-झंखाड़ है।

कोई परवा नहीं। मैं गाड़ी के दरवाज़े का ताला बन्दकर रवाना हो गया।

खाई-खंदकों से यथासम्भव बचता हुआ, कीचड़ और पानी से होता हुआ जब एक इमली के पार पहुंचा तो वह मकान दीख पड़ा। उसे मकान कहना गलत ही होगा। एक या डेढ़ ईंट की गथनी पर टीन को एक चाल है। अधखुले दरवाज़े से कमरे के अन्दर मैंने एक जलती हुई लालटेन और उसके इर्द-गिर्द धुएं की लकीरें देखीं।

एक खाट भी वहां दिखाई पड़ी।

"कोई है ?"

एक मध्यवयस्क नाटे कद के मूछोंवाले आदमी ने बाहर निकलकर टॉर्च की रोशनी की तरफ भौंह सिकोड़कर ताका। मैंने रोशनी नीचे झुका दी।

"कहां से आ रहे हैं बाबूसाहब ?"

अपनी दुर्घटना का संक्षेप में ब्यौरा देते हुए मैंने कहा, "यहां कहीं रात गुज़ारने का कोई इन्तज़ाम है। जितना भी पैसा लगे, दूंगा।"

डाक बंगले में ?

"डाक बंगले में ? वह कहां है ?"

यह प्रश्न मेरे मन में आते ही मुझे अपनी बेवकूफी का पता चला।

अभी तक सिर्फ लालटेन और टार्च की रोशनी की तरफ मेरी नजर रहने के कारण मैंने यह नहीं देखा था कि आसपास क्या-क्या चीजें हैं। अब

ज्योंही मैंने टॉर्च को मोड़कर अपनी बाईं ओर किया, एक खासा बड़े एक मंजिले पुराने मकान पर मेरी दृष्टि पड़ी। उस मकान की तरफ इशारा करते हुए मैंने पूछा,

"यही डाक बंगला है ?"

"हां बाबू। लेकिन बिस्तर वगैरह नहीं है। वहां खाना भी नहीं मिलेगा।"

"बिस्तर मेरे साथ है। खाट है न ?"

"है।"

"देख रहा हूं तुमने अपने घर में चूल्हा जला रखा है। तुम खुद जरूर ही खाना खाओगे ?"

वह हंस पड़ा। उसके हाथों से सेंकी हुई मोटी रोटी और उसकी पत्नी के द्वारा बनाई गई उड़द की दाल से मेरा काम चल सकेगा ? मैंने कहा, "अच्छी तरह चल जाएगा। मैं हर तरह की रोटी खाने का अभ्यस्त हूं और उड़द की दाल खाना तो मैं बेहद पसन्द करता हूं।"

किसी जमाने में यह क्या रहा होगा, पता नहीं किंतु अब इसका नाम डाक बंगला ही है। तब हां, अंग्रेजों के जमाने का मकान है। कमरे का आकार बड़ा है और छत काफ़ी ऊंचाई पर हैं। असबाब के नाम पर निवार की एक पुरानी खाट, एक किनारे एक मेज़ और उसके साथ एक टूटे हत्थे की कुरसी है।

चौकीदार मेरे लिए एक लालटेन जलाकर मेज़ पर रखा गया। मैंने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"सुखनराम, बाबूजी।"

"इस बंगले में कोई आदमी आता है या पहला व्यक्ति मैं ही हूं ?"

"अरे राम-राम ! बहुत सारे आदमी आकर यहां ठहर चुके हैं। किसी ने कभी ऐसी बात नहीं कही है।"

इस बात से मैंने बहुत-कुछ राहत की सांस ली। चाहे भूत-प्रेत पर मैं विश्वास करूं या न करूं, किन्तु कम से कम यह तो जानता हूं कि अगर इस डाक बंगले में भूत रहता है तो वह हमेशा ही रहेगा और अगर न रहता है तो कभी नहीं रहेगा। मैंने पूछा, "यह कितने दिनों का पुराना मकान है ?"

सुखनराम मेरा बिस्तर खोलते हुए बोला, "पहले यह नील कोठी थी। निकट ही नील की एक फैक्टरी भी थी। उसकी अब भी एक चिमनी खड़ी है। बाकी तमाम चिमनियां टूट गई हैं।"

मुझे इस बात का पता था कि किसी जमाने में इस इलाके में नील की खेती की जाती थी। बचपन में मैंने मुंगेर के आसपास भी नील की कोठियां

देखी थी।

सुखनराम के द्वारा बनाई गई रोटियां और उड़द की दाल खाकर जब मैं निवार की खाट पर बिस्तर बिछाकर लेटा तो रात के साढ़े दस बज रहे थे। प्रमोद को मैंने तार भेजा था कि आज तीसरे पहर पहुंचूंगा। वह जरूर ही चिन्तित होगा। लेकिन अब इसके बारे में सोचने से कोई लाभ नहीं। ठहरने के लिए जगह मिल गई है और सो भी आसानी से। यह कम सौभाग्य की बात नहीं है। भविष्य मे भोला बाबू के उपदेश का पालन करता रहूंगा। मुझे अच्छी सीख मिल चुकी है। तब हां, यह बात सही है कि यों ही सीखने की अपेक्षा ठेस खाकर सीखना कहीं अच्छा होता है।

मैंने पास के बाथरूम मे लालटेन रख दी है। दरवाज़े की फांक से जितनी रोशनी आ रही है, वह पर्याप्त है। कमरे मे ज्यादा रोशनी रहे तो मुझे नींद नहीं आती। गाडी से तमाम असबाबों को निकालकर उन्हें लॉक अप कर दिया है। यह बात मैं बेझिझक कह सकता हूं कि आजकल कलकत्ते की सडकों पर गाडी छोड़कर आना जितना विपत्तिजनक है, गावों की सड़कों पर संभवतः उससे कम विपत्ति की आशंका रहती है।

बारिश की आवाज थम चुकी है। मेढकों और झींगुरों के समवेत स्वर से रात मुखर हो उठी है। शहर का जीवन मुझसे इतनी दूर और इतने पीछे सरक गया है कि वह मुझे प्रागैतिहासिक पर्व जैसा लग रहा है। नीलकोठी! ···दीन बंधु मित्र के 'नील दर्पण' नाटक की याद आ गई। जिन दिनों मैं कॉलेज मे पढ़ता था, अभिनय देखा था···कर्नवालिस स्ट्रीट के किसी पेशेवर थियेटर में···

एकाएक मेरी नींद टूट गई। कितनी देर के बाद टूटी, नहीं जानता।

दरवाज़े से चरमराने की जैसी आवाज आ रही है। यह बात मेरी समझ में आ जाती है कि बाहर से कुत्ता या सियार की तरह का कोई जानवर दरवाज़े को नाखून से खरोच रहा है। कुछ मिनटों के बाद आवाज थम जाती है। फिर एक खामोशी रेंगने लगती है।

मैं अपनी आंखें बन्द करता हूं। कुत्ते के भौंकने की आवाज से मेरी नींद बिलकुल उचट जाती है।

बंगाल के गांवों के लावारिस कुत्तों की जैसी यह आवाज नहीं है। यह विलायती हाउण्ड की आवाज है। इस आवाज से मैं अपरिचित नहीं हूं। मुंगेर में हम लोगों के मकान के दो मकान बाद मार्टिन साहब का मकान था, जहां से रात में ऐसी ही आवाज आया करती थी। इस इलाके मे इस

तरह का कुत्ता कौन पालता है ? एक बार इच्छा हुई, उठकर जाऊं और दरवाजा खोलकर देख लूं। क्योंकि कुत्ते के भौंकने की आवाज डाक बंगले के बहुत ही निकट से आ रही है। इसके बाद लगा, सिर्फ एक कुत्ते के भौंकने से मायापच्ची करना बेमानी है। उससे तो अच्छा यही है कि एक बार फिर से सोने की कोशिश करूं। रात के कितने बज रहे हैं ?

खिडकी से हलकी चांदनी आ रही है। लेटी हुई हालत में अपने बाएं हाथ को चेहरे के सामने लाते ही मेरी छाती धड़क उठी।

मेरी कलाई से घड़ी गायब थी।

ऑटोमेटिक घड़ी जितना ही पहने हुए रहे, वह उतनी ही अच्छी रहती है, यही सोचकर मैं सोने के समय भी उसे कलाई से उतार कर नहीं रखता हूं।

घड़ी कहां गई ? अन्तत: मैं क्या डाकुओं के डेरे पर पहुंच गया हूं ? फिर मेरी गाड़ी का क्या होगा ?

तकिये के पास टटोलने पर टॉर्च नहीं मिला। मैं हड़बड़ाता हुआ बिस्तर से उठा। फर्श पर घुटने टेक कर मैंने खाट के नीचे की ओर देखा और अपने सूटकेस को भी गायब पाया।

मेरा दिमाग चकराने लगा। इसका कोई न कोई निदान ढूंढ़ना होगा।

"चौकीदार !" मैंने पुकारा।

कुछ भी जवाब न मिला।

बरामदे पर जाने के लिए ज्यों ही दरवाजे की ओर बढ़ा, अर्गला को मैंने उसी हालत में पाया, जिस हालत में उसे बन्द करके लेटा था। खिड़कियों में भी सलाखें हैं। फिर चोर किधर से आया ?

दरवाजे की अर्गला खोलने के समय अपने हाथों पर आखें जाते ही मेरे मन में एक संदेह पैदा हुआ।

मेरे हाथों में दीवार का चूना लग गया है या पाउडर किस्म की कोई दूसरी चीज ? मेरे हाथ ऐसे सफेद-सफेद क्यों लग रहे हैं ?

मेरा माथा चकराने लगा। दरवाजा खोलकर मैं बाहर निकल आया।

"चौकिदा—र !"

मुझे अपनी ही आवाज पहचानी जैसी नहीं लगी। उच्चारण भी नहीं। चाहे मैं मिशनरी स्कूल में पढ़ा हुआ क्यों न होऊं। निखालिस अंग्रेजों की तरह मैं बंगला का कभी उच्चारण नहीं करता।

चौकीदार कहां है ? उसका घर कहां चला गया ? डाक बंगले के सामने मैदान फैला है। दूर तक धुंधला जैसा मकान दीख रहा है, उसके पास चिमनी जैसा एक खंभा। चारों तरफ अस्वाभाविक सन्नाटा तैर

रहा है।

मेरा परिवेश बदल गया है।

मैं स्वय भी बदल गया हू।

पसीने से लथपथ होकर मैं कमरे के अन्दर चला आया। मेरी आंखें अंधेरे से अभ्यस्त हो गई हैं। अब कमरे की हर चीज देख रहा हूं। खाट है, परन्तु उस पर मच्छरदानी नही, हालांकि मैं मच्छरदानी लगाकर सोया था। जो तकिया मौजूद है, वह भी मेरा नही है। मेरा तकिया साधारण जैसा था, इस पर फूल-पत्तियो का बोर्डर है। खाट की दाहिनी ओर, दीवार के सामने वही मेज है, वही कुरसी, किन्तु उनमे पुरानेपन का कोई चिह्न नही है। धुंधली रोशनी मे भी उनकी वानिश की हुई लकडी चमक रही है। मेज पर लालटेन नही, फूल-पत्तियों के शेडवाला किरोसिन लैंप है।

कमरे मे और भी जो चीजें है, वे एक-एक कर दीख पडती हैं। एक कोने मे दो ट्रक हैं। दीवार पर एक अलगनी है, जिसमे एक कोट और एक अजीब ही तरह की अपरिचित टोपी तथा एक चाबुक टगे हैं। अलगनी के नीचे घुटनों तक का एक जोडा जूता है, जिन्हे गॅलॉशस कहा जाता है।

चीजों को छोडकर मैंने एक बार और अपने आपकी तरफ दृष्टि दौड़ाई। इसके पहले सिर्फ रेशमी कमीज पर मेरी दृष्टि गई थी। अब देखा, उसके नीचे पतली चुस्त पंट है, उसके नीचे मोजा। पैरो मे जूते नही हैं। हैं। हां, खाट के नीचे एक जोड़ा चमडे का काला बूट रखा हुआ है।

अपने दाहिने हाथ से अपने चेहरे को छूकर देखने पर मुझे पता चला, कि न केवल मेरी देह के रंग मे परिवर्तन आया है, बल्कि मेरे चेहरे मे भी परिवर्तन आ गया है। इतनी नुकीली नाक, पतले होठ और पतले जबडे मेरे नही थे। अपने सिर पर हाथ रखने पर पता चला कि उस पर घुंघराले बाल हैं जो मेरे कंधे तक फैले हैं। कान के पास से जुल्फें करीब-करीब जबड़े तक उतर आई हैं।

अपना चेहरा देखने के बाद मेरे मन को तीव्र कुतूहल के साथ-साथ विस्मय और आतक ने धर दबाया। लेकिन आइना कहा है ?

मैं अपनी सांस रोककर दौड़ता हुआ बाथरूम के पास पहुंचा और दरवाजे को जोरो से ठेलता हुआ अन्दर चला गया।

इसके पहले वहा सिवा एक बालटी के और कुछ नही था। अब फ़र्श के एक कोने मे टीन का एक बाथटब, उसके पास चौकी और एनोमेल का मग दीख पड़े। मैं जिस चीज की तलाश कर रहा था, वह मेरे सामने ही है—लकडी की सिंगार-मेज पर आदमकद आईना। मुझे इस बात का पता है कि मैं आईने के सामने खड़ा हूं। किन्तु उसमे जो चेहरा दीख रहा

है, वह मेरा चेहरा नहीं है। किसी वीभत्स बाज़ीगरी के चलते मैं उन्नीसवीं सदी का एक अंग्रेज साहब हो गया हूं—वैसा अंग्रेज जिसकी देह का रंग बिलकुल गोरा है, बाल सुनहले, आंखें कटीली और उन आंखों में यातना के साथ कठोरता का भाव अजीब प्रकार से मिला हुआ है। इस अंग्रेज की कितनी उम्र है ? तीस से ज्यादा न होगी। मगर देखने से लगता है, कि अस्वस्थता या अतिरिक्त परिश्रम के कारण असमय ही चेहरे पर बुढ़ापे की छाप पड गई है।

और भी अधिक निकट जाकर मैंने अपने चेहरे को गौर से देखा। देखते-देखते मेरे भीतर से एक गहरी उसांस निकलकर शून्य में फैल गई।

उफ़ !

यह आवाज़ भी मेरी नहीं है। यह उसांस भी मेरी नहीं, उस अंग्रेज की भावनाओं को व्यक्त कर रही है।

इसके बाद जो कुछ घटित हुआ उससे यह समझ में आया कि न केवल मेरा कंठस्वर, बल्कि मेरे हाथ, पैर—सब कुछ किसी अन्य व्यक्ति के अधीन क्रियाशील हैं। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि मैं जो अनिरुद्ध बोस हूं और मैं बदल गया हूं, इसका मुझे बोध है। हालांकि मैं यह नहीं जानता कि यह परिवर्तन स्थाई है या अस्थाई, इस स्थिति से अपनी स्थिति में लौटने का कोई उपाय है या नहीं।

मैं बाथरूम से शयन-कक्ष में लौट आया।

मेरी दृष्टि लिखने की मेज पर पड़ी। लैंप अब भी जल रही है। लैंप के नीचे चमड़े की जिल्द की एक कॉपी है। उसके पास दवात के अन्दर डाली हुई सरकंडे की क़लम है।

मैं आगे बढ़कर मेज की ओर गया। कॉपी के खुले पन्ने पर कुछ भी लिखा न था। किसी अदृश्य शक्ति ने मुझे कुरसी पर बिठाकर दवात से क़लम मेरे हाथ में थमा दी। मेरा हाथ बायीं ओर के सफेद पृष्ठ की ओर बढ़ गया। कमरे की निस्तब्धता को भेदती हुई सरकंडे की कलम सर-सर आवाज़ करती हुई लिखने लगी :

27 अप्रैल, 1868

कान के पास फिर से उस शैतान मच्छर की भनभनाहट शुरू हो गई है। अन्ततः एक मामूली कीड़े से मुझ जैसे दबंग अंग्रेज को पराजित होना पड़ेगा ? ईश्वर का यह कैसा विधान है ? एरिक भाग गया है। पार्सी और टोनी भी इसके पहले भाग चुके हैं। शायद मुझ में उनसे भी अधिक पैसे का लोभ है। यही वजह है कि मलेरिया के आक्रमण के बावजूद मैं नील के मोह

से मुक्त नही हो पा रहा हूं। नही, बात इतनी ही नही है। डायरी में असत्य लिखना पाप है। एक दूसरा भी कारण है। मेरे देश के निवासी मुझे भली-भांति पहचानते हैं। जब मैं वहां था तो मैंने कितने ही बुरे काम किए हैं। वे इन बातो को भुला नही बैठे हैं। इसीलिए मुझ मे इगलैंड लौट जाने की हिम्मत नही है। मुझे यही रहना होगा और यही मरना होगा। मेरी और अपने तीन वर्ष के शिशु टोरी की कब्रो के पास ही मुझे स्थान मिलेगा। यहां के नेटिवो पर मैंने इतना अत्याचार किया है कि मेरे मरने पर यहां कोई ऐसा व्यक्ति नही मिलेगा जो मेरे लिए आंसू बहाए। एकमात्र मीर जान ही है जो हो सकता है, आंसू बहाए। मेरा विश्वसनीय आज्ञाकारी बेयरा मीरजान! और रेक्स? असली चिन्ता तो मुझे रेक्स के लिए ही है। *हाय रे स्वामीभक्त कुत्ता! मेरे मरने के बाद ये लोग तुम्हें जिन्दा न* रहने देंगे। या तो ढेलों से या लाठी की चोट से ये लोग तुझे मार डालेंगे। काश, तेरे लिए कुछ इन्तज़ाम करने के बाद ही मेरी मृत्यु होती!···

इसके बाद मैं लिख नही सका। मेरा हाथ थरथरा रहा है। मेरा नहीं, बल्कि डायरी लिखने वाले का हाथ।

मैंने कलम रख दी।

इसके बाद मेरा दाहिना हाथ मेज़ से सरककर मेरी गोद के पास आया और दाहिनी ओर चला गया।

यह दराज़ का हत्था है।

हाथ से खींचते ही दराज़ खुल गई।

अन्दर एक पिनकुशन है, पीतल का एक पेपरवेट, पाइप और कुछ कागजात।

दराज थोड़ा और खुली। लोहे की कोई चीज़ चमक उठी। पिस्तौल। उस पर हाथी के दांत का काम किया हुआ है।

मेरे हाथ ने पिस्तौल को बाहर निकाला। मेरे हाथ की थरथराहट रुक गई है।

बाहर सियार भौंक रहे हैं। सियारों के प्रत्युत्तर में ही हाउण्ड ने भौंकना शुरू कर दिया है—भांव-भांव···

मैं कुरसी से उठकर दरवाज़े की ओर गया और फिर उसे खोलकर बाहर चला आया।

सामने मैदान में चांदनी फैली हुई है।

डाक बंगले के बरामदे से करीब बीस हाथ की दूर पर धूसर रंग का एक विशाल ग्रेहाउण्ड घास पर खड़ा है। मेरे बाहर आते ही उसने मेरी

ओर मुड़कर पूंछ हिलाना शुरू कर दिया।

"रेक्स !"

वही गंभीर अंग्रेज का कंठ स्वर। दूर की बसवारी और नील की फैक्टरी से आवाज प्रतिध्वनित होकर लौट आई—रेक्स ! ···रेक्स !···

रेक्स आगे बढ़ आया। उसकी पूछ हिल रही थी

वह जैसे ही घास पर से आकर बरामदे पर चढ़ने लगा कि मेरा दाहिना हाथ कमर तक बढ़ आया। पिस्तौल का मुंह कुत्ते की ओर था। रेक्स रुक गया। उसकी जलती आंखों में विस्मय का भाव था।

मेरे दाहिने हाथ की तर्जनी ने पिस्तौल के बटन को दबा दिया।

गोली छूटते ही आंखों के सामने चकाचौंध पैदा करने वाली रोशनी फैल गई। उसने साथ धुआ और चारों तरफ छितरे हुए बारूद की गंध।

रेक्स के बदन के सामने का हिस्सा बरामदे के ऊपर और पीछे का हिस्सा घास पर लटका हुआ था।

पिस्तौल की आवाज सुनकर दूर के पेड़-पौधों पर कौए कांव-कांव करने लगे। फैक्टरी की ओर से कुछ लोग डाक बगले की ओर आने लगे।

कमरे के अन्दर आकर मैंने दरवाजे की अगंला बन्द कर दी और खाट पर बैठ गया। बाहर लोगों का शोरगुल बढ़ रहा था।

पिस्तौल की नली अपने कान के पास छुलाते ही वह गरम मालूम हुई। उसके बाद क्या हुआ, मैं नहीं जानता।

दरवाजे पर दस्तक पड़ते ही मेरी नींद खुल गई।

"चाय ले आया हू, बाबूजी !"

कमरे में दिन का प्रकाश फैला था। हमेशा की आदत के अनुसार मेरी दृष्टि बाएं हाथ की कलाई पर गई।

छह बजकर तेरह मिनट हो रहे थे। घड़ी को आंखों के और करीब ले आया, क्योंकि इससे तारीख भी मालूम हो जाती है।

अट्ठाईस अप्रैल।

बाहर से सुखराम ने कहा, "आपकी गाड़ी ठीक हो गई है, बाबूजी।"

वीर भूमि की नीलकोठी के साहब की मृत्यु शतवार्षिकी के अवसर पर मुझे जो अनुभव हुआ था, उस पर क्या कोई विश्वास करेगा ?

फेलूदादा की जासूसी

हर रोज तीसरे पहर राजेन वाबू को माल की ओर आते देखता हूं। उनके सिर के वाल पक गए हैं। रंग गोरा है। चेहरे पर मुसकराहट तैरती रहती है। नेपाल और तिब्बत की पुरानी वस्तुओं की जो दुकान है, वहां कुछ थोडा वक्त गुजार कर फिर बाहर बेंच पर आधा घंटा गुजारते हैं और जब शाम होने को आती है, वे अपने जला पहाड़ के मकान मे लौट आते है। एक दिन मैं उनके पीछे-पीछे जाकर उनका घर देख आया हूं। जब मैं फाटक के निकट पहुंचा, अचानक मेरी ओर मुड़कर बोले, "तुम कौन हो? मेरा पीछा क्यो कर रहे हो?" मैंने कहा, "मेरा नाम है तपेशरजन बोस।" फिर "यह लेमनजूस लो", यह कहकर उन्होंने सचमुच जेब से एक लेमन-जूस निकालकर मुझे दिया और कहा, "एक दिन सुबह मेरे घर पर आओ। मेरे पास अनेक मुखौटे हैं। तुम्हें दिखाऊंगा।"

वही राजेन बाबू इतनी मुसीबतों मे फंस सकते है, इस पर कौन विश्वास करेगा?

फेलूदा को ज्योही मैंने यह बात बताई, वह झुंझला उठा।

"ज्यादा बडप्पन मत कर।" कौन किस मुसीबत मे फंसेगा, यह क्या किसी आदमी को देखकर समझा जा सकता है?"

मैं स्वभाववश गुस्से में आ गया।

"वाह रे, राजेन बाबू जो अच्छे आदमी हैं, यह क्या देखने पर समझ [illegible]

"अच्छा ठीक है। अब यह बता कि किस तरह की मुसीबत है। और तू तो निहायत बालक है, फिर तुझे विपत्ति की बात कैसे मालूम हुई?"

मैं निहायत बच्चा नही हूं, क्योकि मेरी उम्र साढ़े तेरह वर्ष है। फेलूदा की उम्र मुझसे दुगुनी है।

सच कहूं तो हर्ज ही क्या है! बात सचमुच मेरे जानने की नही थी। मैं माल की बेंच पर बैठा था। चूंकि रविवार था और बैंड बजने वाला था, इसीलिए मैं सुनने के लिए ही बैठा था। मेरी बगल में तीन कौड़ी बाबू बैठ

थे जो राजेन बाबू का मकान किराये पर लेकर गरमी की छुट्टी बिताने आए थे। तीन कौड़ी बाबू 'आनन्द बाज़ार' पत्रिका पढ़ रहे थे और मैं झांक-झांककर फुटबॉल की खबरें देखने की कोशिशें कर रहा था। तभी राजेन बाबू हांफते हुए आगे और चेहरे पर उदासी लिए तीन कौड़ी बाबू की बगल में धम से बैठ गए। उसके बाद अपनी चादर से बदन का पसीना पोंछने लगे।

तीन कौड़ी बाबू ने अखबार रखकर पूछा, "क्या हुआ। चढ़ाई तयकर आए हैं क्या ?"

राजेन बाबू ने आहिस्ता से कहा, "नहीं, साहब ! एक इनक्रेडिबॅल् बात है।"

'इनक्रेडिबॅल्' शब्द से मैं परिचित था। फेलूदा इस शब्द को अकसर प्रयोग में लाता है। इसका अर्थ है : अविश्वसनीय।

तीन कौड़ी बाबू ने पूछा, "क्या बात है ?"

"लीजिए, देखिए "

राजेन बाबू ने एक मुड़ा हुआ कागज़ जेब से निकालकर तीन कौड़ी बाबू के हाथ में थमाया। मैं समझ गया कि वह एक पत्र है।

मैंने अवश्य ही उस पत्र को नहीं पढ़ा था। बल्कि मैं विपरीत दिशा में अपना मुह घुमाकर गुनगुनाते हुए इस तरह का भाव प्रदर्शित कर रहा था जैसे बड़े-बुजुर्गों की बातों मे मुझे कोई दिलचस्पी नही है। मगर पत्र न पढ़ने के बावजूद मैंने तीन कौड़ी बाबू की बातें सुन ली थीं।

"सचमुच इनक्रेडिबॅल् है। आप पर किसे इतना आक्रोश हो सकता है कि आपको इस प्रकार धमकी भरा पत्र लिखे ?"

राजेन बाबू ने कहा, "यही तो सोच रहा हूं। सच कहने मे हर्ज ही क्या, मैंने कभी किसी की हानि की हो, ऐसा याद नही है।"

तीन कौड़ी बाबू ने राजेन बाबू की ओर झुककर फुसफुसाते हुए कहा, "बाज़ार मे इन बातो की चर्चा न करना ही बेहतर है। घर चलिए।'

दोनो बूढ़े उठकर खड़े हो गए।

फेलूदा घटना के बारे मे सुनकर कुछ देर तक खामोश बैठा रहा। उसकी पेशानियो पर सलवटें थीं। उसके बाद वह बोला, "फिर तेरे कहने का मतलब है कि एक बार गहराई से इसकी जांच-पड़ताल करनी चाहिए ?"

"तुम तो रहस्यजनक घटना की तलाश मे थे। तुमने कहा था, जासूसी किताबें पढ़ते-पढ़ते तुम्हारी जासूसी बुद्धि तीक्ष्ण हो गई है।"

"बात तो सही है। उदाहरण के तौर पर तुम इस बात को ले सकते

हो—आज मैं माल नहीं गया हूं, फिर भी मैं बता सकता हूं कि तू किस दिशा की बेंच पर बैठा था।"

"किस दिशा में ?"

"राधा रेस्तरा की दाहिनी तरफ की बेंचों में से किसी बेंच पर।"

"अरे, क्या कहना है ! बात तुम्हारी समझ में कैसे आई ?"

"आज तीसरे पहर धूप थी। तेरा बायां गाल धूप से झुलस गया है मगर दाहिना नहीं झुलसा है। सिर्फ उधर की बेंच पर बैठने से ही पश्चिम की धूप गाल पर पड़ती है।"

"इनक्रेडिबॅल्।"

"खैर ! अब बात यह है कि राजेन मजुमदार के घर पर एक बार जाना जरूरी है।"

"अब सत्तहत्तर कदम बाकी हैं।"

"और अगर न हो ?"

"होगा ही फेलूदा। मैंने पिछली बार गिना था।"

"और न होने पर मुक्के की मार सहनी होगी।"

"हां, मगर ज्यादा ज़ोर से मत मारना। ज़ोर से मारने से सिर का भेजा इधर से उधर हो जाता है।"

कितने आश्चर्य की बात कि सतहत्तर कदम चलने पर राजेन बाबू का घर नहीं आया। तेईस कदम और चलने के बाद उनके फाटक के सामने पहुचा।

फेलूदा ने हलके से एक मुक्का जमाते हुए कहा, "पिछली बार लौटने के समय गिना था या आने के समय ?"

"लौटने के समय।"

"इडियेट ! लौटने के समय तो रास्ता ढलाव है। तू निश्चय ही लम्बा-लम्बा कदम रखते हुए लौटा होगा।"

"हां, यही बात होगी।"

"है ही। इसीलिए उस बार कदमों की संख्या कम थी और इस बार ज्यादा हुई। जवानी की उम्र मे आदमी लम्बे-लम्बे कदम रखता है। लग-भग दौड़ने के जैसा। और बुढ़ापा आने पर ढालू रास्ते पर ब्रेक कसकर छोटे-छोटे कदम रखने पड़ते हैं। अगर ऐसा न करे तो मुह के बल गिर पड़े।"

पास ही कहीं किसी घर से रेडियो का गीत सुनाई पड़ रहा है फेलूदा ने आगे बढ़कर कॉलिंग बेल दबाया।

"क्या कहोगे, यह सोच लिया है, फेलूदा ?"

"जो भी इच्छा होगी, कहूंगा। मगर तू मत बोलना। जितनी देर तक हम उनके साथ रहे, तू एक भी शब्द मत बोलना।"

"अगर कुछ पूछें तो भी नहीं ?"

"शटअप !"

नेपाली नौकर ने दरवाज़ा खोल दिया।

"अन्दर चले आइए।"

हम बैठक में पहुचे। पुराने ढर्रे का बड़ा ही खूबसूरत लकड़ी का मकान है। सुना था, राजेन बाबू रिटायर्ड होकर दस बरसों से दार्जिलिंग में रह रहे हैं। वे कलकत्ते के नामी वकील रह चुके हैं।

कमरे मे जितनी भी मेज़-कुरसियां थी, सभी बेंत की ही थी। जो चीज़ें सबसे अधिक ध्यान आकर्षित कर रही थी वे थी दांत पीसते हुए मुखौटों की कतार, जिनकी आखों में क्रोध का भाव था। इसके अलावा पुरानी ढाल, तलवार, फरसा, थालियां और गुलदस्ते वगैरह। कपड़े पर रगों से बनाई गई बुद्धदेव की तसवीर भी है। वह तसवीर कितनी पुरानी है, पता नही। मगर उसमे जो सुनहला रंग है वह अब भी झलमलाता रहता है।

हम दोनों बेंत की कुरसियो पर बैठ गए।

फेलूदा ने दीवारो पर निगाह दौड़ा कर कहा, "जितनी भी कांटियां हैं, नई है, ज़ंग नही लगा है। संभवतः भले मानस का पुरानी चीज़ों का शौक ज्यादा पुराना नहीं है।

राजेन बाबू कमरे के अन्दर आए।

मैंने आश्चर्य के साथ देखा, फेलूदा ने उठकर उन्हें प्रणाम किया और कहा, "पहचान रहे हैं ? मैं जयकृष्ण मित्र का लड़का फेलू हूं।"

शुरू में राजेन बाबू के माथे पर सलवटें उभर आईं। उसके बाद सहज स्थिति मे आकर हंसते हुए बोले, "वाह-वाह तुम कितने बड़े हो गए। यहां कब आए हो ? घर पर कुशल है न ? तुम्हारे पिताजी आए हैं ?"

फेलूदा उत्तर दिए जा रहे थे। मैं मन ही मन कह रहा था—यह कितना अन्याय है कि फेलूदा ने कभी यह नही बताया कि वह राजेन बाबू को पहचानता है।

अब की फेलूदा ने मेरा परिचय दिया। राजेन बाबू का चेहरा देखने से यह पता नहीं चला कि सात दिन पहले उन्होंने मुझे लेमन ज़ूस देने का वादा किया था।

फेलूदा ने कहा, "प्राचीन वस्तुओं के प्रति आप बहुत ही शौक रखते

हैं।"

राजेन बाबू ने कहा, "हां। अब तो यह शौक नशे जैसा हो गया है।"

'यह शौक कब से पैदा हुआ है ?"

"लगभग छह महीने से। मगर इस बीच बहुत-कुछ इकट्ठा कर लिया है।"

फेलूदा ने अपने गले को खंखार कर अब मुझसे सुनी हुई बात बताई, "आपने मेरे पिता के मुकदमे मे जिस तरह की सहायता की थी, उसके बदले इस मुसीबत मे मै अगर कुछ कर सकूं तो···"

राजेन बाबू के मनोबल को देखने से पता चला कि सहायता मिलने पर उन्हे खुशी ही होगी। मगर वे कुछ बोलें कि इसके पहले ही तीन कौड़ी बाबू ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया। उनके हांफने का सिलसिला देखकर लगा, वे सभवत: घूम-फिरकर आए हैं। राजेन बाबू ने उनसे हमारा परिचय कराते हुए कहा, "मेरा अन्तरंग मित्र ज्ञानेश सेन एडवोकेट तीन कौडी बाबू का पडोसी है। यह सुनकर कि मैं मकान किराएं पर लगाने जा रहा हू, ज्ञानेश ने ही इन्हे मेरे यहां आने को कहा। शुरू मे उन्होने होटल में ठहरने के बारे मे सोचा था।"

तीन कौडी बाबू ने हसते हुए कहा, "मुझे अपने चुरुट की सनक के कारण भय लग रहा था। यह भी हो सकता था कि राजेन बाबू चुरुट की गंध बरदाश्त नही कर पाते हो। इसलिए यह बात मैंने अपने प्रथम पत्र मे ही सूचित कर दी थी।"

फेलूदा ने कहा, "आप क्या हवा-पानी बदलने के खयाल से आए हैं ?"

"हा। मगर हवा की कमी ही ज्यादातर महसूस हुई है। लोग उम्मीद करते है कि पहाड मे कुछ और ज्यादा सरदी रहती होगी।"

फेलूदा अचानक पूछ बैठे, "शायद आपको संगीत का शौक है।"

तीन कौड़ी बाबू ने आश्चर्य मे आकर हंसते हुए कहा, "यह बात तुम्हे कैसे मालूम हुई ?"

"आप जब बातचीत कर रहे थे तो मैंने देखा, लाठी पर रखी हुई आपके दाहिने हाथ की तर्जनी रेडियो के गीत पर ताल दे रही है।"

राजेन बाबू ने हसते हुए कहा, "तुमने बिलकुल सही बात कही है। आप बहुत अच्छा श्यामा संगीत गाते हैं।"

फेलूदा ने कहा, "वह पत्र आपके पास है ?"

राजेन बाबू ने कहा, "हा।"

राजेन बाबू ने कोट की बुक पॉकेट से पत्र निकाल कर फेलूदा को

दिया। अब उसे देखने का मौका मिला।

यह हाथ से लिखा हुआ पत्र नहीं है। अलग-अलग स्थानों में छपे बंगला के शब्दों को काटकर गोंद से जोड़कर पत्र लिखा गया है। जो कुछ लिखा है, वह यह है : 'अपने अन्याय के लिए सजा भोगने के लिए तैयार रहो।'

फेलूदा ने पूछा, "यह पत्र क्या डाक से आया है?"

राजेन बाबू ने कहा, "हां। लोकल डाक से। दुःख की बात यही है कि लिफाफे को मैंने फेंक दिया। उस पर दार्जिलिंग का ही पोस्टमार्क था। पता भी छपे बंगला के शब्दों को काट-काटकर लिखा गया था।"

"आपको किसी पर सन्देह होता है?"

"क्या कहूं! याद नहीं आता है कि कभी मैंने किसी के साथ अन्याय या अत्याचार किया हो।"

"जो लोग आपके घर पर आते-जाते हों, उनका नाम बता सकते हैं?"

"बहुत ही आसान काम है। मैं लोगों से बहुत ही कम मिलता-जुलता हूं। जब कभी मेरी तबियत खराब होती है, डॉक्टर फणि मित्र आया करते हैं।..."

"वे किस तरह के आदमी हैं?"

"डॉक्टर के लिहाज से संभवतः साधारण कोटि का। मगर इससे मेरा कुछ आता-जाता नहीं है, क्योंकि मेरी बीमारी भी साधारण कोटि की है—जब से मैं दार्जिलिंग आया हूं, जुकाम या बुखार के अलावा मुझे कुछ भी न हुआ है।"

"चिकित्सा करने पर आपसे पैसा लेते हैं?"

"लेते हैं। इसके अलावा मुझे पैसे की कोई कमी नहीं है। व्यर्थ ही अहसान क्यों लूं?"

"और कौन-कौन आते हैं?"

"आजकल घोषाल नामक एक व्यक्ति आते जाते हैं...यह देखो।"

"मैंने दरवाजे की ओर मुड़कर देखा। गोरे रंग मझले कद का एक आदमी सूट पहने, मुसकराते हुए कमरे के अन्दर आ रहे थे।"

"लगा, मेरे नाम की चर्चा की जा रही है।"

राजेन बाबू बोले, "अभी-अभी आपका नाम लिया गया है। आपको भी मेरे जैसा ही पुरानी वस्तुओं का शौक है, यही बात मैं इस नौजवान से कहने जा रहा था। आपसे परिचय करा दूं..."

नमस्कार वगैरह के बाद मिस्टर घोषाल—पूरा नाम अवनी मोहन घोषाल—राजेन बाबू से बोले, "आपको आज दुकान पर नहीं देखा, इस-

लिए सोचा, एकबार मिल लूं।"

राजेन बाबू ने कहा, "आज तबियत ठीक नही थी।"

यह बात मैं समझ गया कि राजेनबाबू मिस्टर घोषाल से पत्र की बाबत कुछ कहना नही चाहते हैं। मिस्टर घोषाल के आते ही फेलूदा ने पत्र को हथेली में छिपा लिया था।

घोषाल बोले, "आप अगर व्यस्त···दरअसल आपके तिब्बती घंटे को एक बार मैं देखना चाहता था।"

राजेन बाबू बोले, "यह तो आसान काम हैं। मेरे निकट ही है।"

राजेन बाबू घंटा लाने के लिए बगल के कमरे मे चले गए।

फेलूदा ने घोषाल से पूछा, "आप क्या यही रहते हैं?"

वे दीवार से एक फरसा उतार कर उसे देखते हुए बोले, "मैं किसी जगह मे ज्यादा दिनो तक नही रहता हूं। अपने कारोबार के चलते मुझे बहुत ही घूमना पड़ता है। मैं क्यूरिओ का संग्रह करता हूं।"

घर लौटने के समय फेलूदा से पूछने पर पता चला था कि 'क्यूरिओ' का अर्थ है—दुष्प्राप्य पुरानी वस्तुएं।

राजेन बाबू घंटे को लेकर आए। देखने मे वह एक अजीब जैसी वस्तु लग रही थी। उसके नीचे का हिस्सा चांदी का बना था, हत्था तांबे और पीतल को मिलाकर बनाया गया था और ऊपरी हिस्से मे लाल नील पत्थर जड़े थे।

अवनी बाबू ने अपनी आंखों को सिकोड़कर घंटे को इधर-उधर घुमाकर बहुत देर तक देखा।

राजेन बाबू ने पूछा, "किस तरह का मालूम हो रहा है?"

"सचमुच आपने बाजी मार ली है। एकदम पुरानी वस्तु है।"

"आप जब कि कह रहे हैं, मेरे मन मे किसी भी तरह का संदेह न रहा। दुकानदार का कहना है कि यह बिलकुल लामा के प्रासाद की वस्तु है।"

"इसमे आश्चर्य की कोई गुंजाइश नही है।···शायद आप इसे अपने आप से अलग नही करना चाहते हैं। यानी अच्छी कीमत मिलने पर भी?"

राजेन बाबू ने मुसकराकर अपनी गरदन मोड़ी और कहा, "जानते हैं, बात क्या है? शौक की चीज है। इसके प्रति प्रेम हो गया है। उसे बेचकर लाभ मे रहूं, या कह सकते हैं कि किसी भी कीमत पर बेचने के लिए तैयार होऊं, मेरी ऐसी इच्छा नही है।"

अवनी बाबू ने घंटे को लौटाते हुए कहा, "चलूं। आशा है, आप कल बाहर निकलिएगा।"

राजेन बाबू ने कहा, "इच्छा तो है।"

अवनी बाबू के चले जाने के बाद फेलूदा ने राजेन बाबू से कहा, "कुछ दिनों तक बाहर मत निकला करें और सावधानी से रहा करें।"

"तुम ठीक ही कह रहे हो। लेकिन जानते हो, कठिनाई क्या है। उस पत्र की बातें इतनी अविश्वसनीय है कि इसे सिरियसली नहीं ले पा रहा हूं। लगता है, यह कोई मजाक है—जिसे प्रैक्टिकल जोक कहा जाता है।"

"जितने दिनों तक इसके बारे में निश्चित नहीं हो जाते हैं, घर पर ही रहें। आपका नेपाली नौकर कितने दिनों से आपके साथ है ?"

"शुरू से ही है। बिलकुल विश्वसनीय है।"

फेलूदा ने तीन कौड़ी बाबू की ओर मुड़कर कहा, "आप ज्यादातर घर पर ही रहा करते हैं।"

"सुबह-शाम जरा इधर-उधर टहलकर वापस चला आता हूं—बस इतना ही। मगर विपत्ति अगर आ भी जाए तो मैं बूढ़ा आदमी ज्यादा से ज्यादा क्या कर सकता हू, मैं चौठस बरसों का हूं। राजेन बाबू से एक वर्ष छोटा।"

राजेन बाबू बोले, "वे आबोहवा बदलने के खयाल से आए हैं। उन्हें घर में बन्दी बनाकर रखने की साजिश तुम लोग क्यों कर रहे हो ? मैं रहूंगा, मेरा नौकर रहेगा, इतना ही काफी है। अगर तुम लोग चाहो तो सुबह-शाम पता लगाते रहना।"

"ठीक है, वैसा ही करेंगे।"

फेलूदा की देखा देखी मैं भी उठकर खड़ा हो गया।

हम लोग जहां बैठे थे, उसकी विपरीत दिशा में एक फायर प्लेस था। फायरप्लेस के ऊपर एक आला था और आले के ऊपर फ्रेमों में मढ़ी तीन तसवीरें थीं। फेलूदा उसी तरफ चले गए।

पहली तसवीर को दिखाते हुए राजेन बाबू बोले, "आप मेरी पत्नी हैं। विवाह होने के चार वर्ष बाद ही इनकी मृत्यु हो गई थी।"

दूसरी तसवीर मेरे हम उम्र एक बालक की थी। उसके बदन पर वेलवेट का कोट था। ·

फेलूदा ने पूछा, "यह किसकी तसवीर है ?"

राजेन बाबू ने कहकहा लगाते हुए कहा, "समय के प्रभाव से मनुष्य के चेहरे पर किस तरह का अजीब परिवर्तन आ सकता है, उसे समझाने के लिए यह तसवीर है। यह मेरे ही बचपन का संस्करण है। उन दिनों मैं बाकुड़ा के मिशन स्कूल में पढ़ता था। मेरे पिता बाकुड़ा में मैजिस्ट्रेट थे।"

सचमुच राजेन बाबू का बचपन में खासा खूबसूरत चेहरा था।

"इतना जरूर है कि तसवीर देखकर भुलावे में मत आना। शैतान लड़के के नाम से तब मेरी बदनामी फैली हुई थी। न केवल शिक्षकों को, बल्कि छात्रों को भी मैं परेशान किया करता था। एक बार खेल-कूद के दिन सौ गज की दौड़ मे सबसे अच्छे रनर को लगड़ी मारकर गिरा दिया था।"

तीसरी तसवीर फेलूदा के हम उम्र एक युवक की है। राजेन बाबू ने बताया, वह उनके एकलौते बेटे प्रवीण की तसवीर है।

"अभी वे कहां रह रहे हैं ?"

राजेन बाबू ने गले को खखार कर कहा, "ठीक-ठीक मालूम नही।" बहुत दिनो से देश के बाहर रह रहा है। लगभग सोलह बरसो से।"

"आपसे पत्राचार नही करते हैं ?"

"नही।"

फेलूदा ने दरवाज़े की ओर बढते हुए कहा, "बड़ा ही इटरेस्टिंग केस है।"

मैंने मन ही मन कहा, फेलूदा बिलकुल डिटेकटिव की तरह बातें कर रहा है।

बाहर गहरा अधेरा रेंग रहा है। जलापहाड पर स्थिति मकानो में बत्तिया जल रही हैं। मैंने पहाड के नीचे की ओर देखा। रंगीन उपत्यका से कोहरा ऊपर की ओर उठ रहा है।"

राजेन बाबू और तीन कौड़ी बाबू हम लोगो के साथ फाटक तक आए। राजेन बाबू ने धीमें स्वर में फेलूदा से कहा, "तुम बच्चे हो, फिर भी तुमसे कह रहा हू। मैं बिलकुल नर्वस नही हू, ऐसा कहना ठीक नही होगा। इतने शातिपूर्ण परिवेश मे यह पत्र जैसे बिना मेघ का वज्रपात है।"

फेलूदा ने ज़ोर से कहा, "आप चिन्ता मत करें। मैं इसका निदान ढूंढ निकालूगा। आप निश्चिन्तता के साथ आराम करें।"

राजेन बाबू 'गुड नाइड एंड थैंक यू' कहकर चले गए।

अब तीन कौड़ी बाबू ने फेलूदा से कहा, "तुम्हारी—तुम्हें मैं तुम कह कर ही सम्बोधित कर रहा हूं—तुम्हारी आॅबजरवेशन की सामर्थ्य देखकर मैं सचमुच ही इम्प्रेस्ड हुआ हू। मैंने भी बहुत सी जासूसी पुस्तकें पढी हैं। इस पत्र के मामले मे हो सकता है, में तुम्हे थोड़ी बहुत मदद कर सकू।"

"सच ?"

"छपे हुए कागज के टुकडों को काट-काटकर यह जो पत्र लिखा गया है, इससे कौन-सी बात समझ मे आती है ?"

फेलूदा कुछ देर तक सोचता रहा, फिर बोला, "नम्बर एक—कागजों

को संभवतः ब्लेड से काटा गया है, कैंची से नहीं।"

"वेरी गुड।"

"नम्बर दो—शब्दों को बहुत तरह की किताबों से लिया गया है, क्योंकि हरूफों और कागजों में अन्तर है।"

"वेरी गुड। उन पुस्तकों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?"

पत्र के दो शब्द—'सजा' और 'तैयार' लगता है अखबार से काटे गए हैं।"

"आनन्द बाजार से"

"यह बात है ?"

"येस। वैसा टाइप 'आनन्द बाजार' में ही उपयोग में लाया जाता है। और बाकी शब्दों में से एक भी शब्द किसी प्राचीन पुस्तक से नहीं लिया गया है, क्योंकि जिन हरूफों में वे छपे हैं, वे पन्द्रह-बीस बरसों के ही हैं।··· जिस गोंद से चिपकाया गया है, उसके बारे में तुम्हारी क्या धारणा है ?"

"उसकी गंध ग्रिपेक्स गोंद की तरह है।"

"बिलकुल सही पता लगाया है।"

"लेकिन पता लगाने के मामले में आप मुझसे कोई पीछे नहीं हैं।"

तीन कौड़ी बाबू ने हंसते हुए कहा, "मगर मैं जब तुम्हारी उम्र का था तब डिटेक्टिव शब्द का अर्थ जानता था या नहीं, इस पर मुझे संदेह है।"

घर लौटते वक्त फेलूदा ने कहा, "यह मैं नहीं जानता हूं कि राजेन बाबू के रहस्य के उद्घाटन में सफल हो पाऊंगा या नहीं। लेकिन इस सिल-सिले में तीन कौड़ी बाबू से परिचित होने का मौका मिल गया।

मैंने कहा, "फिर वही इस मामले की खोज-पड़ताल क्यों नहीं करते ? तुम नाहक ही सर खपा रहे हो ?"

"अहा, बगल के हरूफों की बातें जानने से ही क्या तमाम बातें जान लेंगे ?"

फेलूदा की बातें सुनने में अच्छी ही लगी। जैसी उनकी बुद्धि है, वैसी बुद्धि तीन कौड़ी बाबू की नहीं है। बीच-बीच में तीन कौड़ी बाबू भले ही सहायता करें, किन्तु असली काम फेलूदा ही करेगा।

"अपराधी कौन है, फेलूदा ?"

"अपरा···"

फेलूदा 'अपराधी' शब्द उच्चारण करते-करते बीच ही में रुक गया। देखा, उनकी दृष्टि एक व्यक्ति का पीछा कर रही है।

"उस आदमी को देखा ?"

"कहां ! चेहरा देख नहीं सका।"

"लैम्प की रोशनी पडी और लगा"···फेलूदा फिर कहते-कहते रुक गए।"

"तुम्हारी समझ में क्या आया फेलूदा ?"

"शायद यह मेरी आंखो का भ्रम है। चलो, जल्दी-जल्दी चलो, भूख लगी है।"

फेलूदा मेरा मौसेरा भाई है। पिताजी के साथ वह और मैं दार्जिलिंग घूमने-फिरने के खयाल से आए हैं और शहर के निचले हिस्से में सैनटोरियम में ठहरे हैं। सैनटोरियम बंगालियों से भरा है। पिताजी वहा हम उम्र मित्रों को जुटाकर ताश खेलने और गपशप करने मे समय व्यतीत करते हैं। फेलूदा और मैं कहां जाते हैं, क्या करते हैं, इस बात पर पिताजी माथापच्ची नही करते।

आज सवेरे सोकर उठने मे मुझे थोडी देर हो गई। उठने पर देखा, पिताजी तो हैं मगर फेलूदा का बिस्तर खाली पड़ा है। क्या बात है ?

पिताजी से पूछा तो उन्होंने कहा, "वह जब से यहां आया है, कंचनजंघा देखने नही गया है। आज खुला हुआ दिन देखकर संभवतः तड़के ही निकल गया है।"

मैंने मन-ही-मन अन्दाज लगाया था कि फेलूदा ने जाच-पड़ताल का काम शुरू कर दिया है। यह सोचते ही मुझे गुस्सा हो आया। बात ऐसी हुई थी कि फेलूदा मुझे नजर अन्दाज कर कोई काम नही करेगा।

बहरहाल मैंने भी मुह-हाथ धोकर चाय पी और बाहर निकल गया।

लेडेनला रोड में टैक्सी के पडाव के पास पहुंचने पर फेलूदा से मुलाकात हो गई। मैंने कहा, "वाह जी वाह, तुम मुझे छोड़कर चले आये।"

"बदन टूट रहा था, इसीलिए डॉक्टर के पास गया था।"

"फणि डॉक्टर के पास ?"

"देख रहा हू, तेरी भी बुद्धि इन दिनो जोर मार रही है।"

"दिखा चुके।"

"विजिट करने का चार रुपया लिया और दवा का नाम लिख दिया है।"

"अच्छे डॉक्टर हैं ?"

"बीमारी नही है, फिर भी जाच करके दवा दी है। अब समझ सकते हो कि कैसा डॉक्टर है उसके बाद उनके मकान की जो हालत देखी, उससे

यह नहीं लगा कि उसके पास ज्यादा पैसा है।"

"फिर चिट्ठी उन्होंने नहीं लिखी है।"

"क्यों ?"

"गरीबों मे क्या इतनी हिम्मत हो सकती है ?"

"रुपयों की जरूरत पड़ने पर हो जाती है।"

"मगर चिट्ठी में रुपयों की माँग नहीं की गई है।"

"उस तरह खुलासा तौर पर कोई रुपये की मांग करता है ?"

"फिर ?"

"राजेन बाबू की हालत कल कैसी मालूम हुई ?"

"लगा डरपोक जैसे हैं।"

"डरने से मन की बीमारी हो सकती है, इस बात का पता है ?"

"हो ही सकती है।"

"और मन की बीमारी से शरीर की बीमारी ?"

"वह भी शायद होती है।"

"येस। और शरीर अस्वस्थ होने से डॉक्टर बुलाना होगा, यह बात तेरे जैसा बेवकूफ भी समझ सकता है।"

फेलूदा की बुद्धि देखकर मेरी सांस जैसे बन्द हो गई। अगर फणि डॉक्टर ने इतना सोच समझकर पत्र लिखा हो तो उसकी बुद्धि की दाद देनी चाहिए।

माल की ओर जाते हुए जब हम फव्वारे के आस-पास पहुंचे तो फेलूदा ने कहा, "क्युरियों के सम्बन्ध में एक तरह की क्युरिओसिटी हो रही है।"

'क्युरिओ' का अर्थ मैं पहले ही सीख चुका था और 'क्युरिओसिटी' का अर्थ जो कौतूहल होता है, यह स्कूल मे ही सीख चुका था।

हम लोगों के ठीक सामने ही नेपाल क्युरिओ शॉप है। राजेन बाबू और अवनी बाबू यहीं आया करते हैं।

फेलूदा सीधे अन्दर घुस गया।

दुकानदार सलेटी रंग का कोट पहने था। उसके गले में मफलर था और माथे पर सुनहली नक्काशी की टोपी। फेलूदा को देखकर वह मुसकराता हुआ सामने आया। दुकान का अंदरूनी हिस्सा पुरानी वस्तुओं से खचाखच भरा है।

वहां रोशनी नहीं है और एक सड़ी जैसी बदबू निकल रही है।

फेलूदा ने चारों ओर निगाह दौड़ाते हुए गम्भीर स्वर मे कहा, "पुराना उम्दा किस्म का थांका है ?"

"बगल के कमरे मे आइए। तमाम अच्छी चीजें बिक चुकी हैं। तब

हां, कुछ नया माल आने वाला है।"

बगल के कमरे मे जाते समय मैंने फेलूदा के कान के पास मुह सटाकर पूछा, *"थांका किस चीज को कहते हैं ?"*

फेलूदा ने दांत पीसते हुए कहा, "देखोगे ही।"

"बगल का कमरा और भी छोटा है—जिसको झुग्गी कह सकते हैं।"

दुकानदार ने दीवार पर झूलती हुई रेशमी कपडे के ऊपर कढ़ी बुद्ध की एक तस्वीर को दिखाते हुए कहा, "बस, यही एक अच्छी चीज़ है। तब हां, ज़रा डेमेज्ड है।"

इसी को थाका कहते हैं ? यह चीज़ तो राजेन बाबू के घर में काफी तादाद मे है।

फेलूदा ने एक जानकार की तरह थाका को गौर से देखते हुए ऊपर से नीचे की ओर तीन बार अपनी आंखें दौडाई और उसके बाद कहा, "इसकी उम्र सत्तर साल से ज्यादा मालूम नही होती है। मैं कम-से-कम तीन सौ साल पुरानी चीज़ चाहता हूं।"

दुकानदार ने कहा, "आज तीसरे पहर हमारा एक पेटी माल आ रहा है। उसमे बेहतरीन थाका मिलेगा।"

"आज ही आ रहा है ?"

"हां, आज ही।"

"यह समाचार फिर राजेन बाबू को जनाना चाहिए।"

"मिस्टर मजुमदार को ? उन्हें मालूम है ही। मेरे जो दो-चार नियमित ग्राहक हैं, वे लोग सभी देखने के लिए तीसरे पहर आ रहे हैं।"

"अवनी बाबू को भी सूचना मिल गई है ? मिस्टर घोषाल को ?"

"हां।"

"आपके और कौन-कौन बडे ग्राहक हैं ?"

"और हैं मिस्टर गिलमोर—चाय के बगीचे के मैनेजर। सप्ताह मे दो दिन चाय के बगीचे से आते हैं। इसके अलावा मिस्टर नौलखा है। फिलहाल वे सिक्कम मे है।"

"और कोई दूसरा बगाली ?"

"नही सर।"

"अच्छा, देखू, अगर तीसरे पहर आ सका।"

"उसके बाद मेरी ओर मुड़कर बोला, "तोपसा, तुझे एक मुखौटा चाहिए न ?"

हालांकि मेरा असली नाम तोपसा नही है, फिर भी फेलूदा ने तपेश से यही नाम बना लिया है।

मुखौटे का लोभ क्या संभाला जा सकता है ? फेलूदा ने स्वयं चुनकर मेरे लिए एक अदद खरीद दिया और कहा, "यही सबसे ज्यादा हरेनडस है। कहो ठीक कह रहा हूं न ?"

फेलूदा का कहना है कि 'हरेनडस' नामक कोई शब्द नहीं है। 'ट्रिमन्डस' का अर्थ होता है--भीषण और हॉरिबल् का बीभत्स। इन दोनों शब्दों को एक साथ समझने के लिए कोई-कोई 'हरेनडस' शब्द का उपयोग करते हैं। मुखौटे के सम्बन्ध मे यह शब्द बिलकुल सही उतरता है, इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नही।

दुकान से निकलने के बाद फेलूदा मेरा हाथ थामे कुछ कहने जा रहा था मगर वह एकाएक चुप हो गया। इस बार भी मैंने फेलूदा को एक व्यक्ति की ओर ताकते हुए पाया। शायद कल रात फेलूदा जिस आदमी को देख रहा था, वही आदमी है। उसकी उम्र मेरे पिता के बराबर होगी, यानी चालीस-बयालीस। रंग गोरा है और आखों पर काला चश्मा। वह जो सूट पहने है, देखने पर वह कीमती मालूम होता है। माल के बीच खड़ा होकर वह पाइप सुलगा रहा था। देखने पर वह पहचाना-पहचाना जैसा लगा, मगर मैंने उसे कहां देखा है, ठीक-ठीक समझ मे नही आया।

फेलूदा सीधे उस आदमी की ओर चला गया और उसकी बगल में खड़ा होकर निखालिस साहबी तरीके से उच्चारण करता हुआ बोला, "एक्सक्यूज मी, आप मिस्टर चैटर्जी हैं ?"

उस आदमी ने पाइप को अपने दांत से काटते हुए गम्भीर स्वर मे कहा, "नो, आइ ऐम नॉट।"[1]

फेलूदा ने अवाक् होने का बहाना करते हुए कहा, "स्ट्रेंज ! आप सेंट्रल होटल में ठहरे हुए हैं न ?"

उस आदमी ने तनिक मुसकराकर अवज्ञा के स्वर में कहा, "नही। माउन्ट एवरेस्ट में ठहरा हूं। ऐंड आर डोंट हैव ए ट्विन ब्रदर।"[2]

यह कहकर वह आदमी तेज कदमों से ऑबजरवेटरी हिल की ओर चला गया। जाने के वक्त देखा, उसके पास भूरे कागज में मुड़ा हुआ एक पैकेट है और कागज पर लिखा है : 'नेपाल क्युरिओ शॉप'।

मैंने धीमे स्वर मे कहा, "फेलूदा उन्होने भी मुखौटा खरीदा है क्या ?"

"खरीद सकते हैं। मुखौटे पर हमारा कोई एकाधिकार नही है।··· चल, कैवेंटर्स में जाकर कॉफी पी आएं।"

---

1. मैं नही हूं।
2. मेरे कोई जुड़वा भाई नही है।

कैवेंटर्स की ओर जाते-जाते फेलूदा ने कहा, "इस आदमी को तू पहचान रहा है ?"

मैंने कहा, "जब तुम्हीने न पहचाना तो मैं कैसे पहचानूं ?" तब हां, पहचाना-पहचाना जैसा लग रहा था।"

"मैंने नहीं पहचाना ?"

"वाह-जी-वाह। कहां पहचान सके ? तुमने उनका नाम गलत बताया।"

"काश, तुझ में थोड़ी-सी भी अक्ल होती ! गलत नाम इसलिए बताया था कि होटल का नाम मालूम हो जाए। यह बात भी तेरी समझ में नहीं आयी ? उस आदमी का असली नाम क्या है, जानते हो ?"

"क्या ?"

"प्रवीण मजुमदार।"

"ओ हां-हां ! तुमने ठीक-ही कहा है। राजेन बाबू का लड़का है न ? जिसकी तसवीर आले पर है ? इतनी बात जरूर है कि उम्र अब काफी बढ़ चुकी है।"

सिर्फ चेहरा ही नहीं मिलता है—तूने उसके गाल पर के मासे को अवश्य ही देखा होगा। असली बात है कि उसके कपड़े-लत्ते विलायती हैं। सूट लंदन का है, टाई पेरिस की, जूता इटली का—यहां तक कि रूमाल भी विलायती है। अभी-अभी विलायत से लौटा है, इसमें कोई सन्देह नहीं।"

"मगर राजेन बाबू को यह पता नहीं है कि उनका लड़का यहां है ?"

"बाप यहां है—यह बात लड़के को मालूम है कि नहीं, इसका पता लगाना जरूरी है।"

रहस्य, आहिस्ता-आहिस्ता घना होता जा रहा है, यह सोचता हुआ मैं कैवेंटर्स पहुंचा।

कैवेंटर्स की छत पर बैठने की जो जगह है, वह मुझे बहुत ही अच्छी लगती है। चारों ओर दार्जिलिंग शहर और उसके नीचे बाजार बहुत ही खूबसूरत दीखते हैं।

छत पर जाने के बाद देखा, हाथ में चुरुट थामे तीन कौड़ी बाबू कोने की मेज पर बैठे हैं और कॉफी पी रहे हैं। फेलूदा पर नजर पड़ते ही उन्होंने हाथ से इशारा कर हमें अपनी मेज पर बुला लिया।

हम लोग तीन कौड़ी बाबू की दोनों ओर टीन की कुरसियों पर बैठ गए।

तीन कौड़ी बाबू ने फेलूदा से कहा, "जासूसी में तुम्हारी दक्षता देखकर

मैं बड़ा ही खुश हूं। मैं तुम दोनों को हॉट चॉकलेट खिलाऊंगा। कहो, आपत्ति तो नहीं है न ?"

हॉट चॉकलेट का नाम सुनते ही मेरी जीभ से लार टपकने लगी।

तीन कौड़ी बाबू ने चुटकी बजा कर बेयरा को पुकारा।

बेयरा जब ऑर्डर लेकर चला गया, तीन कौड़ी बाबू ने अपनी जेब से एक किताब निकालकर फेलूदा को दी और कहा, "लो। मेरे पास इसकी एक एक्सट्रा कॉपी थी। यह मेरी हाल की पुस्तक है। तुम्हें दे रहा हूं।"

पुस्तक की जिल्द पर नजर पड़ते ही फेलूदा के चेहरे पर आश्चर्य का भाव तैरने लगा।

"मेरी किताब का मतलब ? आपकी लिखी हुई किताब ? आप ही 'गुप्तचर' के नाम से लिखा करते हैं ?"

तीन कौड़ी बाबू अधमुंदी आंखों से मुसकरा दिए और अपना सिर हिलाकर उन्होंने हामी भरी।

फेलूदा के आश्चर्य का भाव और भी अधिक गहरा हो गया।

"यह बात है! आपके तमाम उपन्यास मैं पढ़ चुका हूं। बंगला में आपके उपन्यासों के अलावा किसी का भी जासूसी उपन्यास मुझे अच्छा नहीं लगता है।"

"थैंक यू, थैंक यू! जानते हो, बात क्या है ? दिमाग़ में एक प्लॉट लिए यहां लिखने के खयाल से ही आया था। अब देख रहा हू, यथार्थ जीवन के रहस्यों के पीछे ही माथा खपाते-खपाते समय निकल गया।"

"मेरा भाग्य सचमुच बहुत ही अच्छा है। आपसे इसी बहाने जान-पहचान हो गई।"

"दुःख की बात यही है कि मेरी छुट्टी की अवधि सचमुच बीतने वाला है। मैं कल सवेरे जा रहा हूं। आशा है, जाने के पहले तुम लोगों की थोड़ी-बहुत सहायता कर जाऊंगा।"

अब फेलूदा ने उत्तेजनापूर्ण समाचार तीन कौड़ी बाबू को बताया।

"आज राजेन बाबू के लड़के पर नजर पड़ी है।"

"क्या कह रहे हो जी ?"

"दस मिनट पहले की बात है।"

"ठीक कह रहे हो ? ठीक से पहचाना था न ?"

"मैं रुपये में चौदह आना तो श्योर हूं। माउंट एवरेस्ट होटल में जाकर पूछताछ करने पर बाकी दो आना भी पूरा हो जाएगा।"

तीन कौड़ी बाबू ने सहसा एक लम्बी सांस ली।

"राजेन बाबू से उनके लड़के के बारे में सुन चुके हो ?"

"कल जो कुछ बताया था, उससे ज्यादा नही ।"

"मैंने बहुत-कुछ सुना है । वह कम उम्र मे ही बुरे रास्ते पर चला गया था। बाप की सदूकची से रुपया चुराया था और पकड़ा गया था । राजेन बाबू ने उसे त्याज्य पुत्र घोषित कर दिया था और घर से निकल जाने को कहा था । इसीलिए वह चला भी गया था । उस समय उसकी उम्र चौबीस वर्ष रही होगी। बिलकुल लापता हो गया। राजेन बाबू ने बहुत खोज-पड़ताल की थी, क्योंकि बाद मे उन्हे पश्चाताप होने लगा था । लेकिन लड़के ने न कोई समाचार भेजा और न यही के बारे मे किसी प्रकार की खोज-खबर ली । राजेन बाबू के एक मित्र ने उसे विलायत मे देखा था। यह दस-बारह वर्ष पहले की बात है ।"

"तब क्या राजेन बाबू को यह पता नही है कि उनका लड़का यहां है ?"

"नही । मुझे लगता है कि उन्हें सूचना न देना ही अच्छा रहेगा । एक तो उस पत्र का धक्का और उस पर···"

तीन कौड़ी बाबू एकाएक चुप हो गए। उसके बाद फेलूदा की ओर मुड़कर बोले, "मेरी अक्ल गुम हो गई है । मुझे जासूसी उपन्यास लिखना बन्द कर देना चाहिए ।"

फेलूदा ने हसते हुए कहा, "कही आप यह तो नहीं सोच रहे हैं कि प्रवीण मजुमदार ने ही वह पत्र लिखा है ?"

"इग्ज़ैकटली । मगर···"

तीन कौड़ी बाबू अनमने जैसे हो गए ।

बेयरा ने ज्योंही हॉट चॉकलेट लाकर मेज पर रखा, तीन कौडी बाबू चौकन्ने हो उठे । फेलूदा की ओर मुड़कर बोले, "फणि मित्तिर कैसा आदमी मालूम हुआ ?"

फेलूदा ने अचकचा कर कहा, "आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं वहां गया था ।"

"तुम्हारे जाने के थोड़ी देर बाद मैं भी गया था ।"

"मुझे आपने रास्ते मे देखा होगा ?"

"नही ।"

"फिर ?"

डॉक्टर के कमरे के फर्श पर एक बुझा हुआ सिगरेट देखकर मैंने पूछा कि किसने पिया है । डॉक्टर धूम्रपान नही करते । तब फणि बाबू ने ब्योरा दिया । उससे तुम्हारे बारे मे खयाल हुआ, हालांकि मैंने तुम्हें कभी सिगरेट पीते नही देखा था । मगर अभी तुम्हारी उंगलियों मे पीला रंग देखकर समझ मे आया कि तुम सिगरेट पीते हो !"

फेलूदा ने तीन कौड़ी बाबू की बुद्धि की प्रशंसा करते हुए कहा, "आपको भी फणि मित्तिर पर पत्र के विषय में सन्देह हुआ था ?"

"क्यों नही होगा ? उसे देखकर उसके प्रति अश्रद्धा नहीं जगती है ?"

"जगती है। पता नही, राजेन बाबू उसे प्रश्रय क्यों देते हैं।"

"यह बात तुम्हें मालूम नही है ? दार्जिलिंग आने के कुछ दिनों के बाद राजेन बाबू का धर्म की ओर झुकाव हुआ। तब फणि बाबू ने ही उन्हें गुरु का पता बताया था। एक ही गुरु के शिष्य रहने के नाते उन दोनों में भाई-भाई का रिश्ता है।"

फेलूदा ने पूछा, "फणि मित्तिर से बातचीत करने के बाद आप किस नतीजे पर पहुचे ?"

"बातचीत करना तो बहाना मात्र था। असल में पुस्तकों की आलमारी को मैं सरसरी निगाह से देख रहा था।"

"इसलिए कि बंगल. उपन्यास है या नही ?"

"तुम ठीक ही कह रहे हो।"

"मैंने भी देखा है। नही के बरबर है। और जो हैं, वे बहुत ही पुराने हैं।"

"ठीक ही कह रहे हो।"

"लेकिन फणि डॉक्टर दूसरे आदमी की पुस्तक से भी शब्दों को काटकर पत्र तैयार कर सकता है।"

"ऐसा कर सकता है। तब हां,देखने पर वह आदमी बड़ा ही आलसी प्रतीत हुआ। इस काम के लिए वह इतनी कोशिशें करेगा, इस बात पर मुझे विश्वास नही हुआ।"

फेलूदा ने कहा, "अवनी घोषाल के बारे मे आपकी क्या धारणा है ?"

"मेरा विश्वास है कि वह सरल आदमी नही है। बाहरी तौर पर बड़ा ही चालाक है। और पुरानी कलाओं से उसे कोई मतलब नही है। उसका असली लालच है रुपये के प्रति। अभी वह पैसा खर्च कर चीजें खरीद रहा है, बाद में विदेशियों के हाथ में बेचकर पाच गुना लाभ कमाएगा।"

"आपको लगता है कि वह कोई धमकी भरा पत्र लिख सकता है ?"

"उस पर अभी मैंने गहराई से सोचा नही है।"

"मैंने एक कारण की खोज की है।"

मैंने अवाक् होकर फेलूदा की ओर देखा। उसकी आखों में एक चमक थी।

तीन कौड़ी बाबू ने पूछा, "कारण क्या हो सकता है ?"

फेलूदा ने धीमे स्वर में कहा, "जिस दुकान से वे लोग चीजें खरीदा

करते हैं, उसमे आज तीसरे पहर कुछ अच्छे और नए माल आ रहे हैं।"

अब तीन कौड़ी बाबू की आंखों में भी एक चमक तैरने लगी।

"समझ गया। धमकी भरा पत्र पाकर राजेन बाबू अपने मकान पर बंदी जैसे पड़े रहेंगे और इस बीच अवनी घोषाल दुकान में जाकर सब लूट-खसोट लेगा।"

"ईग्ज़ैक्टली।"

तीन कौड़ी बाबू चॉकलेट का पैसा चुका कर उठकर खड़े हो गए। हम दोनों भी उठकर खड़े हो गए।

उत्साह और उत्तेजना के कारण मेरी छाती धड़-धड़ कर रही थी। फिर अवनी घोषाल, प्रवीण मजुमदार और फणि मित्तिर—इन तीनों पर सदेह किया जा सकता है।

माउंट एवरेस्ट होटल में जाकर पन्द्रह मिनटों के अन्दर ही फेलूदा ने खबर का पता लगा लिया। प्रवीण मजुमदार नामक एक व्यक्ति पिछले पांच दिनो से उस होटल के सोलह नम्बर कमरे मे ठहरा हुआ है।

दोपहर में आकाश मे बादल छा गए और चार बजे ज़ोरो से बारिश होने लगी। आसमान की रंगत देखकर समझ में आ गया कि बारिश जल्दी थमने वाली नही है।

फेलूदा शाम को कॉपी-पेंसिल लेकर बैठ गए और किसी चीज का हिसाब लगाने लगे। मुझे जानने की बड़ी ही इच्छा हो रही थी, पर उससे पूछने का साहस न हुआ। अन्ततः मैं तीन कौड़ी बाबू की पुस्तक लेकर पढ़ने लगा। बड़ी ही रहस्य भरी रोमांचक कहानी है। पढ़ते-पढ़ते राजेन बाबू के पत्र से सम्बन्धित घटना मेरे ध्यान से उतर गई।

जब आठ बजे तो बारिश ने थमने का नाम लिया। किन्तु तब इतनी सरदी पड रही थी कि पिताजी ने हमे बाहर जाने नही दिया।

दूसरे दिन फेलूदा ने ठेल-ठेलकर मुझे नीद से जगाया, "उठ, उठ, ए तोपसा, उठ।"

मैं घड़फड़ा कर उठ बैठा। फेलूदा मेरे कानों से अपना मुह सटाकर दात पीसते हुए एक ही सांस मे कह गया, "राजेन बाबू का नेपाली नौकर आया था। कह गया कि उन्होंने मुझे अभी तरन्त बुलाया है। बहुत जरूरी काम है। तू अगर जाना चाहता है तो···"

यह भला कोई कहने की बात है!

जब हम पन्द्रह ही मिनटों मे राजेन बाबू के घर पर पहुंचे तो उन्हें बुझे हुए चेहरे मे खाट पर लेटे हुए पाया। फणि मजुमदार उनकी नब्ज टटोलते हुए खाट की बगल मे बैठे हैं और तीन कौड़ी बाबू ऐसी भयंकर

सरदी में भी पंखा झल रहे हैं।

फणि बाबू जब नाड़ी की परीक्षा कर चुके, राजेन बाबू ने तकलीफ के साथ एक लम्बी सांस ली और बोले, "कल रात, बारह बजने के थोड़ी देर बाद मेरी नींद खुल गई और बिजली की रोशनी में अपने चेहरे के ठीक सामने ही आइ सॉ ए मास्क्ड फेस।[1]"

मास्क्ड फेस! मुखौटा लगा चेहरा!

राजेन बाबू ने सास ली। देखा, फणि मित्तिर प्रेसक्रिपशन लिख रहा है।

राजेन बाबू बोले, "उस पर नजर पड़ने पर मैंने चिल्लाने की कोशिश की मगर मेरे गले से आवाज नहीं निकली।"

"आपकी कोई चीज चोरी हुई है?" फेलूदा ने पूछा।

राजेन बाबू बोले, "नहीं; तब हां, मेरा यह विश्वास है कि मेरे तकिये के नीचे से चाबियों का गुच्छा निकालने के लिए ही वह मेरी तरफ झुका था। मेरी नींद खुल जाने के कारण खिड़की से कूदकर...उफ् हॉरिबॅल्, हॉरिबॅल्!

फणि डॉक्टर ने कहा, "आप उत्तेजित मत होइए। मैं नींद की दवा दे रहा हूं। आपको कंपलीट रेस्ट की जरूरत है।"

फणि बाबू उठकर खड़े हो गए।

फेलूदा ने अचानक कहा, "फणि बाबू, कल रात आप रोगी देखने गए थे?" आपके कोट के पीछे कीचड के छीटे कैसे लग गए?"

फणि बाबू ने बिना घबराये कहा, "डॉक्टर का जीवन कैसा होता है, आप जानते ही हैं। दुखियों की सेवा के लिए जब अपना जीवन न्योछावर कर दिया है, पुकार जब कभी आए, निकलना ही होगा—चाहे आंधी हो या पानी बरसे या कि बर्फ ही गिरे।"

फणि बाबू अपनी फीस लेकर चले गए। राजेन बाबू अब सीधे होकर बैठ गए और बोले, "तुम लोगों के आ जाने से अपने आप को स्वस्थ महसूस कर रहा हूं। मैं बहुत ही घबरा गया था। अब हम बैठक में जाकर बैठ सकते हैं।"

फेलूदा और तीन कौड़ी बाबू राजेन बाबू के हाथ थामकर उन्हें बैठक में ले आए।

तीन कौड़ी बाबू ने कहा, "स्टेशन फोन किया था कि किसी तरह यह इन्तजाम हो जाए कि दो दिन बाद मैं रवाना हो सकूं। रहस्य का पर्दाफाश

---

1. मैंने एक मुखौटा लगा चेहरा देखा।

किए बगैर जाने की इच्छा नहीं हो रही है। लेकिन वहां से सूचना मिली कि अगर मैं इस टिकट को कैंसल कराता हूं तो दस दिनों के पहले बुकिंग नहीं मिलेगी।"

यह सुनकर मुझे अच्छा ही लगा। मैं चाहता था कि फेलूदा अकेले ही जासूसी का काम करे। तीन कौड़ी बाबू ने फेलूदा का काम पहले ही बहुत-कुछ आसान कर दिया था।

राजेन बाबू बोले, "बात थी कि मेरा नौकर पहरा देगा, मगम मैंने खुद कल दस बजे उसको छुट्टी दे दी थी। उसके घर पर उसका बाप बहुत ही बीमार है, उसकी हालत मरने-मरने पर है।"

फेलूदा ने पूछा, "मुखड़ा कैसा था, याद है ?"

राजेन बाबू बोले, "बिलकुल साधारण नेपाली मुखौटा था। दार्जिलिंग शहर ही में अगर तलाशा जाए तो कम से कम तीन-चार सौ मिल जाएंगे। मेरे इसी कमरे में उस तरह के पांच मुखौटे हैं। वो रहा।"

राजेन बाबू ने जिस मुखौटे की ओर इशारा किया, फेलूदा ने मुझे कल वही चीज़ खरीद दी थी।"

तीन कौड़ी बाबू ने अब तक ज्यादा बातें नहीं की थी। अब वे बोले, "मेरी राय में अब पुलिस को सूचना भेजनी चाहिए। सुरक्षा भी अब ज़रूरी हो गई है। कल जो कुछ घटित हो चुका है, उसे मज़ाक के तौर पर नहीं लिया जा सकता है। फेलू बाबू, तुम अपनी मरजी के मुताबिक खोज-पड़ताल जारी रख सकते हो। तुम्हें इसमें कोई अड़चन नहीं डालने जा रहा है। लेकिन मैं हर चीज़ पर गौर करने के बाद कह सकता हूं कि पुलिस की सहायता लेना ज़रूरी है। मैं बल्कि जा रहा हूं और जाकर डायरी लिखा आऊंगा। लगता नहीं है कि जाने से कोई खतरा है। मगर राजेन बाबू, आप अपने घटे को सावधानी से रखे रहिए।"

हम लोग जब उठने-उठने पर थे, फेलूदा ने राजेन बाबू से कहा, "तीन कौड़ी बाबू तो चले जा रहे हैं। इसका मानी यह कि आपका एक कमरा खाली होने जा रहा है। हम लोग अगर आज रात उस कमरे में आकर रहें तो आपको क्या कोई आपत्ति है ?"

राजेन बाबू ने कहा, "बिलकुल नहीं। आपत्ति क्या हो सकती है ? तुम मेरे अपने सगे जैसे हो। और सच कहने में हर्ज ही क्या, मैं जितना ही बूढ़ा होता जा रहा हू, मेरा साहस भी उसी अनुपात से कम होता जा रहा है। बचपन में जो शरारती होता है, बुढ़ापे में उसकी हिम्मत कम हो जाती है।"

तीन कौड़ी बाबू से फेलूदा ने कहा कि वह उन्हें छोड़ने के लिए स्टेशन

तक जाएगा।

लौटने के वक्त जब हम नेपाल क्युरिओ शॉप की बगल से जा रहे थे, तब हमारी आंखें दुकान के अन्दर गईं।

देखा, दो आदमी दुकान के अन्दर खड़े होकर माल देख रहे हैं और आपस मे बातचीत कर रहे है। देखकर लगा, वे दोनों एक-दूसरे से बहुत दिनों से परिचित हैं।

एक तो थे अवनी घोषाल और दूसरा व्यक्ति प्रवीण मजुमदार था।

मैंने फेलूदा की ओर ताका।

उसके चेहरे को देखकर ऐसा न लगा कि वह कोई आश्चर्यजनक चीज देख रहा हो।

हम साढे दस बजे तीन कौडी बाबू को 'गुडबाइ' कहने स्टेशन पहुंचे। वे हम लोगों के पहुचने के पांच मिनट बाद पहुचे। "चढाई पर चढ़ते-चढ़ते पांव दुखने लगे है, इसीलिए आहिस्ता-आहिस्ता चलकर आना पड़ा।" वास्तव मे वे कुछ लंगडा जैसे रहे थे।

नीले रंग के फर्स्ट क्लास के डिब्बे पर चढकर तीन कौड़ी बाबू ने अपना अटैचीकेस खाला और भूरे रग का एक पैकेट फेलूदा को दिया।

"इसे खरीदने मे थोड़ा वक्त लगा। राजेन बाबू क्युरिओ शॉप नहीं पहुंच सके थे, हालांकि कल सचमुच बहुत ही अच्छी चीजें आई थी। उनमें से एक मामूली जैसी चीज चुनकर मैं उनके लिए ले आया। तुम दोनो मेरी ओर से उनके प्रति शुभेच्छा प्रकट करना और उन्हें यह सामान दे देना।"

फेलूदा ने पैकेट को लेकर कहा, "आप अपना पता बगैर दिए यहां से जा रहे हैं। सोचा है, रहस्य का उद्घाटन हो जाए तो अपना सूचित करूं।"

तीन कोड़ी बाबू ने कहा, "मेरे प्रकाशक का पता मेरी पुस्तक पर लिखा है। उसकी मारफत भेजोगे तो मुझे मिल जाएगा। गुडलक।"

ट्रेन रवाना हो गई। फेलूदा ने मुझसे कहा, "अगर तीन कौड़ी बाबू ने विदेश मे जन्म लिया होता तो बहुत-बहुत नाम और पैसा कमाते। इतने सारे अच्छे उपन्यास बहुत ही कम लोगो ने लिखे हैं।"

फेलूदा राजेन बाबू से सम्बन्धित घटना को लेकर दिन भर अलग-अलग स्थानो का चक्कर काटते रहे। मैंने बहुत कहा, मगर वे मुझे अपने साथ नहीं ले गए। शाम के वक्त जब हम राजेन बाबू के घर की ओर जाने लगे तो मैंने फेलूदा से कहा, "कम से कम इतना तो बता दो कि तुम कहां-कहां से हो आए हो।"

"दो बार माउन्ट एवरेस्ट होटल", फेलूदा ने कहा, "एक बार फणि मित्तिर के घर से, एक बार नेपाल क्युरिओ शॉप से, एक बार लाइब्रेरी

और फिर कई स्थानों से हो आया हूं।"

"ओ।"

"तू और कुछ जानना चाहता है ?"

"अपराधी कौन मालूम हुआ ?"

"अब भी कहने का वक्त नही आया है।"

"किसी पर तुम्हें सन्देह हुआ है ?"

"अच्छा जासूस होने के लिए हर किसी पर सदेह किया जाता है।"

"हर किसी का मतलब ?"

"मसलन तुम पर !"

"मुझ पर ?"

"जिसके पास ऐसा मुखौटा है, वही सदेह का पात्र है—कोई भी आदमी हो सकता है।"

"फिर तुम्ही को कैसे बख्शा जा सकता है ?"

"बेकार की बक-बक मतकर।"

"वाहजी, वाह, तुमने तो मुझे शुरू में वह बताया ही नही कि तुम राजेन बाबू को पहचानते हो। इसका मानी यह हुआ कि तुम सत्य को छिपा रहे हो। और अगर तुम चाहो तो मेरा मुखौटा उपयोग मे ला सकते हो। वह तो तुम्हारी बगल मे ही है।"

"शॅट अप !"

"राजेन बाबू इस वक्त अच्छे दीखे। यह पूछने पर कि आप कैसे हैं, ये बोले, "दोपहर में काफी अच्छा महसूस कर रहा था। शाम ज्यों-ज्यो बढ़ती जा रही है, अशाति भी त्यों-त्यो बढ़ती जा रही है।"

फेलूदा ने तीन कौड़ी बाबू का दिया हुआ पैकेट राजेन बाबू को दे दिया। उसे खोलने के बाद बुद्ध देव का एक खासा खूबसूरत सिर बाहर निकल आया। उसे देखकर राजेन बाबू की आखें छलछला आयी। वे रुंधे स्वर मे बोले, "बहुत ही अच्छी चीज है ! बहुत ही अच्छी !"

फेलूदा ने पूछा, "पुलिस आई थी ?"

"मत पूछो। आकर बेहद जिरह कर गयी। यह नही जानता हूं कि कहा तक पता लगा पाएगी। तब हा, पहरा देने के लिए एक आदमी रहेगा। यही एक निश्चिन्तता की बात है। सच कहने मे हर्ज ही क्या, तुम दोनो न भी आते तो काम चल जाता।"

फेलूदा ने कहा, "सैनटोरियम मे बड़ा ही शोरगुल रहता है। यहां हो सकता है, आपके मामले पर शाति से सोचने का मौका मिले।"

राजेन बाबू ने हंसकर कहा, "मेरा नौकर बड़ी ही अच्छी रसोई पकता

है। आज मुर्गे का मांस बनाने को कहा है। सैनटोरियम में ऐसा खाना नहीं मिलेगा।"

हमारे ठहरने का कमरा हमें दिखाकर राजेन बाबू अपने कमरे में चले गए।

फेलूदा चट से खाट पर लेट गया। सिगरेट जलाकर शहतीर की ओर देखते हुए उसने धुएं की पांच गुंजलकें बनाईं।

उसके बाद वह कुछ देर तक अधमूंदी आंखों से ताकता रहा। फिर उसने चुप्पी तोड़ी, "फणि मित्तिर कल सचमुच रोगी देखने गए थे। कोर्ट-रोड पर एक पैसे वाला पंजाबी व्यापारी है। मैंने पता लगाया है। वे साढ़े ग्यारह बजे से साढ़े बारह बजे तक वहीं थे।"

"फिर फणि मित्तिर अपराधी नहीं है?"

फेलूदा ने मेरे सवाल का जवाब न देकर कहा, "सोलह बरसों तक इंग्लैंड में रहने के कारण प्रवीण मजुमदार बंगला भाषा करीब-करीब भूल चुका है।"

"फिर इस बात की सम्भावना नहीं है कि उसने पत्र भेजा हो।"

"और उसे पैसे की कोई कमी नहीं है। इसके अलावा दार्जिलिंग आकर उसने लेबंगे घुड़दौड़ में काफी पैसा कमाया है।"

मैं सांस रोके बैठा रहा। फेलूदा और कुछ कहना चाहता है, यह मैं समझ रहा था।

आधी पी हुई जलती सिगरेट को कैरम की गोटी की स्ट्राइक करने की तरह कमरे से बाहर दस हाथ की दूरी पर फेंककर, फेलूदा ने कहा, "आज चाय के बगीचे के गिलमोर साहब दार्जिलिंग आए हैं। प्लांटारस क्लब में जाकर मैं उनसे मिल आया हूं। लामा के प्रासाद का एक ही घंटा है और वह है गिलमोर साहब के पास। राजेन बाबू के पास जो है, वह नकली है। अवनी घोषाल को यह बात मालूम है।"

"फिर राजेन बाबू का घंटा वैसा मूल्यवान् नहीं है।"

"नहीं।···और कल रात एक पार्टी में वे प्रवीण मजुमदार के साथ रात नौ बजे से तीन बजे तक शराब पीते रहे और पीकर नशे में धुत्त हो गए थे।"

"ओ। और मुखौटा पहना हुआ आदमी बारह बजे के थोड़ी देर बाद ही आया था।"

"हां।"

"मेरी छाती का अन्दरूनी हिस्सा खाली-खाली जैसा महसूस हो रहा था।

मैंने कहा, "फिर ?"

फेलूदा ने कुछ भी न कहा। उसने एक लम्बी [सांस ली और खाट से उठकर खड़ा हो गया। उसकी भौंहो मे इतना बल पड़ सकता है, वह बात मैं जानता ही न था।

कुछ सेकेंडो तक चुपचाप खड़ा रहने के बाद उसने न जाने क्या सोचा और बैठक की ओर चल दिया। जाते वक्त मुझसे कह गया, "जरा अकेले रहना चाहता हू। डिस्टर्ब मत करना।"

अब मैं क्या करू ! वह जहा लेटा था, वही मैं बिस्तर पर लेट गया।

शाम होने को है ! कमरे की बत्ती जलाऊ, मन मे ऐसी इच्छा नहीं हुई। खुली हुई खिड़की से ऑबज़रवेटरी हिल की तरफ के मकानो की रोशनी दीख रही है। तीसरे पर माल में एक तरह का शोरगुल मचा रहता है। वह शोरगुल अब शांत होता जा रहा है। घोड़े की टाप सुनाई पड रही है। उसकी आवाज़ दूर से निकट आती है और फिर शात हो जाती है।

समय खिसकता जा रहा है। खिड़की से आती हुई शहर की रोशनी जैसे धुंधली होती जा रही है। अब कमरे मे और भी ज्यादा अंधेरा रेंग रहा है। लगता है, नीद आ रही है।

पलकें एक-दूसरे से करीब-करीब जुड गई हैं। तभी लगता है, कमरे के अन्दर कोई घुस रहा है।

मुझे इतना डर लगता है कि मैं उस ओर ताकना बन्द कर देता हूं, जिस ओर से वह आदमी घुस रहा है। सांसो को रोके मैं खिडकी की ओर *ताकने लगता हू।*

लेकिन वह आदमी मेरी ही ओर आकर मेरे सामने खड़ा हो जाता है।

मानो, खिड़की के बाहर फैले शहर को ढंककर अंधेरा मेरे सामने आकर खड़ा हो गया हो।

फिर वह अंधेरा जैसी चीज झुककर मेरी ओर बढ आती है। अब उसका चेहरा मेरे चेहरे *के सामने है—और उस चेहरे पर एक मुखौटा* है।

मैं ज्यो ही चिल्लाना चाहता हूं कि अंधेरे का वह शरीर अपने एक हाथ को ऊपर उठाकर अपने चेहरे से मुखौटे को उतार देता है। मुखौटा उतारते ही मेरी दृष्टि फेलूदा पर जाती है।

"क्यो जी, तू सो गया था ?"

"उफ···फेलूदा···तुम हो ?"

फेलूदा मेरी स्थिति का पता लगाकर एक कहकहा लगाने जा रहा था, परन्तु एकाएक उसका चेहरा गम्भीर हो गया। उसके बाद वह खाट की

बगल में बैठते हुए बोला, "राजेन बाबू के तमाम मुखौटों को पहनकर देखा था। तू इसे पहन कर तो देख।"

फेलूदा ने मुझे मुखौटा पहना दिया।

"कुछ अस्वाभाविक जैसा लग रहा है ?"

"नही। बस, मेरे लिए यह कुछ बड़ा है, इतना ही।"

"और कुछ भी नही ?"

"ज़रा···ज़रा गंध जैसी···"

"किस चीज़ की गंध ?"

"चुरुट की।"

फेलूदा ने मुखौटे को उतारकर कहा, "इग्जैकटली।"

मेरी छाती पुनः धड़कने लगी। मेरे मुंह से निकल गया, "ती—तीन कौड़ी बाबू ?"

फेलूदा ने एक निश्वास लेकर कहा, "सबसे ज्यादा मौका उन्हें ही था। बंगला उपन्यास, अखबार, ब्लेड, गोंद—किसी चीज़ की कमी नही थी। और तूने जरूर ही ध्यान दिया होगा कि आज वे स्टेशन पर लंगड़ा रहे थे। शायद कल खिड़की से बाहर कूदने के कारण ही वैसा कर रहे थे। मगर जो असली रहस्य है, वह यह कि इसका क्या कारण हो सकता है ? राजेन बाबू उनका काफी सम्मान करते थे। फिर किस वजह से, किस उद्देश्य से, उन्होने यह पत्र लिखा था ? शायद इसका उत्तर अब नही मिलेगा···कभी नही।"

रात में कोई दुर्घटना नही हुई।

सवेरे हम भोजन-कक्ष में राजेन बाबू के साथ चाय पी रहे थे। तभी नेपाली नौकर एक पत्र लेकर आया। इस बार भी वही नीले रंग का कागज़ था और लिफाफे पर दार्जिलिंग के डाकघर की मुहर।

राजेन बाबू ने उदास चेहरे और कांपते हाथों से पत्र को खोला और फेलूदा के हाथ मे थमाकर बोले, "तुम्हीं पढ़ो। मुझे हिम्मत नही हो रही हूं।"

फेलूदा उस पत्र को लेकर ज़ोर-ज़ोर से पढने लगा :

प्रिय राजू,

कलकत्ते मे ज्ञानेश से तुम्हारे मकान की खबर पाकर जब मैंने तुम्हें पत्र लिखा था, उस वक्त मैं नही जानता था कि दरअसल तुम कौन हो। तुम्हारे घर पर आने के बाद जब तुम्हारे बचपन की तसवीर पर मेरी नज़र पड़ी

मैंने कहा, "फिर ?"

फेलूदा ने कुछ भी न कहा। उसने एक लम्बी सांस ली और खाट से उठकर खड़ा हो गया। उसकी भौंहों मे इतना बल पड़ सकता है, वह बात मैं जानता ही न था।

कुछ सेकेंडो तक चुपचाप खड़ा रहने के बाद उसने न जाने क्या सोचा और बैठक की ओर चल दिया। जाते वक्त मुझसे कह गया, "ज़रा अकेले रहना चाहता हू। डिस्टर्ब मत करना।"

अब मैं क्या करूं! वह जहां लेटा था, वही मैं बिस्तर पर लेट गया।

शाम होने को है! कमरे की बत्ती जलाऊं, मन में ऐसी इच्छा नही हुई। खुली हुई खिड़की से ऑब्ज़रवेटरी हिल की तरफ के मकानो की रोशनी दीख रही है। तीसरे पहर माल में एक तरह का शोरगुल मचा रहता है। वह शोरगुल अब शांत होता जा रहा है। घोड़े की टाप सुनाई पड़ रही है। उसकी आवाज़ दूर से निकट आती है और फिर शात हो जाती है।

समय खिसकता जा रहा है। खिड़की से आती हुई शहर की रोशनी जैसे धुंधली होती जा रही है। अब कमरे मे और भी ज्यादा अंधेरा रेंग रहा है। लगता है, नीद आ रही है।

पलकें एक-दूसरे से करीब-करीब जुड़ गई हैं। तभी लगता है, कमरे के अन्दर कोई घुस रहा है।

मुझे इतना डर लगता है कि मैं उस ओर ताकना बन्द कर देता हूं, जिस ओर से वह आदमी घुस रहा है। सांसो को रोके मैं खिड़की की ओर ताकने लगता हू।

लेकिन वह आदमी मेरी ही ओर आकर मेरे सामने खड़ा हो जाता है।

मानो, खिड़की के बाहर फैले शहर को ढंककर अंधेरा मेरे सामने आकर खड़ा हो गया हो।

फिर वह अंधेरा जैसी चीज़ झुककर मेरी ओर बढ आती है। अब उसका चेहरा मेरे चेहरे के सामने है—और उस चेहरे पर एक मुखौटा है।

मैं ज्यों ही चिल्लाना चाहता हूं कि अंधेरे का वह शरीर अपने एक हाथ को ऊपर उठाकर अपने चेहरे से मुखौटे को उतार देता है। मुखौटा उतारते ही मेरी दृष्टि फेलूदा पर जाती है।

"क्यों जी, तू सो गया था ?"

"उफ···फेलूदा···तुम हो ?"

फेलूदा मेरी स्थिति का पता लगाकर एक कहकहा लगाने जा रहा था, परन्तु एकाएक उसका चेहरा गम्भीर हो गया। उसके बाद वह खाट की

बगल में बैठते हुए बोला, "राजेन बाबू के तमाम मुखौटों को पहनकर देखा था। तू इसे पहन कर तो देख।"

फेलूदा ने मुझे मुखौटा पहना दिया।

"कुछ अस्वाभाविक जैसा लग रहा है?"

"नहीं। बस, मेरे लिए यह कुछ बढ़ा है, इतना ही।"

"और कुछ भी नहीं?"

"ज़रा···ज़रा गंध जैसी···"

"किस चीज़ की गंध?"

"चुरुट की।"

फेलूदा ने मुखौटे को उतारकर कहा, "इग्ज़ैक्टली।"

मेरी छाती पुनः धड़कने लगी। मेरे मुंह से निकल गया, "ती—तीन कौड़ी बाबू?"

फेलूदा ने एक निश्वास लेकर कहा, "सबसे ज्यादा मौका उन्हें ही था। बंगला उपन्यास, अखबार, ब्लेड, गोंद—किसी चीज़ की कमी नहीं थी। और तूने जरूर ही ध्यान दिया होगा कि आज वे स्टेशन पर लंगड़ा रहे थे। शायद कल खिड़की से बाहर कूदने के कारण ही वैसा कर रहे थे। मगर जो असली रहस्य है, वह यह कि इसका क्या कारण हो सकता है? राजेन बाबू उनका काफी सम्मान करते थे। फिर किस वजह से, किस उद्देश्य से, उन्होंने यह पत्र लिखा था? शायद इसका उत्तर अब नहीं मिलेगा···कभी नहीं।"

रात में कोई दुर्घटना नहीं हुई।

सवेरे हम भोजन-कक्ष में राजेन बाबू के साथ चाय पी रहे थे। तभी नेपाली नौकर एक पत्र लेकर आया। इस बार भी वही नीले रंग का कागज था और लिफाफे पर दार्जिलिंग के डाकघर की मुहर।

राजेन बाबू ने उदास चेहरे और कांपते हाथों से पत्र को खोला और फेलूदा के हाथ में थमाकर बोले, "तुम्हीं पढ़ो। मुझे हिम्मत नहीं हो रही है।"

फेलूदा उस पत्र को लेकर ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगा :

प्रिय राजू,

कलकत्ते में ज्ञानेश से तुम्हारे मकान की खबर पाकर जब मैंने तुम्हें पत्र लिखा था, उस वक्त मैं नहीं जानता था कि दरअसल तुम कौन हो। तुम्हारे घर पर आने के बाद जब तुम्हारे बचपन की तसवीर पर मेरी नजर पड़ी

तो मुझे इस बात की जानकारी हासिल हुई कि तुम पचास वर्ष पूर्व बांकुड़ा मिशनरी स्कूल मे मेरे सहपाठी रह चुके हो। तुम कोई दूसरे नही, बल्कि वही राजू हो।

इतने दिनो के बाद भी पुराना आक्रोश भड़क सकता है, यह बात मैं नही जानता था। अन्याय के साथ लगड़ी मारकर तुमने मुझे न केवल सौ गज़ के निश्चित पुरस्कार से वंचित किया था, बल्कि मुझे भरपूर घायल भी कर दिया था। तभी मेरे पिताजी की बदली हो गई और मैं तुमसे बदला नही ले सका। तुम्हे भी मेरे मानसिक और शारीरिक कष्टो की जानकारी प्राप्त नही हुई। पैरो मे प्लास्तर लगवाकर मुझे तीन महीने तक अस्पताल मे रहना पड़ा था।

यहां आने पर तुम्हारे जीवन की शांति ने मुझ में अशांति पैदा कर दी। इसीलिए कई दिनो तक तुम्हारे मन में बेचैनी पैदाकर तुम्हें मैंने तुम्हारे पुराने अपराध के कारण सजा दी। शुभेच्छा के साथ।

तुम्हारा ही,
तीनू
(तीन कौडी मुखोपाध्याय)

कैलाश चौधरी का पत्थर

"देख तो, कार्ड कैसा छपा है।"

फेलूदा ने अपने मनीबैग से एक विज़िटिंग कार्ड निकालकर मुझे देखने के लिए दिया। देखा, उस पर अंग्रेज़ी मे छपा है : प्रदोष सी० मिटर, प्राइवेट इनवेस्टिगेटर। समझ गया, अब फेलूदा अपनी जासूसी फैलाना चाहता है। और ऐसा वह क्यों न करे ! बादशाही अंगूठी के शैतान को फेलूदा ने जिस प्रकार काबू मे किया था, उस बात को वह गर्व से डंके की चोट पर कह सकता है। उसके बदले उसने सिर्फ एक विज़िटिंग कार्ड छपवाया है।

फेलूदा का नाम अपने आप फैल चुका था। मुझे मालूम है कि इस बीच उसे दो तीन सनसनीखेज घटनाओं के लिए जासूसी करने का ऑफर मिला था, मगर उनमे से कोई उसके मन के लायक न होने के कारण उसने सारे प्रस्ताव ठुकरा दिए थे।

फेलूदा ने कार्ड को बैग के अन्दर रख दिया, फिर अपने पांवों को मेज़ पर फैलाकर कहा, "बड़े दिनों की छुट्टियों में थोड़ा दिमागी काम करना पड़ेगा।"

मैंने कहा, "क्या कोई नया रहस्य तुम्हारे हाथ लगा है ?"

फेलूदा की बातें सुनकर मैं भीषण उत्तेजना महसूस कर रहा था, पर बाहरी तौर पर मैंने इसे जाहिर नहीं होने दिया।

फेलूदा ने अपनी पैंट की बगल वाली जेब से एक डब्बा निकाला और उससे थोड़ी-सी मद्रासी सुपारी निकालकर मुंह के अन्दर डालते हुए कहा, "लगता है, तुम बहुत ही उत्तेजित हो उठे हो।"

अयं ! यह बात फेलूदा की समझ में कैसे आ गई ?

फलूदा ने खुद ही मेरे सवाल का जवाब दिया, "तू सोच रहा है कि मैं कैसे समझ गया। आदमी चाहे अपने मनोभाव को छिपाने की लाख चेष्टा क्यों न करे, अपने बाहरी छोटे से छोटे हाव-भाव के कारण भी वह पकड़ में आ जाता है। जब मैंने वह बात तुझसे कही थी, तू एक उबासी लेने जा रहा था। लेकिन मेरी बातें सुनकर तूने अपना मुंह थोड़ा-सा खोलकर ही बन्द कर दिया। तू अगर मेरी बातें सुनकर उत्तेजित नहीं हुआ होता तो

फिर तू स्वाभाविक तौर हर उबासी लेता, बीच ही मे न रुकता।"

फेलूदा के इस तरह के कारनामे सचमुच मुझे हैरत में डाल देते हैं। उनका कहना था, "अगर पर्यवेक्षण की क्षमता न हो तो जासूस बनना कोई मानी नही रखता। इस मामले मे जो दो टूक बातें कहनी चाहिए, शॉर्लक होम्स कह गया है। हमारा काम इतना ही है कि हम उनका अनुसरण करें।"

मैंने पूछा, "किस काम के चलते तुम्हें दिमागी मशक्कत करनी पड़ेगी, यही बताओ।"

फेलूदा ने कहा, "तूने कैलास चौधरी का नाम सुना है ? श्याम पुकुर के कैलास चौधरी का ?"

"नहीं, मैंने नही सुना है। कलकत्ते में इतने-इतने नामी आदमी हैं, उनमें से कितनो का नाम मैंने सुना है ? और अभी मेरी उम्र सोलह वर्ष ही है।"

फेलूदा ने सिगरेट जलाकर कहा, "वे राजशाही के नामी जमींदार थे। कलकत्ते में उनका अपना मकान है। जब पाकिस्तान बना, वे यहां चले आए। कैलास बाबू वकालती करते हैं। इसके अलावा शिकारी होने के नाते उन्होने नाम कमाया है। शिकार से संबंधित दो पुस्तकें भी लिखी हैं। यही कुछ दिन पहले की बात है, जलदापाडा के रिजर्व फॉरेस्ट मे एक हाथी पागल होकर ऊधम मचा रहा था। वे वहां गए और उसे मार आए। अख-बारों में उनका नाम छपा था।"

"मगर तुम्हे दिमागी मशक्कत क्यो करनी पड रही है ? उनके जीवन मे कोई रहस्य है क्या ?"

फेलूदा ने कोई जवाब न देकर अपने कोट के बुक पॉकेट से एक चिट्ठी निकाली और मेरी तरफ बढा दिया।

"पढ़कर देख ले।"

मैंने चिट्ठी को खोलकर देखा। उसमें लिखा था :

सेवा में,
श्री प्रदोपचंद्र मित्र
महोदय,

अमृत बाजार पत्रिका में आपका विज्ञापन देखकर मैंने तय किया कि आपको चिट्ठी लिखूं। आप उपर्युक्त पते पर आकर मुझसे मिलने का कष्ट करें तो आभारी हूंगा। मिलने पर ही कारण बताऊंगा। मैं यह पत्र आपको एक्सप्रेस डेलिवरी से भेज रहा हूं, अतः यह आपको कल ही मिल जाएगा।

मे परसों यानी शनिवार को दस बजे आपकी प्रतीक्षा करूंगा।

भवदीय,
कैलाशचन्द्र चौधरी

चिट्ठी पढने के बाद मैं बोला, "शनिवार दस बजे का मतलब है आज ही, और एक घंटे के बाद।

फेलूदा ने कहा, "देख रहा हूं, तुझमे इम्प्रूवमेन्ट हो रहा है। तारीख तुझे ठीक से याद रहती है।"

इस बीच मेरे मन मे एक संदेह पैदा हो चुका है। मैंने पूछा, "तुम्हें ही बुलाया है तो ऐसे मे और कोई दूसरा तुम्हारे साथ···"

फेलूदा ने चिट्ठी मेरे हाथ से लेकर उसे सावधानी से मोडा और उसके बाद जेब मे रखता हुआ बोला, "चूकि तेरी उम्र कम है, इसलिए तुझे साथ ले जा सकता हूं। क्योकि ने तुझे बड़े-बूढ़े के तौर पर नही लेंगे और तेरे सामने बोलने मे उन्हें आपत्ति नही होगी। और अगर वे आपत्ति करें तो तू बगल के कमरे मे मेरा इन्तज़ार करना, उस बीच हम बातचीत खत्म कर लेंगे।"

मेरा कलेजा धड़धड़ाने लगा है। सोच रहा था, छुट्टियो मे क्या करूं। अब लगता है कि छुट्टिया मजे में गुजर जाएगी।

जब दस बजने मे पांच मिनट बाकी थे, हम ट्राम से कर्नवालिस स्ट्रीट और श्यामपुकुर स्ट्रीट के मोड़ पर पहुंचे। रास्ते मे फेलूदा एक बार ट्राम से नीचे उतरा था और उसने दासगुप्त एंड कम्पनी से कैलास चौधरी द्वारा लिखी गई शिकार की पुस्तक खरीद ली थी। पुस्तक का नाम था : 'शिकार का नशा'। रास्ते में उसने पुस्तक को उलट-पलट कर देखा। ट्राम से उतरते समय उसे कंधे से लटकती झोली मे रखकर बोला, "पता नही, ऐसे हिम्मतवर आदमी को जासूस की जरूरत क्यो पड़ गई है।"

इक्यावन नम्बर श्यामपुकुर स्ट्रीट, पुराने जमाने का एक गेटवाला मकान है, जिसे अट्टालिका कहा जाता है। सामने की तरफ के बगीचे, फव्वारे और प्रस्तर मूर्ति को पार करने के बाद जब हमने दरवाजे पर के कॉलिंग बेल को दबाया, आधे मिनट के दरमियान ही हमें पैरों की आहट सुनाई दी। दरवाजा खुलने पर हमारी नजर एक भले आदमी पर पडी। उनको देखकर मुझे लगा कि यह कैलास बाबू नही हो सकते हैं, क्योकि शेर का शिकार करने वाले आदमी का चेहरा इतना असहाय नही हो सकता है। वे मझले कद के मोटे-सोटे, गोरे रग के आदमी हैं। उम्र तीस से ज्यादा नही होगी। आखों से सरलता और बचपने का भाव टपक रहा

है। देखा, उनके हाथ में एक मैगनिफाइंग ग्लास है।

"आप लोग किससे मिलना चाहते है ?" उनकी आवाज़ औरतों की तरह ही महीन और कोमल है।

फेलूदा ने कार्ड निकालकर उन्हें दिया और कहा, "कैलास बाबू से मेरा एपॉयंटमेंट निश्चित हुआ है। उन्होने मुझे पत्र लिखा था।"

उन्होने कार्ड पर सरसरी दृष्टि डाली और बोले, "अन्दर चलिए।"

दरवाजे से घुमकर हमने सीढ़िया तय की और एक दफ्तरनुमा कमरे के अन्दर पहुचे। उन्होने हमसे इन्तज़ार करने को कहा।

"आप लोग ज़रा बैठ जाए, मैं मामाजी को सूचना दे आता हू।"

एक बहुत ही पुरानी काले रंग की मेज के सामने हम हत्थे वाली कुरसियो पर बैठ गए। कमरे के तीनो ओर अलमारियो मे पुस्तकें भरी थीं। सामने की मेज़ पर निगाह पड़ते ही मैंने एक मज़ेदार चीज देखी। तीन अदद स्टैम्प एलबम एक के ऊपर एक स्तूपाकार रखे हुए हैं और एक एलबम खुली हुई हालत मे पडी है, जिसमे स्टैम्पों की कतारें है। बहुत से सेलोफेन मे कुछ स्टैम्प अलग से भी रखे हुए हैं। इसके अलावा स्टैंप जमा करने वालो की ज़रूरत आने वाली बहुत-सी चीजें हैं—जैसे हिंज, चमचा, कैटलॉग इत्यादि। अब समझ मे आया कि वह सज्जन अपने हाथ वाले मैगनिफाइंग ग्लास को इसी काम के लिए उपयोग मे लाते हैं और वे ही हैं इन स्टैंपो के संग्रहकर्ता।

फेलूदा भी उन्हीं चीज़ो की ओर ताक रहा था। मगर इसकी बाबत हम दोनो में कोई बातचीत हो कि इसके पूर्व ही वह सज्जन लौट आए थे। उन्होने कहा, "आप लोग बैठक मे चल कर बैठिए, मामाजी अभी-अभी आ चले।"

बैठक में हमारे सिर के ऊपर बड़े-बड़े झाड़-फानूस लटके थे। हम वहां सफेद गिलाफ से ढके एक बड़े सोफे पर बैठ गए। कमरे के चारो तरफ पुरानी धनाढ्यता की छाप थी। एक बार में अपने पिताजी के साथ बेला-घाट के मलिकों के घर पर गया था। वहां भी इसी तरह का असबाब, पेंटिंग, मूर्तिया और गुलदस्ते देखे थे। इसके अलावा उस कमरे के फर्श पर रॉयल बेंगाल टाइगर की एक खाल थी और दीवार पर चार हरिणो, दो चीतों और एक भैंसे के सिर थे।

लगभग दस मिनट बैठने के बाद एक मध्यवयस्क परन्तु जवान जैसे सज्जन ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया। उनका रंग गोरा था, नाक के नीचे पतली मूंछे, देह पर रेशमी पंजाबी, पाजामा और ड्रेसिंग गाउन।

हम दोनों ने खड़े होकर उन्हें नमस्कार किया। मुझ पर नजर पड़ते

ही उनकी भौंहों पर बल पड़ गए। फेलूदा ने कहा, "यह मेरा चचेरा भाई है।"

वे हम लोगों की बगल के सोफे पर बैठकर बोले, "आप दोनों क्या साथ-साथ जासूसी करते हैं ?"

फेलूदा ने हसकर कहा, "जी नही। पर इसे घटना चक्र ही कह सकते हैं कि मेरे जितने भी केस रह चुके हैं, तपेश मेरे साथ था। वह कभी किसी परेशानी मे नही डालता है।"

"ठीक है।'''अवनीश, तुम जा सकते हो। इन लोगों के लिए नाश्ते का इन्तजाम करो।"

स्टैंप-संग्रह करने वाले सज्जन दरवाजे के सामने खड़े थे। अपने मामा जी का आदेश सुनकर वे चले गए। कैलास चौधरी ने फेलूदा की ओर ताकते हुए कहा, "आप कुछ अन्यथा मत लें। मेरी चिट्ठी क्या आप अपने साथ ले आए हैं ?"

फेलूदा ने मुसकराकर कहा, "मैं प्रदोष मित्र हूं या नहीं, आप इसी की सबूत चाहते हैं न ? यह रही आपकी चिट्ठी।"

फेलूदा ने अपनी जेब से कैलास बाबू की चिट्ठी निकालकर उनके हाथ मे रख दी। उन्होने उसे एक बार सरसरी निगाहो से देखा और 'थैंक्यू' कहकर फेलूदा को वापस कर दिया।

"इतनी सावधानी बरतनी ही चाहिए। खैर! शायद आप जानते होंगे कि मैं एक शिकारी की हैसियत से प्रसिद्ध हू।"

फेलूदा ने कहा, "जी हां।"

कमरे की दीवार पर के जानवरो के मस्तकों की ओर उगली से इशारा करते हुए वे बोले, "इन सबो का शिकार मैंने ही किया है। जब मैं सत्रह साल का था, मैंने बन्दूक चलाना सीखा। उसके पहले एयरगन से चिड़ियों का शिकार करता था। आमने-सामने की लड़ाई मे कभी जानवर मुझे मात नही कर सका है। लेकिन'''जो दुश्मन अदृश्य और अज्ञात रहता है, वह मुझे बड़ा ही परेशान कर मारता है।"

वे फिर चुप हो गए। मेरा कलेजा पुनः धड़कने लगा। मुझे यह मालूम है कि अभी वे रहस्य की बातें बताएंगे, मगर वे इतने तौर-तरीके से धीरे-धीरे असली बातों की ओर जा रहे हैं कि सस्पेन्स बढ़ता जा रहा है।

कैलास बाबू ने फिर से कहना शुरू किया, "आपकी उम्र इतनी कम हो सकती है, यह मालूम नही था। आपकी उम्र कितनी है ?"

फेलूदा ने कहा, "अट्ठाईस।"

"आप पर मैं जिस काम का भार सौंपने जा रहा हूं, वह आपके लिए

कितना मुमकिन है, पता नहीं। इस मामले में मैं पुलिस की सहायता नहीं लेना चाहता, क्योंकि इसके पहले एक मामले में सहायता मांगने पर मैं धोखा खा चुका हूं। पुलिस अक्सर असली काम के बजाय बेकार के काम करने लगती है। और यह बात भी सही है कि युवको को मैं अश्रद्धा की दृष्टि मे नही देखा करता हूं मुझे इस बात पर विश्वास है कि कच्ची उम्र में अगर बुद्धि परिपक्व हो तो वह बहुत ही जोरदार हुआ करती है।"

अब कैलास बाबू को चुप रहने का मौका देकर फेलूदा गला खंखार कर बोला, "घटना क्या है अगर वही बताए···"

कैलास बाबू ने इस बात का जवाब न देकर अपनी जेब से एक मुड़ा हुआ कागज निकाला और उसे फेलूदा को देते हुए बोले, "देखिए, इसे पढ कर आपकी समझ मे क्या बात आती है।"

फेलूदा ने जैसे ही उस कागज को खोला, मैंने झुककर उस पर सरसरी निगाह दौडाई। उसमे अंग्रेज़ी में जो कुछ लिखा था, उसका अर्थ यह है :

'पाप का भार मत बढाओ। जिस चीज पर तुम्हारा अधिकार नही है, उसे तुम आगामी सोमवार को तीसरे पहर चार बजे के पहले ही विक्टोरिया मेमोरियल के दक्षिणी फाटक से बीस हाथ अन्दर, रास्ते की बाईं ओर लिलि के फूलो की पहली कतार के पहले पौधे के नीचे रख जाना। आदेश की अगर अवहेलना करोगे या पुलिस की सहायता लोगे तो इसका नतीजा ठीक नही होगा—अपने अनेकानेक शिकारों की तरह तुम भी शिकार में परिणित हो जाओगे। यह बात गांठ में बाधकर रख लो।'

आपकी समझ मे क्या बात आती है ?" कैलास बाबू ने गम्भीर स्वर मे पूछा।"

फेलूदा कुछ देर तक उस पत्र को ध्यान मे देखता रहा, उसके बाद बोला, "हाथ की लिखावट बिगाडी गई है, क्योंकि एक ही अक्षर को दो-तीन स्थानो मे दो-तीन तरह से लिखा गया है। और नए पैड के पहले पन्नो पर पत्र लिखा गया है।"

"यह आपने कैसे मालूम किया ?"

पैड के कागज पर लिखने मे उसके बाद के पन्ने पर, पहले की लिखावट की कुछ छाप रह जाती है। यह पन्ना बिलकुल चिकना है।"

"वेरी गुड ! और कुछ ?"

"इसको देखकर और कुछ कहना असंभव है यह पत्र डाक मे मिला था ?"

"हां। पार्क स्ट्रीट के डाकघर की मुहर लगी है। यह पत्र मुझे तीन

दिन पहले मिला है। आज शनिवार है, 20 तारीख।"

फेलूदा ने चिट्ठी लौटाते हुए कहा, "अब मैं आपसे कुछ सवाल करना चाहता हूं, क्योंकि आपके बारे में सिवा आपकी कहानियों से सम्बन्धित बातों के मुझे कुछ मालूम नहीं है।"

"ठीक है। पूछिए। मुंह में मिठाई डालते हुए पूछिए।"

नौकर चांदी के प्लेट में रसगुल्ला और इमरती रख गया था। फेलूदा को खाने के लिए कहना नहीं पड़ता है। उसने चट से एक पूरे रसगुल्ले को मुंह के अन्दर डालकर कहा, "चिट्ठी में जिस वस्तु का उल्लेख है, वह क्या है ?"

कैलास बाबू ने कहा, "बात क्या है बताता हूं। जिस चीज पर मेरा अधिकार न हो, वैसी कौन-सी चीज मेरे पास है, मैं खुद यह नहीं जानता हूं। इस घर में जितनी भी चीजें हैं उन्हें या तो मैंने खुद खरीदा है या वे मेरी पैतृक सपत्ति हैं। उनके बीच ऐसी कोई चीज नहीं है, जिसे वसूलने के लिए मुझे कोई इस तरह का पत्र लिख सकता हो। तब हां, मेरे पास एक ऐसी चीज है जिसे आप कीमती और लालच पैदा करने वाली चीज कह सकते हैं।"

"वह चीज क्या है ?"

"एक पत्थर।"

"पत्थर ?"

"कीमती पत्थर।"

"आपने खरीदा है ?"

"नहीं, खरीदा नहीं है।"

"फिर क्या वह पैतृक सपत्ति है ?"

"नहीं। यह पत्थर मुझे मध्य प्रदेश के चांदा के पास एक जंगल में मिला था। एक शेर का पीछा करते हुए हम लोग तीन-चार आदमी एक जंगल में घुस रहे थे। आखिर में वह शेर मारा गया। निकट ही एक बहुत पुराने जीर्ण और परित्यक्त देवमंदिर में एक देवता के कपाल पर यह पत्थर जड़ा हुआ था। संभवतः इसके बारे में हम लोगों से पहले किसी को पता नहीं था।"

"उस पत्थर को आपने ही क्या सबसे पहले देखा था ?"

"मन्दिर पर सबकी निगाह गई थी, पर पत्थर को पहले मैंने ही देखा था।"

"उस बार आपके साथ कौन-कौन थे ?"

"राइट नामक एक अमेरिकी नौजवान, किशोरीलाल नामक एक

कितना मुश्किल है, पता नहीं। इस मामले में मैं पुलिस की सहायता नहीं लेना चाहता, क्योंकि इसके पहले एक मामले में सहायता मांगने पर मैं धोखा खा चुका हूं। पुलिस अक्सर असली काम के बजाय बेकार के काम करने लगती है। और यह बात भी नहीं है कि युवकों को मैं अश्रद्धा की दृष्टि से नहीं देखा करता हूं, मुझे इस बात पर विश्वास है कि कच्ची उम्र में अगर बुद्धि परिपक्व हो तो वह बहुत ही जोरदार हुआ करती है।"

अब कैलाश बाबू को चुप रहने का मौका देकर फेलूदा गला खखार कर बोला, "घटना क्या है अगर यही बताएं...।"

कैलाश बाबू ने इस बात का जवाब न देकर अपनी जेब से एक मुड़ा हुआ कागज निकाला और उसे फेलूदा को देते हुए बोले, "देखिए, इसे पढ़ कर आपकी समझ में क्या बात आती है।"

फेलूदा ने जैसे ही उस कागज को खोला, मैंने झुककर उस पर सरसरी निगाह दौड़ाई। उसमें अंग्रेज़ी में जो कुछ लिखा था, उसका अर्थ यह है :

'पाप का भार मत बढ़ाओ। जिस चीज़ पर तुम्हारा अधिकार नहीं है, उसे तुम आगामी सोमवार को तीसरे पहर चार बजे के पहले ही विक्टोरिया मेमोरियल के दक्षिणी फाटक से बीस हाथ अन्दर, रास्ते की बाईं ओर लिलि के फूलों की पहली कतार के पहले पौधे के नीचे रख जाना। आदेश की अगर अवहेलना करोगे या पुलिस की सहायता लोगे तो इसका नतीजा ठीक नहीं होगा—अपने अनेकानेक शिकारों की तरह तुम भी शिकार में परिणित हो जाओगे। यह बात गाठ में बाधकर रख लो।'

आपकी समझ में क्या बात आती है?" कैलास बाबू ने गम्भीर स्वर में पूछा।"

फेलूदा कुछ देर तक उस पत्र को ध्यान से देखता रहा, उसके बाद बोला, "हाथ की लिखावट बिगाड़ी गई है, क्योंकि एक ही अक्षर को दो-तीन स्थानों में दो-तीन तरह से लिखा गया है। और नए पैड के पहले पन्नों पर पत्र लिखा गया है।"

"यह आपने कैसे मालूम किया?"

पैड के कागज पर लिखने से उसके बाद के पन्ने पर, पहले की लिखावट की कुछ छाप रह जाती है। यह पन्ना बिलकुल चिकना है।"

"वेरी गुड! और कुछ?"

"इसको देखकर और कुछ कहना असंभव है यह पत्र डाक से मिला था?"

"हां। पार्क स्ट्रीट के डाकघर की मुहर लगी है। यह पत्र मुझे तीन

दिन पहले मिला है। आज शनिवार है, 20 तारीख।"

फेलूदा ने चिट्ठी लौटाते हुए कहा, "अब मैं आपसे कुछ सवाल करना चाहता हूं, क्योंकि आपके बारे में सिवा आपकी कहानियों से सम्बन्धित बातों के मुझे कुछ मालूम नहीं है।"

"ठीक है। पूछिए। मुंह में मिठाई डालते हुए पूछिए।"

नौकर चांदी के प्लेट में रसगुल्ला और इमरती रख गया था। फेलूदा को खाने के लिए कहना नहीं पड़ता है। उसने चट से एक पूरे रसगुल्ले को मुंह के अन्दर डालकर कहा, "चिट्ठी में जिस वस्तु का उल्लेख है, वह क्या है ?"

कैलास बाबू ने कहा, "बात क्या है बताता हूं। जिस चीज़ पर मेरा अधिकार न हो, वैसी कौन-सी चीज मेरे पास है, मैं खुद यह नहीं जानता हूं। इस घर में जितनी भी चीजें हैं उन्हें या तो मैंने खुद खरीदा है या वे मेरी पैतृक संपत्ति हैं। उनके बीच ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिसे वसूलने के लिए मुझे कोई इस तरह का पत्र लिख सकता हो। तब हां, मेरे पास एक ऐसी चीज है जिसे आप कीमती और लालच पैदा करने वाली चीज कह सकते हैं।"

"वह चीज क्या है ?"

"एक पत्थर।"

"पत्थर ?"

"कीमती पत्थर।"

"आपने खरीदा है ?"

"नहीं, खरीदा नहीं है।"

"फिर क्या वह पैतृक संपत्ति है ?"

"नहीं। यह पत्थर मुझे मध्य प्रदेश के चांदा के पास एक जंगल में मिला था। एक शेर का पीछा करते हुए हम लोग तीन-चार आदमी एक जंगल में घुस रहे थे। आखिर में वह शेर मारा गया। निकट ही एक बहुत पुराने जीर्ण और परित्यक्त देवमंदिर में एक देवता के कपाल पर यह पत्थर जड़ा हुआ था। संभवतः इसके बारे में हम लोगों से पहले किसी को पता नहीं था।"

"उस पत्थर को आपने ही क्या सबसे पहले देखा था ?"

"मन्दिर पर सबकी निगाह गई थी, पर पत्थर को पहले मैंने ही देखा था।"

"उस बार आपके साथ कौन-कौन थे ?"

"राइट नामक एक अमेरिकी नौजवान, किशोरीलाल नामक एक

कितना मुमकिन है, पता नहीं। इस मामले में मैं पुलिस की सहायता नहीं लेना चाहता, क्योंकि इसके पहले एक मामले मे सहायता मागने पर मैं धोखा खा चुका हू। पुलिस अक्सर असली काम के बजाय बेकार के काम करने लगती है। और यह बात भी सही है कि युवको को मैं अश्रद्धा की दृष्टि मे नही देखा करता हू मुझे इस बात पर विश्वास है कि कच्ची उम्र मे अगर बुद्धि परिपक्व हो तो वह बहुत ही जोरदार हुआ करती है।"

अब कैलास बाबू को चुप रहने का मौका देकर फेलूदा गला खंखार कर बोला, "घटना क्या है अगर वही बताए···"

कैलास बाबू ने इस बात का जवाब न देकर अपनी जेब से एक मुड़ा हुआ कागज निकाला और उसे फेलूदा को देते हुए बोले, "देखिए, इसे पढ कर आपकी समझ मे क्या बात आती है।"

फेलूदा ने जैसे ही उस कागज को खोला, मैंने झुककर उस पर सरसरी निगाह दौडाई। उसमे अग्रेजी मे जो कुछ लिखा था, उसका अर्थ यह है :

'पाप का भार मत बढाओ। जिस चीज पर तुम्हारा अधिकार नही है, उसे तुम आगामी सोमवार को तीसरे पहर चार बजे के पहले ही विक्टोरिया मेमोरियल के दक्षिणी फाटक से बीस हाथ अन्दर, रास्ते की बाईं ओर लिलि के फूलों की पहली कतार के पहले पौधे के नीचे रख जाना। आदेश की अगर अवहेलना करोगे या पुलिस की सहायता लोगे तो इसका नतीजा ठीक नही होगा—अपने अनेकानेक शिकारों की तरह तुम भी शिकार में परिणित हो जाओगे। यह बात गाठ में बांधकर रख लो।'

आपकी समझ में क्या बात आती है ?" कैलास बाबू ने गम्भीर स्वर में पूछा।"

फेलूदा कुछ देर तक उस पत्र को ध्यान से देखता रहा, उसके बाद बोला, "हाथ की लिखावट बिगाडी गई है, क्योकि एक ही अक्षर को दो-तीन स्थानो मे दो-तीन तरह से लिखा गया है। और नए पैड के पहले पन्नों पर पत्र लिखा गया है।"

"यह आपने कैसे मालूम किया ?"

पैड के कागज़ पर लिखने से उसके बाद के पन्ने पर, पहले की लिखावट की कुछ छाप रह जाती है। यह पन्ना बिलकुल चिकना है।"

"वेरी गुड ! और कुछ ?"

"इसको देखकर और कुछ कहना असभव है यह पत्र डाक से मिला था ?"

"हा। पार्क स्ट्रीट के डाकघर की मुहर लगी है। यह पत्र मुझे तीन

दिन पहले मिला है। आज शनिवार है, 20 तारीख।"

फेलूदा ने चिट्ठी लौटाते हुए कहा, "अब मैं आपसे कुछ सवाल करना चाहता हूं, क्योंकि आपके बारे में सिवा आपकी कहानियों से सम्बन्धित बातों के मुझे कुछ मालूम नहीं है।"

"ठीक है। पूछिए। मुंह में मिठाई डालते हुए पूछिए।"

नौकर चांदी के प्लेट में रसगुल्ला और इमरती रख गया था। फेलूदा को खाने के लिए कहना नहीं पड़ता है। उसने चट से एक पूरे रसगुल्ले को मुंह के अन्दर डालकर कहा, "चिट्ठी में जिस वस्तु का उल्लेख है, वह क्या है?"

कैलास बाबू ने कहा, "बात क्या है बताता हूं। जिस चीज़ पर मेरा अधिकार न हो, वैसी कौन-सी चीज़ मेरे पास है, मैं खुद यह नहीं जानता हूं। इस घर में जितनी भी चीज़ें हैं उन्हें या तो मैंने खुद खरीदा है या वे मेरी पैतृक सम्पत्ति हैं। उनके बीच ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिसे वसूलने के लिए मुझे कोई इस तरह का पत्र लिख सकता हो। तब हां, मेरे पास एक ऐसी चीज़ है जिसे आप कीमती और लालच पैदा करने वाली चीज़ कह सकते हैं।"

"वह चीज़ क्या है?"

"एक पत्थर।"

"पत्थर?"

"कीमती पत्थर।"

"आपने खरीदा है?"

"नहीं, खरीदा नहीं है।"

"फिर क्या वह पैतृक सम्पत्ति है?"

"नहीं। यह पत्थर मुझे मध्य प्रदेश के चांदा के पास एक जंगल में मिला था। एक शेर का पीछा करते हुए हम लोग तीन-चार आदमी एक जंगल में घुस रहे थे। आखिर में वह शेर मारा गया। निकट ही एक बहुत पुराने जीर्ण और परित्यक्त देवमंदिर में एक देवता के कपाल पर यह पत्थर जड़ा हुआ था। संभवत इसके बारे में हम लोगों से पहले किसी को पता नहीं था।"

"उस पत्थर को आपने ही क्या सबसे पहले देखा था?"

"मन्दिर पर सबकी निगाह गई थी, पर पत्थर को पहले मैंने ही देखा था।"

"उस बार आपके साथ कौन-कौन थे?"

"राइट नामक एक अमेरिकी नौजवान, किशोरीलाल नामक एक

पंजाबी और मेरा भाई केदार।"

"आपके भाई भी शिकार किया करते हैं ?"

"करता था, अब करता है या नही, पता नही, चार बरसो से वह विदेश मे है।"

"विदेश का मतलब ?"

"स्विट्ज़रलैंड मे। घड़ी का कारोबार करता है।"

"जब आपको पत्थर मिला था, आप लोगों में उसके लिए छीना-झपटी नही हुई थी ?"

"नही। क्योंकि उसकी कितनी कीमत हो सकती है, उसके जानकारी मुझे तब हासिल हुई जब मैंने कलकत्ता लौटने के बाद उसे जौहरी को दिखाया।"

"उसके बाद इस समाचार का पता किस-किस को चला था ?"

"मैंने ज्यादा आदमियो से नही कहा था। यो भी मेरे सगे-सम्बन्धी ज्यादा नही हैं। मैंने अपने दो-चार वकील मित्रों से कहा था और शायद मेरे भानजे अवनीश को यह बात मालूम है।"

"वह पत्थर आपके घर ही में है ?"

"हां, मेरे कमरे मे ही है।"

"इतनी कीमती चीज़ को आपने बैंक मे क्यो नही रखा ?"

"एक बार रखा था। जिस दिन मैंने रखा, उसके दूसरे दिन मोटर-दुर्घटना हुई और मैं मरते-मरते बचा। उसके बाद मेरे मन मे यह धारणा बैठ गई कि उसे अगर अपने पास नही रखूंगा तो मेरे दुर्भाग्य के दिन आ जाएंगे। यही वजह है कि बैंक से ले आया।"

"हुं···"

फेलूदा का खाना खत्म हो चुका है। उसकी भौंहो की ओर ताकने पर मेरी समझ मे यह बात आई कि उसने सोचना शुरू कर दिया है। उसने पानी पीकर रूमाल से अपना मुंह पोछा और बोला, "आपके घर मे कौन-कौन हैं ?"

"मैं हू, मेरा भानजा अवनीश है और मेरे तीन पुराने नौकर हैं। इसके अलावा मेरे पिताजी भी हैं, मगर वे बिलकुल नाकाम हो गए हैं। एक नौकर हमेशा उनके लिए तैनात रहता है।"

"अवनीश बाबू कौन-सा काम करते हैं ?"

"कुछ खास नही। डाक-टिकटों का संग्रह करने का उसे नशा है। उसका कहना है कि वह डाक-टिकटों की एक दुकान खोलेगा।"

फेलूदा ने कुछ देर तक सोचा, फिर मन ही मन कुछ हिसाब लगाते

हुए कहा, आप क्या यही चाहते हैं कि मैं पत्र लिखने वाले का पता लगा दूं ?"

कैलास बाबू ज़ोर से हंस पड़े और उसके बाद बोले, "आप समझ ही सकते हैं कि इस उम्र में किसी को इस तरह की अशांति कहीं अच्छी लग सकती है ! और न केवल चिट्ठी लिखी है बल्कि कल रात टेलीफोन भी किया था। अंग्रेज़ी में उसी बात को दुहरा गया। उसकी आवाज़ पहचान में नहीं आई। जानते हैं, क्या कहा ?' अगर मैं निर्धारित स्थान में निर्धारित अवधि के बीच उस चीज़ को नहीं रख आऊंगा तो वह मेरे घर पर आकर मुझे घायल कर जाएगा। फिर भी मैं इस पत्थर को अपने से अलग करने के लिए राज़ी नहीं हूं। इसके अलावा उस व्यक्ति का पत्थर पर कोई न्यायसंगत अधिकार भी नहीं है। हालांकि वह मुझे धमकिया दे रहा है। इससे यह बात समझ में आती है कि वह कोई बदनाम आदमी है। अत: उसे सज़ा मिलनी ही चाहिए। यह कैसे हो सकता है, इसी पर आप सोचकर तय करें।"

"उपाय तो एक ही है—बाईस तारीख को शाम के वक्त विक्टोरिया मेमोरियल के पास छिपकर बैठे रहना। उसे आना ही है।"

"वह खुद नहीं भी आ सकता है।"

"उससे कोई हानि नहीं होने जा रही है। जो भी आकर लिली के पौधे के पास चक्कर काटे, वह अगर असली आदमी न भी हो तो, उसे पकड़ने से असली आदमी के बारे में पता चलना मुश्किल नहीं है।"

"मगर आप असली बात समझ नहीं रहे हैं। वह खतरनाक आदमी भी हो सकता है। जब वह देखेगा कि लिलि के पौधे के नीचे पत्थर नहीं है, तब वह क्या रुख अख्तियार करेगा—कहा नहीं जा सकता। उसके बजाय बाईस तारीख के पहले—यानी आज या कल के बीच—अगर यह मालूम हो जाए कि वह आदमी कौन है, तो बहुत ही अच्छा रहे। "इस चिट्ठी और कल के उस टेलीफोन से कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है।"

फेलूदा ने सोफे से उठकर टहलना शुरू कर दिया है। वह बोला, "चिट्ठी में लिखा है, जासूस की सहायता लेने से उसका नतीजा भला नहीं होगा। चाहे मैं कुछ करूं या न करूं, मगर आपने क्योंकि मुझे बुलाया है, इसलिए आप पर विपत्ति आने की आशंका है। आप बल्कि इस पर सोच कर देख लें कि आपको हमारी सहायता चाहिए या नहीं।"

सरदी रहने के बावजूद कैलास बाबू ने अपने माथे पर छलक आए पसीने की बूंदों को पोंछा और बोले, "आपको और आपके भाई को देखकर कोई यह नहीं सोचेगा कि आप लोगों का जासूसी से कोई रिश्ता है। यही

एक सुविधा है। चाहे लोगों को आपका नाम मालूम हो, पर वे क्या आपके चेहरे से परिचित है ? ऐसा लगता नही है। इसलिए उस मामले मे मुझे कोई डर नही है। आप अगर राजी हैं तो इस काम को स्वीकार लें। मैं आपको उचित मेहनताना दूंगा।"

"थैंक यू। तब हां, जाने के पहले एक बार उस पत्थर को देखना चाहता हू।"

'जरूर-जरूर।"

कैलास बाबू का पत्थर उनके शयन कक्ष की अलमारी में रहता है। हम लोगो ने उनके पीछे-पीछे चलकर पत्थर की बनी सीढ़ियां तय की और दो मंजिले पर पहुंचे। सीढ़ियां एक लम्बे अंधेरे बरामदे में जाकर खत्म हुई हैं। उसके दोनो ओर पंक्तिबद्ध लगभग दस-बारह कमरे हैं। बहुत से कमरों मे ताले लगे हैं। चारो तरफ एक निस्तब्धता रेंग रही है। वहां किसी आदमी के न रहने के कारण थोड़ी-सी आवाज होती है तो उसकी प्रतिध्वनि गूंजने लगती है।

बरामदे के अन्तिम हिस्से पर दाहिनी तरफ का जो कमरा है, वह कैलास बाबू का शयन-कक्ष है। हम लोग जब बरामदे के बीचोबीच पहुंचे, देखा, बगल के एक कमरे का दरवाजा अधखुला है और उसके अन्दर से एक बहुत ही बूढा आदमी गरदन बढाए, मटमैली आंखों से हमारी ओर ताक रहा है। उसे देखते ही मुझमे एक भय समा गया। कैलास बाबू बोले, "आप ही मेरे पिताजी हैं। उनका दिमाग ठीक नही है। हर वक्त इधर-उधर से झांकते रहते है।"

जब हम उनके निकट पहुंचे, बूढे की आंखों पर दृष्टि जाते ही मेरा खून पानी हो गया। वे उसी भयावह दृष्टि से कैलास बाबू की ओर ताक रहे थे।

अपने पिता के कमरे को पार कर जब कुछ दूर गए तो कैलास बाबू बोले, "मेरे बाबू जी को सभी पर गुस्सा है। उनकी धारणा है, सभी उनकी अवहेलना करते हैं। दरअसल उनकी देखरेख में किसी प्रकार की त्रुटि नही बरती जाती है।"

कैलास बाबू के कमरे मे एक ऊंचा जैसा पलंग देखा। पलंग के सिरहाने कमरे के कोने मे आलमारी थी। उसे खोलकर उन्होने दराज से एक नीले रंग का मखमली बक्सा निकाला और बोले, "सन्तराम दास की दुकान से यह बक्सा इसलिए खरीदा था कि इसमे पत्थर रखूं।"

बक्सा खोलकर उससे नील और हरे रंग से मिलाजुला सीपी के आकार का एक झलमलाता पत्थर निकालकर फेलूदा के हाथ मे दिया और

और बोले, "इसे ब्लू बेरिल कहते हैं। ब्राज़ील देश में मिलता है। हिन्दुस्तान में यह काफी तादाद में नही है। कम से कम इतने बड़े आकार के काफी तादाद में नही मिलते, यह मैं नि सन्देह कह सकता हू।"

फेलूदा ने पत्थर को हाथ मे लेकर उलट-पुलट कर देखा और फिर वापस कर दिया। कैलास बाबू ने अपनी जेब से मनीबैग निकाला। उसके बाद मनीबैग से दस रुपये के पाच नोट निकालकर फेलूदा की ओर बढ़ाते हुए बोले, "यह बतौर पेशगी है। काम हो जाए तो बाकी पैसा चुका दूंगा।"

'थैंक यू' कहकर फेलूदा ने नोटों को अपनी जेब के हवाले किया। अपनी आखो के सामने मैंने उसे पहली बार रुपया कमाते हुए देखा। सीढ़ियो से नीचे उतरते वक्त फेलूदा बोला, "आपको वह चिट्ठी मुझे सौंपनी होगी। मैं अवनीश बाबू से दो-चार बातें करना चाहता हूं।"

हम जब नीचे पहुचे, ठीक उसी समय बैठक में टेलीफोन की घंटी टनटना उठी। कैलास बाबू ने आगे बढकर टेलीफोन उठाया।

"हैलो!"

उसके बाद कोई शब्द सुनाई नहीं पडा। हम ज्यों ही बैठक के अन्दर पहुंचे, कैलास बाबू को बुझे हुए चेहरे में पाया। उन्होंने टेलीफोन रखकर कहा, "वही आदमी फिर धमकियां दे रहा था।"

"क्या कह रहा था?"

"अब किसी तरह का सन्देह नही रहने दिया।"

"इसका मतलब?"

"कहा : मैं क्या चाहता हूं शायद समझ ही रहे होगे। चांदा के जगल के मंदिर में जो चीज मिली थी, वही चाहता हूं।"

"और क्या कहा?"

"और कुछ भी नहीं।"

"आवाज पहचान में आई?"

"नही। तब हां, इतना कह सकता हू कि आवाज सुनने में अच्छी नही लगती है। आप बल्कि एक बार और इस पर सोचकर देखें।"

फेलूदा ने मुस्कराकर कहा, "मैंने सोच लिया है।"

कैलास बाबू से अलग होकर जब हम अवनीश बाबू के कमरे में गए, उन्हें मेज़ पर रखी किसी वस्तु को मैगनिफाइंग ग्लास से मनोयोगपूर्वक परीक्षा करते हुए पाया। हमलोग जैसे ही अन्दर गये, वे मेज़ पर हाथ रखकर खड़े हो गए।

"आइए, आइए!"

फेलूदा ने कहा, "आप डाक-टिकटों के बड़े ही शौकीन मालूम होते हैं।"

अवनीश बाबू की आंखों मे एक चमक तैरने लगी। "जी हां, मुझे बस इसी का नशा है। कह सकते हैं, यही मेरा ध्यान-योग-तप है।"

"आप किसी खास देश को लेकर स्पेशलाइज कर रहे हैं या तमाम दुनिया की टिकटें जमा करते हैं ?"

"पहले तमाम दुनिया की टिकटें जमा किया करता था, मगर कुछ दिनों से हिन्दुस्तान की टिकटों पर स्पेशलाइज कर रहा हूं। हमारे इस मकान के दफ्तर में इतनी आश्चर्यजनक और पुरानी टिकटें हैं कि कह नहीं सकता। इतना जरूर है कि ज्यादातर हिन्दुस्तान की हैं। पिछले दो महीनों से हजारों पुरानी चिट्ठियों के बडलो की छानबीनकर मैंने टिकटें जमा की हैं।"

"कुछ अच्छी चीजें मिली हैं ?"

"अच्छी ?" वे कुरसी छोडकर खडे हो गए। "आपको बताऊं तो बात आपकी समझ मे आएगी ? आपको इस चीज मे दिलचस्पी है ?"

फेलूदा ने मुस्कराकर कहा, "किसी खास उम्र मे सभी का उधर झुकाव रहता है। केप आफ गुड होप की एक पेनी, मॉरीशस की दो पेनी और ब्रिटिश गायना की सन् 1856 की विख्यात टिकटों को पाने का सपना मैं भी देख चुका हू। दस वर्ष पहले उन चीजों की कीमत लगभग लाख रुपये थी। अब और भी ज्यादा हो गई है।"

अवनीश बाबू उत्तेजित होकर करीब-करीब उछल पड़े।

"फिर साहब, आपकी समझ मे बात आ जाएगी। आपको दिखाता हू। देखिए।"

उन्होंने अपने हाथ के नीचे से एक छोटा-सा रगीन कागज निकालकर फेलूदा को दिया। देखा, लिफाफे से अलग की गई हुई एक टिकट है, जिसका रग करीब-करीब उड चुका है।

"आपने क्या देखा ?" अवनीश बाबू ने पूछा।

"फेलूदा ने कहा, "एकाध सौ साल पुरानी हिन्दुस्तानी टिकट है। इस पर विक्टोरिया की तस्वीर है। इस टिकट को पहले ही देख चुका हू।"

"देख चुके हैं न ? अब इस ग्लास से देखिए।"

फेलूदा ने मैगनिफाइंग ग्लास को अपनी आखों से लगाया।

"अब क्या दीख रहा है ?" उनकी आवाज में दबी उत्तेजना का भाव था।

"इसमे छपाई की गलती है।"

"इन्वर्टेड ।"

"अंग्रेजी से जो पोस्टेज शब्द लिखा है, उसमें जी की जगह सी छप गया है।"

अवनीश बाबू ने अपनी टिकट वापस लेते हुए कहा, "इसके परिणाम स्वरूप इसकी कीमत कितनी ठहरती है, जानते हैं ?"

"कितनी ?"

"बीस हज़ार रुपया ।"

"क्या कह रहे हैं आप !"

"मैंने विलायत से पत्राचार कर पता लगाया है। स्टैम्प के कैटलॉग में इस गलती का उल्लेख नही है। मैंने ही पहले-पहल इसे ढूंढकर निकाला है।"

फेलूदा ने कहा, "बधाइयां ! मगर आपसे टिकट से अलावा दूसरे मुद्दे पर भी बातचीत करना चाहता था।"

"कहिए।"

"आपके मामा जी—कैलास बाबू—के पास एक कीमती पत्थर है, यह बात आप जानते हैं ?"

अवनीश बाबू कुछ सेकेंडों तक जैसे सोचते रहे। उसके बाद बोले, "ओह, हां-हां । सुना था। कीमती है या नहीं, यह नही जानता—तब हां, एक बार उन्होने कहा था कि 'लकी' पत्थर है। आप अन्यथा न लें। मेरे दिमाग में अभी डाक की टिकटो के अलावा और कुछ नही है।"

"आप इस मकान मे कितने दिनो से रह रहे हैं ?"

"जब से मेरे पिताजी का देहान्त हुआ है, तभी से। लगभग पांच बरसों से।"

"मामा से आपका मनमुटाव तो नही है ?"

"आप किस मामाजी की बाबत कह रहे हैं ? मेरे एक मामाजी तो विदेश मे हैं।"

"मैं कैलास बाबू की बाबत कह रहा था।"

"ओह । वे बड़े ही भले आदमी हैं, तब हां···"

"तब क्या ?"

अवनीश बाबू की भौंहों पर बल पड़ गए।

"कई दिनो से··· किसी कारणवश वे कुछ और ही तरह के दीख रहे हैं।"

"कब से ?"

"दो-तीन दिनो से। कल मैंने उनसे इस स्टैम्प के बारे मे कहा था।

फेलूदा ने कहा, "आप डाक-टिकटों के बड़े ही शौकीन मालूम होते हैं।"

अवनीश बाबू की आंखों में एक चमक तैरने लगी। "जी हां, मुझे बस इसी का नशा है। कह सकते हैं, यही मेरा ध्यान-योग-तप है।"

"आप किसी खास देश को लेकर स्पेशलाइज कर रहे हैं या तमाम दुनियां की टिकटें जमा करते हैं!"

"पहले तमाम दुनिया की टिकटें जमा किया करता था, मगर कुछ दिनों से हिन्दुस्तान की टिकटों पर स्पेशलाइज कर रहा हूं। हमारे इस मकान के दफ्तर में इतनी आश्चर्यजनक और पुरानी टिकटें हैं कि कह नहीं सकता। इतना जरूर है कि ज्यादातर हिन्दुस्तान की हैं। पिछले दो महीनों से हजारों पुरानी चिट्ठियों के बंडलों की छानबीनकर मैंने टिकटें जमा की हैं।"

"कुछ अच्छी चीजें मिली हैं?"

"अच्छी?" वे कुरसी छोड़कर खड़े हो गए। "आपको बताऊं तो बात आपकी समझ में आएगी? आपको इस चीज में दिलचस्पी है?"

फेलूदा ने मुस्कराकर कहा, "किसी खास उम्र में सभी का उधर झुकाव रहता है। केप आफ गुड होप की एक पेनी, मॉरीशस की दो पेनी और ब्रिटिश गायना की सन् 1856 की विख्यात टिकटों को पाने का सपना मैं भी देख चुका हूं। दस वर्ष पहले उन चीजों की कीमत लगभग लाख रुपये थी। अब और भी ज्यादा हो गई है।"

अवनीश बाबू उत्तेजित होकर करीब-करीब उछल पड़े।

"फिर साहब, आपकी समझ में बात आ जाएगी। आपको दिखाता हूं। देखिए।"

उन्होंने अपने हाथ के नीचे से एक छोटा-सा रंगीन कागज निकालकर फेलूदा को दिया। देखा, लिफाफे से अलग की गई हुई एक टिकट है, जिसका रंग करीब-करीब उड़ चुका है।

"आपने क्या देखा?" अवनीश बाबू ने पूछा।

"फेलूदा ने कहा, "एकाध सौ साल पुरानी हिन्दुस्तानी टिकट है। इस पर विक्टोरिया की तस्वीर है। इस टिकट को पहले ही देख चुका हूं।"

"देख चुके हैं न? अब इस ग्लास से देखिए।"

फेलूदा ने मैगनिफाइंग ग्लास को अपनी आंखों से लगाया।

"अब क्या दीख रहा है?" उनकी आवाज में दबी उत्तेजना का भाव था।

"इसमें छपाई की गलती है।"

"इग्जैकटली।"

"अंग्रेजी से जो पोस्टेज शब्द लिखा है, उसमें जी की जगह सी छप गया है।"

अवनीश बाबू ने अपनी टिकट वापस लेते हुए कहा, "इसके परिणाम स्वरूप इसकी कीमत कितनी ठहरती है, जानते हैं ?"

"कितनी ?"

"बीस हज़ार रुपया।"

"क्या कह रहे हैं आप !"

"मैंने विलायत से पत्राचार कर पता लगाया है। स्टैम्प के कैटलॉग में इस गलती का उल्लेख नहीं है। मैंने ही पहले-पहल इसे ढूंढकर निकाला है।"

फेलूदा ने कहा, "बधाइयां ! मगर आपसे टिकट से अलावा दूसरे मुद्दे पर भी बातचीत करना चाहता था।"

"कहिए।"

"आपके मामा जी—कैलास बाबू—के पास एक कीमती पत्थर है, यह बात आप जानते हैं ?"

अवनीश बाबू कुछ सेकेंडों तक जैसे सोचते रहे। उसके बाद बोले, "ओह, हां-हां। सुना था। कीमती है या नहीं, यह नहीं जानता—तब हां, एक बार उन्होंने कहा था कि 'लकी' पत्थर है। आप अन्यथा न लें। मेरे दिमाग में अभी डाक की टिकटों के अलावा और कुछ नहीं है।"

"आप इस मकान में कितने दिनों से रह रहे हैं ?"

"जब से मेरे पिताजी का देहान्त हुआ है, तभी से। लगभग पांच बरसों से।"

"मामा से आपका मनमुटाव तो नहीं है ?"

"आप किस मामाजी की बाबत कह रहे हैं ? मेरे एक मामाजी तो विदेश में हैं।"

"मैं कैलास बाबू की बाबत कह रहा था।"

"ओह। वे बड़े ही भले आदमी हैं, तब हां…"

"तब क्या ?"

अवनीश बाबू की भौंहों पर बल पड़ गए।

"कई दिनों से…किसी कारणवश वे कुछ और ही तरह के दीख रहे हैं।"

"कब से ?"

"दो-तीन दिनों से। कल मैंने उनसे इस स्टैम्प के बारे में कहा था।

उन्होंने सुनकर भी जैसे नहीं सुना। हालांकि उन्हें इसमें यों भी दिलचस्पी नहीं है। इसके अलावा उनकी बहुत सारी आदतें बदलती जा रही हैं।"

"मिसाल के तौर पर ?"

"जैसे, आमतौर पर वे सवेरे जगकर बगीचे में घूमा-फिरा करते हैं। पिछले दो दिन ऐसा नहीं किया। देर से सोकर उठे। शायद रात में देर तक जगते रहे।"

"इसके कारण का पता चला है ?"

"हां। मैं तो एक मंजिले में ही सोया करता हूं। मेरे कमरे के ऊपर जो कमरा है, वह मामाजी का है। आधी रात के समय चहल-कदमी करने की आवाज सुनी थी। उनके गले की आवाज भी सुनाई पड़ी थी। बहुत ही जोर से बोल रहे थे। लगा, झगड़ रहे हैं।"

"किससे ?"

"शायद नानाजी से। नानाजी के अलावा और हो ही कौन सकता है। सीढ़िया उतरने-चढ़ने की आवाज भी सुनी थी। एक दिन संदेह हुआ तो मैं जीने तक गया। देखा, मामाजी छत से दोमंजिले पर उतरे। उनके हाथ में बंदूक थी।"

"तब कितना बज रहा होगा।"

"रात के दो बज रहे होंगे।"

"छत पर क्या है ?"

"कुछ भी नहीं। सिर्फ एक कमरा है। उसमें कुछ पुरानी चिट्ठियां थीं जिन्हें मैंने एकाध महीने पहले निकाल लिया है।"

फेलूदा उठकर खड़ा हो गया। समझ गया, अब उसे कुछ भी न पूछना है।

अवनीश बाबू ने पूछा, "आपने यह सब मुझसे क्यों पूछा ?"

फेलूदा ने मुसकराकर कहा, "आपके मामाजी किसी कारणवश थोड़ा-बहुत बेचैन हैं। मगर आप उनके बारे में चिन्ता मत करें। आप अपने स्टाम्प का धन्धा लेकर ही व्यस्त रहा करें। इधर की झंझटें चुक जाएं तो एक दिन आकर आपके स्टैम्पों का संग्रह देख जाऊंगा।"

कैलाश बाबू से मिलकर फेलूदा ने कहा, "आपको पूरा-पूरा भरोसा नहीं दे पा रहा हूं, फिर भी इतना जरूर कहना चाहता हूं कि अपनी चिन्ता मुझ पर छोड़ दें। रात में सोने की कोशिश करें, जरूरी हो तो नींद की दवा भी ले सकते हैं। कृपया छत पर मत जाया करें। इस शहर में तमाम मकान आपस में इतने सटे-सटे हैं कि अगर आपका दुश्मन किसी निकट के मकान में आकर डेरा-डंडा डाल दे तो आप पर मुश्किल आ

सकती है।"

कैलास बाबू ने कहा, "मैं छत पर गया था ज़रूर, पर मेरे पास बन्दूक थी। आवाज़ सुनाई पड़ी थी, मगर जाने पर कुछ मिला नहीं।"

"बंदूक आप हमेशा अपने साथ रखे रहते हैं न ?"

"हां। तब हां, आदमी के दिल की बेचैनी कभी-कभी उसके हाथों की उंगलियों में संचारित होती रहती है। ज़्यादा दिनों तक इस तरह की स्थिति रहेगी तो पता नहीं, मेरे निशाने का क्या नतीजा होगा।"

दूसरे दिन रविवार था। दिन-भर फेलूदा अपने कमरे में चहलकदमी करता रहा। तीसरे पहर चार बजे उसे पैंट उतारकर जब पाजामा पहनते देखा तो मैंने पूछा, "तुम बाहर निकल रहे हो ?"

फेलूदा ने कहा, "सोच रहा हूं विक्टोरिया मेमोरियल चलकर एक बार लिलि के पौधों को देख आऊं। तू चलना चाहता है तो चल।"

हम ट्राम से रवाना होकर लोअर सर्कुलर रोड पर उतरे और वहां से पैदल चलकर पांच बजे विक्टोरिया मेमोरियल के दक्षिणी फाटक पर पहुंचे। इस ओर लोगों का आना-जाना कम ही रहा करता है। खासतौर पर शाम के वक्त जो भी आदमी आते हैं, वे सामने की ओर ही आया करते हैं—यानी उत्तर की ओर— किले के मैदान की ओर।

हम फाटक से घुसकर जब अन्दाज़ से बीस कदम बढ़े होंगे कि बाईं ओर सचमुच लिलि के पौधों की कतारें देखीं। उसकी पहली कतार के पहले पौधे के नीचे पत्थर रखने को कहा गया था।

लिलि के पौधे जैसी खूबसूरत वस्तु देखकर भी मेरा कलेजा कांपने लगा। फेलूदा ने कहा, "चाचाजी के पास एक दूरबीन थी न ? वही जिसे वे उस बार अपने साथ लेकर दार्जिलिंग गए थे ?"

मैंने कहा, "है।"

हम पन्द्रह मिनटों तक विक्टोरिया मेमोरियल में चहल-कदमी करते रहे। उसके बाद एक टैक्सी से हम सीधे लाइटहाउस के पास पहुंचे। फेलूदा क्या सिनेमा देखना चाहता है ? लेकिन अन्ततः सिनेमा न जाकर वह विपरीत दिशा को एक किताब की दुकान के भीतर घुसा। बहुत सारी पुस्तकों को उलटने-पलटने के बाद फेलूदा ने एक मोटी जिल्द के स्टैम्प-कैटलॉग को उठाया और उसके पन्नों को पलटना शुरू कर दिया। मैं बगल से बुदबुदाया, "तुम्हें अवनीश बाबू पर सदेह हो रहा है ?"

फेलूदा ने कहा, "जो आदमी स्टैम्प का इतना शौकीन हो, ..."

कुछ बाहरी पैसा मिल जाए तो उसके लिए यह बात सुविधाजनक होती है।"

मैंने कहा, "मगर हम जब दोमंजिले से उतरकर एक मंजिले पर आए थे, उस समय जो टेलीफोन आया, निश्चय ही अविनाश बाबू ने नहीं किया था।"

"नहीं। मुसलन्दपुर के आदित्यनारायण सिंह ने उस वक्त टेलीफोन किया था।"

मैं समझ गया कि अभी फेलूदा मज़ाक के मूड में है, उससे अब इस मुद्दे पर बातचीत नहीं की जा सकती है।

जब हम घर वापस आए, रात के आठ बज चुके थे। फेलूदा ने कोट उतारकर बिस्तरे पर फेंक दिया और बोला, "मैं तब तक हाथ-मुंह धो रहा हूं, तू इस बीच कैलाम बाबू का टेलीफोन नम्बर खोजकर निकाल ले।"

मैं डायरेक्टरी हाथ में थामे ज्यों ही टेलीफोन के सामने जाकर बैठा, फोन 'क्रिग-क्रिग' आवाज कर उठा और मैं चिहुंक उठा। फोन मुझे ही उठाना पड़ेगा। मैंने रिसीवर उठाया।

"हैलो!"

"आप कौन हैं?"

"यह किस तरह की आवाज है! मैं इस आवाज से परिचित नहीं हूं। मैंने कहा, "आप किससे बातचीत करना चाहते हैं?"

कर्कश और गंभीर स्वर में उत्तर मिला, "बालक होकर भी जासूस के साथ चक्कर क्यों लगाया करते हो? तुम्हें प्राणों का भय नहीं है?"

मैं फेलूदा का नाम पुकारकर उसे पुकारना चाहता था, परन्तु मेरे गले से आवाज नहीं निकली। कांपते-कांपते मैं जब टेलीफोन का रिसीवर रखने जा रहा था तो सुनाई पड़ा, "चेतावनी दे रहा हूं—तुम्हें और तुम्हारे भैया को भी। नतीजा अच्छा नहीं होगा।"

मैं जड़वत् कुरसी पर बैठा रह गया। फेलूदा ने बाथरूम से निकलकर कहा, "यह क्या? इस तरह चेहरे पर हवाइयां क्यों उड़ रही हैं? किसका फोन आया था?"

मैंने किसी तरह फेलूदा को उस घटना से अवगत कराया। देखा, वह भी गंभीर हो गया। उसके बाद मेरी पीठ पर एक धौल जमाते हुए कहा, "घबरा मत। हम लोगों के साथ पुलिस रहेगी। विपत्ति में पड़ने का कोई भय नहीं है। बस एक बार विक्टोरिया मेमोरियल चलना ही पड़ेगा।"

उस रात अच्छी तरह से नींद नहीं आई। उसका कारण सिर्फ टेलीफोन ही नहीं था; कैलाश बाबू के मकान की बहुत सी चीजें बार-बार आंखों के सामने तैरती रहीं—लोहे की रेलिंग लगी हुई छत तक जाने वाली सीढ़ियां,

दोमंजिले पर का संगमरमर का अंधेरा और लंबा बरामदा और कमरे की फांक से बाहर झांकता हुआ कैलास बाबू के पिता का चेहरा। उन्हें किसी चीज की आवाज सुनाई पड़ी थी ?

सोने के लिए जाने के पहले फेलूदा ने मुझसे एक बात कही थी—"जानता है तोपसा, जो लोग चिट्ठियों और टेलीफोन से धमकियां दिया करते हैं वे अकसर डरपोक हुआ करते हैं।" संभवत उसकी इन बातों की वजह से ही मेरी आंखों में नींद उतर आई।

दूसरे दिन सवेरे फेलूदा ने कैलास बाबू को फोन करके कहा कि वे अपने घर पर निश्चिन्तता के साथ रहें; करने को जो कुछ है, वह फेलूदा ही करेगा।

"विक्टोरिया मेमोरियल कब चलोगे ?" मैंने पूछा।

"कल जिस वक्त गया था, ठीक उसी वक्त," फेलूदा ने कहा, "ड्राइंग कॉपी और पेंसिल तेरे पास है न ?"

मैं थोड़ा घबरा गया।

"क्यों, उन्हें लेकर क्या करना है ?"

"है या नहीं, यही बता।"

"है।"

"अपने साथ ले लेना। लिलि के पौधे की विपरीत दिशा में तू तसवीर बनाना—पेड़-पौधे, मेमोरियल की बिल्डिंग या किसी चीज की। मैं तेरा शिक्षक रहूंगा।"

फेलूदा तसवीर बनाने में [illegible] आदमी का वह [illegible]। इसलिए उसके [illegible]

जाड़े के दिन छोटे हुआ करते हैं। यही वजह है कि हम चार बजने के कुछ पहले ही विक्टोरिया मेमोरियल पहुंच गए। सोमवार को भीड़ बहुत ही कम रहा करती है। तीन अदद पेराम्बुलेटर में साहबों के बच्चे हैं, जिन्हें लेकर नेपाली आयाएं घूम-फिर रही हैं। वहां खड़ा एक परिवार मारवाड़ी जैसा लगा। इसके अलावा दो-चार बूढ़े हैं। इस तरफ और कोई दूसरा आदमी नहीं है। कम्पाउंड के अन्दर ही, मगर गेट से थोड़े फासले पर, चौरंगी की ओर एक विशाल पेड़ के तले दो पट पहने व्यक्ति दीख पड़े। उनकी ओर इशारा करते फेलूदा ने मुझे अपनी कुहनी से आहिस्ता से धक्का लगाया। मैं समझ गया कि वे ही पुलिस के आदमी हैं। उन लोगों

कुछ बाहरी पैसा मिल जाए तो उसके लिए यह बात सुविधाजनक होती है।"

मैंने कहा, "मगर हम जब दोमंजिले से उतरकर एक मंजिले पर आए थे, उस समय जो टेलीफोन आया, निश्चय ही अविनाश बाबू ने नहीं किया था।"

"नहीं। मुसलन्दपुर के आदित्यनारायण सिंह ने उस वक्त टेलीफोन *किया था।"*

मैं समझ गया कि अभी फेलूदा मजाक के मूड में है, उससे अब इस मुद्दे पर बातचीत नहीं की जा सकती है।

जब हम घर वापस आए, रात के आठ बज चुके थे। फेलूदा ने कोट उतारकर बिस्तरे पर फेंक दिया और बोला, "मैं तब तक हाथ-मुंह धो रहा हूं, तू इस बीच कैलास बाबू का टेलीफोन नम्बर खोजकर निकाल ले।"

मैं डायरेक्टरी हाथ में थामे ज्यों ही टेलीफोन के सामने जाकर बैठा, फोन 'क्रिंग-क्रिंग' आवाज कर उठा और मैं चिहुंक उठा। फोन मुझे ही उठाना पड़ेगा। मैंने रिसीवर उठाया।

"हैलो!"

"आप कौन हैं?"

"यह किस तरह की आवाज है! मैं इस आवाज से परिचित नहीं हूं। मैंने कहा, "आप किससे बातचीत करना चाहते हैं?"

कर्कश और गंभीर स्वर में उत्तर मिला, "बालक होकर भी जासूस के साथ चक्कर क्यों लगाया करते हो? तुम्हें प्राणों का भय नहीं है?"

मैं फेलूदा का नाम पुकारकर उसे पुकारना चाहता था, परन्तु मेरे गले से आवाज नहीं निकली। कांपते-कांपते मैं जब टेलीफोन का रिसीवर रखने जा रहा था तो सुनाई पड़ा, "चेतावनी दे रहा हूं—तुम्हें और तुम्हारे भैया को भी। *नतीजा अच्छा नहीं होगा।"*

मैं जड़वत् कुरसी पर बैठा रह गया। फेलूदा ने बाथरूम से निकलकर कहा, "यह क्या? इस तरह चेहरे पर हवाइयां क्यों उड़ रही हैं? किसका फोन आया था?"

मैंने किसी तरह फेलूदा को उस घटना से अवगत कराया। देखा, वह भी गंभीर हो गया। उसके बाद मेरी पीठ पर एक धौल जमाते हुए कहा, "घबरा मत। हम लोगों के साथ पुलिस रहेगी। विपत्ति में फंसने का कोई भय नहीं है। कल एक बार विक्टोरिया मेमोरियल चलना ही पड़ेगा।"

उस रात अच्छी तरह से नींद नहीं आई। उसका कारण सिर्फ टेलीफोन ही नहीं था; कैलाश बाबू के मकान की बहुत सी चीजें बार-बार आंखों के सामने तैरती रहीं—लोहे की रेलिंग लगी हुई छत तक जाने वाली सीढ़ियां,

दोमंजिले पर का संगमरमर का अंधेरा और लंबा बरामदा और कमरे की फांक मे बाहर झांकता हुआ कैलास बाबू के पिता का चेहरा। उन्हें किसी चीज की आवाज सुनाई पड़ी थी ?

सोने के लिए जाने के पहले फेलूदा ने मुझसे एक बात कही थी—"जानता है तोपसा, जो लोग चिट्ठियों और टेलीफोन से धमकियां दिया करते हैं वे अकसर डरपोक हुआ करते हैं।" संभवत उसकी इन बातों की वजह से ही मेरी आखों में नींद उतर आई।

दूसरे दिन सवेरे फेलूदा ने कैलाश बाबू को फोन करके कहा कि वे अपने घर पर निश्चिन्तता के साथ रहें; करने को जो कुछ है, वह फेलूदा ही करेगा।

"विक्टोरिया मेमोरियल कब चलोगे ?" मैंने पूछा।

"कल जिस वक्त गया था, ठीक उसी वक्त," फेलूदा ने कहा, "ड्राइंग कॉपी और पेंसिल तेरे पास है न ?"

मैं थोडा घबरा गया।

"क्यों, उन्हें लेकर क्या करना है ?"

"है या नहीं, यही बता।"

"है।"

"अपने साथ ले लेना। लिलि के पौधे की विपरीत दिशा में तू तसवीर बनाना—पेड़-पौधे, मेमोरियल की बिल्डिंग या किसी चीज की। मैं तेरा शिक्षक रहूंगा।"

फेलूदा तसवीर बनाने में कुशल है। खासतौर पर उस आदमी का वह एक ही क्षण में पोर्ट्रेट बना सकता है, जिसे वह देख चुका है। इसलिए उसके लिए ड्राइंग मास्टर का काम बेनामी जैसा नहीं लगेगा।

जाड़े के दिन छोटे हुआ करते हैं। यही वजह है कि हम चार बजने के कुछ पहले ही विक्टोरिया मेमोरियल पहुंच गए। सोमवार को भीड़ बहुत ही कम रहा करती है। तीन अदद पेरामबुलेटर में साहबों के बच्चे हैं, जिन्हें लेकर नेपाली आयाए घूम-फिर रही हैं। वहा खड़ा एक परिवार मारवाड़ी जैसा लगा। इसके अलावा दो-चार बूढे हैं। इस तरफ और कोई दूसरा आदमी नहीं है। कम्पाउंड के अन्दर हीं, मगर गेट से थोड़े फासले पर, चौरंगी की ओर एक विशाल पेड के तले दो पट पहने व्यक्ति दीख पड़े। उनकी ओर इशारा करते फेलूदा ने मुझे अपनी कुहनी से आहिस्ता से धक्का लगाया। मैं समझ गया कि वे ही पुलिस के आदमी हैं। उन लोगों

के पास निश्चय ही रिवॉल्वर होगे। फेलूदा से पुलिस के कुछ आदमियो की काफी जान-पहचान है, यह बात मुझे पहले से ही मालूम है।

मैंने लिलि के पौधों की कतारों की विपरीत दिशा मे, थोडे फासले पर बैठकर पेंसिल से तसवीर बनाना शुरू कर दिया। इस हालत मे कही तसवीर बनाने मे मन लग सकता है ? आंख और मन कहीं और ही भटकने लगते हैं। फेलूदा बीच-बीच में आकर डांटता है और पेंसिल से जल्दी-जल्दी कुछ बना देता है। मुझसे दूर हट जाने के बाद ही फेलूदा दूरबीन को अपनी आखों से लगाकर इधर-उधर ताकता है।

सूर्य अस्त होने को है। पास ही गिरजाघर की घड़ी डिगडांग कर पांच बजने की सूचना देती है। लोगो की भीड कम होती जा रही है क्योंकि थोड़ी देर बाद ही ठंड पडने लगेगी। मारवाडी परिवार एक बड़ी गाड़ी पर सवार होकर चला जा रहा है। लोअर सरकुलर रोड की तरफ से दफ्तर लौटने वाली गाडियो की भीड़ की शुरुआत हो गई है। बार-बार हार्न की आवाज कानो मे आ रही है। फेलूदा मेरे पास आता है और घास पर बैठना चाहता है। मगर वह बैठता नही है। उसकी आंखें विक्टोरिया मेमोरियल की ओर हैं। मैं भी उस ओर देखता हूं। मगर फाटक के बाहर सड़क के किनारे भूरे रंग की चादर ओढ़े एक व्यक्ति के अलावा और कोई नही दीखता है। फेलूदा अपनी आखो मे दूरबीन लगाकर कुछ देर तक इधर-उधर देखता है, उसके बाद दूरबीन मेरे हाथ मे थमाकर कहता है, "देख।"

"उस चादरधारी व्यक्ति को ?"

"हूं।"

आंखो में दूरबीन लगाते ही वह आदमी जैसे दस हाथ की दूरी पर चला आता है। मैं चौंककर कहता हूं, "यह क्या, कैलास बाबू खुद आकर खड़े हैं !"

"हां। चल। वह जरूर ही हम लोगो को खोजने के लिए आए हैं।

मगर हम रवाना हो कि इसके पहले ही उन्होने चलना शुरू कर दिया। फाटक के बाहर आने पर कैलास बाबू नही दीख पड़े।

फेलूदा ने कहा, "चल, श्यामपुकुर चलें। लगता है कैलास बाबू की नजर हम लोगो पर नही पडी। हमे न पाकर वे जरूर ही चिन्ता मे पड़ गए होंग।"

अगर टैक्सी मिल जाती तो हम टैक्सी पर ही चलते, किन्तु ऑफिस-टाइम मे इसकी सम्भावना नही रहती है। इसलिए हम ट्राम पकड़ने के लिए चौरंगी की ओर रवाना हुए। सड़को पर एक-एक कर गाड़ियो की

कई कतारें चल रही हैं। जब हम कैलकटा क्लब के निकट पहुंचे, अचानक एक कांड हो गया, जिसके बारे में सोचने पर अब भी मेरा पसीना छूटने लगता है। बिना कुछ कहे-सुने फेलूदा ने मुझे एक धक्का मारकर सड़क के किनारे फेंक दिया और साथ ही साथ वह खुद भी उछल पड़ा। दूसरे ही क्षण तीव्र गति से जाती हुई एक गाड़ी, तीखी आवाज करती हुई हम लोगों को छूती हुई निकल गई।

"ह्वाट द डेविल !" फेलूदा ने कहा। "गाड़ी का नम्बर…"

किन्तु अब उसका उपाय नहीं था। शाम के अंधेरे में और-और गाड़ियों की भीड़ में वह गाड़ी खो चुकी है। मेरे हाथ की कॉपी और पेंसिल कहां फिक गई है, इसका कोई पता नहीं। हमने उन चीजों की तलाश में वक्त नहीं गंवाया। मैं यह अच्छी तरह समझ रहा था कि यदि ठीक समय पर फेलूदा की समझ में यह बात न आ जाती तो हम निश्चय ही उस गाड़ी के पहियों से कुचल जाते।

ट्राम में फेलूदा रास्ते भर गम्भीर बैठा रहा। जब हम कैलास बाबू के घर पहुंचे, सीधे उनकी बैठक में चले गए और फेलूदा ने सोफे पर बैठे कैलास बाबू से पहला सवाल किया, "आपकी नजर हम लोगों पर नहीं पड़ी थी ?"

वे सकपका जैसे गए। बोले, "आप लोगों को किस जगह नहीं देख सका था ? आप क्या कह रहे हैं ?"

"आप विक्टोरिया मेमोरियल नहीं गए थे ?"

"मैं ? यह क्या ? मैं तो अब तक अपने शयन-कक्ष में बिस्तर पर पड़ा चिन्ता से छटपटा रहा था। अभी-अभी नीचे आया हूं।"

"फिर क्या आपके कोई जुड़वां भाई है ?"

कैलास बाबू अवाक् जैसे हो गए। उसके बाद बोले, "आपको यह बात मैंने उस दिन नहीं बताई थी ?"

"कौन-सी बात ?"

"केदार के बारे में ? केदार मेरा जुड़वां भाई है।"

फेलूदा सोफे पर बैठ गया। कैलास बाबू का चेहरा उतरा हुआ था। वे थरथराती आवाज में बोले, "आपकी नजर केदार पर पड़ी थी ? वह वहां था ?"

"सिवा उनके और कोई हो ही नहीं सकता।"

"सर्वनाश !"

"क्यों ? केदार बाबू का क्या उस पत्थर पर कोई अधिकार था ?"

कैलास बाबू का चेहरा एकाएक बुझ गया। सोफे के हत्थे पर अपना

सिर टिकाकर उन्होंने लम्बी सांस ली और बोले, "था···था।" केदार की ही नजर पहले-पहल पत्थर पर पड़ी थी। मैंने मंदिर को देखा था, मगर देव-मूर्ति के कपाल पर पत्थर को पहले-पहल केदार ने ही देखा था।"

"उसके बाद ?"

"उसके बाद और क्या ! एक तरह से डरा-धमकाकर ही पत्थर मैंने ले लिया था। इतना जरूर ही मुझे मालूम था, वह पत्थर अगर मेरे पास रहेगा तो बचा रहेगा, केदार लेगा तो उसे बेच डालेगा और पसे फूंक डालेगा। और वह इतना कीमती है यह बात भले ही मुझे मालूम हो गई है, पर केदार नहीं जानता है। सच कहने मे हर्ज ही क्या, केदार जब विदेश चला गया तो मेरे मन मे निश्चिन्तता का भाव पैदा हो गया था। मगर वहां रहकर हो सकता है उसे कोई खास सुविधा नहीं हुई और यही वजह है कि लौट आया है। हो सकता है वह पत्थर को बेचकर कुछ नया कारोबार करना चाहता हो।"

फेलूदा कुछ देर चुप रहा, उसके बाद बोला, "अब वे क्या कर सकते हैं, यह आप बता सकते हैं ?"

कैलास बाबू ने कहा, "पता नहीं। तब हां, उसे एक बार मेरे सामने आना ही है। मैं चूंकि घर से निकला नहीं हूं और न ही लिलि के पौधे के तले पत्थर रख आया हूं। ऐसी हालत मे वह आएगा ही।"

"नहीं। उसकी कोई जरूरत नहीं पड़ेगी। वह मुझे बगैर बातचीत करने का मौका दिए कुछ करेगा, ऐसा नहीं लगता। और अगर वह बातचीत करने आएगा ही तो सोचता हूं, पत्थर उसे दे दूं। मैं सचमुच आपका कृतज्ञ हूं। आप बिल भेज दीजिएगा, मैं चेक दे दूंगा।"

"आप क्या चाहते है कि मैं यहां रहकर कोई इन्तजाम करूं ?"

फेलूदा ने कहा, "जीवन खतरे के लिए ही हुआ करता है। पीछे से एक गाडी आकर एक तरह से हमे खत्म ही कर गई थी।"

मेरी कुहनी जरा छिल गई थी, मैं अब तक उसे हाथ से ढंककर रखने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मैं जब कुरसी से उठने लगा, फेलूदा की नजर उस पर पड गई।

"यह क्या है जी, तेरे हाथ में खून देख रहा हूं।" उसके बाद वह कैलास बाबू की ओर मुडकर बोला, "आपके घर मे डिटॉल या आयोडिन है ? इस तरह के जख्म जल्दी सेप्टिक मे बदल जाते हैं।"

कैलास बाबू ने घबराकर कहा, "इस्स ! कलकत्ते की सड़कों की बुरी हालत हो गई है ! अवनीश से दरियाफ्त करता हूं।"

अवनीश बाबू के कमरे के पास जाकर उनसे डिटॉल के बारे में पूछते ही वे अवाक् जैसे हो गए और बोले, "आप तो सातेक दिन पहले ही लाए थे। वह क्या खत्म हो गया?"

कैलास बाबू ने सकपकाते हुए कहा, "ओह, बात तो सही है। लो, मुझे याद ही नहीं था। मेरा दिमाग काम नहीं करता है।"

डिटॉल लगाकर जब मैं कैलास बाबू के मकान के बाहर आया तो देखा, फेलूदा कर्नवालिस स्ट्रीट के ट्राम की ओर जाने के बजाय विपरीत दिशा की ओर जा रहा है। मैं कुछ पूछूं कि इसके पहले ही वह बोल पड़ा, "गणपतिदा से एक बार टेस्ट मैच की टिकट के बारे मे कह आऊं। जब इतना नजदीक पहुंच चुका हूं..."

कैलास बाबू के मकान के दो मकान बाद ही गणपति चटर्जी का मकान है। मैंने उसका नाम फेलूदा से सुना है, पर उन्हें देखने का सौभाग्य अब तक मुझे प्राप्त नहीं हुआ था। सड़क के किनारे ही मकान है। दरवाजे को खटखटाते ही बनियाइन के ऊपर पुल ओवर पहने एक मोटे-सोटे सज्जन ने दरवाजा खोला।

"अरे, फेलू मास्टर!" क्या खबर है?

"एक खबर आपको मालूम ही है।"

"वह तो समझ रहा हूं। मगर तुम अगर सशरीर आकर तकाजे न करते तो भी तुम्हारा काम बन जाता। तुम्हारा अनुरोध कहीं भूल सकता हूं? जब मैंने कह दिया है कि दूंगा, तो दूंगा ही।"

"आने का अवश्य ही एक दूसरा कारण है। सुनने में आया है, तुम्हारी छत के ऊपर से उत्तरी कलकत्ता का एक बहुत ही अच्छा परिदृश्य दीखता है। एक फिल्म कंपनी के लिए उसे देखना चाहता हूं।"

"बेझिझक सीढ़ी से ऊपर चले जाओ। मैं यहां चाय का इन्तजाम करता हूं।"

चार मंजिले की छत पर चढ़कर पूरब की ओर देखते ही कैलाश बाबू का मकान दीख पड़ा। एक मंजिले के बगीचे से छत तक साफ-साफ दीख रहा है। दो मंजिले के एक कमरे मे रोशनी जल रही है और उसके अन्दर एक आदमी खट-खट आवाज करता हुआ इधर-उधर चहलकदमी कर रहा है। मैं समझ गया कि वे कैलाश बाबू के पिताजी है। छत के ऊपर छोटा-सा वही कमरा है। कमरे की खिड़की वाली दीवार दीख रही है। दरवाजा संभवत: विपरीत दिशा मे है।

दोमंजिले पर एक बत्ती जल उठी। समझ गया कि जीने की बत्ती है। फेलूदा ने अपनी आंखों मे दूरबीन लगाई। एक आदमी सीढ़ियां चढ़ रहा

है। कौन है ? कैलास बाबू ! वे कुछ देर तक खड़े रहते हैं, फिर फर्श पर बैठ जाते हैं।

कुछ देर बाद कैलाश बाबू कमरे की बत्ती बुझा देते हैं और नीचे की ओर चले जाते हैं।

फेलूदा ने इतना ही कहा, "गड़बड़ है—गड़बड़।"

फेलूदा जब ऐसी स्थिति में रहते हैं तो मुझे हिम्मत नहीं होती कि उनसे ज्यादा बातचीत करूं। और-और वक्त चिन्ता में रहने पर वह चहल-कदमी करते रहते हैं, लेकिन आज उन्हें बिस्तर पर लेटे छत की ओर ताकते हुए पाया। रात साढ़े नौ बजे वह अपने नोटबुक में कुछ लिखता रहा। वह यह सब अंग्रेजी में लिख रहा था, परन्तु उसके अक्षर ग्रीक के होने के कारण मैं कुछ समझ नहीं पाया। मेरी समझ में इतनी ही बात आई कि कैलास बाबू के मना करने के बावजूद वह पत्थर के सम्बन्ध में अपना काम चालू रखे हुए है।

सोने में देर हो गई थी, अतः सुबह मेरी आंखें नहीं खुली। जब फेलूदा ने ठेल-ठेलकर जगाया तो मेरी नींद दूर हुई।

'ए तोपसा, उठ, उठ, श्याम पुकुर चलना है।"

"क्यों ?"

"मैंने फोन किया था। किसी ने उठाया नहीं। लगता है, कोई गड़बड़ी हुई है।"

दस मिनटों के अन्दर ही तैयार होकर हम टैक्सी से श्याम पुकुर की ओर रवाना हो गए। गाड़ी में फेलूदा ने इतना ही कहा, "कितना विचित्र आदमी है ! यदि थोड़ी देर पहले बात समझ में आ जाती तो गड़बड़ी की कोई संभावना नहीं थी।"

कैलास बाबू के घर पहुंचने के बाद फेलूदा बिना घंटी बजाए अन्दर चला गया। यह हमारा सौभाग्य ही था कि दरवाजे खुले हुए थे। सीढ़ियां चढ़कर जब हम अवनीश बाबू के कमरे के सामने पहुंचे तो हमारी आंखें पथरा गईं। मेज के सामने एक कुरसी उलटी हुई है और उसकी बगल में अवनीश बाबू पड़े हैं। उनके दोनों हाथ पीछे की ओर बंधे हैं और मुंह में रूमाल ठुंसा हुआ है। फेलूदा ने घुटने के बल बैठकर आधे मिनट के अन्दर ही हाथ की रस्सी खोल दी और उनके मुंह में ठुंसे हुए रूमाल को बाहर निकाल लिया। अवनीश बाबू बोले, "उफ़···थैंक गॉड !"

फेलूदा ने पूछा, "आपकी यह हालत किसने की है ?"

अवनीश बाबू हांफते-हांफते उठकर बैठ गए और बोले, "मामा ने ! कैलास मामा ने ! मामा का दिमाग गड़बड़ा गया है। उस दिन यह बात आपसे मैंने नहीं कही थी ? सवेरे मैं कमरे मे बत्ती जलाकर काम कर रहा था। मामा ने कमरे के अन्दर आते ही बत्ती बुझा दी। उसके बाद माथे पर चोट की। फिर क्या हुआ, मालूम नहीं। कुछ देर पहले मैं होश में आया हूं। मगर हिल-डुल नहीं पा रहा था। मुंह से आवाज़ नहीं निकल रही थी। उफ !"

"और कैलास बाबू ?" फेलूदा करीब-करीब चिल्ला उठे।

"मैं नहीं जानता।"

फेलूदा एक ही छलांग मे कमरे के बाहर चला आया। मैं भी उसके पीछे-पीछे भागा।

बैठक में किसी को न पाकर, तीन-तीन सीढ़ियों को एक-एक कदम में तय करता हुआ फेलूदा दो मंज़िले पर पहुंचा और हड़बड़ाता हुआ कैलास बाबू के कमरे के अन्दर चला गया। पलंग पर नजर पड़ते ही यह समझ में आ गया कि यहां कोई लेटा हुआ था। मगर अब कमरा खाली था। अलमारी के दरवाज़े खुले हुए थे। फेलूदा ने दौड़कर, दराज खोलकर जो चीज़ बाहर निकाली, वह था मखमल का वही बक्सा। खोलकर देखने पर पता चला, पत्थर ज्यों का त्यों रखा हुआ है।

अब अवनीश बाबू भी वहां आकर उपस्थित हो गए। उनके चेहरे की हालत दयनीय थी। उन पर निगाह पड़ते ही फेलूदा ने पूछा, "छत के कमरे की चाबी किसके पास है ?"

अवनीश बाबू ने सकपकाकर कहा, "वह—वह तो मामाजी के पास है।"

"फिर छत पर चलिए।" इतना कहकर फेलूदा उन्हें खींचता हुआ अपने साथ ले चला।

अंधेरी सीढ़ियां चढ़कर जब हम तीनों छत पर पहुंचे तो देखा, छत का कमरा बाहर से बन्द है। अब फेलूदा की देह की ताकत का मुझे पता चला। दरवाज़े से तीन हाथ पीछे हटकर उसने शेर की तरह छलांग लगा कर चार बार अपने कंधे से दरवाज़े पर धक्का लगाया और चौथे धक्के में कड़िया काटियों के साथ उखड़ गईं। दरवाज़े खुल चुके थे।

अन्दर अंधेरा रेंग रहा था। हम तीनों कमरे के अन्दर गए। जब धीरे-धीरे आंखें अभ्यस्त हो गईं तो देखा, एक व्यक्ति अविनाश बाबू की तरह ही बंधी हुई हालत मे पड़ा है। यह कौन है ?—कैलास चौधरी या केदार चौधरी ?

फेलूदा ने रस्सी की गाठ खोली और उन्हें अपनी गोद मे लेकर वह सीढ़िया उतरने लगा। उसके बाद उन्हें कैलास बाबू के कमरे मे लाकर बिस्तर पर लिटाया। वह आदमी फेलूदा की ओर फटी-फटी आंखो से ताकता हुआ बोला, "आपने ही क्या···?"

फेलूदा ने कहा, "जी हां। मेरा ही नाम है प्रदोष मित्तिर। शायद आपने ही मुझे चिट्ठी लिखी थी मगर आपसे न तो भेंट हो सकी और न जान-पहचान ही।···अवनीश बाबू, इनके लिए दूध का प्रबन्ध कीजिए।"

मैं अवाक् होकर उस व्यक्ति की ओर ताक रहा था। फिर यही सज्जन कैलास बाबू हैं! वे तकिए से टिककर सीधे बैठ गए और बोले, "देह में ताकत थी, इसीलिए जिन्दा बच गया। दूसरा कोई होता···इन चार दिनो के दरमियान···"

फेलूदा ने कहा, "आप उत्तेजना में मत आएं।"

कैलास बाबू ने कहा, "कुछ बताना ही होगा! नही तो मामला साफ-साफ आपकी समझ मे नहीं आएगा। आपसे मुलाकात हो तो कैसे! जिस दिन आपको मैंने चिट्ठी भेजी, उसी दिन उसने कैद कर लिया। सो भी चाय मे दवा मिलाकर मुझे बेहोश करके। वरना देह की ताकत से वह मुझे अपने वश मे नही कर सकता था।"

"और उसी दिन से वे कैलास बाबू बनकर बैठ गए थे!"

कैलाश बाबू ने दु:ख के साथ माथा हिलाते हुए कहा, "गलती मेरी ही है। लबा-चौड़ा हाकना जैसे हम लोगोंके रक्त मे समा गया है। मैंने जबलपुर के मार्केट मे पचास रुपए में एक पत्थर खरीदा था। पता नही क्या दुर्बुद्धि आई कि चांदा के जंगल के देव मंदिर की कहानी बुनकर केदार को मैंने हैरत मे डाल दिया। उसी दिन से उसने पत्थर के प्रति लोभ पैदा हो गया। वह मेरे सौभाग्य को बरदाश्त नही कर पाता था। मेरा बहुत-कुछ बरदाश्त नही कर पाता था। शायद वह सोचता था—हम दोनो जुड़वा भाई हैं, आखो से देखने पर दोनो मे कोई अन्तर नही है, फिर भी मेरा गुण, मेरा उपार्जन और मेरा भाग्य उसके गुण, उपार्जन और भाग्य मे पीछे क्यो रहे? वह खुद बेपरवाह और रेकलेस था। एक बार जाली नोट बनाने के मुकदमे मे फस चुका था। मैंने ही उसे किसी तरह बचाया था। मुझसे ही कर्ज लेकर वह विलायत गया था। मैंने सोचा, विपत्ति टली। यही सात दिन पहले—पिछले मंगलवार को—घर लौटने पर मैंने पत्थर का गुम पाया। उसके बारे मे याद ही नही था। नौकरो को मैंने मारा-पीटा, परन्तु कोई नतीजा नही निकला। बृहस्पतिवार की सुबह आपके पास पत्र भेजा। उसी दिन रात मे वह आया। बाजार मे पूछताछ करने पर उसे

पता चला था कि उस पत्थर की कीमत कुछ भी नहीं है, हालांकि उसने लाख रुपये का सपना देखा था। गुस्से से वह पागल हो गया। उसे रुपये की जरूरत थी—कम-से कम बीस हजार रुपये की। उसने मुझसे मांगा। मैं सहमत नहीं हुआ। इस पर उसने मुझे बेहोश कर कैदी बना लिया। कहा, जब तक मैं रुपया नहीं दूंगा तब तक वह मुझे छोड़ेगा नहीं। इस बीच वह कैलास चौधरी बनकर बैठा रहेगा और अदालत नहीं जाएगा। छुट्टी लेकर बैठा रहेगा।"

फेलूदा ने कहा, "जब मैं आपकी चिठ्ठी पाकर यहां, आया, तब से कठिनाई महसूस करने लगे। यही वजह है कि हमें दस मिनट तक बिठाकर रखा और उस बीच उन्होंने एक धमकी भरी चिट्ठी और काल्पनिक शत्रु की कल्पना की। अगर वे ऐसा न करते तो हमें सन्देह होता। मेरे रहने से विपत्ति की आशंका थी। यही वजह है कि टेलीफोन पर धमकी देकर और हमें गाड़ी से दबाने की कोशिश कर उन्होंने हमें अपने रास्ते से हटाना चाहा।"

कैलाश बाबू की भौंहों पर बल पड़ गए। वे बोले, मैं सोच रहा हूं कि केदार अचानक मुझे इस तरह छोड़कर कैसे चला गया। कल रात तक मैं उसे रुपया देने के लिए राजी नहीं हुआ था। वह क्या खाली हाथ ही चला गया ?"

अवनीश बाबू कब दूध लेकर आ चुके थे, यह बात हमारे ध्यान में आई ही न थी। अचानक उनकी चिल्लाहट सुनकर हम चिहुंक उठे।

"वे खाली हाथ क्यों जाने लगे? मेरी टिकट—मेरी कीमती विक्टोरिया की टिकट लेकर वे चलते बने हैं।"

फेलूदा ने फटी-फटी आंखों से अवनीश बाबू का ओर ताकते हुए कहा, "यह क्या लेकर चलते बने?"

"हां ले गए है। केदार मामा मुझे कंगाल बनाकर चल दिए।"

"आपने उस टिकट की कीमत कितनी बताई थी ?"

"बीस हजार।"

"मगर"...फेलूदा ने अवनीश बाबू की ओर झुककर धीमे स्वर में कहा,

"कैटलॉग जो बताता है, उसके अनुसार कीमत पचास रुपये से अधिक नहीं है।"

"अवनीश बाबू का चेहरा एकाएक लटक गया।

फेलूदा ने कहा, "आपमे भी चौधरी वंश का रक्त है। है न? आप भी शायद बात को चढ़ा-बढ़ाकर कहना पसन्द करते हैं।"

अवनीश बाबू का चेहरा बच्चे के चेहरे जैसा रुआसा हो गया वे बोले, "कहिए क्या करू! तीन बरसो तक चार हजार गर्द से भरी चिट्ठियो को उलटने-पलटने के बाद भी एक अच्छी टिकट नही मिली। इसीलिए न, झूठ कहकर लोगो को हैरत मे डालने से थोडा-बहुत आनन्द मिलता है।"

फेलूदा ने ठहाका लगाते हुए अवनीश बाबू की पीठ पर एक धौल जमाया और कहा, "परवा नही। अपने केदार मामा को जो छकाया है, उस पर सोचते ही आपको आनन्द मिलेगा।···खैर, अब दमदम हवाई अड्डे पर जरा फोन करके देखू। यह अन्दाज करके कि केदार बाबू भागेगे एयर इण्डिया को जब मैंने फोन किया तो पता चला, आज ही के लिए उन्होने, बुकिंग कराई है। चूकि वहा पुलिस रहेगी, अत भागने का कोई उपाय नही है। सौभाग्य कहिए कि तपेश की कुहनी छिल गई थी। डिटॉल मे सबंधित बातो के कारण ही उन पर मुझे पहल-पहल सदेह हुआ था।

केदार बाबू की गिरफ्तारी मे कोई परेशानी नही हुई थी। अवनीश बाबू को भी उनकी पचास रुपये की टिकट वापस मिल गई थी। फेलूदा को जितना पैसा मिला उससे हम लोगो ने तीन दिन तक रेस्तरा मे खाना-खाया और दो सिनेमा देखे। फिर भी उनकी जेब मे कुछ रुपए रह ही गए।

आज तीहरे पहर घर-पर हम चाय पीने बैठे तो मैंने फेलूदा से कहा, "मैंने सोचकर एक चीज ढूढ निकाली है। वह ठीक है या नही, बतालोगे ?"

"तूने क्या सोचा है ?'

"मुझे लगता है, कैलास बाबू के पिताजी की समझ मे यह बात आ गई थी कि केदार बाबू कैलास बाबू बनकर बैठ गए हैं। और यही वजह है कि वे उनकी ओर इस तरह घूर रहे थे। पिता निश्चय ही अपने जुडवें लडके के बीच के अन्तर को समझ जाता है। है न यह बात?"

"इस मामले मे अगर ऐसी बात न भी हो तो कोई बात नही, मगर तुम्हारा और मेरा विचार ठीक ही है। इस वजह से मैं तुम्हे सम्मानित करने जा रहा हू।" यह कहकर फेलूदा ने मेरे प्लेट मे से एक जलेबी उठाकर अपने मुह के अन्दर डाल ली।

हिंदुस्तान प्रिंटर्स, दिल्ली-32 — 5831